॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा के साथ साथ

एकीकृत संक्षिप्तीकरण

पूज्य श्रीमोटा

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सुरत

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा के साथ-साथ

लेखक

रतिलाल के. मेहता

अनुवादक

भास्कर भट्ट

संपादक

रजनीभाई बर्मावाला ‘हरि:ॐ’

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सुरत

❑ **प्रकाशक :**
(पूज्य श्रीमोटा) हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र, जहाँगीरपुरा,
सुरत–३९५००५, दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
मोबाईल : ९७२७७३३४००
Email : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

© सर्वाधिकार – प्रकाशकाधीन

❑ प्रथम संस्करण : वसंतपंचमी, वि.सं. २०७७,
पूज्य श्रीमोटा का अठ्ठाणुवाँ दिक्षा दिन

❑ प्रतियाँ : १०००

❑ पृष्ठ संख्या : २४ + ३३६ = ३६०

❑ मूल्य : रु. ५०/-

❑ प्राप्तिस्थान :
(१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत–३९५००५

(२) हरि:ॐ आश्रम,
नडियाद–कपडवंज रोड, जूना बिलोदरा, पो.बो.नं. ७४
नडियाद–३८७००१ – भ्रमणभाष : ७८७८० ४६२८८

❑ टाइपसेटिंग : **अर्थ कॉम्प्यूटर**
२०३, मौर्य कोम्प्लेक्ष, सी.यु.शाह कॉलेज के सामने,
इन्कमटैक्स, अहमदावाद–३८००१४, मोबाईल : ९३२७०३६४१४

❑ मुद्रक :
साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड, कांकरिया रोड, अहमदावाद–३८००२२
फोन: (०७९) २५४६९१०१

॥ हरि:ॐ ॥

अनुवादक का अनुभव

हरि:ॐ आश्रम सुरत के ट्रस्टीमंडल के आदेश पर श्री रजनीभाई 'हरि:ॐ' द्वारा मुझे पूज्य श्रीमोटा के प्रवचनों एवम् उनके संबंधित अन्य लेखकों द्वारा संकलित पुस्तकों का अनुवाद करने का कार्य मिलता रहा है, उसके लिए मैं हरि:ॐ आश्रम सुरत के ट्रस्टीमंडल एवं श्री रजनीभाई 'हरि:ॐ' का हृदय से आभारी हूँ ।

मुझ जैसे अल्पज्ञ, अज्ञानी संसार में लिप्त व्यक्ति को परम पूज्य श्रीमोटा की कृपा के बिना यह कार्य नहीं मिल सकता था । कहाँ हरि:ॐ आश्रम, सुरत के ट्रस्टीमंडल के सदस्य श्री रजनीभाई 'हरि:ॐ' और कहाँ मैं मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर का एक साधारण निवासी । दोनों बीच न कोई समानता न परिचय । किन्तु पूज्य श्रीमोटा की प्रेरणा से मेरे जीवन को कृतार्थ करने के लिये श्री रजनीभाई 'हरि:ॐ' को मेरे साले अहमदाबाद के निवासी श्री प्रद्युमनभाई भट्ट ने उनके परम मित्र श्रीद्वारकादास भट्ट के निवास में मेरा परिचय दिया और आज दो वर्ष से पूज्य श्रीमोटा की मैं साधारण सी सेवा कर सका हूँ ।

श्री रतिलाल के. मेहता द्वारा लिखित पुस्तक 'श्री मोटानी साथे साथे' का हिन्दी अनुवाद करते समय मुझे अत्याधिक आनंद आया है । यह पुस्तक श्री रतिभाई की दैनिक डायरी में उल्लेखित प्रसंगों पर आधारित है । लेखक के पूज्य श्रीमोटा

के साथ के प्रसंग इतने सदृश्य है कि यह पढ़ते-पढ़ते मुझे लगा जैसे ये प्रसंग मेरे सामने दृश्यमान हो रहे हैं । पूज्य श्रीमोटा को मैंने अपने सामने देखा हो । वे मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हो । श्रीमोटा के कथनों का अन्य भाषा में अनुवाद करना आपश्रीकी प्रेरणा - कृपा - इच्छा के बिना संभव नहीं है । कई जगह मैं रुक जाता था, तब जैसे पूज्यश्री ही आगे का शब्द सुझाते थे । यह मेरा स्वयं का इस पुस्तक का अनुवाद करते हुए अनुभव है ।

पूज्य श्रीमोटा ने सदैव नामस्मरण-जपयज्ञ को महत्त्व दिया है, उसी प्रकार इस पुस्तक के सत्संग के प्रसंग से मुझे उनका एक संदेश और प्राप्त हुआ - 'एकाश्रय' एक का ही आश्रय । व्यक्ति को सदैव अपने इष्टदेव - गुरुमहाराज सदैव एक रखना चाहिए और पूर्ण निष्ठा-समर्पण के साथ उनका नामस्मरण करते रहने से उसका कल्याण हो सकता है । संसार में जैसे पत्नी अपने पति के प्रति निष्ठावान होती है, इससे उसे प्रतिव्रता कहा जाता है वैसे हमें हमारे स्वामी के प्रति निष्ठावान होना चाहिए ।

पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में 'परिशिष्ट' में पूज्य श्रीमोटा के वक्तव्यों की अंतिम पंक्तियाँ व्यक्ति के जीवन को सुखी-समृद्ध बनाकर शांति प्रदान करती हैं ।

"आप सब सत्कर्म करो, नामस्मरण करो और जीवनविकास साधो यही मेरी प्रार्थना है ।"

पूज्य श्रीमोटा को अपने भक्तों-मुमुक्षोओं के कल्याण के प्रति कितनी चिंता थी, वह इन पंक्तिओं से स्पष्ट होता है ।

श्रीमोटा ने कहा था कि ‘मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ’ वह शतप्रतिशत सत्य है और उनके भक्त उनको महसूस कर सकते हैं । सच्चे हृदय से प्रार्थना करने पर उनकी कृपा आप पर अवश्य बरसती है । यह मेरा इस पुस्तक के अनुवाद के समय का अनुभव है । यह पुस्तक ‘श्रीमोटा के साथ-साथ’ आपको श्रीमोटा के साथ की अवश्य अनुभूति करवायेगा ।

अंत में इस पुस्तक का अनुवाद परम पूज्य श्रीमोटा के चरणों में समर्पित करते हुए उनकी कृपा बनी रहे और उनका स्मरण सदा करता रहूँ, इसी प्रार्थना के साथ आपश्रीके चरणों में साष्टांग दंडवत् प्रणाम करता हूँ ।

गुरुपूर्णिमा वि.सं. २०७२ **भास्कर भट्ट**
दि. १९-७-२०१६
१०४, रोयल आर्क,
५-६, साउथ तुकोगंज,
इन्दौर - ४५२००१ (मध्यप्रदेश)

॥ हरिःॐ ॥

प्रस्तावना

दिव्यता के प्रकाश-किरण

श्री रतिलाल मेहता का अचानक पत्र आया। उसमें उन्होंने लिखा था : "... उसी डायरी पर से एक दूसरा पुस्तक 'श्रीमोटा के साथ-साथ' लिखा है, वह आश्रम प्रकाशित करनेवाला है, जिसकी हस्तप्रत लगभग संपूर्ण हो गई है। उसकी प्रस्तावना आप लिखे वैसी हमारी इच्छा है। आप पूज्यश्री के प्रशंसक हो और उनके मौनमंदिर का लाभ भी आपने लिया है। इससे इस कार्य के लिए आप हमें बिलकुल योग्य लगते हैं..."

यह पत्र पढ़कर अकल्प्य आनंदाश्चर्य हुआ। श्री रतिभाई के साथ निजी परिचय नहीं था, किन्तु वे चार्टर्ड एकाउन्टन्ट हैं और पूज्य श्रीमोटा के निकट के सहवास में रहकर भक्तिभाव से उन्होंने उस विषय के पुस्तकों के संपादन कार्य में हिस्सा लिया है, वह मैं जानता था। उनकी प्रस्तावना लिखने की माँग से ज्यादा मुझे पूज्य श्रीमोटा के आध्यात्मिक चिंतन-वर्णन का लाभ मिलेगा उसका मेरे मन बड़ा मूल्य था। पूज्य श्रीमोटा ने मेरी जीवनसृष्टि निर्मल बनाई थी, उस प्रसंग का पुण्यस्मरण हुए बिना कैसे रहे? मैंने प्रस्तावना लिखने की सहर्ष हाँ कही और तुरंत हस्तप्रत मुझे मिल गई।

विधि की कैसी रहस्यमय लीला है! यह हस्तप्रत मुझे मिली और उसे सहजरूप से देखा तो आश्चर्य हुआ कि उस वक्त

‘‘श्रीरामकृष्ण लीला–प्रसंग’’ की गुजराती हस्तप्रत देख रहा था । उसका और ‘‘श्रीमोटा के साथ–साथ’’ का कैसा साम्य था ! मूल बंगाली पुस्तक श्रीरामकृष्ण परमहंस के शिष्य प्रवर स्वामी शारदानंदजी ने ‘‘श्रीरामकृष्ण लीला–प्रसंग’’ लिखा था, उसी शैली में श्री रतिलाल मेहता ने ‘‘श्रीमोटा के साथ–साथ’’ लिखा था । उस बंगाली पुस्तक का गुजराती अनुवाद श्री प्रज्ञाबहन शाह ने किया था । उसकी हस्तप्रत श्रीरामकृष्ण आश्रम, राजकोट के अध्यक्ष स्वामी मुमुक्षानंदजी के सूचन से, देखने के लिए मुझे मिली थी । मैं अत्यंत आनंदित था, क्योंकि ऐसे प्रसंगों के शब्दामृत का आचमन मुझे मिलता था ।

श्री रतिलालभाई की हस्तप्रत पढ़ते ही मालूम हुआ कि पूज्य श्रीमोटा के साथ उनका प्रथम मिलन १९६२ के अंत में हुआ था । उसमें प्रेरणा उनकी पत्नी कीर्तिदाबहन की थी, किन्तु तुरंत श्री रतिभाई, कीर्तिदाबहन और उनका पुत्र गोपाल श्रीमोटा के प्रभाव से आध्यात्मिक रंग में रंग गये । श्रीमोटा के साथ की बातचीत श्री रतिभाई ने तुरंत ही शब्दशः डायरी में लिखना शुरू कर दिया । श्रीरामकृष्ण परमहंस की बातचीत की अक्षरशः नोंध उनके शिष्य और भक्त महेन्द्रनाथ गुप्ता ने लिखी थी, उसका स्मरण हुआ । ‘‘श्रीरामकृष्ण कथामृत’’ उस प्रकार लिखा गया था, वह जगप्रसिद्ध हकीकत है । ऐसी ही पद्धति से ‘‘श्रीमोटा के साथ–साथ’’ लिखा गया है वैसा मैं हस्तप्रत पढ़कर कहने के लिए प्रेरित होता हूँ ।

“श्रीमोटा के साथ-साथ” पढ़ते ही मुझे पूज्य श्रीमोटा का प्रथम मिलन कब हुआ और बाद में दूसरी बार मिला, तब मेरी जीवनसृष्टि किस प्रकार विशुद्ध हुई थी, वह प्रसंग मेरे स्मृति-पट पर जीवंत हुआ, वह दृश्य मैं देखता रहा । वह भी इस पुस्तक के अनुरूप होने से यहाँ प्रस्तुत करने की मेरी इच्छा नहीं रोक सकता हूँ ।

१९६४ में सुरत की इंजिनीयरींग कालिज के मेरे मित्र प्रोफेसर जानी के वहाँ मैं गया था । उनकी सूचना से हम दोनों तापी नदी के किनारे जहाँगीरपुरा में “हरिः ॐ” आश्रम में पूज्य श्रीमोटा के दर्शन करने गये । पूज्य श्रीमोटा के नाम और कार्य से मैं सुपरिचित था । वहाँ गये, तब एक खाट पर पेट पर कपड़े लपेटे सोए हुए पूज्य श्रीमोटा के प्रथम दर्शन किये । मेरे साथ वार्तालाप हुआ, उसमें कवि श्री करसनदास माणेक मेरे मित्र हैं, ऐसा जाना तब पूज्य श्रीमोटा ने कहा, “मेरा नाम चूनीलाल भगत है । गांधीजी की गुजरात विद्यापीठ में मैं था, तब करसनदास माणेक भी वहाँ थे । हम मित्र थे और अभी भी है...” यह मेरा प्रथम मिलन और दर्शन था । उसका स्मरण मेरे चित्त में चिरंजीव अंकित हो गया है । १९७२ में मैं विलेपार्ले की मीठीबाई कालिज में आचार्य था, तब दूसरी बार मिलन हुआ और मेरे जीवन में उसका गहरा प्रभाव पड़ा, मेरी जीवनदृष्टि निर्मल बनी वह प्रसंग कैसा अविस्मरणीय बना है । आर. आर. सेठ की कंपनी में श्री धीरुभाई मोदी काम करते थे और वे पूज्य श्रीमोटा के भक्त थे । श्री धीरुभाई शांताक्रुझ में रहते थे । मेरे पास कालिज में आकर मुझे कहा, “पूज्य

श्रीमोटा मेरे घर पधारे हैं, आप उनके दर्शन करने चलो। पूज्य श्रीमोटा के साथ श्रीनंदुभाई एवम् अन्य भक्त भी हैं। आपकी इच्छा है, इससे आपको बुलाने आया हूँ....। मैं तुरंत उनके साथ शांताक्रुझ गया। वहाँ पूज्य श्रीमोटा खाट पर सीधे सो रहे थे। उनका भक्तमंडल भी वहाँ उनके साथ था और दर्शनार्थी आकर तुरंत वापस चले जाते थे। कुछ के साथ पूज्य श्रीमोटा थोड़ी बातचीत करते। मुझे भी तीन-चार मिनट से ज्यादा वहाँ नहीं रहना ऐसा सूचन श्री धीरुभाई ने किया था।

श्रीमोटा के दर्शन कर के मैंने कहा, ''आप आध्यात्मिक जीवन बिताते हुए भी समाजहित के कार्य सक्रिय रस लेकर करते हैं, करवाते हैं, प्रेरणा देते हैं, इससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अन्य आध्यात्मिक महापुरुषों ने समाजकल्याण की ऐसी प्रवृत्तियाँ की हो, ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है। आप तो तरणस्पर्धा, ज्ञानगंगोत्री-ग्रंथश्रेणी, ग्राम्यप्रदेश में शालाओं की सुविधा इत्यादि समाज के उत्कर्ष की प्रवृत्तियाँ करते हैं, उसका मैं प्रशंसक हूँ। आपके प्रति कुदरती पूज्य भाव उत्पन्न होता है....।

श्रीमोटा ने तुरंत उनकी लाक्षणिक भाषाशैली में मुझे कहा, ''ऐसी खाली प्रशंसा मुझे पसंद नहीं है। आप सब क्या करते हो ? ज्ञानगंगोत्री की ग्रंथ-श्रेणी में आपके जैसे लेख लिखने के भी पैसे लेते हैं। समाजसेवा की प्रशंसा करने से पहले आप ऐसी सेवा करते हैं या नहीं उसका तो विचार करो !''

बाद में दूसरी कुछ बातें हुई। प्रेम से कुछ समय तक मेरे साथ बात की। उसका सब को आश्चर्य हुआ, किन्तु घर आने के

बाद उनकी बातों ने मुझे जकड़ लिया था । ज्ञानगंगोत्री की ग्रंथश्रेणी में मैंने अभ्यासश्रम कर के ''मेसोपोटेमिया की संस्कृति'' के बारे में लेख दिये थे । उसके पुरस्कार स्वरूप मुझे दो सौ एक रुपये का चेक मिला था । वह मैं कैसे भूल सकता हूँ ? मैं अपना आत्मनिरीक्षण करने लगा । मेरा अंतःकरण जाग उठा । मुझे उसने कहा, ''तुम तो कालिज में वेतन लेकर काम करते हो, फिर भी समाजसेवा के कार्य के लिए पैसे लेते हो । तुम ऐसे कार्य के लिए श्रीमोटा की प्रशंसा करते हो, वह तुम्हें शोभा देता है ? प्रशंसा करनेवाले तुम उस प्रकार का वर्तन करते हो ? फिर तुम्हारी प्रशंसा के खाली शब्दों का क्या अर्थ ?'' श्रीमोटा को तो मैं लेखक हूँ और मैंने पैसे लिए है उसका खयाल ही नहीं था । इससे श्रीमोटा के शब्दबाण से मैं बींध गया था । ''बोलना कुछ और करना दूसरा कुछ'' ऐसी मेरी आचारशुद्धि की कमी मुझे समझ में आ गयी । आजीविका के लिए लेखक काम करता हो, वह पैसे लेवे, किन्तु आजीविका के लिए मुझे वेतन मिलता था, फिर भी लेख के पैसे मैंने (हरिःॐ आश्रम की ओर से मिलते पैसे से) क्यों लिए ? मेरी जीवनदृष्टि निर्मल बनी । मैंने वह रकम हरिःॐ आश्रम को वापस भेज दी थी । इस प्रकार पूज्य श्रीमोटा के पास से जीवनशुद्धि की दृष्टि प्राप्त की थी, उसकी चिरंजीवी असर मेरे मन पर पड़ी है । इस पुस्तक में श्री रतिभाई ने पूज्य श्रीमोटा की इस प्रकार की बातचीत की टिप्पणी दी है । इससे अनेक मनुष्यों की जीवनदृष्टि को स्वच्छ की होगी, इससे उनकी

समाजसेवा का मूल्य वाचक यथार्थ रूप से समझ सकेंगे ऐसा मैं मानता हूँ।

श्री रतिलालभाई ने इस पुस्तक के परिशिष्ट में श्रीमोटा के आध्यात्मिक विकास और कार्य के चार प्रगति सोपानों की नोंध की है। यह बात ध्यान में रखने से इस पुस्तक का मर्म समझ सकेंगे। पहला तो १९२२-२३ के प्रारंभ का दिक्षा दिन - वसंतपंचमी, दूसरा १९३९ में रामनवमी के दिन हुआ आत्मसाक्षात्कार; तीसरा गुरुपूर्णिमा दिन और चौथा हरि:ॐ आश्रम की स्थापना प्रथम १९५० में कुंभकोणम् में, १९५४ में नडियाद में और १९५६ में सुरत - जहाँगीरपुरा में। मौनमंदिर वह हरि:ॐ आश्रम का साधनास्थल माना जाता है। पूज्य श्रीमोटा के साथ के वार्तालाप से मौनमंदिर में जाने का बीज बोया गया था और १९७९ में मैं सुरत-जहाँगीरपुरा के मौनमंदिर में एक सप्ताह रहा था। उस समय श्रीमोटा का देहोत्सर्ग हो गया होने से उनकी चैतन्यमूर्ति के दर्शन मुझे होते थे। श्री नंदुभाई की व्यवस्था और कार्यप्रवृत्ति का दर्शन भी होता था। उसकी चिरंजीव स्मृति मेरे चित्त में बसी हुई है। अन्य स्थान पर इस संबंध में मैंने लिखा है।

इस पुस्तक का प्रारंभ १९६३ से होता है, इससे श्रीमोटा की विकासयात्रा के बाद का वह समय है। श्री रतिभाई सपरिवार श्रीमोटा के सहवास में होने से इस पुस्तक में बारबार दिखता हैं, वह स्वाभाविक है। उनकी आध्यात्मिक निष्ठा ही इस पुस्तक की

नींव में रही है, इसीलिए बातचीत में श्रीमोटा का शब्दामृत इसमें बसा हुआ है ।

दीक्षादिन श्रीमोटा के लगभग पच्चीस वें वर्ष में हुआ था । यौवनकाल में हुआ था – वह नोट करने पात्र है । श्रीमोटा में काव्यसर्जन शक्ति स्वाभाविक थी, वह तो उनके प्रसंगोंचित या भावनाएँ और विचार काव्यरूप में व्यक्त होते थे । उनका दीक्षादिन उनके यौवनकाल में था । उनकी यौवनकाल के संबंध में अभिव्यक्त होती काव्यपंक्तिओं का स्मरण होता है :-

गुण दोष मिले दोनों मानवी जीव को सदा ।
होने निर्मल युवानी ॠतु उसके लिए योग्य है ॥

भावनाकाल की ॠतु युवानी है, यह तथ्य विश्व का इतिहास बताता है । महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य, ईसु ख्रिस्त, महात्मा गांधी उसके उदाहरण हैं । श्रीमोटा ने उनकी काव्यपंक्ति में यही कहा है ।

किसी ने जप के बारे में श्रीमोटा को प्रश्न पूछा, तब उन्होंने दिया हुआ जवाब श्री मेहताने विभाग-३ में नोट किया है, वह कितना मर्मशील है ।

"जप वह सब से श्रेष्ठ साधन है, वेदांत वह बड़े से बड़ा शास्त्र है, किन्तु जहाँ तक उसे आचरण में न रखे, वहाँ तक क्या काम का ? केवल थियरी या सिद्धांतों से क्या लाभ ? काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि जहाँ तक फीके न हो, वहाँ तक शास्त्र हमारी सहाय में नहीं आयेंगे....।

इसमें मन का संयम, क्रियात्मक सदाचार और मानवप्रेम का महत्त्व कितनी सरलता से श्रीमोटा ने कहा है । मन के संयम के लिए जप वह अमोघ साधन है, ऐसा अनेक बार उनकी बातचीत में कहा गया है । गीता में भी ‘‘**यज्ञानाम जपयज्ञोस्मि**’’ ऐसा श्रीकृष्ण ने कहा ही है न ! किन्तु जप से मन पर काबू नहीं हो पाता है ऐसे प्रश्न के जवाब में भी उन्होंने (श्रीमोटा ने) काव्यलय में कैसा चित्ताकर्षक जवाब दिया है ।

बूंद बूंद से तालाब भी भरता ।
उदासीन तुम्हें फिर क्यों होना ?
चाहे कटा होगा मार्ग थोड़ा ।
फिर भी गति उसमें से ही पैदा होगी ॥

मन पर काबू प्राप्त करना कैसा और कितना कठिन है। वह ऋषिओं ने, महापुरुषों ने कहा ही है । ‘‘जीवनपगदंडी’’ में श्रीमोटा ने स्वानुभव कहा है । सच कहें तो ‘‘मन को’’ काव्य में उन्होंने मन की गति, विलक्षणता, चंचलता, कूदाकूद के बारे में वर्णन कर के मन परमात्मा में लीन हो जाय उसे रसपूर्ण रीति से कहा है । कवि श्री उमाशंकर जोशी ने ‘‘मन को’’ की प्रस्तावना में सुंदर काव्यमर्म का विवरण किया है। ‘‘मन को’’ काव्य पढ़ते ही शिवाजी के गुरु समर्थ स्वामी श्रीरामदास के ‘‘मनाचे श्लोक’’ का साम्य याद आता ही है। श्रीउमाशंकर ने यह बताते हुए कहा है **:** ***‘‘क्रिया बिना वाचालता है निरर्थक ।’’*** लगभग यही शब्द ‘‘मनाचे श्लोक’’ में हैं **:** ***‘‘क्रियावीण वाचाळता***

व्यर्थ आहे ।''... किन्तु बड़ा साम्य तो यह है कि दोनों रचनाएँ ''मन को'' संबोधित कर के रची गई हैं और भुजंगप्रयात छंद द्वारा आकार दिया गया है... ऐसे आश्चर्यकारक आकस्मिक साम्य का मूल है दोनों रचनाओं के पीछे के आध्यात्मिक साधना के एकसमान अभिगम में''... अंत में श्रीमोटा ने ''मन को'' कहा है, उस बारे में कवि श्री उमाशंकर कहते हैं : ''मन को पहली और अंतिम जो सुनहरी सीख दी है, वह तो यह है कि हे मन, नामजप की प्रेमभरी गंगधारा एकसी बहाते जा और

''पूरा तू मिल जा प्रभुपादपद्म में''

श्री मेहता ने जब आत्मसाक्षात्कार के संबंध में श्रीमोटा को प्रश्न पूछा, तब उन्हें मिला हुआ जवाब बहुत अचूक रीति से समझ में आवे वैसा है, ''**चित्तशुद्धि हो, नये पटल खुल जाय, मनुष्य आत्मनिष्ठ बने और आध्यात्मिक मार्ग पर नई दृष्टि प्राप्त हो, तब आत्मसाक्षात्कार हुआ कहा जायेगा, नया अवतार प्राप्त हुआ कहा जायेगा ।**'' इस स्थिति पर पहुँचने से पहले क्या-क्या कठिनाइयाँ सहन करना पड़ी होगी, उस बारे में ''जीवनपगदंडी'' में श्रीमोटा ने काव्य में लिखा है :

जीवनपथ में मुझे कैसे विघ्नों ने रुकावट की है ।
किन्तु दृष्टि बदलते ही न वे उस रूप लगे हैं ॥

श्रीमोटा के संक्षिप्त जवाब सूत्र जैसे मर्मपूर्ण है । उनको पूछा, ''आपका परिवर्तन किस ने और कब किया ?'' तब जवाब दिया : ''गुरुमहाराज ने कहा, तुमने देशसेवा बहुत की अब मानवसेवा कर । लोगों को ईश्वराभिमुख कर ।''

उसी प्रकार प्रसिद्ध कालम लेखक श्री विजयगुप्त मौर्य ने श्रीमोटा से पूछा, ‘‘आपने संन्यास क्यों नहीं लिया ?’’

श्रीमोटा : संन्यास वृत्ति का होता है ।

उस प्रकार ‘‘गुरु को भगवान माना जाय ?’’ ऐसा किसी ने प्रश्न पूछा तब दिया हुआ जवाब सूत्रात्मक और सुंदर है :-

‘‘गुरु का शरीर वह गुरु नहीं है, भावना-चेतन के संबंध की भावना वह गुरु है ।’’

उसी प्रकार किसी ने श्रीमोटा को प्रश्न पूछा, ‘‘देहधारी महात्मा को भगवान कहा जा सकता है ?’’ उन्होंने जवाब दिया - ‘‘देहधारी महात्मा भगवान के बराबर नहीं आ सकता। समुद्र का पानी और कुल्हिया का पानी के बीच गुणधर्म का साम्य सही, फिर भी दोनों के बीच अनंतता, विस्तृतता आदि का फर्क समझना चाहिए ।’’ यहाँ श्रीशंकराचार्य के कथन का स्मरण होता है ।

श्रीमोटा ने अंधश्रद्धा और चमत्कार का हमेशा निषेध किया है, यह खास लक्ष में रखना चाहिए। श्रीमोटा कर्मयोग के पुरस्कर्ता है, वह तो उनके लेख और वार्तालाप में आता ही है। किन्तु उस संदर्भ की उनकी काव्य-पंक्तियाँ याद रखने जैसी है :

गति को दृढ प्रेरित कर श्रद्धा क्या कर्मशील है !
प्रेरणा, भाव से और ज्ञान से श्रद्धा सर्जनशील है ।

चमत्कार के बारे में उन्होंने कहा है, ‘‘लोगों को चमत्कार के पीछे नहीं पड़ना चाहिए । महंमद छेल चमत्कार करता था, उसकी अंत में क्या स्थिति हुई ?’’

दान के बारे में उनके बोल समाज को खास समझने और याद रखने जैसे हैं । श्रीमोटा ने उस बारे में कहा है :

''भूखे को भोजन और दरदी को दवा दो, गलत नहीं है, किन्तु वह दान हमारे साथ नहीं आयेगा, क्योंकि उसकी असर कायम नहीं रहती है । जिस दान से गुण प्रकट हो, समाज उन्नति करे, सच्चा धर्म प्रकट हो और समाज के लिए कुरबान होने की, प्रभुप्रीत्यर्थ कार्य कर के आत्मविकास करने की तमन्ना जाग्रत हो वैसे दान उत्तम दान हैं ।''

श्रीमोटा ने सूत्रात्मक रीति से बारबार कहा है, ''लक्ष्मी का उपभोग नहीं करना चाहिए, उपयोग करना चाहिए ।''

हमारे राष्ट्र का अधःपतन देखकर उसकी नींव भ्रष्टाचारी संपत्ति में है, इससे उनके उस वक्त कहे गये वचनों की भविष्यवाणी आज कैसी सच हुई है, उसका दर्शन होता है । उनकी आर्षदृष्टि का प्रकाशकिरण दिखता है । उन्होंने कहा था, ''आज समाज घोर तमस में पड़ा हुआ है । सिर्फ धन से समाज उन्नति नहीं करेगा । प्रजा में ''गुण और भाव'' साथ-साथ में प्रगट होने चाहिए । यह सब उनकी विचारणा में और भावना में ही हरिःॐ आश्रम की स्थापना और कार्यप्रवृत्तिओं का बीज रहा है, यह कहने की शायद ही आवश्यकता हो ।''

हमें क्या करना चाहिए, हमारा कर्तव्य क्या है, उस संबंध के प्रश्न का भी श्रीमोटा के सूत्रात्मक वचन सत्यमार्ग का दर्शन करवाते हैं । खंड ६१ में वह कहा है :

“हरएक के लिए मैत्री की भावना रखना, बैरवृत्ति निकाल डालना । करुणा की भावनाओं का अभ्यास रखना, मुदिता का भाव विकसित करना । निंदा और लौकिक बातों से दूर रहना । इस प्रकार प्रसन्नता प्राप्त कर सकोगे । “**प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धिं पर्यवतिष्ठते ।**” प्रसन्नता से बुद्धि स्थिर होती है ।

इस पुस्तक के अंतिम विभाग-७२ में उनके अंतिम जीवन का दृश्यवर्णन और देहत्याग करने के पहले स्वहस्त से लिखा हुआ वसिअतनामा पूज्य श्रीमोटा की आध्यात्मिक प्रतिभा का दिव्य दर्शन करवाता है **:**

“....मेरे अस्थि को पास की नदी में संपूर्ण रूप से बहा देवे । मेरे नाम का ईंट-चूने का कोई स्मारक नहीं करना है। मेरे मृत्यु के निमित्त जो कुछ फंड एकत्रित हो, उसका उपयोग गाँवों में शाला के कमरे बाँधने में करना ।”

चूनीलाल आशाराम भगत

दिनांक १९ जुलाई, १९७६ **उर्फ “मोटा” हस्ताक्षर**

उन्होंने एक बार अपने लिए कहा था, उसमें भी उनकी निर्मोहता और निःस्पृहता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है - जैसी उपर्युक्त वसिअतनामे में व्यक्त होती है वैसे । उन्होंने कहा था, “मैं तो भगवान का नौकर हूँ, समाज का कारकुन हूँ, मुझे गुरु के रूप में पूजाना नहीं है ।”

अंतिम घड़ी तक श्रीमोटा जाग्रत थे । उन्होंने देहत्याग कब

करनेवाले हैं, वह भी कहा था और उसकी सूचना भी लिखकर दी थी ।

"...मेरे शव का अग्निसंस्कार एकांत में, शांत जगह पर, मृत्यु स्थल के बिलकुल पास में करना और वह भी आप छ व्यक्तिओं की उपस्थिति में ही करना । बहुत एकत्रित नहीं करना, वैसा मेरे सेवकों को मैं फरमाता हूँ ।"

उनकी सभी सूचनाएँ इत्यादि उनके निकटतम स्वजन श्री नंदुभाई शाह को दी थी – कही थी । अंत में दिनांक २३ जुलाई १९७६ की जल्दी सुबह डेढ़ बजे उन्होंने अंतिम श्वास लिया था । उनकी इच्छानुसार सब कार्य श्रीनंदुभाई ने किया था ।

श्री रतिभाई मेहता ने अपनी डायरी में लिखी हुई लिखित सामग्री श्री नंदुभाई को पढ़वाकर अंतिम स्वरूप देकर "श्रीमोटा के साथ-साथ" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है । इससे यह लेख अधिकृत है, यह कहने की शायद ही आवश्यकता है । यह पुस्तक इस प्रकार गुजराती समाज को मिलता है, वह एक श्री रतिभाई मेहता की मूल्यवान सेवा है । दिव्यता के अनेक प्रकाशकिरणें समाज को धर्म-संस्कृति का मार्ग दिखायेंगे ऐसा कहते हुए मैं विरल आनंद का अनुभव करता हूँ ।

११, मधुवन सोसायटी
सरस्वती रोड,
शांताक्रुझ, मुंबई-४०००५४

अमृतलाल याज्ञिक
दिनांक २९-७-१९८८
गुरुपूर्णिमा, संवत २०४४

॥ हरिःॐ ॥

निवेदन

पू. श्रीमोटा के मुंबाई निवास दरमियान श्री रतिलाल मेहता अवश्य श्रीमोटा के साथ ही रहते थे । वर्ष १९६२ में प्रथम मुलाकात के बाद यह क्रम नियमित चलता रहा । मुंबाई मुलाकात के सिवा श्री रतिलाल मेहता नडियाद एवं सुरत आश्रम में मौनसाधना के लिए भी आते थे । व्यवसाय से चार्टर्ड एकाउन्टन्ट, बुद्धिशाली, प्रतिभावंत व्यक्तित्व के स्वामी श्री रतिलाल मेहता ने श्रीमोटा के सान्निध्य में हुए अनुभव अपनी डायरी में लिखकर उसे पुस्तकरुप से प्रकाशित कराकर समाज की उत्तम सेवा की है । इस पुस्तक का प्रथम गुजराती संस्करण वर्ष १९८८ (1988) में हुआ, तब से आज तक हज़ारों प्रत बिक्री हुई है । यह उसकी लोकप्रियता का एक ठोस उदाहरण है ।

श्री रतिलाल मेहता ने अपनी निजी डायरी का प्रकाशन करते हुए श्री सद्‌गुरु की सेवा में बहुत बड़ा योगदान दिया है । आज की एवं आनेवाले समय की अनेक पिढ़ियाँ इस माध्यम से पू. श्रीमोटा को सही अर्थ में जान पाएगी ।

अमदावाद स्थित साहित्य मुद्रणालय (प्रा.) लि. के मालिक श्री श्रेयसकुमार विष्णुप्रसाद पंड्या श्रीमोटा के प्रति भक्तिभाव से, आपश्री के सभी पुस्तकों का मुद्रण निःशुल्क कर रहे हैं ।

उनकी उदारता के कारण ही श्रीमोटा का साहित्य सस्ती कीमत से समाज में उपलब्ध है । हम उनके अत्यंत आभारी हैं ।

यह पुस्तक श्रीमोटा के सामाजिक द्रष्टिकोण को संपूर्णरूप से प्रगट करता है । अध्यात्म-जीवन बहुत गहन है, जिसकी अनुभूति वर्तमान आयुष्य में प्राप्त करना, यह अत्यंत दुर्लभ कार्य है । श्रीसद्‌गुरु की प्राप्ति एवं कृपा से ही प्रभुप्राप्ति संभव है । और हमारे जैसे आम आदमी की नज़र सामाजिक द्रष्टिकोण से ही श्रीसद्‌गुरु को नापती है, और बुद्धि से अनुभव होने से बाद में श्रद्धा एवं भक्ति बढ़ती है । इस परिप्रेक्ष्य में यह पुस्तक अत्यंत उत्तम कोटि का है । महान, उच्च कोटि के संत के दैनिक जीवन का सरल भाषा में परिचय इस पुस्तक में उपलब्ध है । साधक जीव इस पुस्तक का अध्ययन करे एवं अपने वर्तुल में वितरण करे ऐसी हमारी नम्र बिनती है ।

दिनांक : १९-७-२०१६ लि.
गुरुपूर्णिमा स. २०७२ **ट्रस्टीमंडल**
हरि:ॐ आश्रम, सुरत

॥ हरिःॐ ॥

चेतना का प्रसाद

पूज्य श्रीमोटा जब गुजरात में प्रसिद्ध नहीं थे, तब पूज्यश्री १९६२-६४ से १९६८-६९ तक मुंबई हर वर्ष में तीन-चार बार चार-पाँच दिन के लिए पधारते और समाज के लिए उपयोगी ''गुण-भाव'' को बढ़ानेवाली योजनाओं के लिए फंड एकत्रित करने हेतु सतत प्रयास करते थे ।

पूज्यश्री मुंबई आते तो सब से पहले स्व. नटवरभाई चिनाई के वहाँ अचूक रूप से कम से कम एक घंटा या एक दिन के लिए भी ठहरते और फिर श्रीहरमुखभाई जोगी के वहाँ बाकी के दिनों के लिए । इस प्रकार का उनका कार्यक्रम १९७३-७४ तक चला था, हालाँकि गुजरात में उनके भक्तगणों की वृद्धि होने पर पूज्यश्री मुंबई आखरी वर्षों के दरमियान वर्ष में दो-तीन बार ही पधारते थे ।

उपरोक्त समय दरमियान पूज्यश्री का प्रथम दर्शन मुझे प्रभुकृपा से दिनांक १९-२-१९६३ के दिन 'सहकारनिवास' (मुंबई) में श्रीहरमुखभाई जोगी के वहाँ हुआ था । इससे पहले कई सत्पुरुषों के दर्शन हुए थे, किन्तु उनमें से एक भी संत के प्रति उतना प्रेमभाव प्रकट नहीं हुआ था, जितना पूज्य श्रीमोटा के प्रति प्रथम दर्शन में ही प्रकट हुआ था ।

वह होने पर श्रीमोटा मुंबई में और सुरत में जब- जब भक्तों के वहाँ जाते, तब मुझे (मैं सुरत में होता तब भी) उनके साथ जाने का सद्‌भाग्य मिला था, उनके साथ प्रश्नोत्तर

करने का योग हुआ और प्रतिदिन होनेवाले सत्संग की डायरी रखी गई ।

इस डायरी में से एक पुस्तक ''श्रीमोटा के साथ वार्तालाप'' हरि:ॐ आश्रम ने प्रसिद्ध किया है और दूसरा यह ''श्रीमोटा के साथ-साथ'' । दूसरे पुस्तक की विशेषता यह है कि उसमें पूज्यश्री की प्रवृत्तिओं की, खास कर के मुंबई की, तारीख के अनुसार तैयार की है और यों लिखने की प्रेरणा 'श्रीरामकृष्ण कथामृत' से मिली है, यह कबूल करता हूँ ।

हस्तप्रत देखनेवाले दो मित्र और नडियाद आश्रम के मेनेजिंग ट्रस्टी श्रीचीमनभाई शाह ने हस्तप्रत के तीन सौ में से सौ पन्ने जितना करने और ''सेल्फ प्रोजेक्शन'' (आत्मप्रशंसा) न हो जाय, उस प्रकार संकलन करने की सलाह दी ।

इससे पूरी हस्तप्रत का पुन:लेखन लगभग उस प्रकार करने का प्रयास किया है । फिर भी पूज्यश्री की प्रवृत्तिओं का वर्णन करते हुए मेरा और मेरे स्वजनों का संदर्भ अवश्य होगा ही, इससे यदि किसीको उसमें आत्मगौरव या आत्मप्रशंसा होते हुए लगे तो माफ करना ।

पूज्यश्री के साथ हम जुड़े हुए रहें, इसलिए उन्होंने मेरे जैसे अनेक भाईबहनों को व्यक्तिगत, प्रकृति अनुसार अपनाअपना ''धर्म'' बजाते रहने का आदेश दिया था, उस अनुसार वर्तन करने का यह नम्र प्रयास उनकी कृपा से हुआ है । ऐसे लेखनकार्य को मेरे ''धर्म'' के रूप में स्वीकार करने का उनका आदेश था ।

इस पुस्तक की प्रस्तावना प्रसिद्ध साक्षर और शिक्षणशास्त्री श्री अमृतलाल याज्ञिक साहब ने लिखी है, जिसके लिए उनका मैं बहुत ऋणी हूँ ।

पूज्यश्री की परछाई जैसे पूज्य भाई श्री नंदुभाई शाह ने ही सब से पहले यह हस्तप्रत पढ़कर पुस्तक का नाम "श्रीमोटा के साथ-साथ" का सूचन किया था, जिसे सहर्ष स्वीकार किया है । उनका मैं आभारी हूँ ।

जिन मित्रों ने मेरे लेखनकार्य में क्षति बताकर पूरी हस्तप्रत पुनः लेखन करने की प्रेरणा दी उनका भी आभार माने बिना नहीं रह सकता, क्योंकि वह कार्य करते-करते पूज्यश्री की चेतना का प्रसाद प्रभुकृपा से प्राप्त कर सका हूँ।

पूज्यश्री की १९६०-७० के समय की प्रवृत्तिओं की इस डायरी में से उनके निकटवर्ती भक्तों को खास नई कोई माहिती शायद न मिले, कई बातों का पुनरावर्तन लगे, फिर भी जिन्होंने पूज्यश्री को नहीं देखा है, नहीं सुना है वैसे उनकी नई पीढ़ी के भक्तों को, प्रशंसकों को उनकी अनोखी मौलिक नीति-रीति-प्रवृत्ति का परिचय हुए बिना नहीं रहेगा, यह निश्चित है ।

१६४, सहकारनिवास — **रतिलाल मेहता**
२०, तारदेव रोड़, मुंबई - ४०००३४

‘मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ !’

– मोटा

॥ हरि:ॐ ॥

(१)

गुण दोष मिले दोनों मानवी जीव को सदा ।
होने निर्मल युवानी ऋतु उसके लिए योग्य है ॥

("जीवनपराग" पुस्तक से) – **मोटा**

चैत्य संबंध के श्रीगणेश

हरि:ॐ आश्रम, नडियाद–सुरत के प्रणेता पूज्य श्रीमोटा के संबंध में हमने १९६२ में पहली बार सुना था । दिनांक २४–१२–१९६२ के दिन जहाँगीरपुरा (सुरत) आश्रम पर पहली बार जाने का हुआ था, तब श्रीमोटा वहाँ उपस्थित नहीं थे । तहखानेवाला मौनमंदिर का कमरा खाली था, वह देखा । सभी प्रकार की सुविधा उसमें थी । एक बार तो उसमें कुछ दिन बिताने का मन हो गया । एक सेवक श्री झीणाभाई तब उपस्थित थे । उन्होंने मौनमंदिर के बारे में माहिती दी और प्रसाद भी दिया ।

दिनांक १५–१०–१९६३ से दिनांक २२–१०–१९६३ तक पहली बार सुरत के मौनमंदिर में हम पतिपत्नी बैठे । मौनमंदिर में बैठने पर पूज्य श्रीमोटा के साथ सूक्ष्म चैत्य संबंध जुड़ने के श्रीगणेश हो जाते हैं । उस प्रकार श्रीमोटा के साथ निकट आने का ज्यादा हुआ । पत्रव्यवहार होने

लगा । उनकी प्रेम-प्रसादी का अनुभव होने लगा । इतनी प्रस्तावना के बाद दिनांक १९-०२-१९६३, मंगलवार के दिन उनके साथ हुए प्रथम सत्संग की बात करूँगा ।

श्रद्धा के अनुसार करना

शिरडीवाले साँईबाबा के प्रति हमारे सब का दिल लगा था, इससे अन्यत्र जाने का मन नहीं होता था, किन्तु मेरी पत्नी कीर्तिदा कहे कि 'चौथी मंजिल पर हरमुखभाई जोगी के वहाँ जो महात्मा पधारे हैं, वे भावनगर में बाल अध्यापनमंदिर में हमारे साथ पढ़नेवाले सोमाभाई★ भावसार के बड़े भाई हैं।' सोमाभाई तब कहते थे कि 'मेरे एक बड़े भाई साधना करते हैं और स्मशान में सोते हैं । दिन में हरिजनशाला चलाते हैं... 'वही महात्मा पधारे हैं । इसलिए एक बार तो जाओ और देखो ।' इससे जाने का तय किया ।

सुबह आठ बजे का समय था । पाट पर बिछाये हुए गद्दी-तकिये पर वे बिराजमान थे । बिलकुल स्वच्छ सफेद लुंगी और सिर पर वैसा सफेद साफ़ा । बाकी का शरीर खुला । चेहरा चमकता, बिलकुल स्वच्छ । आधे-खड़े ऐसी

★श्रीसोमाभाई भावसार प्रसिद्ध बालकाव्यों के कवि, बालकों के शिक्षक, लेखक और स्वातंत्र्य सेनानी थे । दिनांक ८-५-१९८४ के दिन उनका स्वर्गवास हुआ था ।

मुद्रा में बैठे थे । घुटनों पर दोनों हाथ रखकर । उनके सामने की बैठक पर बड़े लंबे बालवाले, गौर वर्ण के तेजस्वी मुखमुद्रावाले सफेद लुंगी पहने हुए प्रौढ उम्र के भाई बैठकर कुछ लिख रहे थे । वे पूज्य श्रीमोटा के शिष्य और निजी सचिव श्रीनंदुभाई शाह थे । दूसरी तरफ यजमान हरमुखभाई जोगी और उनके पुत्र धीरेशभाई बैठे थे ।

श्रीमोटा के पास जाकर मैंने तो नीचे झुककर नमस्कार किये और एक तरफ बैठ गया । हरमुखभाई ने मेरा परिचय देते हुए कहा, 'यह भाई छठी मंजिल पर रहते हैं, ओडिटर हैं ।' उन्होंने भाव व्यक्त किया । मुझे कुछ पूछने का मन हुआ । महात्मा को सब 'मोटा' कहकर संबोधन करते थे, किन्तु मुझे ऐसा कहते संकोच हो रहा था । इससे शुरूआत ऐसे की :

'महाराज, एक-दो प्रश्न पूछ सकता हूँ ?' जरूर पूछो ।

प्रश्न : वेदांती कहते हैं कि मुक्तात्मा का शरीर पंचभूत में मिल जाता है, फिर क्यों वे संसारिओं की किचकिच में पड़ते हैं ? आप क्या कहते हैं ?

श्रीमोटा : गीता में नहीं कहा है कि ईश्वर अवतार लेते हैं ? उसी प्रकार संत भी सूक्ष्मरूप से भी भक्तों का मार्गदर्शन करते होते हैं ।

श्रीमोटा के निजी सचिव श्रीनंदुभाई ने कहा, ‘स्वामी विवेकानंद के प्रसंग में श्रीरामकृष्ण परमहंस ने मार्गदर्शन नहीं दिया था ?’

‘हाँ जी, हमने ऐसा पढ़ा है, सुना है, किन्तु दूसरे संन्यासी और ज्ञानी दूसरा कुछ कहते हैं, इससे शंका होती है । तो क्या करना ?

श्रीमोटा : श्रद्धा के अनुसार करना । जो करते हो वह करते रहना ।

शंका का निवारण

प्रश्न : देह से लुप्त हो गये संतों की लीलाएँ हम देखते और अनुभव करते हैं, फिर भी कभी-कभी कई बार ‘ऐसा होता होगा ?’ ऐसी शंका उत्पन्न होती है । उसका क्या कारण ? उसका क्या निवारण ?

श्रीमोटा : उसका कारण हम थ्री डाईमेन्शनल वर्ल्ड (त्रिपरिमाण विश्व) में रहते हैं, वह है । उन संतों को कोई मर्यादा नहीं होती । इससे हमारी बुद्धि से उनको नहीं नाप सकते हैं । इसलिए श्रद्धा रखनी चाहिए । विदेही संत हमारा हरएक प्रकार से ‘योगक्षेम’ का वहन करते हैं । गीता में कहा है ।’

प्रश्न : मेरे सुनने में आया है कि आपश्री उपासनी महाराज के पास रहे थे ?

श्रीमोटा : हाँ, मुझे प्रसंग मिले थे ।

प्रश्न : आपने साँईबाबा के दर्शन किए हैं ?

श्रीमोटा : नहीं, उस वक्त मेरी उम्र बीसेक साल की थी ।★

कुछ पल मेरे सामने एक दृष्टि से देखते रहे बाद में आपश्री ने धीरेशभाई से कहा, 'साहब को (लेखक को) 'जीवनदर्शन' (उनका एक पुस्तक) पढ़ने के लिए देना ।'

'साहब' का शब्दप्रयोग पूज्य श्रीमोटा कई बार नये मुलाकाती के लिए, बड़ी उम्र के और सार्वजनिक रूप से उच्च स्थानवाले महानुभावों के लिए करते थे ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२)

जप का उद्‌गमस्थान हृदय है । यदि जप हृदय की धड़कन के साथ करें तो ध्यान भी अपनेआप वहाँ रहेगा।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

मुंबई में श्रीमोटा

पूज्य श्रीमोटा दिनांक ३०-१२-१९६२ की जल्दी सुबह मुंबई पधारे । हम चार-पाँच व्यक्ति आपश्री का सत्कार

★साँईबाबा का देहविलय दि. १५-१०-१९१८ के दिन विजयादशमी के दिन हुआ था ।

करने स्टेशन पर गये थे । ट्रेन में से उतरने पर सब ने उनकी चरणरज ली । उन्होंने घर के स्वजनों की खबर पूछी। बाद में 'हम शाम को आयेंगे' ऐसा आपश्री ने कहा और उनके साथ सुरत से आये हुए सेठ श्रीनटवरभाई चिनाई★ के साथ उनके फ्लेट पर वालकेश्वर गये ।

शाम को छ में दस मिनिट पर 'सहकारनिवास' की दूसरी मंज़िल पर श्रीहरमुखभाई जोगी के वहाँ पूज्य श्रीमोटा को लेने गया, तब पूज्यश्री स्नान करने गये थे । स्नान कर के बाहर आते ही यजमान ने पूज्यश्री के सिर और कपाल पर चंदन का लेप किया, बाद में पूजा की । श्रीहरमुखभाई ने रेशमी साड़ी जैसी लुंगी पूज्यश्री को पहनाई, जो छाती से तलवे का एड़ी के नीचे के भाग तक पहुँचती थी । फिर पूज्यश्री ने पाँव में काले गरम कपड़े के कोमल एड़ी बिना के बूट पहने और सब हमारे छठी मंज़िल के कमरे में आये ।

गृहद्वार पर ही लेखक की पत्नी कीर्तिदा एवम् इंदुबहन भट्ट ने आरती से स्वागत किया । पूज्यश्री ने पूछा कि 'कहाँ बैठूँ ।' फिर आपश्रीको सोफे पर बिठाया । उनके

★नटवरभाई चिनाई वर्तमान में विद्यमान नहीं है । श्रीमोटा जब मुंबई पधारते थे, तब सब से प्रथम उनके वहाँ जाते, एक घंटा या एक दिन के लिए, बाद में अन्यत्र जहाँ जाना हो, वहाँ जाते थे ।

अंतेवासी श्रीनंदुभाई सोफे नीचे बैठे । पूज्यश्री एवम् दूसरे स्वजन श्रीनंदुभाई को 'भाई' कहकर बुलाते थे ।

कुंडलिनी कब जागृत होती है ?

पूज्य श्रीमोटा की चरणपूजा दूध और अन्य सामग्री आदि से की । फिर आरती की । तब पूज्यश्री आँखे बंद कर के समाधि में गये हो वैसा लगा - बिलकुल स्थिर और स्तब्ध, मूर्ति के समान । जाग्रत होने पर आपश्री को दक्षिणा और खादी की लुंगी अर्पण की । बाद में अंदर के कमरे में ले जाकर आपश्रीको प्रसाद दिया । बाहर बैठे हुए को प्रसाद बाँटने का आपश्री ने कहा और फिर आपश्री बाहर आये । एकत्रित हुए भाईबहनों का परिचय उनके कहने से किया ।

इंदुबहेन भट्ट ने उनको अनुभव होते *'वाईब्रेशन्स'* - आंदोलनों के बारे में पूछा । पूज्य श्रीमोटा ने कहा कि 'कुंडलिनी जागे तो ही *'वाइब्रेशन्स'* का अनुभव होगा और कुंडलिनी कब जागे ?' जब व्यक्ति शुद्ध, पवित्र बने; कामक्रोधादि षट्विकारों का त्याग करे, तब कुंडलिनी जाग्रत होती है । जिसकी कुंडलिनी जाग्रत हुई, वह व्यक्ति अत्यंत स्फूर्तिवान बनेगा, बिलकुल सात्त्विक कार्य करेगा, प्रभुमय जीवन बितायेगा आदि अच्छे सात्त्विक गुण उसमें प्रगट होंगे ।

जप करने के विषय में

उसी बहन ने पूछा, 'जप बहुत करना नुकसानकर्ता है ?'

श्रीमोटा : नहीं, जितने हो सके, उतने जप करना चाहिए । उसमें बहुत फायदा है । गिनती रखने की जरूरत नहीं है । फिर, यांत्रिक जप करने से कोई फायदा नहीं होगा । भाव से पूर्ण होकर जप करोगे, तब गुरु और शिष्य के बीच एकत्व बनेगा । ऐसी एकता होगी, तब साधना फलित होगी और ऐसी स्थिति पर तब ही पहुँच सकेंगे कि जब भक्त पल-पल ईश्वर-चिंतन करता हो । अर्थात् *'वोल्केनिक'* - ज्वालामुखी के समान भक्ति हो, होनी चाहिए ।

एक पड़ोसी चंपकभाई ने पूछा, 'ह्रीं, क्लीं' इत्यादि मंत्र करने चाहिए या नहीं ?'

श्रीमोटा : ये तांत्रिक मंत्र करने की सलाह नहीं दे सकता । उससे उलटा नुकसान होगा ।

'- तो मैं तेरे पाँव पड़ूँ ।'

इंदुबहन ने कहा, 'संसार के व्यवहार के लिए मैं स्त्री के रूप में मेरी जात को मानती हूँ, किन्तु अन्य संबंधों में मैं कोई फर्क नहीं देखती हूँ, ऐसी स्थिति पर पहुँची हूँ ।'

श्रीमोटा ने आँख में चमक के साथ कहा, 'वह बहुत अच्छा कहा जा सकता है । ऐसा हो तो भगवान प्राप्त होंगे और मैं तुम्हारे पाँव पड़ूँ ।' यह सुनकर उपस्थित सभी जोर से हँस पड़े, तब इंदुबहन ने शरमाकर पूज्य श्रीमोटा के पाँव पकड़कर सिर झुकाया ।

गोपाल ने पूछा, "काया और वचन से भगवान के संबंध में कुछ साधना होती है, किन्तु मनसा यानी कि मन से चाहिए वैसी नहीं होती है तो क्या करना चाहिए ?"

श्रीमोटा : कोई एतराज नहीं । प्रयत्न चालू रखो । श्रद्धा और प्रेम से आगे बढ़ो और काम करते जाओ । इश्वर के मार्ग में अवश्य प्रगति होगी ।

"- तो दूसरे जन्म में फल प्राप्त होगा"

लेखक ने पूछा, 'हमारे पवित्र शास्त्र जैसे कि गीता, रामायण, विष्णुसहस्त्रनाम, श्रीमद् भागवत और रामायण आदि के अंत में ऐसा लिखा गया है कि "इसका पठन करने से अमुक फल मिलेगा,' तो उसका क्या समझना ?"

श्रीमोटा : यह सब लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने हेतु लिखा है । यदि ऐसा ही होता तो जो हजारों बार पढ़ते हैं, वे तो वैसे के वैसे ही कोरे रह गये हैं । हाँ, वह बिलकुल निरर्थक नहीं जाता है । बारबार पढ़ने से उसके संस्कार पड़ते हैं और समय जाते उसका असर

हमारे जीवन पर होता है और यदि आचारविचार सुधर जाँय तो दूसरे जन्म में भी उसका फल प्राप्त होगा ।''

''...उससे कोई लाभ नहीं होगा''

लगभग एक घंटे तक सत्संग करवाकर आपश्री उनके यजमान हरमुखभाई जोगी के वहाँ जाने के लिए खड़े हुए । लिफ्ट के पास रुकने से पहले श्रीचंपकभाई ने श्रीमोटा से कहा, ''मेरे सिर पर आपका हाथ रखो जिससे शांति मिले ।'' श्रीमोटा ने कुछ चिढ़ से जोरपूर्वक कहा, ''लो, यह हाथ रखा ।'' यों कहकर आपश्री ने दो बार उस भाई के सिर पर हाथ रखा और फिर बोले, ''किन्तु उससे कोई लाभ नहीं होगा । मनुष्य को मेहनत करनी चाहिए । संत ऐसे ही कुछ नहीं दे देते हैं । गलत श्रद्धा नहीं रखना चाहिए । हाँ, भक्तिभाव रखो, किन्तु साथ-साथ पुरुषार्थ और साधना जैसा कुछ करना तो चाहिए न ? तो ही लाभ होगा ।'' उतने में *लिफ्ट* आ गई और श्रीमोटा उसमें गए, साथ में उस चंपकभाई को भी ले गये ।

और दिनांक ३१-१२-१९६३ के दिन पूज्यश्री वापस सुरत गये ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(३)

जीवनध्येय के मार्ग में युद्ध में जो बलि दे देगा ।
अपने को धन्य मानते वे ऐसे भाव ग्रहण कर पायेगा ॥

- मोटा

व्यायाम और विद्या के प्रचार के लिए

श्रीमोटा दिनांक २८-१-१९६४, मंगलवार के दिन मुंबई पधारे । मुंबई में नियमानुसार सब से पहले सेठ श्री नटवरभाई चिनाई के वहाँ गये और फिर 'सहकारनिवास' में श्रीहरमुखभाई जोगी के वहाँ पधारे । मुंबई में जितने भी दिन रहना हो तो भी उनका कायमी निवास हरमुखभाई के वहाँ ही रहता था । वहाँ से जिस किसी भक्त का आमंत्रण होता, उसके वहाँ एक-दो दिन के लिए जाते । इस वक्त उनकी योजना थी व्यायाम और विद्या के प्रचार के लिए रुपये बावन हजार एकत्रित करने की ।

विरोधी मत रखनेवाले की भी कदर

दोपहर चौपाटी पर आपश्री एक भाई के वहाँ हमारी विनती से गये । वहाँ से उनको रुपये २५१/- मिले । दो सौ एकावन यानी आज के दो हजार रुपये ।

फिर रात्रि को पूज्य केदारनाथजी के भक्त खांतिलाल मोदी के वहाँ गये । उन्होंने आध्यात्मिक बातों में रस

दिखाया । श्रीमोटा ने 'गुण और भाव' के विकास के लिए यह प्रवृत्ति प्रारंभ की है ऐसा बताया । खांतिभाई ने कहा कि 'जैन धर्म और बौद्ध धर्म सच्चे जीवन में मानता है, किन्तु परम तत्त्व की पहचान तो कोई ही कर सकता है, तो उससे लाभ क्या ?'

श्रीमोटा : वह तो अनुभव कर के जो लगे वही सच ।

खांतिभाई : तो वह अनुभव क्या होगा ?

श्रीमोटा : ऐसी बातें आराम से होती हैं । रात के सवा नौ बज गये हैं । फिर किसी दिन बातें करेंगे और उन्होंने जाने की तैयारी की ।

खांतिभाई : आप न आये होते तो भी चलता । आपको बहुत तकलीफ दी ।

"नहीं, नहीं । आप से मिलकर मुझे बहुत जानने को मिला है, कुछ खोया नहीं है ।" ऐसा श्रीमोटा ने कहा तब उस भाईने कहा, "आपके आगमन से मेरा घर पावन हुआ है...।" दूसरे दिन उन्होंने रुपये १०१/- का चेक भेज दिया । रास्ते में पूज्य श्रीमोटा ने कहा कि 'व्यापारी होते हुए भी खांतिभाई जैसे रत्न आज भी समाज में हैं, वह बहुत अच्छा कहा जा सकता है ।' इस प्रकार आपश्री अपने से विरोधी मत रखनेवालों के मत की भी कदर करते थे ।

देखकर सुख के आँसु आवे ।

दूसरे दिन दिनांक २९-१-१९६४ के दिन पूज्यश्री सेठ ठाकरसी के वहाँ गये थे । सेठ की नम्रता और भावना की उन पर अच्छी असर हुई । रात को चंपकलाल शाह के वहाँ शांताक्रुझ गये । श्रीनंदुभाई ने चंपकभाई की पत्नी नर्मदाबहन को देखकर पूछा, 'आप नाथालालभाई की पुत्री ?' 'हाँ, जी ।' नाथालालभाई साबरमती आश्रम में रहते थे, तब श्रीनंदुभाई भी वहाँ थे । बीच में कितने सारे वर्षों की अवधि फिर भी पहचानने में देर न लगी । वहाँ से रु. ५०१/- का चेक मिला । श्री नंदुभाई रसीद बनाकर श्रीमोटा को देवे और श्रीमोटा दाता को देवे ऐसा कई बार देखने में आया है और उसके बाद पूज्यश्री हाथ जोड़कर विदाय माँगे तब सामनेवाला गद्‌गद हो जाता था ।

वापस आते हुए लगभग चालीस वर्ष पुराने भक्त-मित्र (एक समय के श्रीमोटा के उपरी अधिकारी) श्री हेमंतकुमार नीलकंठ के वहाँ खार गये । श्रीमोटा ने हेमंतदादा को बहुत प्रेम से आलिंगन दिया, जो देखकर सुख के आँसु आ गये । अलग होते समय दोनों ने फिर एकदूसरे को आलिंगन दिया । रात घर पहुँचते ग्यारह बज गये थे ।

‘दूसरे नहीं समझ सकेंगे’

दिनांक ३०-१-१९६४, गुरुवार, श्रीनंदुभाई अकेले थे, तब उनके साथ पूज्य गोदावरीमाता (साकोरीवाले) के बारे में बातें हुई । श्रीउपासनीबाबा बिना कारण दुर्गाबाई की झूठी शिकायतों के कारण गोदावरीमाता को (साधक अवस्था दरमियान) मारते थे । ‘वह गलत नहीं कहा जा सकता है ?’ ऐसा पूछने पर श्रीनंदुभाई ने कहा, ‘उनका वह वर्तन हमारी समझ के बाहर है । बिना कारण किसीको मारना वह श्रीउपासनीबाबा का एक लक्षण था । श्रीमोटा में भी ऐसा लक्षण है । वे सब किस हेतु से वैसा वर्तन करते होंगे वह नहीं समझ सकेंगे ।’

इतने में श्रीमोटा पधारे और खाट पर बिराजे । उनके सामने हमारा प्रश्न श्रीनंदुभाई ने प्रस्तुत किया । इससे पूज्यश्री ने कहा, ‘दुर्गाबाई गोदावरीमाता को मारते, वह उनके स्वार्थ के कारण और श्रीउपासनीबाबा मारते वह गोदावरीमाता के उत्कर्ष के लिए, जो दूसरों की समझ में नहीं आ सकेगा । मैं ऐसा अर्थ करता हूँ ।’★

★श्रीमोटा उनके साधनाकाल दरमियान श्रीउपासनीबाबा के आश्रम पर बाबा के सूक्ष्म संकेत से गये थे, तब श्रीमोटा को उनके (बाबा के) सामने छ-सात दिन शौच-मूत्र में ध्यानमग्न बैठे रहना बना था । (‘जीवनदर्शन’ से)

योगीजनों की निराली बातें

श्रीमोटा ने अपनी एक बात कही : "मेरे गुरुमहाराज ने एक बार मुझे एक व्यक्ति रास्ते से जा रहा था, उसे दिखाकर कहा, 'उस व्यक्ति को पत्थर मार । मार, मार साले को, रक्तरंजित हो जाय उस प्रकार मार ।' गुरु का हुक्म कैसे तोड़ा जा सकता है ? इससे उस अनजान व्यक्ति को मैंने पत्थर मारा, भगवान का नाम लेकर । मैं क्या करूँ ? मैंने तो हुक्म का पालन किया । वह व्यक्ति मेरे पास आकर मुझे धमकी देने लगा, 'अबे क्यों पत्थर मारा ? मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था ?' मैंने कहा, 'देखिये, मेरी इच्छा से नहीं मारा है । उधर वो गुरुमहाराज (धूनीवाले दादा) बैठे हैं, उन्होंने तुम्हें मारने का मुझे हुक्म किया था । इससे मैंने पत्थर मारा ।' इससे वह गुरुमहाराज के पास गया और पूछा । तब गुरुमहाराज ने उनकी आदत के अनुसार उसे बराबर धमकाया और कैसा खराब काम करने जा रहा था वह कह दिया । ऐसे उसे खराब काम करते हुए रोकने के लिए पत्थर मारा था । वह शरमाकर गुरु के पाँव में झुक गया और रोकर उसने पश्चात्ताप व्यक्त किया । ऐसे योगीजनों की बातें निराली होती हैं ।"

साँईबाबा ने पत्थर मारा

उसके बाद साँईबाबा ने उनको पत्थर मारा था, वह बात कही । पूज्यश्री आज अनोखे भाव में थे । आनंद से बात कहते थे, तब भाई धीरेश सह हम तीन व्यक्ति ही उपस्थित थे । श्रीनंदुभाई फोन पर बात कर रहे थे । उनको खलल न हो, इसलिए हम तीनों जने श्रीमोटा के बिलकुल पास बेठे थे । श्रीमोटा खाट की किनार पर झुककर बोलते थे । इससे पूज्यश्री के पैर दबाने का भी हमें मौका मिला । उन्होंने कहा, ‘‘जब मैं कराची (१९३८) में था, तब एक बार नरक चतुर्दशी की रात समुद्र पर गया था और अच्छी चट्टान देखकर उस पर ध्यान करने बैठा । जब ध्यान में लीन होने की तैयारी में था, तब एक फ़क़ीर जैसा दिखनेवाला पुरुष मेरे से थोड़ी दूर आकर खड़ा रहा । इससे मैंने जाग्रत होकर खड़े होकर फ़क़ीर को सलाम की ।’

फ़क़ीर ने मुझे पूछा, ‘इधर क्यों बैठा है ?’

‘भगवान के ध्यान में ।’ जवाब दिया ।

‘नहीं, इधर तुम नहीं बैठ सकते ।’

‘क्यों ?’

‘यह मस्त लोगों की जगह है ।’

‘मुझे भी मस्त बनना है ।’

'इससे फ़क़ीर ने गुस्सा होकर कहा, ''तुम इधर नहीं बैठ सकते । इधर से चले जाओ ।''

'नहीं जा सकता ।' हमने तो निर्भयता से कहा ।

''उठ जा, नहीं तो पत्थर मार के सिर फोड़ डालूँगा।''

'अच्छा, मारो'' उतनी ही निर्भयता और दृढ़ता से मैंने जवाब दिया ।

''इससे फ़क़ीर ने एक बड़ा पत्थर उठाकर मेरे सिर पर फेंका । पत्थर सिर को नहीं लगा, किन्तु सिर के बाल को सलामत रीति से स्पर्श कर के निकल गया । बच जाने से आश्चर्य हुआ । उतना ही नहीं, पूरे शरीर में बिजली का मानो झटका लगा ! बहुत आनंद आया । दिल में मानो दिल से लग गया कि ऐसा बड़ा पत्थर ऐसी सलामत रीति से फेंकनेवाला मानव कोई सामान्य नहीं हो सकता है, किन्तु कोई दैवी आत्मा ही हो सकता है । इससे हमने तो नीचे झुककर उनके चरण पकड़ लिए और तुरंत ही गहरे ध्यान में उतर गया । कुछ समय बाद पाँव की पकड़ छूट गई या उस महात्मा ने छुड़ा ली और जल्दी सुबह मैं अपने ठिकाने पर गया ।''

साँईबाबा की मदद

आज की बात सुनकर हम सब को बहुत आनंद आया । आज का गुरुवार सफल हुआ । श्रीमोटा ने

आगे कहा,

"उस वक्त कराची में से 'कराची डेईली' नामक दैनिक प्रकट होता था, जिसके तंत्री शर्माजी कर के थे । उनसे मुलाकात हुई । उनकी उँगली पर एक अँगूठी थी, जिस पर एक चित्र जड़ा हुआ था । उसे देखकर मैंने पूछा, 'यह किसका चित्र है ?' 'साँईबाबा का ।' ऐसा? मैंने गत दिन पर उनके दर्शन किये ।' और रात को हूई सभी बात उन्हें कही, तब शर्माजी ने पूछा, 'यह किस प्रकार हो सकता है ? उनका देहत्याग तो १९१८ में हुआ था । आज उस बात को २० साल हुए । वे कहाँ से होंगे ?...'

आपको बड़ा चित्र देखना है ? ऐसा कहकर गले में पहनी हुई चेन के लोकेट में जड़ा हुआ साँईबाबा का चित्र दिखाया । वह देखकर मैंने कहा, 'बराबर, उनका ही मुझे सादृश्य दर्शन हुए थे ।'

'फिर तो मेरी अनेक बार साँईबाबा से मुलाकात हुई ।'

हमने पूछा , 'यह किस प्रकार संभव है ?'

श्रीमोटा : साँईबाबा अमुक टाइम पर कहाँ होंगे, वह मैं ध्यान द्वारा देख लेता था । इस प्रकार एक बार साँईबाबा ने कहा था कि 'तुम मेरे स्थान पर शिरड़ी जाओ ।' और मैं एक बार १९४६ में प्रायः शिरड़ी गया

था किसी के★ साथ ।

आगे श्रीमोटा ने कहा, 'मैं साँईबाबा ने बताई हुई साधना करते करते जंघा, काँख और ऐसी जगह पर जल गया था, डॉक्टर ने वह देखकर कहा था कि 'कोई मनुष्य इस प्रकार नहीं जल सकता है । यह तो विचित्र लगता है ।' बाद में साँईबाबा ने वह साधना ज्यादा समय नहीं करने का हुक्म किया और मैंने वह छोड़ दी ।'

'साधन करना चाहिए मनवा !'

शाम को साढ़े चार बजे पेडर रोड पर भास्करभाई अध्यारु के वहाँ श्रीमोटा और मंडली पहुँची । फ्लेट का दरवाजा खुला था । अगरबत्ती की सुगंध वातावरण में फैली हुई थी । श्रीमोटा के गृहप्रवेश करते ही श्रीमती स्त्रोतस्विनीबहन ने कुमकुम, अक्षत् और फूलहार से पूज्यश्री का स्वागत करते एक सोफे पर बिठाये । खास बातचीत नहीं हो रही थी, इससे श्रीमोटा की अनुमति लेकर भास्करभाई ने भजन की रेकोर्ड बजाई । 'चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्' और 'साधन करना चाहिए मनवा' ऐसे

★श्रीपरसदभाई एन. मेहता को शिरड़ी में एक महीने तक मौन में बिठाये थे । परसदभाई कराची में 'सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी' के मेनेजर और कवि नरसिंहराव दिवेटिया के दामाद थे । श्रीमोटा उन्हें 'बापु' कहते थे ।

दिलीपकुमार रॉय द्वारा गाये हुए भजन सुने । वातावरण में सात्त्विक, गहरी और आनंददायी गंभीरता छा गई । कोई नहीं बोल रहा था । श्रीमोटा आधी बंद आँखों से धीरे-धीरे ताली बजा रहे थे ।

भजन पूरे होने के बाद श्रीमोटा ने कहा, 'शंकराचार्य महाप्रभु ने सिर्फ वेदांत लिखा है, किन्तु साथ-साथ में कैसा भक्तिभाव है । दोनों का सुमेल है, इससे हमारे पर असर होता है ।'

उसके बाद भास्करभाई ने दान की रकम रुपये २५१/- का लिफाफा और अगरबत्ती का एक पेकेट श्रीमोटा को अर्पण किया, तब पूज्यश्री ने पति-पत्नी दोनों को किसी दिन आश्रम पर आने का कहा । स्त्रोतस्विनीबहन ने पूज्यश्री के प्रति उनका भाव कायम रहे ऐसा करने की विनती की । पूज्यश्री मुस्कराये और विदा हुए ।

हमारी मंडली के चीमनभाई महाजन ने रास्ते में कहा कि 'अभी प्राप्त हुई शांति और सात्त्विक आनंद हर जगह नहीं मिलता है । यह तो उन पतिपत्नी की भावना और पूज्य श्रीमोटा की उपस्थिति का प्रताप था ।'

श्रीमोटा ने कहा, 'साधन करना चाहिए मनवा ।' बराबर **मोटा** ! सभी ने स्वीकार किया ।

वेदांत बड़ा शास्त्र है किन्तु...

उसी दिन शाम को साढ़े छ बजे पूज्य श्रीमोटा हमारे घर पर पधारे । उनके साथ चार-पाँच भाई थे । कमरे में प्रवेश करते ही देहली पर के स्वस्तिक को नीचे झुककर श्रीमोटा ने स्पर्श कर के प्रणाम किये । और फिर अंदर पधारे । उनका कुमकुम, अक्षत् और फूलहार से स्वागत किया गया । अन्य भाई-बहन पहले से आकर बैठे थे ।

उपस्थित रहे हुए में से एक भाई ने मौनमंदिर की टेकनीक समझाने की विनती करने पर श्रीमोटा ने उस बारे में समझाया ।

'चिन्मय मिशन' के एक मित्र ने जप और ध्यान के बारे में प्रश्न पूछा । पूज्यश्री ने कहा, 'जप वह सब से श्रेष्ठ साधन है । वेदांत वह सब से बड़ा शास्त्र है, किन्तु जहाँ तक हम उस पर अमल न करें, वहाँ तक क्या काम का ? अकेली थियरी से, सिद्धांतों से क्या लाभ ? काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि जहाँ तक फीके न पड़े, वहाँ तक शास्त्र हमारी मदद पर नहीं आयेंगे...।'

श्रीनंदुभाई पूरा समय आँखें बंद रखकर सुनते रहते हैं, कभी बीच में नहीं बोलते हैं ।

उसके बाद एक संबंधी बहन ने पूज्य श्रीमोटा को अर्पण करने के लिए भेजी हुई खादी की लुंगी, खेस और

एक चद्दर कीर्तिदा ने उस बहन का नाम बताकर अर्पण किया । श्रीमोटा ने दोनों हाथों से उसका स्वीकार किया ।

'....वह लक्ष्य में रहे सदा'

उसके बाद कीर्तिदा ने तह किया हुआ हाथ का रूमाल श्रीमोटा को दिया । तह खोलते हुए उन्होंने पूछा 'क्या है माँ ?' अंदर बारीक लाल रंग की पुड़िया थी, वह उन्होंने खोली । अंदर गीनी थी । यह देख पूज्यश्री तुरंत खड़े हो गये और प्रतिदिन होनेवाली सेवापूजा की जगह पर उनको ले जाने का हमें कहा । फिर अंदर के कमरे में गये । विष्णुभगवान और साँईबाबा के चित्र के सामने श्रीमोटा खड़े रहे । आपश्री ने गीनी को चित्र के सामने अर्पण की और फूल, कुमकुम से उसकी पूजा की और दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किये । बगल में दीया और अगरबत्ती चालू थे । हम बोल उठे, 'साँईनाथ महाराज की जय ! श्रीमोटा महाराज की जय !' आपश्री ने कहा, 'उसमें सब आ गये ।' हमने उनके चरणस्पर्श किए ।

पूज्यश्री गीनी दिखाकर बोले कि 'इसे सँभालना, पूजा कर के प्रार्थना करना -'

'जो लक्ष्मी सुख नित्य वैभव और ऐश्वर्य दे पूर्णदा,
वह लक्ष्मी प्रकाशित करे जीवन को, यह लक्ष्य में रहे सदा ।'

उसके बाद आपश्री बाहर के कमरे में पधारे । उन्होंने

धीरे से कहा, 'कीर्तिदा, टाइम हो गया है मा, अब ।' फिर उन्होंने बिना शक्कर की चा ली और उपस्थित रहनेवालों को प्रसाद दिया ।

पूज्यश्री ने खड़े होकर सब को नमस्कार कर के विदा ली । मैं भी *लिफ्ट* तक उनके साथ गया, तब आपश्री ने कहा कि 'जा भाई, अंदर सब बैठे हैं,' और उन्होंने मेरे गाल चूम लिए । दिल नाच उठा । मैंने उनके चरणस्पर्श किये । महाजन बुक डेपोवाले श्रीचीमनभाई ने कहा कि 'रतिभाई, श्रीमोटा ने आपका स्वीकार किया है, ऐसा मानिए ।' थेन्क गोड !

'...वापस देते ही नहीं हैं'

दिनांक ३१-१-१९६४, शुक्रवार के दिन पूज्यश्री रात की ट्रेन में सुरत जाने निकले थे । उनको विदा करने के लिए स्टेशन पर अच्छी संख्या में भक्त आये थे । पूज्यश्री को देने के लिए मैंने रुपये ११/- श्रीनंदुभाई को हमने दिये । वह देखकर श्रीमोटा ने कहा, 'नहीं, नहीं, कुछ नहीं ले सकते हैं । वापस दे दो ।' **मोटा** आपको दी हुई गीनी आपने वापस दे दी और कुछ रखा नहीं । मैंने दलील की ।

तब पूज्यश्री ने कहा, 'अरे ! पागल हुए हो क्या ! हमें दिया हुआ हम वापस करते ही नहीं हैं ।' हम सब सुनते रहे !

ट्रेन जाने की तैयारी में थी । भक्त नीचे उतर गये । श्रीमोटा दरवाजे के पास आकर खड़े रहे और 'हरिःॐ' के घोष के स्थान ट्रेन रवाना हुई ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(४)

जो जीव अपनी जीवदशा में केंचुए की तरह लोटा करे और फिर साधना की बातें करता है, वह तो उसका संपूर्ण अज्ञान और ढोंग है ।

('जीवनपराग' से) – **मोटा**

पूज्य श्रीमोटा दिनांक १८-२-१९६४, मंगलवार के दिन मुंबई पधारे और दिनांक २०-२-१९६४ तक रुके । 'सहकारनिवास' में हरमुखभाई जोगी के वहाँ हर वक्त के समान उनका मुकाम था ।

सिर्फ पढ़ने से कुछ नहीं होगा

शाम के समय पूज्यश्री हमारे निवास पर पधारे । टेबुल पर रखा हुआ 'विवेकचूड़ामणि' पुस्तक देखकर हम से पूछा 'इसमें क्या आता है ?'

आत्मा और अनात्मा के संबंध में विवेकविचार इत्यादि । हालाँकि उसके तीन श्लोक स्वामी चिन्मयानंदजी ने करवाये हैं । इससे ज्यादा मालूम नहीं है ।'

'वह विवेकविचार कब आवे ?' श्रीमोटा ने पूछा ।

‘प्रभुकृपा हो तब’

‘नहीं’ उन्होंने कहा, ‘जब दहकते ज्वालामुखी के समान इच्छा ईश्वर के लिए जागे तब आवे । ऐसा इसमें आता है ?’

‘ज्यादा मालूम नहीं हे ।’

‘तो सिर्फ पढ़ने से कुछ नहीं होगा । उसका अनुभव करना चाहिए ।’ आपश्री ने भारपूर्वक कहा, ‘शिवोऽहम् शिवोऽहम्’ किया ही करे, फिर भी हम जीवदशा में ही राचते रहें, वह किस काम का ?

‘उससे संस्कार तो मिलते हैं न ?’

‘मानसिक मिलते हैं, हृदय के नहीं ।’

‘तो उपाय क्या, **मोटा** ?’

‘प्रभु के लिए दहकती, प्रबल भावना’ । उसे पाने की इच्छा होनी चाहिए । **जहाँ तक हमारा आचरण नहीं सुधरेगा और विकार फीके नहीं होंगे, वहाँ तक समझना कि हम आगे नहीं बढ़े हैं ।** ऐसा ज्ञान किसी काम का नहीं ।’ पूज्यश्री ने बहुत भारपूर्वक समझाया ।

श्रीमती सुमतिबहन की मुलाकात को

दिनांक १९-२-१९६४, शाम को सवा चार बजे हम सिंधिया स्टीम नेविगेशन कंपनी के मेनेजिंग डायरेक्टर श्रीमती सुमतिबहन मोरारजी को मिलने गये । पूज्यश्री के साथ तीन-चार जन हो ही ।

सुमतिबहन को देखकर नमन करने का मन हो जाय ऐसा उनका जाज्वल्यमान व्यक्तित्व । उनकी बैठक की दाहिनी ओर महाप्रभुजी और श्रीनाथजी के चित्र रखे थे । श्रीनाथजी के वे भक्त हैं, ऐसा पता लगा था । श्रीमोटा ने आश्रम के मौनमंदिरों का हेतु बताया । भाईओं और बहनों में 'गुण और भाव' विकसित हो, उसके लिए की उनकी योजना की रूपरेखा बताई और साठ हजार रुपये एकत्रित करने का अपना संकल्प का कहा और उसके लिए 'प्रेमप्रसादी' लेने घूमता हूँ ऐसा भी बताया । आगे फिर कहा कि 'प्रभुकृपा से ही इस फंड का संकल्प हुआ है । उसे पूरा करना होगा तो करायेंगे । उसका हर्ष भी नहीं और शोक भी नहीं है ।'

सुमतिबहन ने श्रीनाथजी बाबा के चित्र की ओर उनका हाथ कर के कहा, 'इनकी ही कृपा से यह सब (कंपनी का कारोबार) चल रहा है । अपना कुछ भी नहीं है ।' यह सुनकर ही श्रीमोटा की आँखो में आँसु आ गये ।

कुछ देर बाद सुमतिबहन ने कहा, 'मौनरूम में बंद रहने के बदले पूरा वक्त उसे (भगवान को) याद करते रहे तो चलेगा ?'

श्रीमोटा : हाँ, जरूर चलेगा ।

आपश्री किसीके अभिप्राय का खंडन नहीं करते थे। बाद में उन्होंने फंड के लिए पुनरोच्चार भी किया नहीं, विदा होते हुए श्रीमोटा ने कहा, 'आप से मिलकर बहुत आनंद हुआ। ऐसा सत्संग करने का लाभ मिला।'

'लाभ तो मुझे मिला, आपके दर्शन हुए।' सुमतिबहन ने ऐसा कहा और ओफिस के दरवाजे तक विदा करने आये।

लगभग साढ़े तीन बजे मदनमियां नाम के एक भजन गायक ने हरमुखभाई के वहाँ आकर श्रीसाँईबाबा के भजन श्रीमोटा को सुनाए। उसका बुलंद आवाज, मीठापन और भाव श्रीमोटा को पसंद आये। श्रीनंदुभाई के हाथ से आपश्री ने भजनगायक को रुपये २/- दिलवाये।

कन्याओं के लिए प्रेम

श्रीमोटा भूलेश्वर में किसी एक व्यक्ति की पीढ़ी पर गये थे। वहाँ से रुपये १००१/- अर्थात् आज के दस हजार रुपये मिले। उसके पीछे एक छोटा सा किन्तु रसिक प्रसंग है। कॉलेज में अभ्यास करनेवाली दो कन्याएँ एक बार सुरत आश्रम पर गईं थी। उन्हें पूज्यश्री पर एकदम भक्तिभाव जाग्रत हुआ और आपश्री को मुंबई अपने घर भोजन के लिए आने का आमंत्रण दिया। श्रीमोटा ने कहा, 'फंड में कुछ दोगे तो आऊँगा।'

'मेरे भाई उनकी पीढ़ी में से कुछ देंगे और यदि वे नहीं देंगे, तो हम हमारी बचत में से देंगे, किन्तु मुंबई हमारे वहाँ जरूर पधारना ।'

श्रीमोटा उन पर अत्यंत प्रसन्न हुए थे । इससे इस वक्त ऊपर की जगह वे गये थे । वहाँ से विदा लेते हुए श्रीमोटा ने दोनों बहनों को अच्छी तरह अभ्यास करने का सूचन किया । वे बहनों ने अत्यंत भाव से पूज्यश्री के चरणस्पर्श कर के कहा, 'फिर एक बार आप पधारना ।'

पूज्यश्री विद्यार्थी भाईबहनों को गठ्ठीले बदन का बनने और अच्छी तरह एकाग्रता से अभ्यास करने का कहते थे । विद्यार्थिओं के प्रति आपश्री की भावना एक विद्यार्थी भक्त को लिखे हुए पत्र पर से समझ सकेंगे । पत्र का कुछ हिस्सा नीचे दिया है ।

'हमें तो शून्य होना है'

॥ हरिःॐ ॥ रांदेर, १५-३-१९६५

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र मिला... हम जहाँ तक सकल प्रकार की समझ, न खुलनेवाली गाँठ इत्यादि से मुक्त नहीं होंगे, वहाँ तक हम भक्ति में जुड़ना; मिलना, गलना नहीं कर सकते । हमें तो शून्य होना है । इससे हमें तो घर में और बाहर एकरस होना है ।

वर्तमान में तुम्हें अत्यंत हुलास से, उत्साह से लगे रहना है । इस बार पास होना है । उसके लिए मेहनत किये बिना नहीं चलेगा । अभी तुम्हारे अभ्यास से मुझे संतोष नहीं है । बहुत उत्साह से हो सके उतना ज्यादा समय अभ्यास में बिताना । समय बिलकुल बरबाद नहीं हो, उसका ध्यान रखना । मेरे पर कृपा करना । तुम पास होगे तो ही मुझे चैन मिल सके । अभी तुम्हें एकलक्ष होने की खास जरूरत है । यदि मिले हुए कर्म में एकलक्ष नहीं हो सके तो फिर भगवान में किस प्रकार होंगे ? वहाँ सब के समाचार पूछना ।

द. तुम्हारे **मोटा** का सप्रेम प्यार

पूज्यश्री स्वयं बहुत महत्त्वाकांक्षी, बुद्धिमान, मजबूत और मेहनती 'फर्स्ट क्लास' विद्यार्थी एवम् आदर्श शिक्षक भी थे । इससे उन्हें विद्यार्थिओं के लिए बहुत फिक्र रहती थी, वह ऊपर के पत्र में से प्रतीत होता है ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५)

अपने सत्त्व को तुरंत पहचान सके ऐसा आविर्भाव मुक्तात्माओं साधारण रीत से नहीं होने देते हैं ।

('जीवनपराग' से) – **मोटा**

बीमार भक्त का असर

पूज्य श्रीमोटा दिनांक ४-३-१९६४ के दिन मुंबई आकर पूणे गये । वहाँ से दूसरे दिन मुंबई आये, तब सीधे हर-किसन हॉस्पिटल में दाखिल हुए एक बहुत बीमार भक्त को देखने गये । मरीज को देखने के बाद उन्होंने मरीज के सगेसंबंधिओं के साथ बहुत सहानुभूति से बात की तथा भगवान को प्रार्थना करने का सूचन किया और जाते-जाते कहा, 'समय पर बचनेवाला सौ साल जीवित रहता है, ऐसी हमारे यहाँ कहावत है न ? प्रभु जो करे वही सही ।' इस प्रकार आपश्री दो-तीन बार बोले । बाद में पता लगा कि उस भाई का स्वास्थ्य सुधर रहा था । उस भाई को जब चार जितना बुखार था, तब श्रीमोटा को भी उतना ही बुखार था, जुकाम भी सख्त था ।

'संतबंत नहीं होना है'

होस्पिटल से हरमुखभाई जोगी के वहाँ पधारे, तब आपश्री बहुत गंभीर दिखते थे । कुछ देर बाद सेठ नटवरभाई चिनाई का फोन आया । श्रीनंदुभाई उपस्थित नहीं होने से श्रीमोटा ने स्वयं 'रिसीवर' लेकर बात की । सेठ द्वारा कुछ मज़ाक़ में बोला गया होगा या क्या था, जिससे आपश्री थोड़े गरम होकर बोले :

'भाईसाहब ! आप हमारे पर ऐसा आरोप लगाते हो,

वह कैसे चलेगा ?... यह अच्छा नहीं... आपको हर वक्त हमारे कार्यक्रम की सूचना तो देते हैं...दया तो आपको हमारे पर करना है... हमें संतबंत नहीं होना है । मानव का मानव के साथ का व्यवहार हो ऐसा व्यवहार हम रखते हैं और रखेंगे.... नहीं, भोजन के लिए नहीं आ सकेंगे... उतना समय फंड के लिए जाने में उपयोग करें तो लाभ होगा... नहीं, मिलने भी नहीं आ सकेंगे । जय जय !' और उन्होंने 'रिसीवर' रख दिया । सामान्य नियम अनुसार श्रीमोटा मुंबई पधारे, तब सब से पहले चाय पीने के लिए भी श्रीनटवरभाई के वहाँ जाते और वहाँ से जहाँ जाना हो वहाँ जाते ऐसा उनके साथ संबंध था ।

इस पर से समझ सकेंगे कि कोई ऐसा कारण हो, तब पूज्य श्रीमोटा चाहे जैसे महाराजा को भी सुनाने में कमी नहीं रखते थे ।

'ढोंगी संत'

पूर्वोक्त घटना से थोड़ा बहुत मिलता-जुलता एक दूसरा प्रसंग याद आता है, जिसमें बिना सोचे ऐसा-वैसा बोलने के लिए श्रीमोटा ने एक भक्त को बराबर पाठ सिखाया था । श्रीमोटा का स्वास्थ्य आखरी वर्षों के दरमियान अच्छा नहीं रहता था, तब एक भक्त बोल उठा, '**मोटा**, आपको क्यों बीमारी आयेगी ? ढोंग करते हो !'

एक से ज्यादा बार वह भाई ऐसा बोले । इससे श्रीमोटा ने कहा, 'तुम मुझे सोने का मुकुट पर 'ढोंगी संत' यह शब्द कोर कर के दो । मैं वह जाहिर में पहन कर दिखाऊँगा ।' और वह भाई फँस गये । बहुत माफी माँगी, किन्तु श्रीमोटा ने उसको नहीं छोड़ा । उस भाई को 'ढोंगी संत' के शब्दोंवाला सोने का मुकुट बनाकर श्रीमोटा को देना पड़ा । श्रीमोटा ने एक सार्वजनिक समारोह दरमियान उसे पहनकर फोटो भी खींचवाये थे, बाद में उसके जो भी पैसे मिले, वह लोकहित के कार्य में खर्च किए ।

'लड्डू उधार नहीं दोगे ?'

दूसरे दिन श्रीमोटा हमारे वहाँ भोजन के लिए पधारे थे । उनके सामने बुंदी के चार लड्डू रखे गये । उस समय चिनाई सेठ की पुत्रवधू आई थी, उन्हें दिखाकर श्रीमोटा ने नम्र स्वर से पूछा, इनके बच्चों को लड्डू देने के लिए मुझे यह उधार देंगे क्या ? स्वर में क्या मार्दवता भरी हुई थी ! हमने कहा, 'प्रभु, यह आपके लिए ही हैं, और आपके ही हैं, दिजीये न । ज्यादा लाता हूँ ।' और चार लड्डू का पेकेट उस बहन को दिया ।

दूसरे दिन सुबह आपश्री सुरत जानेवाले थे, तब हम सब हरमुखभाई के घर गये । तब श्रीनंदुभाई ने एक पुड़िया कीर्तिदा को दी । घर जाकर खोला, तो बुंदी के छ लड्डू

निकले । पूज्यश्री ने ब्याज के साथ लड्डू वापस किये । उधार माँगे थे न ? इससे वापस किये । कैसी व्यवहार-दक्षता ! आपश्री की ऐसी व्यवहारदक्षता का अनेक बार अनुभव हुआ है ।

संतानों को प्यार करना

श्रीमोटा विदा ले रहे थे, तब हमने चरणस्पर्श किये । आपश्री ने कहा, "बालकों को प्यार करना । करोगे न ?" "जरूर प्यार करेंगे, **मोटा** ।" हमने जवाब दिया । संतानों को प्यार करने के लिए माँबाप को आपश्री हमेशा टोकते । जहाँ घर में कलह चलता हो, उसे तो आपश्री बिलकुल सहन नहीं करते थे । सीधे या परोक्ष रूप से उस पर प्रहार किये बिना ना रहे ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(६)

अच्छा या बुरा का हमें कुछ नहीं सोचना,
किन्तु सब में से भाव को नित्य पहचानना ।

('जीवनपराग' से) – **मोटा**

जीवन के संबंध में कैसा अभिगम रखना चाहिए ?

हम दिनांक १२-५-१९६४ के दिन सुरत आश्रम पर गये थे, तब पूज्यश्री ने पूछा, 'धंधा कैसा चल रहा है ?'

ऐसा पूछा । 'अच्छा चल रहा है, किन्तु **मोटा** ! एक पुराने और निकट के संबंधवाले के साथ मतभेद होने से उनका काम छोड़ दिया । इससे दुःख तो होता है, किन्तु वह सब भूल जाने का प्रयास करता हूँ ।'

'उत्तम' श्रीमोटा ने कहा । और 'जो होता है, वह अच्छे के लिए ही होता है' ऐसा मानने सलाह दी । उसके संदर्भ में उन्होंने वडोदरा के एक बड़े व्यापारी हरिभक्त हो गये उनकी बात की । जब उस व्यापारी को लाखों का नुकसान हुआ, तब उसने भगवान के गुणों की प्रशंसा करते काव्य लिखा । जीवन के संबंध में ऐसा अभिगम रखना चाहिए ।

नियमित बही लिखने के आग्रही

उतने में अन्य भक्त आये । तब पूज्य श्रीमोटा ने हिसाब की बही नियमित लिखने बाबत श्रीभीखुकाका★ को बुलाकर कहा, 'देखिये भीखुकाका, ठक्करबापा की रोकड़ जाँच करने की रीति के अनुसार आपको कहना है

★स्व. भीखुकाका जहाँगीरपुरा, कुरुक्षेत्र में आश्रम हुआ, उसके पहले से पूज्य श्रीमोटा के साथ जुड़े हुए थे और व्यवस्थापक ट्रस्टी के रूप में बीसेक वर्ष तक और अंतिम श्वास तक आश्रम की सेवा की थी । वे भजन अच्छे राग से गाते थे । उन्होंने स्वतंत्र्यसंग्राम में भी हिस्सा लिया था । पतिपत्नी दोनों ने अपना सब कुछ श्रीमोटा को अर्पण कर दिया था और आश्रमवासी बन गये थे ।

कि बही में जो सिलक बताई जावे उतनी रकम थैली में से निकलनी चाहिए । और हररोज की बही लिखी हुई होनी चाहिए । दिखाना कहाँ तक पक्का हिसाब लिखा गया है ? भीखुकाका सेवक की तरह देखकर बोले, **'मोटा,** कल तक का हिसाब लिखा हुआ है ।'

'श्रीरोकड़ बाकी लिखी है या नहीं ? आप तो कई जगह वह स्थान खाली रखते हो, वह नहीं चलेगा ।' भीखुकाका ने 'अच्छा' कहकर बही रख दी ।

श्रीमोटा ने आगे कहा, 'ठक्करबापा कई बार अचानक श्रीरोकड़ बाकी जाँचने, गीनने आ जाते और हम साहब उसमें पास हो जाते थे । यह देखकर वे मुझे शाबाशी देते ।'

शाम को पाँच बजे भोजन के बाद श्रीमोटा बाहर पलंग पर सो गये । श्रीनंदुभाई आये और श्रीमोटा का बायाँ पैर दबाने लगे । कुछ देर बाद उनकी जगह हमने ली और थोड़ी सेवा की ।

सूर्यास्त हुआ और अंधेरा हो गया था । पूज्यश्री ने सरोजबहन कांटावाला को भजन गाने का कहा । उन्होंने भजन गाये । वायुदेव मोगरे की खुशबु फैला रहे थे । तीनेक माइल दूर तापी नदी पर का पुल दिख रहा था । आश्रम का वातावरण आह्लादक था । कुछ देर बाद

आश्रमवासी सोने की तैयारी करने लगे । यहाँ आठ बजे बाद सब शांत हो जाता है और जल्दी सुबह चार बजे आश्रम की प्रवृत्ति शुरू हो जाती है ।

'भगवान का अनुग्रह'

दूसरे दिन जल्दी सुबह पूज्यश्री ने हमें पूछा, 'रात को नींद बराबर आई थी ?' 'हाँ जी ।'

फिर लाइट बंद कर के आराम से गद्दी पर बैठने को कहा । मौन के आनंद का अनुभव किया और मानसिक रूप से हरिस्मरण करते रहे । आधे घंटे के बाद पूज्यश्री के कहने से सत्संग शुरू किया ।

प्रश्न : 'भगवान शंकराचार्य ने कहा है कि 'तीन वस्तु मिलना दुर्लभ है । मनुष्यजन्म (मनुष्यत्वम्), मुमुक्षुता और महान पुरुष की संगत । यदि यह मिले तो भगवान की कृपा समझना ।' आप इस बारे में कुछ कहेंगे ?'

श्रीमोटा : 'मनुष्यत्व यानी मनुष्य का जन्म मिलना उसमें ईश्वर की कृपा होने का भगवान शंकराचार्य कहते हो तो वह मुझे समझ में नहीं आ रहा है । मनुष्यजन्म उसके कर्म का परिणाम है । अन्य दो बातें बराबर है । फिर भी 'मनुष्यत्वम्' शब्द का गहराई में तात्त्विक विचार करें तो उसका अर्थ समझना आवश्यक है । 'मनुष्यत्व' यानी हड्डी–माँस–चमड़ी का देह नहीं । जीवदशावाला शरीर नहीं,

किन्तु मनुष्यत्व के लक्षण । यानी कि उत्तम गुणों से शोभित शरीरवाला जीवन - जिसे हम 'मनुष्यत्वम्' कहें और वैसे लक्षणवाले जीवन में ही मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा-जिज्ञासा जागती है । तब उसे फलने के लिए किसी को जिसे 'सद्‌गुरु' कहें, उसका आश्रय मिल जाय तो उसे भगवान की कृपा समझना चाहिए ।'

अच्छी रसोई का आग्रह

दिन चढ़ने लगा वैसे-वैसे गरमी बढ़ने लगी । श्रीमोटा ने कहा, 'आज गरमी की ज्यादा असर लगती है । क्या मेरी आँखे सुझी हुई लगती है ?' 'हाँ जी ।' 'ब्लडप्रेशर बढ़ा होगा ।' आपश्री ने कहा फिर भी आपश्री खाट पर बैठकर कुछ लिख रहे थे ।

ऐसा करते-करते भोजन का समय हुआ । भोजन करते-करते आपश्री ने कहा, 'बहुत से लोग रसोई की बाबत में बेपरवाह होते हैं, जिसके पर इस जीवन का आधार है, उस भोजन की उपेक्षा कैसे हो सकती है ? सादा भोजन करें, किन्तु वह पौष्टिक और अच्छी तरह बना हुआ होना चाहिए ।' श्रीमोटा बहुत बार रसोईघर में जाकर सूचना देते ।

श्रीमोटा ने गोपाल (लेखक के पुत्र) को भोजन के लिए उनके पास नीचे बिठाया । आपश्री टेबुल-कुर्सी का

उपयोग करते थे । भोजन करते-करते उन्होंने अपनी थोड़ी छाछ पी और बाकी की गोपाल को पीने के लिए दी ।

योगी लेख पर मेख मार सकते हैं ?

भोजन के बाद आपश्री तुरंत बाँयी करवट सो गये । हम उनको पंखे से हवा ड़ालने लगे । आधे घंटे बाद उन्होंने हमें दूसरे कमरे में जाकर आराम करने को कहा ।

दोपहर बाद उनके पैर के तलुवे में कांसे की कटोरी से घी घिसने में आया । थोड़ी देर बाद कुछ भक्त आये ।

कोई एक ने पूछा, **'मोटा,** संसारिओं के दुःख संत काट सकते हैं ? लेख पर मेख मार सकते है ?'

श्रीमोटा : सब प्रारब्ध के अनुसार होता है । जिसे-जिसे संबंध हो, उसे वह योगी उपयोगी बनता होता है ।

पुराना नौकर वापस आया

इतने में आश्रम का एक पुराना नौकर जो कई दिनों से चला गया था और श्रीमोटा उसे याद करते थे, वह वहाँ आकर खड़ा हो गया और चरणस्पर्श किए । श्रीमोटा उसे देखकर दंग होकर पूछने लगे, 'कहाँ से आये हो ? किस प्रकार आये हो ? माँबाप को कहकर आये हो न ? या भागकर आये हो ? रहनेवाले हो या जानेवाले हो ?' लड़के ने कहा, 'घर पर कहकर आया हूँ और रहनेवाला हूँ ।' तब श्रीनंदुभाई ने कहा, **'मोटा** का वायरलेस मेसेज' मिलने

से वह आ पहूँचा लगता है । श्रीमोटा ने उसकी पीठ थपथपाई और फिर जाने को कहा ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(७)

हरि सम्बन्धी भाव कमाने ही जीवन में
निमित्त से श्रेयार्थी वैसा सार ग्रहण करता रहे ।

('निमित्त' पुस्तक से) – **मोटा**

धर्मपत्नी की सेवा का फरमान

पूज्यश्री लगभग दो महीने बाद मुंबई दिनांक २९-७-१९६४ के दिन अकेले पधारे । उतना समय आपश्री ने कोडाईकेनाल और कुंभकोणम् में गुजारा था । पूज्य श्रीमोटा के साथ हमेशा रहनेवाले श्रीनंदुभाई इस वक्त साथ में नहीं थे, क्योंकि उनकी (नंदुभाई की) पत्नी कांताबहन को 'स्पोन्डिलाइटीस' (मेरुदंड की) बीमारी हुई थी । श्रीमोटा ने कांताबहन की सेवा के लिए श्रीनंदुभाई को कुंभकोणम् में रहने का फरमान किया था । श्रीमोटा के साथ जुड़ने के बाद भी श्रीनंदुभाई बीमारी या ऐसे किसी कारण के सिवा उनकी पत्नी को मिलने नहीं जाते थे । श्रीनंदुभाई नहीं होने से आश्रम का सब पत्रव्यवहार श्रीमोटा स्वयं सँभालते थे ।

बिस्तर बिछाना नहीं आया

दिनांक ३० जुलाई की रात को पूज्य श्रीमोटा सुरत जाने निकले। उनकी 'बर्थ' पर बिस्तर बिछाने की जिम्मेदारी भाई धीरेश और मेरे पर थी, क्योंकि इस समय श्रीनंदुभाई साथ नहीं थे। हमने बिस्तर बिछाया। वह देखकर श्रीमोटा ने पूछा, 'घर पर बिस्तर कौन बिछाता है ? बिस्तर बिछाने की आदत है क्या ?' बिस्तर बराबर नहीं बिछाया होगा ऐसा लगा। इससे फिर से ठीक करने का प्रयास किया, फिर आपश्री कुछ नहीं बोले। उतने में ट्रेन चलने लगी और हम सब ने 'हरिःॐ' 'हरिःॐ' कहकर नमस्कार किये, उन्होंने भी अभिवादन किया।

'इससे कितना फायदा हो ?'

सुरत जाने से पहले श्रीमोटा एक भाई के वहाँ गये थे। उस भाई के घर पर दीवार पर साँईबाबा के 'भस्मांकित' चरण रखे थे और उसका 'फोटो' भी उस भाई ने निकलवाया था। वह फोटो उन्होंने श्रीमोटा को दिखाया, तब वह देखकर पूज्यश्री ने पूछा, 'इससे आपको कितना फायदा हुआ ?'

वह भाई : 'श्रद्धा बढ़ी।'

श्रीमोटा : 'उसका सबूत क्या ? कितना आगे बढ़े ?'

वह भाई : हाँ **मोटा,** यह बात सच है । उस चरण के दर्शन से आनंद हुआ, किन्तु बहुत आगे नहीं बढ़ सके ।

श्रीमोटा : श्रद्धा बढ़ने के परिणाम स्वरूप हमारे में ज्यादा तीव्र लगन और *'स्पोन्टेनियस'* (सहज) भक्तिभाव उत्पन्न होना चाहिए ।

पूज्यश्री मूल मुद्दे को यानी कि हेतु की सभानता को कभी नहीं भूलते ।

शेखी करनेवाले की फजीहत

उसके बाद उन्होंने उनके गुरुमहाराज श्रीकेशवानंद धूनीवाले दादा की कई प्रेरणादायी बातें की थी । उसमें एक व्यक्ति की निर्विकारपने की शेखिओं की उनके गुरुमहाराज ने कैसी कसौटी की थी । वह बात की ।

'गुरुमहाराज ने उनकी समक्ष के झुँड में से एक लड़की को वस्त्रहीन होकर सो जाने का फरमान किया और उस व्यक्ति को भी वस्त्र निकाल कर उस लड़की के साथ सो जाने को कहा, तब वह शरमा गया था । उस बाई को तो कुछ भी नहीं करना था, जबकि वह व्यक्ति तो खाली-खाली शेखी मार रहा था ।'

■

॥ हरिःॐ ॥

(८)

जीवन पनपने हेतु निमित्त जीवन में मिले
श्रेयार्थी वहाँ गढ़ने को रखे सजीव भान वह ।

(‘निमित्त’ पुस्तक से) – **मोटा**

श्रीमोटा के हाथ से यज्ञ

पूज्य श्रीमोटा दिनांक ३-९-१९६४ से ५-९-१९६४ तक मुंबई में थे । हरमुखभाई जोगी ने ‘सहकारनिवास’ में छठी मंज़िल पर नया ब्लोक लिया था, इससे वहाँ रहने जाने से पहले पूज्यश्री के हाथ से यज्ञ करवाने का निश्चित किया था ।

यज्ञ के प्रारंभ से पहले कुंभ रखने के लिए बहनों के साथ एक महाराज मंत्र बोलते, टकोरी बजाते हुए घर में प्रवेश किया । श्रीमोटा उस समय यज्ञ के लिए तैयारी कर रहे थे । महाराज को देखकर श्रीमोटा ने कहा, ‘पधारिए भूदेव । और अपने पास बैठने के लिए पंड़ितजी को दो तीन बार कहा, किन्तु पंड़ितजी तो कहीं चले गये । कुछ देर बाद एक दूसरे पंड़ितजी आये । उन्हें भी पूज्यश्री ने अपने पास बिराजने का आग्रह किया, किन्तु वे भी वहाँ से चले गये । हरमुखभाई ने उन दोनों महाराज को हाजिर

रहने का आमंत्रण दिया होगा, किन्तु उन्हें श्रीमोटा की उपस्थिति पसंद नहीं पड़ी होगी, इससे वे विदा हो गये होंगे !'

श्रीमोटा कई जगह उनके भक्तों के आग्रह के कारण यज्ञ और विवाह इत्यादि मांगलिक प्रसंग करवाते थे, किन्तु वह उनकी रीति से, परंपरा अनुसार नहीं । यज्ञ की वेदी को कुमकुम, फूल इत्यादि से विभूषित करने के बाद वेदी में समिध जमाये ।

नारा बाँधने का अर्थ

पूज्यश्री ने हरमुखभाई और उनकी पत्नी हसमुखबहन को तथा धीरेशभाई और उनकी पत्नी को परस्पर नारा बाँधने की सूचना दी । हरमुखभाई के हाथ से आपश्री ने अपने हाथ में नारा बँधवाया । इस विधि का अर्थ समझाते हुआ कहा, 'यह नारा कच्चा तंतु है । यह बाँधने का अर्थ एकदूसरे के हृदय बाँधने का है । घर में कलह हो, मतभेद हो, झगड़े हो तो भी इस नारा से हम बँधे हुए होने से, हृदय से अलग नहीं होना है । यह सब को बराबर ध्यान में रखना है ।'

यज्ञ का हेतु

पूज्यश्री ने यज्ञ का हेतु समझाते हुए कहा, ''आजकल ब्राह्मणों के हाथ से होनेवाले यज्ञ और उसमें होता अत्यधिक

खर्च अर्थहीन है । यज्ञ करनेवाले संस्कृत श्लोक समझते नहीं है, इसलिए यज्ञ का हेतु, यज्ञ के वक्त होनेवाला प्रार्थनाभाव, गांभीर्य कुछ समझ में नहीं आता है और बना नहीं रहता है । इससे वह अर्थहीन है । 'यज्ञ किया' ऐसा झूठा संतोष मनाने का कोई अर्थ नहीं है ।"

"यज्ञ क्यों किये जाते हैं ? यज्ञ में अग्नि प्रगट किया जाता है और उसमें आहुति अर्पण की जाती है । अग्नि वह देव है । अग्नि वह रजस का गुण है । हमारे शरीर में अखंड रूप से यज्ञ चल रहा होता है । उसका हमें पता नहीं है । बिना अग्नि के शरीर नहीं टिक सकता । उसे खुराक इत्यादि से आहुति देनी चाहिए । तब प्रार्थनाभाव से सब करना चाहिए । अंदर रहे हुए नारायण जो यज्ञ के भोक्ता है, उनको इससे संतोष मिलेगा ।

वेदी में अग्नि प्रगट करते वक्त उन्होंने उपस्थित रहे हुए सब के पास स्वरचित प्रार्थना बुलवाई ।

अग्नि प्रत्यक्ष शक्ति है, अग्नि प्रकाश प्रेरित करता,
अग्नि सब को शुद्ध कैसा पवित्र करता ।★

आहुति देने की रीति

अग्नि प्रकट करने के बाद उसमें आहुति कैसे देना और उसका मंत्र कैसे बोलना वह समझाया । जब मंत्र पूरा

★पूरी प्रार्थना के लिए देखिये श्रीमोटा का 'विधिविधान' पुस्तक

हो, तब उसके साथ जौ का एक दाना वेदी में आहुत करना चाहिए । आहुति मंत्र नीचे अनुसार उपस्थित रहे हुए सब के पास १०८ बार बुलवाया :

ऐक्य, शांति, आनंद जन्मे सब साथ इस घर में,
इस हेतु से प्रार्थना कर के आहुति देते हैं तुम्हें ।

आहुति देने का कार्य चालू था, तब श्रीमोटा ने देखा कि जौ इत्यादि सामग्री को यज्ञ में फेंकी जा रही थी । इससे इस प्रकार फेंकने की क्रिया को उन्होंने कनिष्ठ रीति बताई और भावपूर्वक आहुति कैसे देना वह बताया ।

"आहुति की सामग्री जौ इत्यादि जो हो, वह हथेली में रखना और वह जरा उँचे लेकर फिर हथेली का अगला हिस्सा अग्नि की ओर नीचे लम्बा कर के आहुति अर्पण करना चाहिए और तब 'स्वाहा' बोलना चाहिए ।

१०८ बार आहुति देने के बाद यज्ञ का श्रीफल होमते हुए अग्नि को नमस्कार करना चाहिए और तब *'ॐ अग्नेय नमः'* यह मंत्र कई बार बुलवाया, फिर श्रीफल का होम किया । इस दरमियान पूज्यश्री वेदी में घी होमते जाते थे, समिध इत्यादि बराबर जमाते जाते थे और सब के साथ स्वयं भी मंत्रोच्चार करते जाते थे । श्रीनंदुभाई तुलसीमाला से संख्या गिनते जाते थे ।

उसके बाद पूज्यश्री ने 'जय जगदीश हरे' की आरती

करवाई और यज्ञ की पूर्णाहूति हुई । हरमुखभाई और उनके कुटुंबीजन ने पूज्यश्री के चरणस्पर्श किए ।

"आइये कालका माता"

उसी दिन रात को पूज्यश्री हरमुखभाई के नये ब्लोक में सोनेवाले थे । इससे सब वहाँ एकत्रित हुए । आपश्री थोड़ा आराम करने लगे, इससे उनकी सेवा भी होने लगी । उतने में एक बहन आये । उन्होंने देखकर श्रीमोटा ने सत्कार करते कहा, 'आइये कालका माता ।' यह सुनकर बहुतों के चहेरे पर मुस्कुराहट आ गई । आपश्री निकटता पाने के बाद योग्य व्यक्तिओं को योग्य समय पर, योग्य इल्काब जैसे-जैसे वे निकट आते हैं, वैसे-वैसे देते होते हैं ।

श्रीमोटा ने उस बहन को पूछा, 'बेटे को अच्छा-अच्छा बनाकर खिलाते हो न ?'

तब उस बहन ने जवाब देते कहा, 'हाँ, **मोटा** ! जैसा आता है करते हैं । मैं कहीं भी सीखी नहीं हूँ, यह आप जानते हो न **मोटा** ?'

श्रीमोटा मानो स्वगत किन्तु सत्य बोले, 'मा का प्रेम कैसा होता है, वह पता नहीं है ।'

श्रीमोटा ने कुछ देर बाद सब को जाने का कहा । उस बहन ने उनके चरणस्पर्श किया और श्रीमोटा ने उनकी पीठ थपथपाके स्नेह प्रदर्शित किया ।

स्वामी मुक्तानंदजी के आश्रम पर

दूसरे दिन दिनांक ४-९-१९६४ के दिन 'साँईसुमन' वाले श्रीशंकरलाल चौकसी ने पूज्य श्रीमोटा को गणेशपुरी स्वामी मुक्तानंदजी के आश्रम पर ले जाने का कार्यक्रम बनाया था । इससे जल्दी सुबह साढ़े चार बजे दो कार में श्रीमोटा और अन्य भक्त गणेशपुरी गये थे ।

गणेशपुरी जाते हुए रास्ते में बहुत सत्संग हुआ । फंड-चंदे के बारे में, साँईबाबा के बारे में श्रीमोटा ने रची हुई प्रार्थना को पुस्तकरूप में प्रकट करने बाबत, स्वामी नित्यानंदजी कैसे उच्च कक्षा के अवधूत थे, उनकी सब बातें करते-करते 'हरिःॐ' की धुन करते हुए सब गणेशपुरी पहुँचे ।

स्वामीजी ने पूज्य श्रीमोटा का पुष्पहार से स्वागत किया, बाद में दोनों ने आलिंगन दिया । हरिःॐ आश्रम के संबंध में पूछने पर पूज्यश्री ने आश्रम का मुख्य हेतु - मौनमंदिरों द्वारा लोगों को ईश्वराभिमुख करने का बताया । उसके अतिरिक्त वे स्वयं लोककल्याण के कार्यों के लिए, प्रजा में 'गुण और भाव' का विकास हो वैसी योजनाओं के लिए फंड-चंदा की उघरानी करने घूमते हैं, वह भी बताया ।

स्वामीजी बाद में सब को लेकर उनके बगीचे में गये और बिना बीज के नींबु, बड़े गुलाब इत्यादि दिये । लाल

हो गई आँख और उसका दर्द मिटा देवे वैसा एक सफेद फूल उन्होंने सब को दिखाया । उन्होंने कहा कि 'यह फूल जल्दी सुबह उस पर पड़े हुए ओसकण के साथ आँख पर लगाने से आँख का दर्द मिट जाता है, ऐसी यह दिव्य औषधि है ।'

वहाँ से वापस आने पर सब को आसन पर बिठाया और चाय, कॉफी तथा नास्ते की प्रसादी दी । उसके बाद स्वामीजी सब को नित्यानंदजी की समाधि पर ले गये । वहाँ गरम पानी के तीन कुंड हैं, वह दिखाये । पास-पास आये हुए इन तीन कुंडों में कम-ज्यादा गर्म पानी होता है और चमड़ी के दर्दवाले तथा वातव्याधि के दर्दी इसमें स्नान करते हैं ।

फिर सब वापस आश्रम आये । स्वामी मुक्तानंदजी* ने 'हरिःॐ महामंत्र'वाला भजन ललकारा । फिर उन्होंने पूज्यश्री को रेशमी दुपट्टा और पुष्पहार पहनाकर नमस्कार किया और सब वहाँ से विदा हुए ।

श्रीमुगटराम महाराज की याद

गणेशपुरी आश्रम में कई महात्माओं के चित्र थे ।

---

*अवधूत श्रीनित्यानंदजी के शिष्य स्वामी मुक्तानंदजी गणेशपुरी में (वसई) कई वर्षों तक रहे थे । उनके देहत्याग को कुछ वर्ष हुए ।

उसमें एक चित्र ब्रह्मलीन पूज्य मुगटराम महाराज का भी था । उनके संबंध में पूज्य श्रीमोटा ने कहा, 'मैंने उनके दर्शन किये थे । नडियाद से दादुभाई देसाई ने मुझे टिकट किराया और रुपये दस देकर मुगटराम महाराज के दर्शन के लिए भेजा था । महाराज के पास पहुँचकर मैंने उन्हें नमस्कार कर के श्रीफल और दस रुपये अर्पण किये । महाराज ने एक रुपया जोड़कर रुपये ग्यारह मुझे दिये और आशीर्वाद देते हुए कहा था कि 'तुम्हारा गुरु समर्थ है । उनके कहे अनुसार करना और जो कर रहा है, वह करने का चालू रखना ।' वे सचमुच महापुरुष थे ।'

शिरडी में श्रीमोटा

गणेशपुरी जाकर वापस आने के बाद श्रीमोटा को बहुत श्रम पड़ा । उससे दोपहर में आराम किया । दोपहर बाद सेठ नटवरभाई चिनाई के वहाँ पधारे । रात को हरमुखभाई इत्यादि भक्त इकट्ठें हुए, तब पूज्यश्री ने सत्संग करने का सूचन करने पर हमने पूछा, '**मोटा,** साँईबाबा के संबंध में आज तक में किसी पुस्तक में प्रसिद्ध न हुई हो ऐसी बात कहेंगे ?'

श्रीमोटा ने कहा, 'वह समुद्र पर चट्टानों के पास उनसे मुलाकात हुई थी वह बात कही थी, सही न ?' मैंने कहा, 'हाँ जी ।'

श्रीमोटा : 'साँईबाबा की ऐसी इच्छा थी कि मुझे शिरडी जाना । इससे उन्होंने परसदभाई 'बापु' के द्वारा निमित्त बनाया । परसदभाई ने मुझे कहा कि 'शिरडी में मुझे मौन दो ।' मैंने कहा, 'भाई, वहाँ कैसे अनुकूल होगा ? अलग कमरा चाहिए । उसमें ही शौच-पिशाब करने की सुविधा चाहिए । एक-दो व्यक्ति चाहिए । फिर वह अनजान जगह, कैसे अनुकूल होगा ?'

तब परसदभाई - 'बापु' ने कहा, 'पैसे खर्च करेंगे तो सब सुविधा मिल जायेगी ।' उनके ऐसे आग्रह के कारण हम तो शिरडी गये । १९४४ या ४५ की साल होगी । मंदिरवाले को बारह सौ रूपये नकद दिये । इससे धर्मशाला में अलग कमरे की व्यवस्था हो गई । वहाँ हम चौबीस दिन रहे । 'बापु' को वहाँ मौन दिया... मैं तो गाँव में हर जगह घूमता और जिन-जिन को साँईबाबा ने रुपये (उपहार या प्रसाद के प्रतिक रूप से) दिये थे, उन सब से मैं मिला था । साँईबाबा के एक भक्त अब्दुलबाबा तो मेरी पहचान दूसरों को देते और कहते कि 'यह हमारे कुटुंब का व्यक्ति है ।'

'वे सब को गुरुमहाराज मानते थे'

एक भाई ने पूछा, '**मोटा,** साँईबाबा, आपके गुरुदेव नहीं न ?'

श्रीमोटा : हाँ, किन्तु मैं उनको मेरे गुरुमहाराज (धूनीवाले दादा) के समान मानकर ही मैं सब करता था । मेरे गुरुमहाराज ने कहा था कि 'मैं सब कुछ हूँ, सब में मैं हूँ। मैं साँईबाबा हूँ, उपासनी महाराज हूँ, अक्कलकोट का स्वामी और ताजुद्दीनबाबा भी मैं हूँ।' मेरे साधनाकाल के आरंभ में ऐसा सब गुरुमहाराज ने कहा था और उन-उन महात्माओं के दर्शन उनमें करवाये थे, किन्तु मुझे उसमें तब कुछ समझ नहीं आया था । आज की बात अलग है । चाहे जैसे भी उन सब को मैं गुरुमहाराज मानता था ।

प्रश्न : साँईबाबा के दर्शन हुए, तब उनका वेश कैसा था ? अभी फोटो में दिखता है वैसा था ?

श्रीमोटा : नहीं, सिर पर के बाल एकदम छोटे-छोटे और मैले जैसे दिखते थे । चेहरा बराबर वही । किन्तु कपड़े अलग थे ।

उनकी बिदा लेने खड़े होते हुए आपश्री ने मुझे पूछा, 'भादरण आयेंगे न ? जरूर आईए ।' (भादरण में उनके जन्मदिन का उत्सव आयोजित होनेवाला था इसलिए) हमने जवाब में कहा कि जरूर आयेंगे ।

प्रेम में कठोरता होती है

नडियाद जाने के लिए पूज्य श्रीमोटा रात को स्टेशन

पर गये । अनेक भक्त भी उन्हें बिदा करने आये थे । एक बहन ने कहा, ‘प्रभु ! हमें प्रेम देना । हम आपकी संतान हैं । आप हमारे पिता हैं ।’

श्रीमोटा : प्रेम में कठोरता भी होती है, उसे सहन करने की तैयारी रखना ।

उस बहन ने कहा, **‘मोटा,** आपने मुझे ‘कालकामाता’ कहा था, किन्तु मुझे बुरा नहीं लगा था ।’

श्रीमोटा : अच्छा ! किन्तु सब को ऐसा कह सकते हैं ?

तब श्रीनंदुभाई ने कहा कि ‘जिस पर श्रीमोटा को प्रेमभाव है, उसे ही आपश्री ऐसा कहते हैं । सुरत में भी एक बहन को श्रीमोटा ‘कालकामाता’ कहकर बुलाते हैं ।’

ट्रेन चलने की सीटी बजी और ‘हरिःॐ’ के जयघोष के साथ पूज्यश्री ने मुंबई छोड़ा ।

श्रीमोटा की व्यावहारिक दृष्टि

पहले कहे अनुसार भादौ कृष्णपक्ष की चतुर्थी यानी पूज्य श्रीमोटा के शरीर का जन्मदिन । उस निमित्त से भादरण में उत्सव आयोजित किया गया था, किन्तु वहाँ के दो युवानों का आकस्मिक अवसान होने से पूज्यश्री ने वह रद्द करवाया । उनकी ऐसी व्यावहारिक दृष्टि और कोमल

मनोभाव, भावना देखने को मिलने पर भक्तों को उनके प्रति बहुत मान प्रकट हुआ । उन्होंने कई बार समग्र गुजरात को असर करनेवाले हरे या सुखे अकाल या कौमी दंगे जैसी परिस्थिति को ध्यान में लेकर आयोजित होनेवाले समारंभ बंद रखवाये थे, वह याद आये बिना नहीं रहता है । हालाँकि ऐसे उत्सव समारंभ द्वारा मिलनेवाली दक्षिणा लोक-कल्याण के कार्यों के लिए ही उपयोग की जाती थी और एकत्रित होनेवाले भक्तजनों के समुदाय को विविध मिष्टान्न जैसे महेंगे भोजन नहीं, किन्तु गरीब की 'खिचड़ी - सब्जी की प्रसादी' परोसने में आती थी । आज भी यह प्रथा चालू है ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(९)

हमारे इस भव की प्रकृति की गति और दिशा जिस प्रकार की होगी, उस प्रकार का हमारा पुनर्जन्म है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) - **मोटा**

दिनांक २-१०-१९६४ से दिनांक ४-१०-१९६४ तक हम सब सुरत आश्रम पर रहे थे, क्योंकि भादरण का उत्सव रद्द करने में आया था ।

सच्चा जप

सुबह ग्यारह बजे हम पूज्यश्री के पास उनके कमरे में बैठकर उनके पैर दबा रहे थे, तब उन्होंने अपनी साधना की बात प्रारंभ की ।

'नडियाद आश्रम अभी जिस जगह पर है, वहाँ एक वटवृक्ष पर रात को बैठकर हरिस्मरण करने का गुरुमहाराज★ ने आदेश दिया । हमने तो पेड़ पर चढ़कर जप करना शुरू कर दिया । मध्यरात्रि होने को आई । तंद्रावस्था शुरू हुई फिर भी हरिस्मरण चलता था । (श्रीमोटा ने कहा, 'तंद्रावस्था यानी क्या यह तो मालूम है न ? नहीं पूरी जागृति या नहीं पूरी निद्रावस्था ।') तंद्रावस्था दरमियान जप हो, वह सच्चा जप नहीं कहा जा सकता । इस अवस्था के कारण गुरुमहाराज ने जोर से पत्थर मारा जो मेरी जाँघ पर लगा । (दाहिने पैर की जाँघ दिखाकर कहा) इससे ऐसी मार पड़ी कि पेड़ पर से गिरा, किन्तु सद्‌भाग्य से एक ड़ाली हाथ में आ गई, इससे जमीन पर गिरते बच गया ।'

★श्रीधूनीवाले 'दादा' केशवानंदजी द्वारा भेजे गये श्रीबालयोगी महाराज ने श्रीमोटा (चूनीलाल भगत) को दीक्षा दी थी । यहाँ श्रीबालयोगी महाराज का संदर्भ है । उन्होंने तब श्रीमोटा को कहा था कि 'इस जगह पर तेरा आश्रम होगा ।'

इतना कहकर आपश्री फिर सो गये । मुझे गद्दी पर तकिये के सहारे आराम से बैठकर जप करने को कहा । इससे मन ही मन में जप करने लगा । कुछ देर बाद आपश्री बोले, 'जोर से स्मरण कर सकते हो हंअ....।'

एकाध घंटे बाद आपश्री ड़ाक देखने लगे । ड़ाक देखने के बाद 'ध इन्डीयन मन्क' (लेखक-स्वामी पुरोहित) पढ़ने लगे । थोड़ा पढ़ने के बाद मुझे वह पढ़कर सुनाने के लिए दिया । मैंने कुछ पन्ने पढ़े, फिर पढ़ना बंद करवाया । उसके बाद मुझे एक खादी की चद्दर का उपहार दिया । इस प्रकार उनको मिलनेवाले उपहार आपश्री उनके भक्तों को देते थे ।

कुछ देर बाद हम तीन-चार भक्त भीगोये हुए सेम छीलने बैठे । श्रीमोटा भी आकर बैठे । छोटे युवान बच्चों की वे शौर्य बढ़े वैसी बातें करते थे । उनकी अपनी माँ को बहुत याद करते और माँ की प्रशंसा करते ।

'मेरे साथ शादी कर लो'

सेम छीलते-छीलते आपश्री ने मुझे कहा, 'मेरे साथ शादी कर लो ।'

'शादी बाबत में समझ नहीं है ।' मैंने बिना सोचे समझे बोल दिया ।

इससे जरा चिढ़ कर वे बोले, 'इसे मेरे मुँह से दो-चार सुनने की इच्छा हुई है न !' वहाँ बैठे सब हँस दिये ।

उसके बाद आपश्री अकेले शहर में गये । छ बजे आपश्री वापस आये और भोजन कर के सो गये । कुछ देर बाद उन्होंने वह पुस्तक (ध इन्डियन मन्क) जोर से पढ़ने के लिए मुझे आदेश दिया । लगभग एक घंटे तक उन्होंने वह सुना फिर सो गये । नौ बजे तक दूसरे सभी भी सो गये ।

'थेन्क्यु, रतिभाई'

दिनांक ४-१०-१९६४, रविवार के दिन जल्दी सुबह चार बजे सब जाग गये । नित्यकर्म निपटाकर हम पूज्यश्री के पास गये, तब श्रीनंदुभाई, पूज्यश्री के पैर दबा रहे थे । मुझे देखकर श्रीनंदुभाई ने कहा, 'पूज्यश्री आपको जल्दी सुबह दो बजे वह पुस्तक पढ़ने बुलानेवाले थे ।' 'क्यों नहीं बुलाया ? आनंद आता प्रभु ।'

तब श्रीमोटा बोले, 'आप सब सो रहे थे, इससे आपको 'डीस्टर्बन्स' (खलल) होती, इससे नहीं बुलाया । चलो, पढ़ो अभी ।'

मैंने एकाध घंटा जोर से पढ़ा, उसके बाद उन्होंने दो बहनों को एक के बाद एक भजन गाने को कहा । धीरे-धीरे बारह-तेरह भक्त आये होंगे । उनके लिए मैं पानी लेकर आया, तब श्रीमोटा ने प्रेम से कहा 'थेन्क्यु रतिभाई ।'

दोपहर की ट्रेन द्वारा हम मुंबई जानेवाले थे, इससे हमें जल्दी भोजन करवा दिया । उनकी बिदा लेते वक्त उनके चरणस्पर्श किए, तब उन्होंने ईश्वरस्मरण नियमित रीति से करते रहने का कहा, तथा मुंबई के स्वजनों को उनकी याद देने का कहा । ऐसा उनका प्रेमभाव अनुभव किया ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१०)

त्याग करना और त्याग भोगना - उन दोनों के भावार्थ में मूल का अंतर है । त्याग भोगने का आनंद जो है, वह त्याग करने का आनंद से कहीं विशेष बढ़िया है । त्याग भोगने का आनंद जीवनविकास का सहज आनंद है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) - **मोटा**

श्रीमोटा को 'स्पोन्डिलाईटीस' की बीमारी

श्रीनंदुभाई द्वारा समाचार मिला कि 'श्रीमोटा को मेरुदंड का मनका खिसक जाने की (स्पोन्डिलाईटीस) बीमारी हो जाने से उनके साथ दिनांक २०-१०-१९६४ तक कोई पत्रव्यवहार नहीं हो सकेगा, एवम् उनकी मुलाकात भी बंद है ।' इससे निराशा तो हुई ।

सामाजिक प्रसंग पर मुझे अहमदाबाद जाने का होने से दिनांक २-११-१९६४ के दिन मैं डभाण (जि. खेडा,

गुजरात) गया था । पूज्यश्री डभाण में श्रीरावजीभाई पटेल (वर्षों तक नडियाद, हरि:ॐ आश्रम के प्रमुख के रूप में सेवा करनेवाले) के वहाँ आराम करते थे । आपश्री शरीर से दुबले हो गये लगते थे, फिर भी आनंद में थे । उठते-बैठते आपश्रीको किसीका सहारा लेना पड़ता था ।

तादात्म्य के भाव के कारण

रावजीभाई के साथ मैं नडियाद आश्रम पर गया । श्रीनंदुभाई पूरा पत्रव्यवहार सँभालते थे । उनके साथ बातें करते पता लगा कि उनकी पत्नी कांताबहन को 'स्पान्डिलाईटीस' की बीमारी हुई है । (जिसके कारण श्री नंदुभाई को त्रिचि रहना पड़ा था ।) वही बीमारी श्रीमोटा को हुई है । भक्तों की बीमारी तादात्मय भाव के कारण सद्‌गुरु को लग जाती है । बीमारी ले लेते हैं, ऐसा नहीं, वह समझ में आया । वैसा श्रीमोटा के संबंध में हुआ होगा ।

तादात्म्यभाव के कारण अनुभवी पुरुष के निमित्त के जीवों में होनेवाला रोग उस महात्मा में प्रकट होता है । कई बार दूसरों के दु:ख आपश्री में थोड़ी देर प्रकट होकर चले जाते या लम्बे समय उनके शरीर में पड़ा रहे, जैसा रोग । कई बार अदृश्य रूप से चले जाते हैं । इसका पता सामनेवाले जीव को नहीं होता है । कोई किस्से में वह रोग गुरू के शरीर में कायम रहकर शरीर का भोग भी ले ले।

श्रीमोटा के शरीर को स्पोन्डिलाईटीस रोग ने बेकार कर दिया था, वह प्रसिद्ध बात है । प्रयास कर के दूसरों के दर्द ले लेना हो, ऐसा इसमें नहीं है । यह क्रिया निमित्तरूप से ऐसे महात्मा के उस-उस जीव के साथ के तादात्म्यता के भाव के कारण होती है । इसका अर्थ यह नहीं समझना कि हरएक भक्त के देह के दर्द सद्‌गुरू भोगे ही ।

'- तो मनुष्य और पशु में फर्क क्या ?'

करीब पौन घंटा श्रीनंदुभाई के पास रुककर मैं डमाण पूज्यश्री के पास जाकर बैठा । तब कई स्वजन उनके पास अपने-अपने दुःख रो रहे थे । **एक दंपती अपनी गरीबी के बारे में सलाह-सूचन माँग रहे थे । तब श्रीमोटा ने कहा, 'सब से पहले संतान उत्पन्न नहीं करने की प्रतिज्ञा लेवे । गरीबी और संतानों का पालनपोषण दोनों संभव नहीं है ।'**

उस दंपती को वह सलाह पसंद नहीं आई । उन्होंने दूसरे साधनों की तरफदारी दिखाई, तब श्रीमोटा उनके साथ नाराजगी से बोले, 'मनुष्य ऐसी स्थिति में (गरीबी में) भी नहीं समझे तो उसमें और पशु में फर्क क्या ?'

सत्संग

उसके बाद थोड़ा सत्संग हुआ ।

प्रश्न : मोटा, जो अंतरनाद सुना जाता होगा, वह अनाहत नाद कान में जो अमुक को सुना जाता है, उसी प्रकार से स्पष्ट प्रकार से कान से सुना जा सकता है ?

श्रीमोटा : हाँ, जैसे एक व्यक्ति दूसरी व्यक्ति के मुख से आदेश दे रही हो वैसा स्पष्ट आवाज हृदय में, अंतर में उठे और सुनाई दे, किन्तु ऐसा अंतरनाद बहुत आगे बढ़े हुए साधक को ही संभव है ।

प्रश्न : कोई चालू मंत्र किसी कारणों से बदल जाय तो कोई तकलीफ हो सकती है ।

श्रीमोटा : बारबार मंत्र नहीं बदलना चाहिए । जो हो उस एक को ही पकड़कर रखना चाहिए । उसकी संख्या पर भार तथा मदार रखना नहीं । किन्तु उसका सातत्य और भावना अविचल हो ऐसा हृदय में प्रकट होना चाहिए ।

प्रश्न : किसी भी संत के पास साधक को जाना चाहिए ?

श्रीमोटा : जहाँ तहाँ सब जगह नहीं जाना चाहिए । जिनके साथ हृदय का कुछ स्निग्ध परिचय हो, वहाँ ऐसा निमित्त मिलने पर जरूर जा सकते हैं । वे सब एक ही चेतन के अलग-अलग अंश हैं । फिर भी उनमें विविधता रहेगी ही ।

प्रश्न : मुक्तात्मा को प्रारब्ध होता है ?

श्रीमोटा : शरीर होने कारण प्रारब्ध होता है, किन्तु वह जली हुई रस्सी के ऐंठन जैसा । अन्यथा, उसने परब्रह्म के साथ एकात्मता साधी होने के कारण, यह शरीर, यह जीवन, यह विश्व एक मात्र दृश्य के समान उसके सामने

से गुजर जाता है । इससे उसे किसीका बंधन नहीं होता है ।

पूज्यश्री पूरा समय सोते-सोते बोल रहे थे । इससे जाने के लिए खड़े होकर मैंने उनकी दाहिनी ओर झुककर नमस्कार किए । उन्होंने मुझे दो हाथ से आलिंगन कर के गाल पर चुंबन किया और फिर नामस्मरण सतत करते रहने की सूचना दी । इससे ऐसा नशा चढ़ा कि जिससे लंबे समय तक 'हरि:ॐ' का जप हो सका !

■

॥ हरि:ॐ ॥

(११)

सच्ची दानवृत्ति करुणावृत्ति में से उत्पन्न होती है । इस वृत्ति का भी हमें हमारे लिए और हमारे में उपयोग करना है । दान में से उत्पन्न होनेवाला भाव वह हमारा परम बल है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

मनके के रोग की पीड़ा

श्रीमोटा १९६५ के फरवरी में नडियाद से सुरत आश्रम पर पधारे । इससे हम दिनांक २७-२-१९६५ के दिन सुरत गये । हम सब ने झुककर उनकी चरणरज ली । आपश्री ने कहा, 'मैं झुक नहीं सकता हूँ ।' फिर भी उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ फेरा । चिपटा बैठने में, झुकने में, उठने-

बैठने में उन्हें मुश्किल होती थी । इससे आपश्री ज्यादा समय सो रहते थे । 'स्पोन्डिलाईटीस' की बीमारी अब उन्हें बहुत पीड़ा दे रही थी ।

मौन में से बाहर आने के बाद अशांति क्यों ?

भोजन करने के बाद श्रीमोटा ने कुछ समय आराम किया । फिर सत्संग चला ।

प्रश्न : मोटा, मौन में से निकलने के बाद एकाग्रता नहीं रहती है । चाहिए उतना आनंद भी नहीं रहता है । नामस्मरण होता है, किन्तु मौनमंदिर में जिस आनंद के उफान का अनुभव होता है, वैसा उफान बाहर अनुभव नहीं होता है । उसका क्या कारण होगा ?

श्रीमोटा : संसार में रहें, इससे विक्षेप आयेंगे । मौन दरमियान अंदर कोई खलल करने बीच में नहीं आता है । इससे एकाग्रता, आनंद और ध्यान वहाँ सहज प्रकार से रहते हैं । बाहर निकलें और दैनिक कार्यों में लीन हो जाँय, तब 'डिस्टर्बन्स' होता है, अशांति लगती है, यह स्वाभाविक है । फिर भी यदि हमारा ध्येय यह हो कि - हमें तो उसके ही मार्ग पर आगे बढ़ना है और अड़चनों से घबराना नहीं है, ऐसा निश्चय हो जाय तो कुछ नहीं बिगड़ेगा और एकाग्रता, शांति इत्यादि सब वापस आयेंगे ।

मौनमंदिर के बारे में प्रसिद्धि

मुंबई से प्रकट होनेवाले 'जनशक्ति' दैनिक में मौनमंदिर

के बारे में छपा हुआ लेख पूज्यश्री ने पढ़ा था । उस संबंध में उन्होंने कहा, 'वह लेख अच्छा था । उससे एक व्यक्ति को तो फायदा हुआ ।'

'वह कौन **मोटा** ?'

श्रीमोटा : श्री बी. एल. कोटकसाहब कर के मुंबई की एक शाला के मालिक और आचार्य हैं, जो यह लेख पढ़कर मौन में बैठने आये । फिर, उन्होंने रुपये २५१/- का चेक भेजा★। उस दैनिक के संपादक आपको पहचानते थे ?

'नहीं, जी ।'

श्रीमोटा : देखो भाई, मैंने अभी तक किसीको मेरे बारे में या आश्रमों के बारे में लिखने-प्रकाशित करने की अनुमति नहीं दी है, क्योंकि लोग वह पढ़कर शायद हमारा काम निरर्थक बढ़ा देवे । वे लंबे पत्र लिखे और हमें उनके जवाब देना पड़े । यह सब हमें नहीं पोसा सकता है ।

★आचार्य श्रीकोटक हमें रूबरू मिले तब कहा था, 'मैं आज तक किसी साधु के पग में पड़ा नहीं हूँ । पहली बार श्रीमोटा के पग में पड़ा हूँ और मौन में बैठा हूँ ।' श्रीकोटक उसके बाद हर वर्ष मौन में बैठते और आश्रम को दान देते थे । उन्होंने यह क्रम उनके देहत्याग करने तक चालू रखा था । पूज्यश्री के प्यारे बन गये थे । उन्होंने मुंबई में एक मौनमंदिर भी चालू किया था ।

फिर भी आप आपकी राजीखुशी से बिना पैसे के लेख प्रकाशित करावे और उससे समाज को लाभ होता हो तो मुझे एतराज नहीं है ।

प्रश्न : मोटा, मौनमंदिर जैसी व्यवस्था संसारीजनों के लिए दूसरी किसी जगह पर हो ऐसा नहीं सुना है । लोगों को समाचारपत्रों द्वारा उसके बारे में जानने का मिले । फिर, आपकी 'गुण-भाव' के विकास के लिए की योजनाओं को समाचारपत्रों में पढ़े तो कुछ देने की उनकी इच्छा हो न ?

श्रीमोटा : पैसे तो घूमे बिना कोई नहीं देता है । विज्ञप्ति प्रकाशित करवाने से कुछ नहीं मिलता है । फिर, हमें कौन पहचानता है ?

इतने में हरमुखभाई जोगी आये । उनको श्रीमोटा के साथ कुछ निजी बात करनी थी, इससे सत्संग पूरा हुआ । मैं वहाँ से खिसक गया ।

संतानों की हृदयपूर्वक सँभाल के लिए आग्रह

आश्रम में शाम को पाँच बजे भोजन का समय । रसोईघर में श्रीनंदुभाई के साथ एक पंक्ति में मेहमान बैठते थे और सामने की पंक्ति में भीखुकाका और अन्य सेवक । दोनों पंक्तिओं के छोर पर मध्य में कुर्सी पर श्रीमोटा बैठते थे । जिससे आपश्री सब को देखते हुए बातें

कर सके । प्रतिदिन लगभग १०-१२ व्यक्ति भोजन करने में होते थे ।

तब श्रीमोटा ने कहा, 'मेरे आश्रम (हरिजन आश्रम) में मैं हरदिन नई-नई बानगियाँ बनवाता था । यदि बालकों को बानगी खाने से संतोष होगा तो वे सब तरह से अच्छे बनेंगे । बालकों को प्रेम से, उनको मनपसंद का बनाकर खिलाना चाहिए । किन्तु आज कोई खुराक प्रति और संतानों के प्रति बराबर ध्यान नहीं देता है ।'

भोजन के बाद पूज्यश्री ने अमुक पुस्तक में से थोड़ा लिखने का हमें कहा और वे आराम करने गये ।

दूसरे दिन जल्दी सुबह हम सब को पूछा, 'कैसा सपना आया ?' कौन जवाब देवे ? किसीको कुछ याद नहीं था । आपश्री कई बार यह प्रश्न पूछते थे ।

नीरो-पान

फिर छ बजे आश्रम में सभी भाई-बहन को स्टेशन वेगन में बिठाकर नीरो पीने के लिए ले गये । रास्ते में 'हरिःॐ' की धुन हुई.... पी सके उतना नीरो पीने के लिए उन्होंने आग्रह किया । किसी ने तीन-तीन तो किसी ने पाँच-पाँच गिलास भरकर नीरो पीया । रविवार था, इससे आश्रम पर अच्छी संख्या में भक्त आये थे और श्रीमोटा का इंतजार कर रहे थे । इससे नीरो पीकर तुरंत आश्रम पर पहुँच गये ।

आश्रम की आय के लिए

भोजन और आराम बाद श्रीमोटा ने हमें पूछा, 'आश्रम को कायमी आय हो, उसके लिए ज्यादा जमीन खरीदने का विचार होता है, तो हम वह खरीद सकते हैं ? मेरे देहत्याग के बाद आश्रम को आय होती रहे, ऐसा साधन करना है, तो 'ट्रस्टडीड' देखकर कहो ।'

'ट्रस्टडीड' देखकर मैंने कहा, 'जनरल क्लोझ' में ऐसी खरीदी करने के लिए आश्रम को पूरी सत्ता दी गई है । इसलिए कोई एतराज नहीं है । सिर्फ व्यापार करते हैं, ऐसा उसका स्वरूप नहीं दे सकते हैं, उतना ख्याल रहना चाहिए... श्रीमोटा ने कहा तो प्रस्ताव कर के 'चेरिटी कमिश्नर' को भेज देंवे, बराबर है न ? बराबर ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१२)

जब भाव जाग्रत होता है या जाग्रत हुआ होता है,
तब नींद बिलकुल भी न हो, ऐसा हो सकता है सही ।

– **मोटा**

एकाग्रता

दिनांक २१-३-१९६५, रविवार के दिन मुंबई के एक स्वजन श्रीमोहनलाल चोखावाला मेरे साथ सुरत आश्रम पर

आये । श्रीमोटा ने आश्रम और उसकी प्रवृत्तिओं के बारे में एक परिचय पुस्तिका इंग्लीश में तैयार करने का सूचन किया । दो पत्रों की कोपी करने के लिए दिये, फिर उन्होंने किसी एक व्यक्ति के संदर्भ से एकाग्रता के गुण पर बोलते हुए कहा कि 'किसी भी कार्य में एकाग्रता होनी ही चाहिए । ऐसी आदत प्रत्येक क्षेत्र में होनी ही चाहिए, तो उपयोगी होगी । यदि मिले हुए कार्य में एकाग्रता न हो सके तो फिर साधना जैसे क्षेत्र में किस प्रकार काम हो सकेगा ?'

संबंधों का मूल कारण

शाम का भोजन करने के बाद सब चौतरा पर बैठे, सेम (सब्जी) के छिलके निकालते जाते थे और सत्संग होता जा रहा था । उसमें से कुछ अंश :

चोखावाला : मोटा, हमारा संबंध पूर्वजन्म के कर्म के आभारी होता है ? पत्नी, पुत्र, परिवार इत्यादि पूर्वजन्म के संबंधों के अनुसंधान में होते हैं ?

श्रीमोटा : हाँ, किन्तु सब पूर्वजन्म और प्रारब्ध के कारण नहीं होता है । कई बाबतें, वस्तुएँ पुरुषार्थ के आधीन होती हैं । बुद्धि मिली हो, किन्तु उसका सदुपयोग न हो, तो किसी भी विकास का अवसर न मिले । यदि पुरुषार्थ भी प्रारब्ध के कारण है, ऐसा कहें तो 'पुरुषार्थ'

शब्द का उपयोग अर्थहीन है । वह वदतोव्याघात है । भावि संबंधों इत्यादि का निर्माण इस जन्म में ही तय कर सकते हैं ।

मौनमंदिर का उद्गम

प्रश्न : मोटा, आपको मौनमंदिर की स्थापना करने का विचार किस प्रकार उत्पन्न हुआ ।

श्रीमोटा : मेरे गुरुमहाराज ने कहा कि 'तुमने देशसेवा बहुत की, अब मानवसेवा कर । लोगों को इश्वराभिमुख करने का कर ।' वे मुझे डंडा देना चाहते थे, तब मैंने कहा था कि 'मैं तो संसार में रहनेवाला, इसलिए डंडे का उपयोग कर के लोगों को सच्चे मार्ग का मार्गदर्शन नहीं दे सकूँगा । प्रेम से उन्हें सन्मार्ग पर ला सकूँगा ।' गुरुमहाराज ने वह मान लिया और साधना के लिए यह मार्ग बताया, फिर मैंने पूछा कि 'लोगों के पास से लेकर मैं उनको क्या दूँगा ?' तब गुरुमहाराज ने कहा कि 'रोट के लिए फिक्र मत करना । तुमने जनता की सेवा की है, इससे रोट वह तुम्हारा पेन्शन है, ऐसा समझना★ । और लोगों के पास

★श्रीमोटा ने करीब १८ वर्ष (१९२२ से १९३९) तक गुजरात हरिजन सेवक संघ को (साबरमती एवम् अन्यत्र) सेवा दी थी । १९३४ से १९३९ तक परीक्षितलाल मजमुदार के साथ सह-सचिव रहे थे । १९३९ के सितम्बर में निवृत्त हुए थे ।

से लेने से तेरे सिर पर चढ़ा हुआ कर्ज़ मैं तेरे पर नहीं रहने दूँगा । इससे मैंने यह मार्ग ग्रहण किया ।

श्रीराम-श्रीकृष्ण ऐतिहासिक सत्य

चोखावाला : 'श्रीराम और श्रीकृष्ण वह सचमुच ऐतिहासिक पात्र हैं ?'

श्रीमोटा : वे काल्पनिक व्यक्ति नहीं हैं। वे ऐतिहासिक सत्य है । रामभक्ति इतने हजारों वर्षों से होती आ रही है। अरे ! एकांत जंगल में झोंपड़ी में उनकी भक्ति होती है, वह क्या बताती है ? उन अवतारों की चेतनाशक्ति को प्रजा अनंतकाल से खिंचती आ रही है और वह बहुत प्रभावशाली होने से प्रजा के दिल में पैठ गई है । यह भक्ति सिर्फ़ रामायण और भागवत की कथाओं से ही नहीं बढ़ती है, किन्तु कुदरती आकर्षण के कारण ऐसा होता है ।

भक्त को उलाहना

करीब शाम को छ बजे एक दंपती आये। **पाँच बजे के बाद आने के लिए श्रीमोटा ने उन्हें उलाहना दिया । उसके संदर्भ में श्रीनंदुभाई ने कहा कि 'उन दोनों के मातापिता की ओर से आश्रम को बहुत मदद मिलती है । उनकी दुकान से जो चाहिए वह मुफ्त मिलता है ।**

फिर भी देखा न सच सुनाने में देर लगी ? नियम बाबत कोई अपवाद नहीं है ।'

आश्रम के लाभार्थ नृत्य-समारंभ

दिनांक २२-३-१९६५, सोमवार के दिन आश्रम के लाभार्थ कुमारी सौदामिनी राव का नृत्य-समारंभ एक भक्त ने शहर में आयोजित किया था । रात को आठ बजे वह कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । पूज्य श्रीमोटा भी वहाँ पधारे थे । यह कार्यक्रम लगभग ११ बजे पूरा हुआ । कलाकारवृंद के सभ्य और अन्य भक्त पूज्यश्री के चरणस्पर्श करने लगे । मुंबई से आये हुए भक्त भी चरणस्पर्श कर के बिदा होने लगे । आपश्री ने मुझे कहा, 'गोपाल को पढ़ने का कहना ।' (स्वगत) 'ओह ! **मोटा !** ऐसे समय पर भी आप आपके स्वजनों की कितनी सँभाल लेते हैं ! शायद इतनी सँभाल उनके माँबाप भी नहीं लेते होंगे ।' उसके बाद आपश्री नडियाद गये ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१३)

जिनके प्रति हमें नापसंदगी हो या हो जाय, उसे ज्ञानभानपूर्वक खास विशेष प्रेम से चाहना और वह भी हमारे कल्याण के लिए वैसा करना है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

डभाण में रामनवमी

दिनांक १०-४-१९६५, शनिवार, रामनवमी का दिन श्रीमोटा का निर्गुण साक्षात्कार दिन, उनके शब्दों में ‘नया अवतार दिन ।’ दिनांक ९-४-१९६५ के दिन मुंबई से चंद्रकांत मेहता, उनके मातुश्री, धीरेशभाई, उनकी पत्नी और हम दोनों रात को डभाण पहुँचे । तब पूज्य श्रीमोटा यजमान रावजीभाई पटेल के साथ बैठकर रात्रि भोजन कर रहे थे । उनके भोजन के बाद अन्य भक्तों को भोजन करवाया । भोजन के बाद सब पूज्यश्री को नमस्कार करने गये । कइओं ने जोर से ‘हरि:ॐ’ बोला, हँसे और आनंद व्यक्त किया । श्रीमोटा फिर उनसे भी बड़े जोर के आवाज के साथ खुलकर हँसते । भक्तों को उससे अनोखा भाव उत्पन्न होता था ।

मुझे गोद ले ले

चंद्रकांत मेहता और उनके मातुश्री ने पूज्यश्री के चरणस्पर्श किये, तब आपश्री मातुश्री का हाथ पकड़कर नरम, आर्द्र आवाज से बोलने लगे, ‘मुझे चंद्रकांत के समान मानना । मेरी माँ नहीं है । मेरे सिर पर हाथ रख । मुझे गोद ले ले ।’ आपश्री अत्यंत भाव से सहृदयता से बोल रहे थे । ऐसे उनके हाव-भाव और आवाज पर से लगा । मातुश्री कुछ नहीं बोल सके । क्या बोले ? प्रथम दर्शन में ही श्रीमोटा उन्हें भेंट पड़े और उनका दिल जीत

लिया । मातुश्री ने उनकी ‘झोंपड़ी पवित्र करने के लिए’ पधारने की विनती की ।

सभी भक्त श्रीमोटा के सामने बेंच और कुर्सियाँ पर जमाने लगे, तब आपश्री ने कहा, ‘पुरुष नीचे बैठे और बहनों को ऊपर बैठने दे ।’ बहनों के लिए उन्हें पक्षपात सही ।

उसके बाद अधिकतर स्वजन शिवाभाई के घर सोने के लिए गये । दूसरी सुबह सभी करीब ढ़ाई बजे उठ गये, क्योंकि नित्यक्रम से निपट कर सब को पूज्यश्री के ‘नये अवतार दिन’ के आयोजन के उत्सव में हिस्सा लेने जाना था ।

‘नये अवतार’ का अर्थ

छ बजे पूज्यश्री को केसर-स्नान करवाने में आया । उसमें बहुत भक्तों ने हिस्सा लिया । सात बजे आपश्रीके लिए खास बाँधे गये मंडप में आकर आप कुर्सी पर बिराजमान हुए । सर्व प्रथम मथुरीबहन खरे ने भजन गाये । उसके बाद श्रीमोटा ने रामनवमी का महत्त्व समझानेवाला प्रवचन किया । ‘नये अवतार’ का अर्थ समझाया । ‘मेरी आँखें इस दिन खुली, इससे इसे नया अवतार कहता हूँ’.... ऐसे उत्सव क्यों करने देता हूँ, वह समझाता हूँ । ऐसे प्रसंग पर सभी स्वजन एकत्रित हो और

मुझे पैसे मिले, तो वह समाजोपयोगी योजनाओं में खर्च कर सकूँ ।

'ध्यान कैसे करना ?' आदि प्रश्नोत्तर

दस बजे सब को प्रसाद लेने जाने का था । प्रसाद लेने से पहले सेठ नटवरभाई चिनाई ने रामधुन करवायी । प्रसाद लेने के बाद दो घंटे का विराम रहा और चायपानी के बाद प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम हुआ ।

प्रश्न : ध्यान कैसे करना ?

श्रीमोटा : जहाँ तक एकाग्रता न आये, वहाँ तक ध्यान-ब्यान कुछ भी संभव नहीं है । गीताजी पढ़िए, उसमें सब दिया है ।

प्रश्न : गायत्रीमंत्र कोई भी बोल सकता है ?

श्रीमोटा : गायत्री मंत्र शुद्ध वातावरण में और निश्चित आरोह-अवरोह में बोला जाय तो लाभ होगा । **गायत्रीमंत्र कामधेनु है, किन्तु इस युग में साधना का सरल से सरल प्रकार नाम-स्मरण और आत्मनिवेदन है ।** फिर जहाँ तक हम बाढ़ में लकड़ी बहा करे, उस प्रकार भाव में बहे नहीं, वहाँ तक कुछ भी प्राप्त नहीं होगा ।

प्रश्न : मुक्तात्मा को बीमारी क्यों होती होगी ?

श्रीमोटा : तादात्म्यभाव के कारण उसे बीमारी होती है । वह भक्त की बीमारी ले लेता है, ऐसा नहीं कह सकते हैं, किन्तु निमित्त के कारण किसी भक्त की बीमारी

उसे लग जाती है, ऐसा कहना योग्य होगा । महात्मा के साथ तादात्म्यभाव होगा तो ही ऐसा होगा ।

प्रश्न : आप समाजवाद में मानते हो ?

श्रीमोटा : मुझे साम्यवाद पसंद है, किन्तु उसमें रही हुई वर्ग-विग्रह की भावना पसंद नहीं है । हमारे प्राचीनकाल में सच्चा साम्यवाद प्रचलित था, वह उस वक्त के मंत्रों पर से जान सकते हैं । *'ॐ सहनाववतु, सहनौभुनक्तु...'* मंत्र क्या कहता है ? सब को साथ मिलकर काम करने का, भोगने का, रक्षा करने का तथा किसीकी ईर्ष्या नहीं करने का सीखाता है ।

गाँवो की दशा

प्रश्न : मोटा, स्वराज मिलने पर भी गाँवो की दशा तो बिलकुल भी नहीं सुधरी है । आपका क्या कहना है ?

श्रीमोटा : 'हाँ, सरकार ने गाँवों की बिलकुल उपेक्षा की है । बड़े कारखानें, बड़े डेम और बड़े शहर गाँवो के बलिदान के कारण विकसित हुए हैं । सामान्यजन की स्थिति बदतर है । मेरे गुरुमहाराज ने कहा था कि 'स्वराज आ रहा है, वह मैं देख रहा हूँ, लेकिन तेरे दांत खट्टे हो जायेंगे' वह कितना सच ! गांधीबापु भी आखिर-आखिर में कहते थे कि 'स्वराज जल्दी मिला है ।' गांधीजी को जीवनशुद्धि के लिए २१ दिन के उपवास करने पड़े थे ।

(यों बोलते-बोलते श्रीमोटा गद्‌गद हो गये थे ।) जीवनशुद्धि, चित्तशुद्धि सर्व बाबतों में अग्र क्रम पर आती हैं ।'

'हमारे दोषों के सामने मत देखना'

शाम को पाँच बजे आपश्री भादरण जाने निकल गये । कार में बैठने से पहले उन्होंने सब को प्रसाद लेकर जाने का कहा और भाव से भरपूर रीति से बोले, 'भाई, हमारे दोषों के सामने मत देखना ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(१४)

संस्कारों के प्रकार हैं अनंत प्रकार के सब,
संस्कार से जन्म लेते हैं निमित्त सब प्रकार के ।

('निमित्त' पुस्तक से) - **मोटा**

(श्रीमोटा दि. ३-५-१९६५ से ८-५-१९६५ तक मुंबई में)

प्रकृति का रूपांतर

पूज्य श्रीमोटा दिनांक ३-५-१९६५ की जल्दी सुबह मुंबई पधारे । उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर छ-सात भक्त आये थे । श्रीमोटा चिनाई सेठ के वहाँ गये । दोपहर ढ़ाई बजे लगभग बारह भक्त वहाँ आये थे, तब सत्संग हुआ था ।

प्रश्न : मोटा, बहुत समय से विचार आता है कि

संतों के पास वर्षों तक रहनेवाले और बैठनेवालों की प्रकृति का रूपांतर हुआ देखने में नहीं आता । तो संतों चमत्कार कर के वैसा रूपांतर क्यों नहीं कर सकते ।

श्रीमोटा : देखो भाई, नदी में बहनेवाले पानी को मोड़ना हो तो नहर खोदना चाहिए तो ही खेत को पानी मिले । उस प्रकार मनुष्य अपनी तैयारी दिखाते हो, स्वीकारात्मक दिल रखते हो और स्वयं को खुला रखते हो तो संतों से काम हो सकता है । इसमें संत चमत्कार-बमत्कार कर के कुछ नहीं कर सकते हैं । इसलिए चमत्कार की बात मत करना ।

प्रश्न : भगवान शंकराचार्य ने गाया है, संत तो वसंत ऋतु के वायु समान हैं । जैसे वह वायु जहाँ-तहाँ सुगंध, सुरभि, उल्लास, आनंद फैलाता है, वैसे संत स्वयं पार हो गये होने के कारण, उनके संपर्क में आनेवाले मनुष्यों को बिना स्वार्थ के उद्धार करते होते हैं ।

श्रीमोटा : यदि मनुष्य उसका नाक बंद रखकर चलता हो तो उसे फिर वसंत के वायु की सुगंध किस प्रकार मिलेगी ? जो मनुष्य अपना स्वयं का विकास करने और मजबूत बंधन तोड़ने के लिए तैयार ना हो, 'रिसेप्टिविटी' बताता ही ना हो और उपदेश स्वीकार कर के अंदर उतारता ही ना हो, उसे लाभ कहाँ से मिले ?

इतने में पूर्णिमाबहन पकवासा और अन्य भाईबहन आये । कच्छ सरहद पर के पाकिस्तानी आक्रमण की बात निकली । कच्छ में बहनों के लिए तालीम शिबिर करने की पूर्णिमाबहन ने आवश्यकता बताई । श्रीमोटा ने समर्थन दिया ।

संतों की मुलाकात

डिवाइन लाइफ सोसायटी' (ऋषिकेश) वाले पूज्य चिदानंदजी महाराज पधारे । उन्होंने पूज्य श्रीमोटा को पुष्पहार और फलफलादि अर्पण किए । सेठ नटवरलाल चिनाई ने स्वामीजी को चंदन का तिलक किया और पुष्पहार से स्वागत कर के दक्षिणा अर्पण की । श्रीमोटा ने अपनी प्रवृत्तियाँ तथा मौनमंदिर का ख्याल दिया । स्वामीजी ने कहा कि 'उन्हें उसका थोड़ा ख्याल है ।

उसके बाद श्रीरामकृष्ण मिशन के स्वामी विमल महाराज भी पधारे । उन्होंने गोपाल को याद किया ।

स्वामी चिदानंदजी बिदा लेने के लिए खड़े हुए । श्रीमोटा भी खड़े हुए और स्वामीजी को उन्होंने उठाकर गोलगोल घूमे और आलिंगन दिया । स्वामीजी का वजन करीब ८० रतल जितना होगा ।

कोटक साहब के वहाँ

दिनांक ४-५-१९६५, मंगलवार के दिन जल्दी सुबह

पूज्यश्री सेठ नटवरलाल चिनाई के एक भाई के 'फ्लेट'का मंगल मुहूर्त-उद्घाटन करने के लिए गये और लगभग पूरा दिन वहाँ रुके । शाम को पाँच बजे आपश्री कोटकसाहब के वहाँ चार सीढ़ी चढ़कर गये । कुछ देर बाद कोटक-साहब ने बोलना आरंभ किया तो ठीक-ठीक समय तक वे अकेले ही बोले । इससे मैंने उनके कान में कहा कि अब पूज्यश्री से कुछ पूछो कि जिससे आपश्री दो शब्द बोले । श्रीमोटा यह सुनकर बोले 'कोटकसाहब बोले या मैं बोलूँ, यह सब एक ही है ।' उसके बाद उन्होंने पूज्यश्री को 'महाजनशक्ति दल' के लिए रुपये २५१/- की भेंट दी ।

भक्तों का स्नेहमिलन

दिनांक ५-५-१९६५, बुधवार को 'जनशक्ति' दैनिक में श्रीमोटा का संक्षिप्त जीवनचरित्र प्रसिद्ध हुआ था । आपश्री ने उस पर एक नजर डाली ।

शाम को छ बजे चिनाई सेठ के घर आश्रम के साथ जुड़े हुए भक्तों का स्नेहमिलन आयोजित करने में आया था । उनका 'ड्रोइंग-रूम' पूरा भर गया था । पचास से भी ज्यादा भाईबहन होंगे । पूज्यश्री को जरी का सुंदर साफा बाँधा था । उसके बाद आपश्री मखमल की गद्दी पर बिराजमान हुए । सरोजबहन कांटावाला ने प्रार्थना तथा भजन गाये, फिर सत्संग शुरू हुआ ।

उच्च-नीच योनि में पुनर्जन्म

प्रश्न : मनुष्य का जन्म प्राणी या ऐसी किसी हलकी योनि में होता है सही ?

श्रीमोटा : मनुष्य में पाँच करण कमज्यादा अंश में विकसित हुए होते हैं और वे हैं मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् । इसलिए मनुष्य उसके कर्म के अनुसार और जिस तत्त्व उसमें ज्यादा विकसित हुआ हो, उसे लेकर मनुष्ययोनि में ही पुनर्जन्म प्राप्त करता है । वह चाहे जैसा घातकी, भ्रष्ट या दुष्ट हो तो भी वह मनुष्ययोनि में ऐसे भ्रष्ट कुल में जन्म लेगा, दूसरी किसी योनि में नहीं । क्योंकि यह पाँच करण अन्य कोई निम्न योनिवाले जीव में नहीं होते हैं । हाँ, हलकी योनिवाला जीव मनुष्ययोनि में प्रारब्ध के कारण जन्म ले सके सही । जैसे कि रमण महर्षि के वहाँ एक लक्ष्मी नाम की गायमाता थी, जो महर्षि को प्रिय थी । उस गाय का अवसान हुआ । बाद उसका पुनर्जन्म मनुष्ययोनि में हुआ हो ।'

प्रश्न : सच्चा साधक किसे कहेंगे ?

श्रीमोटा : जिसका निश्चय जीवनविकास के लिए दृढ़ हुआ हो और उसे साकार करने के लिए जिसमें तनदिही, धैर्य इत्यादि प्रगट हुए हो । **शांति और प्रसन्नता सच्चे साधक के लक्षण हैं ।**

प्रारब्ध सच्चा या पुरुषार्थ

प्रश्न : मोटा, प्रारब्ध सच्चा या पुरुषार्थ ?

श्रीमोटा : प्रारब्ध और पुरुषार्थ परस्पर अवलंबित हैं । आज का पुरुषार्थ आनेवाले कल का प्रारब्ध बनता है । यदि प्रारब्ध ही सच्चा हो, तो जीव शिव नहीं बन सकता है । इसलिए हरएक क्षेत्र में पुरुषार्थ जरूरी है । यदि प्रारब्ध ही सर्वेसर्वा होता तो पुरुषार्थ शब्द अस्तित्व में नहीं होता, अनावश्यक होता ।

कथावार्ताओं का उठाव क्यों नहीं है ?

प्रश्न : आज जगह-जगह कथावार्ताएँ, शास्त्रों की चर्चा तथा अध्ययन होते हैं, फिर भी उसका उठाव नहीं दिखता है, उसका क्या कारण होगा ?

श्रीमोटा : 'भक्ति का उठाव हमारे जीवन में नहीं है, क्योंकि हमारे रागद्वेष फीके नहीं हुए हैं, आचारविचार नहीं सुधरे हैं । जीवन का ध्येय क्या है ? वह हमारे सामने नहीं है । दूसरों के दोषों के सामने मत देखना, उससे तो अशांति बढ़ेगी । आज देश में धर्म जीवंत नहीं है । यदि जीवंत होता तो लोगों में देशभक्ति, शौर्य, सहिष्णुता, प्रामाणिकता, त्याग, ऐक्य, साहस, एकता, भाव, प्रेम इत्यादि देखने को मिलते । समाज में गुण और भाव प्रगट हुए बिना धर्म टिकेगा नहीं, भगवान के भाव को नहीं पकड़ सकेंगे ।'

अधिक प्रवृत्तिवालों के लिए साधना

प्रश्न : अधिक प्रवृत्तिवाले तथा बुद्धिमान लोगों को साधना में किस प्रकार शुरूआत करनी चाहिए ?

श्रीमोटा : अपने में कौन से गुण★ अग्रस्थान पर हैं– 'प्रिडोमिनन्ट' हैं ।' वह उसे पहले ढूँढ़ना पड़ेगा । जिसे बुद्धि की पकड़ लगी हो, रजस गुणवाले जैसी, वह यदि सतत एकसा आध्यात्मिक अभ्यास में लगा रहे और अपनी शक्ति को विकेंद्रित, छिन्नभिन्न न होने दे, तो वह इस मार्ग पर जरूर मुड़ सकेगा । बुद्धिवाले को मननचिंतन बहुत करना चाहिए । यदि वह सतत अभ्यास में, साधन में ना रहे तो बुद्धि के वह संस्कार आक के फूल के समान उड़ जायेंगे ।

मनोदुःख का मूल कारण

प्रश्न : मोटा, मन बहुत बार अशांति और दुःख का अनुभव करता है, तो क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : 'मनोदुःख का मूल कारण, सूक्ष्मतम कारण हमारे में छुपा हुआ अहम् है । अहम् घायल होता है, इससे दुःख और अशांति होते हैं । अहम् को हजारों सिर होते हैं, किन्तु उसका हमें पता नहीं लगता है । इसलिए संक्षेप में कहूँ तो जो सिर पर आ जाता है, वह हमारे कारण है,

---

★गुण यानी सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की बात है ।

ऐसा समझकर, जबरदस्ती से नहीं, किन्तु प्रेम से सब सहन करना चाहिए। यह भी जीवनविकास का एक मार्ग है। भगवान को निवेदन करो। समर्पणभाव विकसित करो। जोर से नामस्मरण करो।

करीब सवा सात बजे पूज्यश्री ने 'प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम' पूरा किया। चिनाई सेठ ने धुन कराई और 'सब का करो कल्याण दयालु प्रभु !' वह प्रार्थना की। उसके बाद सब भक्तों ने 'बुफे डिनर' लिया और फिर ''हरिः ॐ, हरिः ॐ' कहते बिदा हुए।

'सहकारनिवास' में श्रीमोटा

दिनांक ६-५-१९६५, गुरुवार के दिन श्रीमोटा चिनाई सेठ के वहाँ से 'सहकारनिवास' में हरमुखभाई जोगी के वहाँ सुबह में पधारे, तब 'जनशक्ति' (दैनिक) वाले मनुभाई दवे उपस्थित थे। श्रीमोटा और आश्रम के संबंध में मनुभाई को अच्छी जिज्ञासा होने से उनकी पहचान पूज्य श्रीमोटा के साथ कराई। इससे मनुभाई प्रसन्न हुए और उन्होंने स्वरचित माताजी के भजन गये। उसके बाद उन्होंने पूज्यश्री की कुछ भी सेवा करने की तैयारी बताने पर पूज्यश्री ने कहा कि 'महाजन शक्तिदल के लिए फंड एकत्रित करना है, उसके लिए जो मदद हो सके वह करना।'

मनुभाई : मोटा, शांति की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : आपने माँ का आश्रय लिया है न ? वही किया करो । दूसरा क्या करने का हो ?

श्रीमोटा की ध्यानावस्था या भावावस्था

गुरुवार शाम को सात बजे पूज्यश्री हमारे वहाँ प्रसाद लेने पधारे । उनके साथ सेठ नटवरभाई चिनाई एवम् रामकृष्ण मिशनवाले पूज्य विमल महाराज इत्यादि पधारे ।

प्रथम तो पूज्यश्री का पूजन करने में आया और 'जय जगदीश हरे' की आरती करने में आई, तब पलंग पर बैठे हुए पूज्य श्रीमोटा लगभग २०-२५ मिनट तक भावावस्था में (आँखें बंद कर के) रहे । उसके बाद दस मिनट तक 'हरिःॐ' की धुन हुई । सरोजबहेन कांटावाला ने भजन गाये ।

उसके बाद सब मकान की छत पर गये । छत पर भोजन के कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए सोसायटी की ओर से पहली बार अनुमति मिली थी । लगभग ५० भाईबहन ने भोजन किया होगा ।

'रतिभाई ! कीर्तिदाबहन ! थेन्क्यु, हरिःॐ, बहुत आनंद आया ।' ऐसा कहते-कहते पूज्य श्रीमोटा हरमुखभाई के घर पधारे ।

दिनांक ७-५-१९६५, शुक्रवार की सुबह लगभग साढ़े छ बजे पूज्यश्री थोड़े भक्तों के साथ 'फोर्जेट स्ट्रीट' में मिस्टर और मिसिस कुपर के वहाँ गये । वहाँ से विलेपार्ले और फिर अंधेरी गये । वापस आते हुए वर्ली पर अवधूत श्रीपूरणदासजी के मंदिर में चिनाई सेठ के साथ गये और वहाँ से 'अजिंक्य हाउस' में नटवरभाई परीख के वहाँ भोजन के लिए गये । हरएक जगह से आपश्री को छोटा-बड़ा दान मिला ।

सोनावाला ब्लोक्स में

शाम छ बजे सोनावाला ब्लोक्स में मोहनभाई चोखावाला के वहाँ पूज्यश्री चार-पाँच भक्तों के साथ गये । चार सीढ़ी चढ़ने के थे, क्योंकि 'लिफ्ट' नहीं थी । उन्होंने कुर्सी में बैठकर ऊपर चढ़ने की ना कही और दो व्यक्तिओं की मदद लेकर धीरे-धीरे सीढ़ी चढ़ गये । इससे आपश्री की कमर का दर्द बढ़ गया, किन्तु आपश्री ने उस पर ध्यान नहीं दिया ।

पूज्य नारायण स्वामी की याद

भोजन करने के बाद सब छत पर बैठे । पूज्य नारायण स्वामी के भक्त श्रीचंपकभाई के भजनमंडल का वृंद एवम् स्वामी श्रीचिन्मयानंदजी के 'चिन्मय मिशन' ग्रुप के सभ्यों के साथ ७०-७५ भाईबहन एकत्रित हुए थे ।

श्रीमोटा ने पूज्य नारायण स्वामी की लोककल्याण की प्रवृत्तिओं को याद करते कहा कि उन्होंने हिमालय में अस्पताल, शाला, गौशाला ऐसी सब प्रवृत्तियाँ की थी । वे मेरे मित्र थे, वे अच्छे कीर्तनकार थे और करताल तो इतने जोर से और त्वरा से बजाते थे कि यदि वह हाथ में से छूट जाय और किसीको लग जाय तो खून निकाल देवे ! उसके बाद हुए प्रश्नोत्तर में से मुख्य अंश :

जप हर समय कैसे हो सकता है ?

एक बहन : जप हर समय कैसे हो ?

श्रीमोटा : अभ्यास से, 'प्रेक्टिस' से हो ।

प्रश्न : घर में बहुत काम करने का होता है, तब जप करने का मन कैसे होगा ?

श्रीमोटा : लगन लगावे तो हो सकता है ।

'–तो लाभ हो ।'

प्रश्न : सुख में हो सकता है, फुरसत हो तब हो सकता है, किन्तु चिंता से व्याकुल हो, खूब काम हो, तब नामस्मरण किस प्रकार हो सकता है ?

श्रीमोटा : विपरीत संजोगों में जो मनुष्य जोश दिखा सके, वही सच्चा मनुष्य कहा जायेगा । अपनी कच्छ की सरहद पर ही देखो न । ऐसे समय पर । (वह युद्ध का समय था ।) दोनों पक्ष तैयार होकर, शस्त्रसामग्री एकत्रित कर के कैसे सज्ज हो जाते हैं ! और ज्यादा कठिन संजोगों

में जो पक्ष ताकत दिखावे, जवांमर्दी दिखावे, वह जीतेगा, यह कायदा है । उसी प्रकार फुरसत मिलती ना हो तब तथा विपरीत संजोग हो, तब नामस्मरण की 'प्रेक्टिस' रखी हो तो लाभ होगा ।

प्रारब्ध पर भी आधार है ?

प्रश्न : प्रारब्ध पर भी उसका आधार है न ?

श्रीमोटा : भगवान के मार्ग पर जाने में भारी पुरुषार्थ की जरूर होती है । प्रबल इच्छा के बिना और दहकती तमन्ना के बिना वह मार्ग नहीं मिलेगा । हमारा सुखदुःख इत्यादि प्रारब्ध पर निर्भर होगा, किन्तु साधना का यानी की भगवान का मार्ग बहुत विकट होने से शक्तिशाली - अदम्य भावना होनी चाहिए । ऐसी हिम्मत हो, तब साधना हो सकती है । अड़िग निश्चय हो जाय तो कुछ हो सकता है । फिर सातत्य आता है । इतना हम से हो तो बाकी का ईश्वर सँभाल लेंगे ।'

प्रश्न : मृत्यु के पश्चात् दसवें-बारहवें की विधियाँ करने में आती हैं, वह बराबर है ?

श्रीमोटा : वह तात्त्विक रूप से ठीक है, किन्तु समझकर व्यक्ति स्वयं वह करे तो वह असर करती है। मेरी माँ की मृत्यु हुई, तब मैंने ऐसी कोई विधि नहीं करवायी थी ।

प्रश्न : मृत्यु के बाद जीव की क्या गति होती है ?

श्रीमोटा : वह जीव बारह महीने तक उसे जहाँ-जहाँ आसक्ति हो, वहाँ-वहाँ वह भटकता रहता है । धीरे-धीरे उसकी आसक्ति कम होती जाती है । मृत्यु के बाद उसके कल्याण के लिए भजन, नामस्मरण इत्यादि करना चाहिए ।

बहनें बारबार एक ही प्रश्न पूछती थी कि 'काम के बोज के बीच ईश्वरस्मरण कैसे कर सकते हैं ?' तब श्रीमोटा ने 'प्रेक्टिस' करने की सलाह देकर विशेष में कहा कि नियमित भावनापूर्वक स्मरण हो तो बीमारी भी मिट जाती है ।

लगभग सवा आठ बज गये थे । पूज्यश्री ने कार्यक्रम का समापन किया और 'सहकारनिवास' में तिसरी मंज़िल पर चंद्रकान्त मेहता के वहाँ गये । उन्हें बहुत थकान हो रही थी, इससे तुरंत ही सो गये ।

दूसरे दिन आपश्री पूर्णिमाबहन पकवासा की शिबिर में गये और रात को मुंबई से बिदा हुए । इस वक्त उन्हें मुंबई में से अच्छी रकम का दान मिला था ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(१५)

जीवन अर्थात् अनंत जन्मों के संस्कार लेकर आये हुए जीव की चेतनाशक्ति की मानवदेह द्वारा हो रही वहन क्रिया

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

श्रीमोटा दिनांक १०-६-१९६५ से १४-६-१९६५ तक मुंबई में

१० वीं की सुबह श्रीमोटा मुंबई स्टेशन से सीधे चिनाई सेठ के वहाँ पधारे । मेरुदंड के मनके की पीड़ा के कारण उन्होंने आज कहीं भी जाने का कार्यक्रम नहीं रखा था ।

परदेशी साधुमहाराज

११ वीं की शाम को चिनाई सेठ के वहाँ २०-२५ भाईबहन एकत्रित हुए थे । एक परदेशी संन्यासी पूरे भारतीय पहनावे में पूज्यश्री के पास बैठे थे । श्रीमोटा के कहने से सरोजबहन काँटवाला★ने और दूसरी एक बहन ने भजन गाये ।

★सरोजबहन को मौनमंदिर में बैठने पर भजन लिखने की प्रेरणा-स्फुरणा हुई थी । उनकी तीन पुस्तिकाएँ प्रसिद्ध हुई हैं : हृदयअर्घ्य, समर्पणांजलि और भावांजलि । वे हर वर्ष एक महीने के लिए मौन में बैठते थे ।

पूज्य श्रीमोटा ने साधुमहाराज की पहचान कराते हुए कहा, 'वे १७ वर्ष पहले कुंभकोणम् में एक पादरी के रूप में आये थे, किन्तु हिन्दु धर्म पसंद आ जाने से उन्होंने फ्रेंच नागरिकत्व छोड़कर भारतीय नागरिकत्व स्वीकार किया । कावेरी नदी के किनारे झोंपड़ी बाँधकर वे रहे । थोड़ा तामिल, हिंदी और अंग्रेजी सीख लिया । वे गरीब बालकों को पढ़ाते । स्वयं पकाकर खाते और भजन ध्यान में समय बिताते । बाद में वे उत्तरकाशी और हिमालय में कहीं रहने चले गये...भावना की बात है ।'

दान कैसा करना चाहिए ?

दानधर्म के संबंध में बोलते हुए आपश्री ने कहा, 'अभी प्रजा में धर्म के संबंध में भान चाहिए उतना प्रकट नहीं हुआ है । **धर्म यानी रूढ़िगत दिखावा नहीं, किन्तु प्रजा में गुण और भाव प्रकट हो वैसा आचरण । गुण यानी साहस, हिम्मत, धैर्य, तितिक्षा, सद्भाव, त्याग, वैराग्य इत्यादि । भावना यानी प्रभुप्रीत्यर्थ सब कुछ करने की तमन्ना । यदि प्रजा में यह गुणभाव प्रगट हो तो देश उन्नत होगा ।** इसके लिए मैंने यह काम प्रारंभ किया है और उस कार्य में मदद करने के लिए लोगों को विनती करता हूँ। दूसरे दान करना गलत हैं ऐसा नहीं कहता हूँ, किन्तु 'गुणभाव' के लिए दान हो तो वह आपके साथ और साथ ही मृत्यु बाद भी आयेगा और वह ज्यादा लाभदायी होगा ।'

आज आपश्री बहुत भावनाभरे आवाज से बोल रहे थे कि 'आज जहाँ-तहाँ सब जगह स्वार्थवाद दिखता है । लोग 'सेल्फसेन्टर्ड' यानी कि स्वार्थी हो गये हैं । सच्चा समाजवाद इस प्रकार नहीं आयेगा । पूरा दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा ।'

उसके बाद आपश्री ने मेहमान साधुमहाराज को दो शब्द बोलने की विनती की । महाराज ने टूटी-फूटी इंग्लीश में बोलते हुए श्रीमोटा के प्रति अपना आदरभाव व्यक्त किया और हरएक को अपनी शांति के लिए अपने को, 'स्व' को पहचानना चाहिए उस बात पर जोर दिया ।

फिर सब को प्रसाद मिला । श्रीमोटा ने महाराज को रुपये १०१/- की भेंट दी ।

'हमारा संबंध पैसे का नहीं है'

दिनांक १२-६-१९६५ के दिन पूज्यश्री मोटा चिनाई सेठ के वहाँ से 'सहकारनिवास' में पधारे । पहले तीसरी मंज़िल पर चंद्रकांत मेहता के बीमार बेटे को देखने के लिए गये । आपश्री अचानक आ पहुँचे उसका घरवालों को सुखद आश्चर्य हुआ । चंद्रकांत की माताजी ने तुरंत पूज्यश्री को कुमकुम का टीका किया, अक्षत् लगाये और दीपक किया तथा रुपये ११/- की भेंट देने लगे, किन्तु उन्होंने

वह अस्वीकार करते हुए कहा, 'हमारा संबंध पैसे का नहीं है... पैसे का व्यवहार हो तो भारी पड़ेगा ।'

उसके बाद आपश्री हरमुखभाई के वहाँ छठी मंज़िल पर पधारे । लिफ्ट में प्रवेश करतें ही लिफ्टमेन ने पूज्यश्री के चरणों में सिर रख दिया । श्रीनंदुभाई ने उसे दो रुपये दिये ।

'रतिलाल बहादुर'

दिनांक १३-५-१९६५, रविवार के दिन करीब सुबह छ बजे धीरेशभाई मुस्कुराते हुए मेरे वहाँ आये और बोले 'मेहता साहब, मोटा ने कहलवाया है कि 'रतिभाई बहादुर को बुलाईये । हम उनका नया नामकरण करें !' इससे मैं धीरेशभाई के साथ तुरंत श्रीमोटा को मिलने गया । श्रीमोटा ने मुझे देखते ही 'रतिलाल बहादुर !' ऐसा कहकर सत्कार किया । अन्य बातचीत होने के बाद श्रीनंदुभाई ने मुझे कहा, 'सोमवार सुबह साढ़े पाँच बजे उपनगर में जाना है, इसलिए तैयार रहना ।'

'...तो वह बड़ा दंभ है'

हमारे सामने के मकान में चर्चा कर रहे 'चिन्मय मिशन गृप' के सभ्यों को पूज्यश्री की उपस्थिति का समाचार मिलने पर पाँच-छ भाई मिलने आये । उनमें से एक भाई ने श्रीमोटा की अनुमति लेकर प्रश्न पूछा, 'भक्ति

अच्छी या ज्ञान अच्छा ? ऐसा मन में बारबार होता है, तो क्या करना चाहिए ?'

श्रीमोटा : 'मार्ग तो दोनों बराबर है, किन्तु वेदांत के महाज्ञानी माने जानेवाले भगवान शंकराचार्य ने भी भक्ति के स्तोत्रों की रचना की है, किन्तु ऐसा कब हो ? जब मन प्रभुमय हो जाय तब । (पूज्यश्री कुछ अकुलाकर जोश में बोले) मूल बातें, जैसी कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर इत्यादि में से हटने का किसीको सूझता नहीं है और वेदांत की बड़ी-बड़ी बातें करते हो, वह तो दंभ है । सच्ची छटपटी और उत्कट जिज्ञासा की ज्वाला जहाँ तक लगे नहीं, वहाँ तक आप से कुछ नहीं होगा... आप पड़े हो भ्रम में और बातें करते हो ब्रह्म की । यह तो दंभ है । याहोम कर के झुकाओ । जहाँ हो, वहाँ से खिसको, एक कदम भी आगे बढो...किन्तु किसीको वैसा नहीं करना है और बातें बड़ी-बड़ी करना है । खाली गप मत मारो... यह तो सब सिर्फ बुद्धि की बातें हैं । उससे कुछ भी अनुभव नहीं कर सकोगे ।'

गुरु खोजने की जरूर नहीं है

प्रश्न : गुरु बिना यह मार्ग कौन दिखावे ?

श्रीमोटा : गुरु तो आपके अंदर बैठा है । वेदांत की रीति से कहें तो । (प्रश्नकर्ता वेदांत का विद्यार्थी होने से

वैसा कहा ।) गुरु खोजने जाने की जरूरत नहीं है । सच्ची जिज्ञासा जागी होगी तो सब स्पष्टीकरण हो जायेगा और रास्ता दिखाई देगा । अभ्यास करो । साधना नियमित करो । गीतामाता ने इस बारे में सब कहा है । बचाव की दलील करना हो तो भले । कुछ मत करना । जहाँ हो, वहाँ ठीक हो । आपको क्या होना है ? उसका आदर्श तो सामने है ही नहीं । व्यर्थ बातें करने से कुछ नहीं होगा । राम राम करो !

वेदांत की बातें करनेवालों पर प्रहार

एक व्यक्ति जरा लाईट मूड में (मज़ाक करने के भाव में) बोलने जा रहा था कि '**मोटा**, वर्तमान में खाने-पीने का कहाँ शुद्ध मिलता है तो साधना करने.....' उसे बीच में काटते हुए 'रहने दो ! रहने दो !' ऐसा श्रीमोटा ने कहा और मेरी ओर घूमकर थोड़े गुस्से में बोले, 'रतिलाल बहादुर, यदि अब वेदांत की बातें की है तो मेरी सास के सब को दिखा दूँगा, कुछ पूछना मत । आजकल तो सब चल पड़े हैं ! ब्रह्मविद्या सिखाने और प्राप्त करने की ऊपर से डिग्रियाँ देते हैं । क्या गप लेकर बैठे हो ?' अन्य किसीको कुछ सख्ती से बोध देना हो, तब तो स्वजन को ही कहकर उसको सुनाना न ! इस प्रकार उन्होंने मुझे सपाटे में लिया और वेदांत के विद्यार्थिओं को सच्चा उपदेश दिया ।

‘खड़े हो, वहाँ से थोड़ा तो खिसको’

दोपहर का समय था । श्रीमोटा खाट पर सोये-सोये बातें करते थे । हरमुखभाई जोगी और उनके कुटुंबीजन नीचे बैठे हुए थे । कुछ सत्संग करने का श्रीमोटा ने कहा । इससे मैंने साँईबाबा के दक्षिण में हो गये बड़े भक्त नरसिंह स्वामी की बात की । यह स्वामी राजाजी के मित्र और बड़े वकील थे । किन्तु उनके कुटुंबीजनों का एक के बाद एक एकाएक अवसान होने से उन्हें भारी आघात लगा । इससे शांति के लिए वे कई आश्रम घूमे और आखिर में शिरड़ी आये । वहाँ उन्हें कई अनुभव हुए और शांति मिली । उसके बाद उन्होंने साँईबाबा के बारे में बहुत अध्ययन किया और ‘साँईबाबा चार्टर्स एन्ड सेईंग्स’ नाम का पुस्तक लिखा और दक्षिण भारत में साँईबाबा का नाम सुप्रसिद्ध किया । उस पुस्तक में साँईबाबा के पूर्वजन्म और अवतारों की अच्छी बात है । उसके अनुसार साँईबाबा का कथन है कि ‘मैं कबीर था और कपड़े बुनता था, ऊकबर के दरबार में था, झाँसी की रानी के सैन्य में भी उसके साथ था... मैं बहुत काम करता । इतना काम करता कि मेरी हड्डियाँ दिखती ।’

तब श्रीमोटा बोले, ‘देखो, ऐसे महान पुरुष इतने जन्म लेकर काम करते रहते हैं तो उसका क्या अर्थ ? अवतार अनंत है । कुछ भी स्थिर नहीं है । हम तो खिसकना ही

नहीं चाहते हैं । इसलिए जहाँ खड़े हो, वहाँ से थोड़ा खिसको तो बहुत अच्छा कहा जायेगा ।'

पूज्यश्री आज सब को जहाँ खड़े हो, वहाँ से 'खिसकने' और 'आगे बढ़ने के लिए' आर्द्रतापूर्वक कहते थे ।

वेदांत के नाम पर ढ़ोंग नहीं

दोपहर चायपानी के बाद श्रीमोटा कहने लगे, 'बरगद का पेड़ ऊँचे खिलकर-विकसित होकर वापस जमीन की ओर मुड़ता है, उसी प्रकार हमें भी पढ़-लिखकर, विकास पाकर जमीन पर आना है और काम करना है । *'ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'* रट-रट कर बेपरवाह नहीं बनना है । उस परम सत्य का अर्थ पचाना है, अनुभव करना है और जगत की सृष्टि के प्रति प्रेम से देखना है । वेदांत के नाम से ढोंग का आचरण नहीं करना चाहिए । आप जहाँ हो, वहाँ से आगे बढ़ो । पाँव के नीचे जलता हुआ कोयला आवे या पाँव में काँटा लगने का हो ऐसा लगे, तब आप पाँव ऊँचाकर देते हो और दूसरी जगह रखते हो । उस प्रकार आपको इस मार्ग पर कदम उठाना है । शंकराचार्य ने भी कितनी साधना की थी ! अनुभव होने के बाद उन्होंने 'भजगोविंदम्' लिखा था ।'

वेदांत के विद्यार्थिओं के खाली-खाली प्रश्नों के कारण आपश्री आज जरा बारबार चिढ़कर वेदांत और भक्ति के बारे में ही बोलते थे ।

‘जवाब अंदर से मिलेगा’

फिर किसी एक ने पूछा, ‘हमें रास्ता कौन दिखायेगा ?’

‘आप के गुरुजी से पूछिये । आपने किसे गुरु बनाया है ।’

‘साँईबाबा को ।’

‘तो साँईबाबा से पूछिये... अरे ! कुछ निश्चितरूप से करोगे तो जवाब अंदर से ही मिला करेगा ।’ श्रीमोटा ने कुछ कठिन होकर कहा ।

शाम को छ बजे श्रीमोटा चंद्रकांत के वहाँ पधारे । आपश्री वहाँ रात्रि भोजन करनेवाले थे । चंद्रकांत ने फूलहार और दूसरी सब गृहशोभा के पीछे बहुत खर्च किया था, वह श्रीमोटा की दृष्टि में तुरंत आ गया । इससे उस बारे में उन्होंने हलका इशारा किया । श्रीमोटा फूलहार के बदले सूतर की माला पसंद करते थे ।

दिनांक १४-६-१९६५, सोमवार के दिन जल्दी सुबह साढ़े पाँच बजे श्रीमोटा चार भक्तों के साथ उपनगर विस्तार की ओर गये । पहले बांद्रा गये । फिर मलाड में आये हुए ‘वेस्टर्न डाइस्टफ कोर्पोरेशन’ में गये । वापस आते हुए सांताक्रुझ और उसके बाद खार में श्रीमती नंदुबहन देसाई के वहाँ उन्होंने भोजन लिया । भोजन के बाद उन्होंने वहीं आराम किया और शाम को

‘फ्लाइंग रानी’ में सुरत गए । इस वक्त उन्हें दान की रकम ठीकठाक मिली थी ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१६)

जीवन का प्रवाह तो बहता सतत बस एकसा वह,
बहता नित्य का नित्य, रुकावट नहीं कहीं उसे ।

(‘जीवनगढ़न’ पुस्तक से) – **मोटा**

साकार-निराकार से भी आगे

पूज्य श्रीमोटा दिनांक २-७-१९६५ शुक्रवार के दिन मुंबई फिर पधारे । आपश्री हमेशा की तरह सेठ नटवरभाई की कार में ड्राइवर के पास में बैठे थे । हम सब कार के पास उनके सामने खड़े थे । तब आपश्री ने कहा, ‘भाई, यह शरीर है, वहाँ तक में कुछ करो । ईश्वरस्मरण करते रहो ।’ मेरे हाथ का पंजा पकड़कर उसकी पहली दूसरी उँगली पर उनकी उँगलियाँ घूमाते हुए बोले, ‘साकार के सिवा दूसरा करना बहुत कठिन है । गीता में भी वैसा कहा है । अरे ! निराकार में गये हुए भी साकार में वापस आते हैं, क्योंकि उसमें आनंद कुछ निराला है । हालाँकि साकार और निराकार के भी आगे एक ऐसी स्थिति है, जहाँ कितनेक पहुँचते हैं ।’

‘सब मुझे पागल मानते हैं’

हरमुखभाई ने मेरुदंड के मनके के दर्द के बारे में पूछने पर पूज्यश्री ने कहा, ‘भाई, क्या करें ? सब मुझे पागल मानते हैं ! वे कहते हैं कि ऐसी बीमारी में घूमना नहीं चाहिए, सो रहना चाहिए । अच्छा है, पागल के साथ पागल हम तो ।’ ऐसा कहकर उन्होंने मनमोहक मुस्कुराहट की और विशेष में बोले, ‘ऐसे थोड़ा पड़े रह सकते हैं ? दुःख को आनंद की लहर में बदल कर उसमें लगे रहनेवाले कितनेक होते हैं । वे उससे (शरीर के दुःखों से) पर होते हैं ।’

कार में पूज्यश्री का सब सामान रख दिया गया । इससे सब चिनाई सेठ के वहाँ गये । श्रीमोटा तो तुरंत सो गये ।

‘चरण’ के बारे में

कुछ देर बाद उन्होंने ‘चरणमहिमा’ के बारे में उनका पत्र हमें पढ़ने को कहा । मैंने वह पत्र पढ़ा, फिर आपश्री ने कहा, ‘मैं एक महाराज के पास गया था, तब उन्होंने मुझे पूछा कि ‘गुरु के चरण की महिमा क्यों मानी जाती है ?’ तब मैंने कहा कि ‘यदि आप मुझे बोलने का कहते हो तो मैं बोलूँ ।’ ऐसा कहकर मैंने चरण पर बोलना शुरू कर दिया । वह सुनकर वे महाराज तो खुश हो गये और बोले, ‘अबे लड़के ! तूने तो सही सब कहा !’

'चरण' के बारे में आपश्री ने पत्र में लिखा है :

'चरण' यानी गति को प्रेरणा देनेवाला, साधक को ध्येय के मार्ग पर ले जानेवाला ! चरण में स्थितिस्थापकता भी है, गति भी है और ऊर्ध्वपन भी है। इससे उसमें तीन गुणों (सत्त्व, रजस और तमस) का समावेश होता है। फिर, वह उससे पर भी है ! चरण भूमि को स्पर्श करते हैं, किन्तु वहाँ जड़ जाते नहीं हैं। वे तो आधारस्तंभ हैं! नम्रता विकसित करने का वह प्रतीक है। चरण के तलवे में खुरदरता है, फिर भी उसमें सूक्ष्मता रही है। चरण की रज की भी रज हुए बिना किसीका उद्धार नहीं है।

'तब जीवन भोगने का आनंद'

दिनांक ३-७-१९६५, शनिवार आकाश में घनघोर बादल हो। भयंकर कड़ाके हो रहे हो, बीजली चमक रही हो और फिर जोरदार बारिश टूट पड़े। तब जीवन का भोगने का सच्चा आनंद ! दोपहर लगभग तीन बजे श्रीमोटा बाल्कनी में खड़े रहकर तुफानी समुद्र को देखते हुए बगल में खड़े रहे हरमुखभाई और मुझे दोनों को आनंद में आकर यों कहने लगे। घनघोर हुए वातावरण को दो-तीन बार याद किया।

कारखाने की मुलाकात पर

उसके बाद दो कार में बैठकर हम सब घाटकोपर में स्थित चंद्रकांत के बहनोई की फेक्टरी पर तथा उसके पास

में आई हुई वाडीलाल चत्रभूज दोशी की फेक्टरी पर गये । दोनों जगहों से अच्छा दान मिला । वाडीलाल सेठ वेल्विट कपड़ा बनाते थे तथा निर्यात भी करते हैं । उनके वहाँ मुलाकातिओं के हस्ताक्षरवाली नोटबुक में पूज्यश्री ने लिखा, 'देशसेवा, उद्योग और समृद्धि के लिए शुभकामना ।' वाडीलाल सेठ ने पूज्यश्री को वेल्विट के दो बड़े टुकड़े उपहार में दिये ।

स्वजनों के साथ प्रवास

वहाँ से आगे बढ़ें उसके पहले दो कार में किस प्रकार इतने सारे बैठ सके यह जानना रसप्रद होगा । एक कार (एम्बेसेडर) हरमुखभाई की थी और दूसरी कार चंद्रकांत के बहनोई की, जो थोड़ी छोटी थी । हरमुखभाई की कार में पीछे की सीट पर पूज्यश्री सो गये । कमर के दर्द के कारण । उस सीट के नीचे एक छोटा स्टूल रखा, जिस पर शिवाभाई की पत्नी, पूज्यश्री के सामने घूमकर बैठे । मुझे उनके शरीर के मध्यभाग के आगे सीट पर और शिवाभाई को सीट के आखिर में उनके पैर के पास बैठने का फरमाया । आपश्री के पैर शिवाभाई की गोद में ! यों चार जने कार की पीछली सीट पर और आगे ड्राइवर, हरमुखभाई और श्रीनंदुभाई वैठे । दूसरी कार में चंद्रकांत और उनके बहनोई इत्यादि । रास्ते में हम 'हरिःॐ' की

धुन करते, सत्संग करते घाटकोपर पहुँचे थे । पूज्यश्री को इस प्रकार कार में व्यवस्था कर के, कुचलाकर प्रवास करते कई बार देखा है । भीड़ की उन्हें जरा भी परवाह नहीं होती थी, नापसंदगी नहीं होती थी । स्वजनों को साथ ले जाने का उन्हें पसंद था ।

विविध संतों का व्यक्तव्य

घाटकोपर से पूज्यश्री पार्ला-जुहू गये । भाईलालभाई पटेल के वहाँ भोजन करना था । लगभग तीस जितने भाईबहन प्रतीक्षा करते बैठे थे ।

श्रीनंदुभाई ने पूछा, 'रतिभाई, चूप क्यों हो ?' ऐसा पूछा ! कदाचित् उनकी प्रश्न पूछने की आदत के कारण से ।

वह सुनकर श्रीमोटा बोले, 'उसे डर होगा कि **मोटा** शायद दो चार सुना दे तो ।'

'नहीं **मोटा**, ऐसा डर नहीं है ।' मैंने कहा ।

श्रीमोटा : तो अच्छा ।

प्रश्न : मोटा, विविध संत विविध प्रकार से व्यवहार करते हैं । उनका *'मेनीफेस्टेशन'* व्यक्तव्य अलग होता है । उसका क्या कारण ?

श्रीमोटा : प्रकृति और गुणों के कारण भी वैसा हो सकता है । फिर भी उसका अर्थ यह नहीं कि वे कुछ नहीं

जानते हैं । काल और संजोगों की माँग के अनुसार वे सब कालपुरुष की तरह वर्तन करते होते हैं । इससे उनका काम उस काल के लिए या घटना के लिए सत्य होता है । काल-काल पर सत्य का स्वरूप बदलता रहता है । महापुरुष का शब्द, शास्त्र का शब्द और अनुभवी का शब्द ये तीनों की एकरूपता प्रगट हो तो अति उत्तम । चेतन में प्रकट हुए आत्मा का कहना, कथना वह ज्ञानभाव से होते हुए भी काल-काल पर उसमें भी श्रेयार्थी को उस-उस काल की विकास की भावना में वह सब उस रूप में प्रकट हुआ दिखता है । एक काल में जो अर्थ उसमें से प्रकट होता हो, वह दूसरे काल में उसमें से ज्यादा विस्तारवाला (अर्थ) भी प्रकट हो सकता है ।

उसके बाद चमत्कारों और जादूगरों की बातें हुई । उन्होंने उन बातों को ज्यादा महत्त्व नहीं देने का सूचन किया ।

भगवान गुणातीत है

रविवार सुबह पूज्यश्री हमारे वहाँ यकायक पधारे । हमें उसका सुखद् आश्चर्य हुआ । उन्होंने निर्गुंडी के पान के भाप का सेक कुछ देर पहले ही हरमुखभाई के वहाँ लिया था और फिर स्नान किया था । इससे उन्हें बहुत गरमी लग रही थी, इससे वे खाट पर सो गये और मुझे कहा, *'डोन्ट डिस्टर्ब मी ।'*

कुछ समय की विश्रांति के बाद उनकी अनुमति लेकर उनकी चरणपूजा कर के गुरूस्तोत्र बोले :

ब्रह्मानंदं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।

अंतिम पंक्ति सुनकर आपश्री ने कहा कि 'त्रिगुणरहितं' शब्द प्रयोग बराबर नहीं लगता है । 'त्रिगुणातीतं' शब्द योग्य लगेगा, जैसे 'भावातीतं' है वैसे क्योंकि सद्गुरु-इश्वर इन गुणों से रहित नहीं है । किन्तु गुणों से पर हैं । यह समझने जैसा है ।

पूज्यश्री फिर मौन रहे और कुछ देर के विराम के बाद मुझे भजन गाने का सूचन किया । इससे मैंने 'हरि को भजते अभी तक किसीकी लाज जाते नहीं जानी रे' और 'प्रभु ! शरण चरण में रखो रे, पाय रे लागूँ' ये दो भजन गाये । उसके बाद आपश्री हरमुखभाई के वहाँ गये ।

सच्चा सगा श्रीहरि

बाद में आपश्री चंद्रकांतभाई के वहाँ तीसरी मंज़िल पर जाने के लिए निकले । चलते-चलते हमें कहा, 'जो विघ्न आते हैं, वे हमारे विकास के लिए हैं । यह (आ मिले हुए स्वजन) हमारे सच्चे सगे नहीं हैं । हमारा सच्चा सगा तो श्रीहरि है ।'

'...वह कायरता है'

दोपहर पूज्यश्री चंद्रकांतभाई के वहाँ आराम करते थे, तब सूर्यकांत पारडीवाला नाम का एक युवान अपने मातापिता के साथ आया । वह *फिलोसोफी* लेकर बी. ए. हुआ था और एक बार सुरत आश्रम पर मौन में भी बैठा था । वह कुछ समय से स्वामी चिन्मयानंदजी के व्याख्यान में जा रहा था । इससे उसे संन्यास लेकर स्वामीजी के आश्रम पर रहने जाना था, किन्तु माँ-बाप उसके विरुद्ध थे । इससे वे सब श्रीमोटा के पास सलाह लेने आये थे । मातापिता पूज्यश्री को अपना पुत्र संन्यास लेते रुक जाय वैसा करने - विनती करने लगे ।

तब श्रीमोटा ने कहा, 'मिला हुआ कर्म छोड़ देना वह कायरता है । एकाध विवेकानंद या चिन्मयानंद पैदा होता है, इससे उस रास्ते पर ज्यादा विचार किये बिना चल पड़ना - वह तो महामूर्खता है ।'

(मातापिता को) आप जबरदस्ती से उसकी मरजी के विरुद्ध कुछ मत करना या विवाह मत करना ।

माँबाप : तीन महीने स्वामीजी के आश्रम में उसे रहना पड़ सकता है तो वहाँ उसे जाना या नहीं ?

श्रीमोटा : (सूर्यकांत को) तीन महीने वहाँ रहोगे तो भोजन का खर्च कौन देगा ?

सूर्यकांत : आश्रम में उसका खर्च नहीं लेते हैं ।

श्रीमोटा : तो क्या मुफ्त में रखते हैं ?

सूर्यकांत : हाँ जी ।

श्रीमोटा : आश्रमवाले वह खर्च कहाँ से लाते हैं ?

सूर्यकांत : फंड में से खर्च करते हैं ।

श्रीमोटा : भगवान के मार्ग पर जाना हो तो मुफ्त का खाकर नहीं जा सकते हैं । स्वामीजी भी कहीं से भिक्षा माँगकर लाते होंगे न ? इसलिए पहले आप तीन महीने तक के भोजन खर्च के रुपये १५०/– जितनी रकम कमा कर लावे, फिर वहाँ रहने जाओ । पिताजी के पास से भी वह रकम नहीं लेना है । अरे भाई, इस दुनिया में कुछ भी मुफ्त नहीं मिलता है ।

पूज्यश्री की बातचीत से मातापिता दोनों प्रसन्न हुए । हाँलाकि पूज्यश्री ने शुरूआत में तो इस बाबत में कुछ भी अभिप्राय नहीं देने का कहते हुए कहा था कि 'मेरा और आपका क्या संबंध है ? पहली बार ही आप आये हैं । इसलिए यह बात तो सही रीत से आपको स्वामीजी के साथ चर्चा करनी चाहिए ।' उसके बाद सूर्यकांत ने स्वामीजी के आश्रम पर जाने का छोड़ दिया था ।

श्रीमोटा अज्ञातवास में

पूज्यश्री दिनांक ५–७–१९६५ के दिन मुंबई से मद्रास

(चेन्नाई), पूणे इत्यादि जगहों पर जाकर दिनांक २७-७-१९६५ के दिन मुंबई वापस आये और उसी दिन रात को नडियाद गये ।

दिनांक ८-८-१९६५ के दिन आपश्री उनकी निजी सेवा करनेवाले भाईबहन के साथ दादर से नाशिक की ओर किसी अज्ञात स्थल पर आराम करने गये । चार सप्ताह का कार्यक्रम था । दादर स्टेशन पर उनके दर्शन के लिए किसीको नहीं जाना था । सिर्फ चंद्रकांत मेहता उनके निवास की व्यवस्था करने गये थे ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१७)

हृदय की प्रकट हुई सद्‌भावना के हेतु के बीज हम मानते हैं, उससे बहुत गहरे पड़े हुए होते हैं । किसी न किसी दिन वह उग निकलते ...... हैं ।

- मोटा

नडियाद आश्रम पर मौन में १४ दिन के लिए बैठने से पहले पूज्यश्री के दर्शन करने के लिए मैं अहमदाबाद गया था । दिनांक २३-१-१९६६ के दिन पूज्यश्री अहमदाबाद में चीमनभाई महाजन के वहाँ थे, तब सत्संग हुआ था उसकी कणिका :

कुंडलिनी के बारे में

प्रश्न : मोटा, आपने कुंडलिनी के बारे में लगता है कुछ लिखा नहीं है । उसके बारे में कुछ कहेंगे ?'

श्रीमोटा : 'कुंडलिनी के बारे में मैंने कुछ नहीं लिखा है, क्योंकि उस संबंध में बहुत गलतफहमी फैली हुई है । कुंडलिनी दिव्य शक्ति का प्रतीक है । **जब शरीर और चित्त की शुद्धि होती है, तब वह शक्ति जाग्रत होती है । वह सामान्य शक्ति नहीं है । वह कीर्तन, भजन, नृत्य या केवल विष्णुसहस्त्रनाम लेने से जाग्रत नहीं होती है ।** जो लोग अठारह-अठारह घंटे तक काम करते हैं, वह कुंडलिनी जाग्रत होने से करते हैं ऐसा नहीं होता है । किन्तु वह तो उस संजोगों के कारण, एक प्रकार के मानसिक जोश और गति के कारण काम कर सकते हैं । उसे आध्यात्मिकता के साथ कोई संबंध नहीं है । जिसकी कुंडलिनी जाग्रत हुई होती है, वह मनुष्य बहुत सात्त्विक कार्य करता है । वह साधु हो ।

प्राणायाम के बारे में

प्रश्न : आपने प्राणायाम के बारे में भी कुछ नहीं लिखा है ।

श्रीमोटा : हाँ, नहीं लिखा है । संसारिओं के लिए प्राणायाम लाभदायक नहीं है । क्योंकि भोग भोगनेवाले

संसारिओं के फेफड़े प्राणायाम के जोर को, भारी दबाव को सहन नहीं कर सकेंगे । इससे उससे उलटा नुकसान होने की संभावना है । इसलिए अभी के समय में सहज, सरल, निर्दोष और अचूक साधन वह नामस्मरण, जप है । हर श्वास के साथ जप करने की आदत ड़ालो । मानसिक जप उत्तम ।

प्रश्न : 'मोटा, 'जीवनपोकार' में साधु के नाम से जो कुछ लिखा है, वह आप स्वयं ही हो न ?'

श्रीमोटा : हाँ, जो साधु के चमत्कारों की बात लिखी है, वह जान बूझकर मेरा निर्देश नहीं होने देने के कारण ही । (वह साधु अन्य कोई नहीं, किन्तु पूज्य श्रीमोटा स्वयं ही ।)

विकारों को हमले आवे तब

प्रश्न : विकारों के हमले हो, तब क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : तुरंत सजग हो जाना चाहिए । मनपसंद भजन गाना चाहिए । ऐसे हमले सामान्य रीति से रात को ज्यादा आते रहते हैं । तब बिस्तर पर नहीं पड़े रहना चाहिए । उठकर बैठ जाना चाहिए, खड़े हो जाना चाहिए और धीरे से या जोर से, समय-संजोग अनुसार नामस्मरण करना चाहिए । काम-विकार के जोश को 'चेनेलाईझ' करने के लिए उसे दूसरी सत प्रवृत्ति में मोड़ देना

चाहिए । भजन न हो सके तो पढ़ने-लिखने बैठना चाहिए । इस प्रकार सभानता से प्रयत्न करोगे तो विकार पर काबू आ जायेगा ।

प्रार्थना फलित न हो तो ?

प्रश्न : 'मोटा, प्रार्थना बहुत होती है, किन्तु वह फलती नहीं हैं, ऐसा लगता है, तो क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : भगवान को हृदय के आर्तनाद से प्रार्थना करनी चाहिए । जो नियमित, एक ही समय पर और एक ही स्थान पर प्रार्थना करने की आदत रखता है, वह हमेशा अच्छे काम करने की शक्ति प्राप्त करता है ।

प्रश्न : किस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए ?

श्रीमोटा : किसीकी सेवा करना, सत्कर्म करना, सर्व के साथ सुमेल और प्रेम से रहना, वह सब प्रार्थना की ही एक प्रकार की रीति है । कैसी भी स्वरचित प्रार्थनाएँ, भजन और आत्मनिवेदन उत्तम चैत्य संबंध बाँधने के लिए है ।

भगवान अंतर्यामी हैं तो फिर....?

प्रश्न : 'मोटा, भगवान अंतर्यामी कहे जाते हैं तो वह हमारे मन की बातें जानते हैं या नहीं ? उसके पास माँगने की क्या जरूरत ?'

श्रीमोटा : किसीके अंतःकरण को जानने की उसे

क्या पड़ी है ? आपको गरज हो तो आप उसे बताते रहो, निवेदन करते रहो, इससे उसके साथ चैत्य संबंध हो जायेगा और तब ही वह हमारे मन की बातें जानेगा ।

प्रश्न : तो फिर उसे अंतर्यामी क्यों कहा जाता है ?

श्रीमोटा : एक बार आप उसके साथ हृदय का संबंध बाँध दो, फिर आपको कुछ माँगने की जरूर नहीं रहेगी । वह आपका सब सँभाल लेगा ।

उसके बाद नडियाद जाते पहले मैंने पूज्यश्री के चरणस्पर्श किये, तब उन्होंने अपने हृदयप्रदेश पर हाथ रखकर कहा, 'इसे धक्का मारना तो मैं हिलूँगा । जाओ, (मौन में) अच्छी तरह बैठना ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(१८)

किसी महान, जीवंत, ज्ञानी, अनुभवी आत्मा की प्रेरणात्मक जीवंत संस्कृति से तीर्थ प्रकट होता है ।

('जीवनमंथन' पुस्तक से) – **मोटा**

विनोबाजी की 'नाममाला' का वाचन

'ज्ञानगंगोत्री' की योजना के लिए एक लाख रुपये इकट्ठे करने थे, इससे पूज्य श्रीमोटा दिनांक २-३-१९६६ के दिन मुंबई पधारे । उस दिन दोपहर को आपश्री हमारे वहाँ पधारे और रात्रि दरमियान हमारे यहाँ ही विश्राम

किया । जल्दी सुबह छ से सात तक पूज्य विनोबाजी की 'नाममाला' पुस्तिका उन्होंने स्वयं जोर से पढ़ी और छ-सात भक्तों ने उसका पान किया । सभी को बहुत आनंद आया ।

'हरिःॐ' मंत्र के बारे में

उसके बाद धीरेशभाई ने पूछा, '**मोटा**, हरिःॐ' मंत्र सगुण मंत्र माना जायेगा या निर्गुण मंत्र माना जायेगा ?

श्रीमोटा : यह मंत्र निर्गुण मंत्र है, वैदिक मंत्र है । उसके स्मरण से किसी अमुक देव का ही स्वरूप सामने नहीं आता है । ईश्वर के हजार नामों में 'हरि' एक नाम है । वह गुणवाचक है । फिर भी 'हरि' को आप कृष्ण मानो, विष्णु मानो या राम मानो, वह अलग बात है, फिर भी वह निर्गुण मंत्र है ।

सद्गुरु हमें याद करे ?

प्रश्न : मोटा, संत सब एक सही, फिर भी उनको मिलने उनके अलग-अलग शरीर बीच आवे और हमारे गुरुमहाराज का विस्मरण हो जाय, तो क्या करना ?

श्रीमोटा : 'किसी भी संत के दर्शन को हम जावें, तब हमें हमारे सद्गुरु का ही भाव रखना चाहिए । श्रीरंग अवधूत महाराज के दर्शन को जावे, साँईबाबा के दर्शन को जावे, तब हमें हमने जिन्हें सद्गुरु बनाये हैं,

उसका ही भाव रखकर दर्शन करना चाहिए । आखिर में सब एक ही हैं । '

प्रश्न : 'मोटा, हम सद्‌गुरु को याद करें, तब वह हमें याद करेंगे क्या ?'

श्रीमोटा : नहीं, उसे क्या पड़ी है ? हाँ, द्रौपदी की तरह आर्तपुकार करो तब ही वह हिलेगा । किन्तु ऐसी भक्ति कहाँ है ? फिर भी किसीको पता न हो वैसा किसी कोने में पड़ा हुआ संत उसके भक्तों को याद करता है और जब समय पके, तब वे उनके सद्‌गुरु की और मुड़ते हैं ।

चंद्रकांत मेहता : मोटा, अभी सत्यसाँईबाबा के चमत्कारों की बातें बहुत होती है, उस बाबत में आपका क्या मानना है ।

श्रीमोटा : चमत्कारों की शक्ति है । उसका मूल्यांकन कम नहीं करना चाहता, किन्तु एक बालक का जन्म होता है, वह कोई कम चमत्कार है ? हम सब हवा से ही जीवित हैं, वह कोई ऐसा-वैसा चमत्कार है ? फिर भी चमत्कारों को बहुत महत्त्व नहीं देना चाहिए ।

तीखा खाने की आदत

पूज्यश्री जब भोजन करने बैठते थे, तब हलके मूड़ में आ जाते । और परोसनेवाले की या रसोई बनानेवाले

की या पास के भक्त की मज़ाक कर के सब को आनंद करवाते थे । सुबह या शाम भोजन करने बैठने से पहले आपश्री स्नान अवश्य करते । एकबार उन्होंने कहा था कि 'नाहने के बाद मैं पेटू हो जाता हूँ, फिर प्रतीक्षा नहीं कर सकता हूँ ।' स्नान कर के आपश्री तुरंत रसोईघर में जाकर कुर्सी पर बैठ जाते थे । उन्हें दाल-सब्जी इत्यादि सब गर्म ही चाहिए । फिर, नमकीन फरसान में मिर्ची के पकौड़े ज्यादा पसंद थे और तीखा ज्यादा पसंद था, इससे हमने उन्हें पूछा कि 'आपको तीखा क्यों पसंद है ?' तब उन्होंने कहा, 'हमारा बचपन बहुत गरीबी में गया था । उस समय रोट और लाल चूरावाली मिर्ची उसमें मिलाकर सब्जी के बदले खाते थे । इससे तब से ही मिर्ची की आदत पड़ गई ।'

आदर्श शिक्षक की तरह

इस बार 'सहकारनिवास' के छोटे-बड़े कई बालक पूज्य श्रीमोटा के पास आये। तब उनके अभ्यास के संबंध में आपश्री ने पूछताछ की 'किस में फेल होते हो ?...ट्यूशन के लिए शिक्षक रखते हो ?... अब ज्यादा मत खेलना, परीक्षा पास आ रही है... घर में माँ को मदद करते हो ? ... माँ मारती है ? और कोई बालक हाँ कहे तो आपश्री कहते, 'माँ को मेरे पास ले आना । कहना कि **मोटा**

बुलाते हैं, प्रसाद देना है !' उसके बाद वे स्वजनों के सामने देखकर बोले, '९९ प्रतिशत बालक गणित में कमजोर हैं । एक बीमार दिखनेवाले बालक को देखकर श्रीमोटा ने कहा कि 'इस बालक के बाप को कहना कि उसकी दवाई करे । उसका शरीर अच्छा नहीं है ।'

फिर श्रीमोटा ने सभी विद्यार्थीओं को नियमित अभ्यास करने, व्यायाम करने और ज्यादा चलचित्र नहीं देखने की सीख दी, और बुजुर्गो को टाइम पर ओफिस जाने के बारे में सूचना देते हुए श्रीमोटा ने कहा कि 'काम पहले, फिर दूसरा सब ।'

उस वक्त मैंने पूछा कि '**मोटा**, ग्राहकों की फाइलें देख रहे हों, तब प्रार्थनाभाव किस प्रकार रह सकता है ?'

तब श्रीमोटा ने कहा, 'मैं काम करते-करते और सभी प्रवृत्ति दरमियान प्रार्थनाभाव रखता था ।'

दिनांक ५-३-१९६६ के दिन आपश्री सुरत गये ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(१९)

गुरुभाव यानी गुरु स्वयं नहीं या उसका शरीर नहीं, किन्तु जीवनविकास करने के लिए हमें जो प्रबल तमन्ना प्रकट होती है, उसे एकाग्र और केन्द्रित एक में कर के

उसमें से प्रेरणाबल और चैतन्यपन प्राप्त करने के लिए जो लक्ष्य, जो साधन है वह ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

नये अवतार का उत्सव

पूज्य श्रीमोटा का 'नये अवतार' का दिन यानी निर्गुण साक्षात्कार का दिन–रामनवमी । हर वर्ष कोई भक्त स्वजन इस दिन उत्सव का आयोजन करता है । दिनांक ३१–३–१९६६ के दिन सुरत में हरमुखभाई जोगी ने इस दिन को मनाया । श्रीमोटा ऐसे मंगल प्रसंग के अगले दिन से ही उस भक्त के घर जाकर रहते, रात रुकते और सुबह जल्दी तीन–चार बजे उठते । उस दिन हरमुखभाई ने उनके कुटुंबीजनों के साथ पूज्यश्री को केसरस्नान कराकर पूजा की । नई रेशमी या ऐसी कीमती लुंगी तथा साफा दिया ।

नये अवतार का अर्थ

साढ़े सात बजे कार्यक्रम का प्रारंभ प्रसिद्ध रेडियो कलाकार और श्रीमोटा के भक्त मथुरीबहन खरे के भावपूर्ण भजनों से हुआ । उसके बाद श्रीमोटा ने 'नया अवतार' का अर्थ समझाते हुए कहा :

'संसारिओं एक तबके में से दूसरे तबके में प्रवेश करे, उसे 'नया अवतार' मानते हैं, किन्तु संसारिओं के और साधक के 'नये अवतार' के बीच आसमान–जमीन

का फ़र्क़ होता है, संसारी का जीवन द्वंद्व की भूमिका पर रहा हुआ होता है, जबकि साधक का जीवन द्वंद्व से पर होता है ।'

उत्तम दान कौनसा ?

संपत्तिवालों के लिए कहा : राजाओं के राज्य गये वैसे धनवानों की संपत्ति कलम की नोक से चली जायेगी । काल बहुत कठिन आ रहा है । पचीस वर्ष की अवधि बहुत कष्टकारक होगी, किन्तु बाद में अच्छा होगा ।

मैं ज्योतिषी नहीं हूँ, किन्तु समय पहचान सकता हूँ और स्पष्टरूप से देख सकता हूँ, वह कहता हूँ । इसलिए प्रेम से खुले हाथ से सत्कर्म में पैसे का उपयोग करो । कुछ स्थिर नहीं है । **पल-पल में परिवर्तन हो रहा है, वह निश्चित मानना । इसलिए 'गुण और भावना' का विकास हो, ऐसे काम करने के लिए आपके पैसे खर्च करना । वह उत्तम दान माना जायेगा । भूखे को भोजन और दर्दी को दवा देवें वह गलत नहीं है, किन्तु वह दान हमारे साथ नहीं आयेगा, क्योंकि उसकी असर कायम नहीं रहती है । जिस दान से समाज में उन्नति हो, सच्चा धर्म प्रगट हो, समाज के लिए शहीद हो जाने की और प्रभुप्रीत्यर्थ कर्म कर के आत्मविकास करने की तमन्ना जाग्रत हो वैसे दान उत्तम दान हैं ।**

उनके प्रवचन के बाद उनकी आरती हुई और भक्तों ने दक्षिणा अर्पण की । उसके बाद सब प्रसाद लेने गये । दो घंटे का विराम रहा उस दरमियान भक्तों ने भजन गाये और 'हरिःॐ' की धुन की । उसके बाद प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम शुरू हुआ ।

सद्‌गुरु के प्रति अन्यथा भाव

प्रश्न : सद्‌गुरु के प्रति कभी-कभी अन्यथा भाव उत्पन्न होता है, तो उसका क्या कारण होगा ? उसका उपाय क्या ?

श्रीमोटा : ऐसा अन्यथा भाव उत्पन्न हो तो समझना कि सद्‌गुरु किये वह सच नहीं है । उसे उसमें पूरा विश्वास नहीं है । जो अभी 'सद्‌गुरु को किस प्रकार पहचानना ?' ऐसा पूछे उसने सद्‌गुरु नहीं किये हैं ऐसा कहा जा सकता है । **सद्‌गुरु क्या करते हैं, उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए । वह जो कहे वैसा करना, वह करे वैसा नहीं करना चाहिए ।** अपनी प्रकृति को सुधारने के लिए बहुत ध्यान देना चाहिए ।

विविध भाववाले परमहंस

प्रश्न : अलग-अलग भाववाले सत्पुरुष होते हैं, उस संबंध में कुछ कहेंगे ?

श्रीमोटा : 'मुक्तात्माओं, परमहंस चार प्रकार के होते हैं । जैसे कि बालवत्, हंसवत्, जड़वत् और पिशाचवत् ।

बालवत् यानी बालक जैसे स्वभाववाला हो । हंसवत् यानी नीरक्षीर न्याय करनेवाला हो । जड़वत् यानी पत्थर या लकड़ी के समान एक ही जगह पड़ा रहे, कुछ माँग करे नहीं और पिशाचवत् यानी गंदा, मलिन । ऐसा परमहंस मुझे हिमालय में मिल गया था । मलमूत्र, मांसमदिरा इत्यादि की उसे छूआछूत नहीं, फिर भी वह ज्ञानी, अनुभवी (Realised) और मुक्त ।

प्रकृति के स्वामी

वे लोग मुक्त होते हुए भी जहाँ तक देह में होते हैं, वहाँ तक व्यक्त होने के लिए, जैसे नदी को पाट चाहिए वैसे उनको प्रकृति की एक चेनल रूप में जरूरत होती है । फिर भी वे उनकी प्रकृति के गुलाम नहीं, किन्तु स्वामी होते हैं । जबकि संसारी प्रकृति के गुलाम होते हैं । यह चार प्रकार के परमहंस उनकी साधना को प्रकृति, स्वभाव और संजोगों के अनुसार प्राप्त होते हैं, फिर भी वे पूरे ज्ञानी ।

'हमको मगरमच्छ बताव'

पिशाचवत् यानी जिसे शुद्ध-अशुद्ध का, पवित्र-अपवित्र का, गंदगी-मलिनता का क्षोभ न हो; वह कुछ भी खाय, पीवे और कहीं भी पड़ा रहे, गालियाँ भी दे । ऐसे परमहंस का एक उदाहरण देता हूँ ।

एक बार मेरे गुरुमहाराज ने मुझे कहा कि ‘हमको मगरमच्छ बताव ! उनके पास ले जाव !’ तब मुझे विचार आया कि मगरमच्छ को कहाँ खोजना ? नदी हो, वहाँ शायद हो, समुद्र में नहीं होगा, किन्तु पास में ऐसी कोई नदी नहीं थी और समुद्र भी नहीं था । कहाँ जाना ? गुरुजी के आगे पूछताछ हो नहीं, दलीलबाजी हो नहीं । दलील करें तो मुँह की खानी पड़े । उन्होंने तो लगन ली थी ‘मगरमच्छ ! बस, मगरमच्छ बताव ।’

‘इससे हमने तो नडियाद से आणंद तक की टिकट ली । उसके बाद विचार हुआ - ‘चलो थोड़ा चलें ।’ उस दरमियान शायद गुरुजी रास्ता दिखायेंगे ।’ ऐसा करते डाकोर आये । मैं रणछोड़जी के मंदिर की ओर चलने लगा । इससे गुरुजी ने कहा कि ‘यह क्या है ?’ यह तो मगरमच्छ नहीं है । साला, इतना मालूम नहीं, मगरमच्छ क्या है ?

हम तो वहाँ से वापस मुड़े । गोमतीजी के तालाब के पास आये । एक आने के मुरमुरे लिए और तालाब में मुरमुरे डालने लगा । कछुए उपर आने लगे, वह दिखाकर मैंने कहा कि ‘यह मगरमच्छ प्रभु ।’ गुरुजी तो दूसरी दिशा में चलने लगे । रास्ते पर पड़े हुए एक मैले, बावरे मनुष्य के साथ बातें करने लगे ! ऐसा आदमी कौन होगा ? उसके साथ वे क्या बात करते होंगे ? उनके बीच चल रही बातों में तो मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया ।

मगरमच्छ यानी नथ्थुराम

फिर गुरुमहाराज ने मुझे उनकी तरफ धकेलकर उनको कहा था कि 'यह लड़का आपके पास कभी-कभी आवे तो उसे कुछ दिखाते रहना ।' और ऐसे मेरी पहचान उन्होंने उस औलिये के साथ करवाई । वे नथ्थुराम शर्मा थे । महापुरुष हो गये । साधनाकाल दरमियान आनेवाली मुश्किलें-उलझन के बारे में मैं उनके पास कई बार गया था । तो यह नथ्थुराम शर्मा वही गुरुमहाराज के मगरमच्छ ! महात्माओं की ऐसी रीति होती है ।

ऐसे को कौन पहचान सके ?

'फिर एक बार मैं जब उनके पास गया था, तब उन्होंने मुझे पकौड़े ले आने को कहा था । मैं ले आया और उनको देकर उनकी सेवा करने लगा, तब वे पकौड़े खाते जावे और मुझे कहते जाय, 'तुझे नहीं दूँगा !' 'भले प्रभु ! आप आरोगो ।' हमें आनंद था...तो ऐसे भाववाले भी परमहंस होते हैं ! उन्हें कौन पहचान सके ? कौन समझ सके ? हीरे का व्यापारी हीरे का मूल्य जान सकता है, सब्जीवाला नहीं जान सकता है, इतना याद रखना । तलहटी में खड़ा हुआ मनुष्य हिमालय की चोटी पर क्या है, वह किस प्रकार जान सकता है ?'

‘सात्त्विक अहम् भी तोड़ना’

प्रश्न : मोटा, सात्त्विक अहम् तो वह अच्छा तो सही न ?

श्रीमोटा : नहीं, सात्त्विक अहम् भी साधक को तोड़ना होता है । मेरा उदाहरण देता हूँ । कराची में ४० दिन के रोजे (उपवास) का संकल्प था । ३८ दिन होने के बाद श्रीगोदडिया महाराज़★ आकर मिले । उन्होंने मुझे कहा कि ‘क्यों इतने सारे उपवास ? बस हुआ । खा ले ।’ पहले तो मैंने अच्छा ऐसा कहा और चाय बनाई, टोस्ट डिश में निकाले और थोड़ा खाया, किन्तु श्रीगोदडिया महाराज चले गये । इससे फिर मुझे हुआ कि ‘दो ही दिन के लिए क्यों रोजा तोडूँ ? इतने दिन गये तो दो दिन ज्यादा ।’ और मैंने सूक्ष्म अहम् की जोर पर महाराज की आज्ञा का पालन नहीं किया ।

दूसरे दिन मेरे यजमान के साथ कार में मैं कहीं जा रहा था । तब ही एक मैला-बावरा किन्तु औलिया जैसा आदमी कार के रास्ते में खड़ा था और उसने मुझे बाहर बुलाकर कहा कि ‘अभी तेरा अहम् नहीं गया है ? ले यह

★श्रीगोदडिया महाराज यानी कि प्रकाशानंदजी स्वामी, वे तब गुजरात के सुप्रसिद्ध सत्पुरुष थे । उन्हें श्रीमोटा के प्रति बहुत प्रेमभाव था और साधना के क्षेत्र में श्रीमोटा को बहुत मदद की थी ।

मिठाई खा ले और रोजे पूरे कर ।' तब मुझे समझ में आया कि 'मेरा सूक्ष्म अहम् (सात्त्विक होते हुए भी) तोड़ने के लिए भगवान ने यह सब व्यवस्था की है । इससे मैंने उनके द्वारा दी गई मिठाई - मेरे यजमान की मनाई होते हुए भी खा ली और रोजे पूरे किये । तो शुभ संकल्प का जो अभिमान भी हमारे में होता है, वह भी तोड़ना है । ईश्वर कृपा कर के हमारे पास उसे तुड़वाटे हैं ।'

पूज्यश्री यह बात कर रहे थे, तब सेठ नटवरलाल और डॉ. क्लार्क सभा में आये । उनके देर से आने पर श्रीमोटा नाराज़ हुए और बोले कि 'ऐसे प्रसंग पर समय पर नहीं आ सकते हो तो आना नहीं ।' ऐसी टोक की ।

उसके बाद उत्सव आनंदमय वातावरण में पूरा हुआ ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२०)

जगत में कुछ भी निरर्थक नहीं है । जिसे मनुष्य बिलकुल खराब मानता है, वह भी निरुपयोगी नहीं है । वह खराब दिखता है या माना जाता है, उसका कारण हम उसे उस प्रकार देखते, समझते, मानते आये हुए हैं वह है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) - **मोटा**

पूज्य श्रीमोटा के सुरत के एक भक्त सेठ विनायकभाई जरीवाला का दिनांक ६-५-१९६६ के दिन स्वर्गवास हो गया । इससे उस निमित्त से चंद्रकांत मेहता और मैं सुरत उनके घर पर गये । विनायकभाई के पुत्र जीतुभाई को आश्वासन देकर हम दोनों फिर आश्रम पर गये । वहाँ जो सत्संग हुआ उसमें से कुछ बातें ।

'तुज चरणे' लिखने का निमित्त

प्रश्न : मोटा, 'तुज चरणे' काव्य लिखने के पीछे कोई निमित्त था ?

श्रीमोटा : हाँ, उसके पीछे एक छोटी बात है । नडियाद में मेरी २५-२६ वर्ष की उम्र में एक 'मेथोडिस्ट चर्च' के पादरी मिले थे । उन्होंने कहा था कि 'आपके धर्म में अनेक देवदेवियाँ होने से उलझन होती है ।' फिर, शास्त्र और पुराण भी कई हैं । हमारा तो एक ही शास्त्र और एक ही ईश्वर ।' तब मैंने कहा था कि 'नहीं, ऐसा नहीं है । हमारे वहाँ अलग-अलग रुचि के अलग-अलग मनुष्यों को अनुकूल हो, उस प्रकार से धर्म की बातें और आचरण तय करने में आये हैं । हम भी एक ही ईश्वर में, एक ही परम तत्त्व में मानते हैं ।' पादरी बोले कि 'मेरे देखने में ऐसा कुछ नहीं आया है । ऐसा हो तो दिखाना मुझे ।'

इससे उसी रात अखंड जागरण कर के ‘तुज चरणे’ लिख दिया और दूसरे दिन उस पादरी को बताया । तब लेखक कौन है, वह नहीं कहा था । वे गुजराती जानते थे । इससे उनको पढ़कर सुनाया । तब वह पादरी प्रसन्न हुआ था और इस पुस्तक की बिक्रि से मिली हुई रकम से हिमालय का पहला प्रवास किया ।

सद्‌गुरु के साथ का संबंध

प्रश्न : अमुक व्यक्ति गुरु होने लायक है या नहीं, वह किस प्रकार जान सकते हैं ?

श्रीमोटा : उसकी उपस्थिति में आपको शांति मिलती हो और उनके लिए आपको मान तथा प्रेमभाव उत्पन्न होता हो तो उस व्यक्ति को गुरु मान सकते हो ।

प्रश्न : गुरु का देहावसान हो, उसके बाद भी उनके साथ संपर्क और उनकी असर चालू रह सकती है ?

श्रीमोटा : गुरु वह शारीरिक रूप नहीं है । इससे गुरु का देहावसान हो, उसके बाद भी उसके साथ का संबंध चालू रह सकता है । जिस ने एक बार गुरु की कृपा प्राप्त की हो, उसको गुरु कभी छोड़ते नहीं हैं ।

प्रश्न : मोटा, कोई महात्मा उसके भक्तों का जो कुछ भोगता है, ऐसा कहा जाता है तो उस जीव का जो भी सब कर्म बंद हो जाता है क्या ?

श्रीमोटा : तादात्म्य भाव के कारण उसके भक्तों का वह महात्मा भोगता होता है । इससे कुछ उस जीव का सब कर्म बंद हो जाते हैं, ऐसा नहीं होता । किन्तु उस जीव को उस दुःख भोगने में थोड़ी राहत जरूर मिलती है ।

जीव शिव कब हो सकता है ?

प्रश्न : हरएक जीव शिव हो सकता है, ऐसा कहा जाता है, तो कब शिव हो सकता है ?

श्रीमोटा : उसके समय की मर्यादा तय नहीं की जा सकती है । किन्तु उसके कारण वह जीव अपना जीव-स्वभाव बदल सकेगा ही नहीं ऐसा मानना यथार्थ नहीं है । वह कल भी बदल सकता है । जो महात्मा हो गये उन सब की दिखाई देनेवाली प्रकृति के पीछे कोई गूढ़ दैवी संस्कार रहे हुए थे ही ।

जगत मिथ्या है ?

प्रश्न : यह संसार, जगत मिथ्या है, ऐसा कई कहते हैं तो वह सचमुच मिथ्या है ?

श्रीमोटा : जो लोग उसे मिथ्या कहते हैं, वह बात गलत है । ऐसा जो मिथ्या कहनेवाले हैं, वे उसे कभी मिथ्या समझते नहीं हैं और उसे सच मानकर ही सब व्यवहार करते हैं । आदि शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्य, जगत

मिथ्या' ऐसा कहा था । किन्तु उनका कहना सब 'रिलेटीव★ है, सापेक्ष है । (चेतन की अपेक्षा से मिथ्या) किन्तु साधक को तो इस सूत्र पर सदैव मनन करते रहना है और उस प्रकार वर्तन करते रहना है ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(२१)

प्रकृतिजन्य अपने में प्रवाह जो उठा करे,
बहते गये बिना संयम से समता जो रखें;
प्रवाहों की गति कहाँ प्रेरित करे ले जाने को,
अखंड और समग्र वह, देखते रहो सदा उसको ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

दिनांक ८-५-१९६६ के दिन श्रीमोटा मुंबई पधारे । हरमुखभाई जोगी की दुकान के नये रेडियो विभाग का उद्‌घाटन सोमवार को करना था इसलिये ।

'उनका उपदेश कैसा है वही देखो'

सोमवार सुबह तक पारसी युवान श्रीसत्यसाँईबाबा के

★चेतन की अपेक्षा वह मिथ्या । चेतन के जो गुणधर्म हैं, जैसे कि उदारता, विशालता इत्यादि । उसकी तुलना में जगत के यानी कि प्रकृति के गुणधर्म द्वंद्ववाले होते हैं । चेतन में द्वंद्व नहीं होता । इससे चेतन की अपेक्षा से प्रकृति या जगत मिथ्या । यानी 'रिलेटीवली' मिथ्या ।

गाये हुए–गवाये हुए भजनों की केसेट श्रीमोटा को सुनाने के लिए ले आये । उसके अतिरिक्त श्रीसत्यसाँईबाबा की तसवीरों का संग्रह भी उन्हें दिखाने ले आये थे । श्रीमोटा ने बिस्तर में ही उठकर तसवीरों को नमस्कार किये और फिर देखने लगे ।

जब उनको पूछा गया कि 'श्रीसत्यसाँईबाबा शिरडीबाबा के अवतार है या नहीं ?' तब उन्होंने जवाब में कहा कि 'वह देखने का हमें क्या काम है ? उनका जो उपदेश है, वही देखो न !'

श्रीसत्यसाँईबाबा के गाये हुए भजनों की केसेट श्रीमोटा ने और श्रीनंदुभाई ने पंदरह मिनट तक सुनी । उसके बाद पारसी युवान ने थोड़े प्रश्न पूछे ।

वह कायरता है

प्रश्न : मैं पुट्टपरथी गया था, तब साँईबाबा ने (हवा में) हाथ हिलाकर उनकी फोटोवाला विजिटिंग कार्ड मुझे दिया । उसका क्या अर्थ ? मैंने तो भक्ति माँगी थी ।

श्रीमोटा : उस फोटोवाले साँईबाबा की भक्ति करो ।

प्रश्न : भक्ति कैसे हो ?

श्रीमोटा : बाबा को सतत घूमते-फिरते याद करना । सब उसे समर्पित करते रहना । उसे भक्ति कहा जाता है ।

प्रश्न : शांति किस प्रकार मिलेगी ?

श्रीमोटा : भक्ति हो तो शांति मिलेगी । आप बाबा को बारबार याद करते हो ?

पारसी युवान : हाँ प्रभु !

श्रीमोटा : तो शांति मिलनी चाहिए ।

प्रश्न : मैं एक 'युनियन का सचिव हूँ । उसमें झगड़े होते हैं, इससे त्यागपत्र दे देने का विचार आ जाता है तो क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : त्यागपत्र दे देना वह कायरता है । सच्चा भक्त मिले हुए संजोगों से भागता नहीं है । सत्य के लिए लड़ना चाहिए । प्रेम से हमारा मुद्दा समझाना चाहिए । चुनाव में पराजित हो जाँय तो एतराज नहीं, किन्तु निराश होकर त्यागपत्र नहीं देना चाहिए और निरासक्त भाव से जो काम मिले वह करना, इससे शांति मिलेगी ।

रेडियो विभाग का उद्‌घाटन

उसके बाद श्रीमोटा हरमुखभाई की दुकान के रेडियो विभाग का उद्‌घाटन करने के लिए कई भक्तों के साथ गये । दुकान के प्रवेशद्वार पर लाल रंग की रिबन बाँध रखी थी, वहाँ उन्होंने दो हाथ जोड़कर नमन करने के बाद मन ही मन में प्रार्थना कर के स्पर्श किया, फिर सीढ़ी पर चंदन से स्वस्तिक बनाया और पास में ॐ तथा त्रिशूल

बनाया और फिर अक्षत्, कुमकुम, फूल इत्यादि से उसका पूजन किया । उसके बाद चाँदी की कैंची से रिबन काटकर उन्होंने दुकान में प्रवेश करते हुए 'हरि:ॐ' का घोष किया । उस वक्त उनके अनेक फोटो लिए गये । फिर उन्होंने प्रार्थना गवाई :

जो लक्ष्मी सुख नित्य वैभव और ऐश्वर्य दे पूर्णदा,
वह लक्ष्मी प्रकाशित करने जीवन को, वह लक्ष रहो सदा ।

उसके अतिरिक्त व्यापार में बरकत मिले इसलिए प्रार्थना सब के पास मिलकर गवाई★ । फिर आपश्री को दक्षिणा और प्रसाद दिया गया । मेहमानों को कोल्ड ड्रिंक दिये गये । एकाध घंटे बाद पूज्यश्री ने विदाय ली ।

स्वजन को ठिकाने लाने का प्रयोग

पूज्यश्री ने जिन्हें अपने स्वजन माने हो वैसे कुटुंब के सभ्य नरम-गरम रहते हो तो उनको ठिकाने लाने टेढ़ी-मेढ़ी रीत से कैसे शब्दप्रयोग आपश्री करते थे, वह जानने जैसा है :

एक बहन को श्रीमोटा ने कहा 'यह साहब (बहन के पति) गुस्से हो, तब उनके सिर पर घड़ा भरकर पानी डालना ।'

★श्रीमोटा की ऐसी सब रची हुई प्रार्थनाएँ 'विधिविधान' नाम के पुस्तक में प्रसिद्ध हुई हैं ।

उसी ‘साहब’ को फिर आपश्री ने कहा, ‘तुम्हें ज्ञान चाहिए ।’

‘हाँ, जी’

‘तो इसकी (पत्नी की) शरणागति स्वीकार कर लो । वह कहे वैसा करना ।’

‘मैं जरूर प्रयास करुँगा ।’

उसके बाद श्रीमोटा ने उसी ‘साहब’ को कहा, ‘सब छोड़ना शुरू कर दो । वैसे भी मरेंगे, तब सब छोड़ना ही पड़ेगा न ? तो अभी से राग, द्वेष, मोह, माया, गुस्सा, ममता इत्यादि क्यों नहीं छोड़ सकते ?

‘हाँ जी, बराबर है ।’

‘तुम्हें गरम नहीं होना है । वह (पत्नी) भले गरम हो जाय ।’

उसी शाम आपश्री सुरत गये ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२२)

व्यापक तत्त्व जो सूक्ष्म, गूढ़ से गूढ़ ही है जो,
अनंत रीत का ऐसा, सद्‌गुरु का ही होता है ।

– **मोटा**

साध्य के लिए साधन

दिनांक २०-६-१९६६ सोमवार के दिन श्रीमोटा मुंबई

पधारे और पूरे दिन सेठ नटवरलाल चिनाई के वहाँ रुके ।

दूसरे दिन सुबह आपश्री को 'सहकारनिवास' में लाने के लिए हरमुखभाई और दूसरे दो व्यक्ति नटवरभाई चिनाई के वहाँ गये ।

आर. आर. सेठ की कंपनी 'श्रीमोटा का जीवनचरित्र' प्रसिद्ध करनेवाली थीं, उसके एक संपादक के रूप में मुझे भी कार्य करना था । इससे श्रीमोटा ने मुझे कहा, 'चलो कुछ बातें कर लें ।' सत्याग्रह करने का, लाठीचार्ज में मार खाने का, जेल में जाने का और साथिओं की ओर से होनेवाली मसखरी और उपेक्षा का हेतु 'गुण और भाव' को विकसित करने का था । निर्भयता, धैर्य, तितिक्षा, उदारता और प्रेमभावना विकसित करने का भी था । मैं जो कुछ साधना करता, उसका प्रत्यक्ष लक्षण प्रकट होता है या नहीं वह देखता । भय में अभय और अशांति में शांति रखना, प्रसन्नता रखना, अनासक्त रहना - यह सब गुण विकसित करने का मेरा हेतु था । हरिजन सेवा भी मेरे साध्य के लिए साधन था ।'

गुरुमहाराज की हृदयपूर्वक सँभाल

श्रीमोटा आज उनकी निजी बातें करने के मूड़ में थे । इससे सब को सुनने में खुशी हुई । उनकी जेलयात्रा की एक बात करते हुए उन्होंने कहा ।

'जेल में पिसने के लिए बहुत ज्यादा देवे, वह भी खड़े-खड़े पिसना पड़ता था । जिससे हाथ में फफोले पड़ जाते थे । चक्की का डंडा नहीं पकड़ा जा सके ऐसी स्थिति हो जाती थी । फिर, अमुक घंटे में अमुक वजन का अनाज पिसना पड़ता था । वक्त कम बचा हो और ज्यादा अनाज पिसना बाकी बचा हो, तब मैं गुरुमहाराज को प्रार्थना करता और कहता कि 'हे प्रभु ! काम से नहीं थकता, किन्तु हाथ के फफोले के कारण काम नहीं होता है तो यह किस प्रकार करूँ ? इसलिए मुझे शक्ति दो कि जिससे यह काम पूरा हो ।' और प्रभु की कृपा हो जाय और देखते ही देखते सब काम पूरा हो जाता था । तब मुझे विश्वास हो जाता था कि 'मेरे गुरुमहाराज मेरे सामने ही बैठे हैं और मेरी हृदयपूर्वक सँभाल रखते हैं ।' यों मैं प्रत्यक्ष लक्षण देखने की दृष्टि रखता था । जो कुछ करूँ उसकी असर प्रत्यक्ष होनी चाहिए ऐसा मानता था । यदि वैसा न होता तो जो करते हैं, वह गलत है या कहीं भूल हो रही है ऐसा समझता था । मेरा हरएक कर्म १९३९ तक में निर्गुण साक्षात्कार होने तक साध्य के संबंध में था । उसके बाद जो होने लगा वह 'एफर्टलेस एफर्ट' की तरह हो ।' बिना प्रयास के अपनेआप हो ।'

उसके बाद आपश्री 'सहकारनिवास' में पधारे ।

साधना के बाद का जीवन

सुबह जल्दी उन्होंने कमर के दर्द पर भाप का सेक लिया, तब आपश्री बोले, 'रात को हर घंटे पर पिशाब करने उठना पड़ता है, क्योंकि साधनाकाल दरमियान बहुत 'इन्टेन्सिटी' के कारण से उग्र भावना के कारण से मलमूत्र पर काबू आ गया था★ ।' उसके प्रत्याघात के रूपमें अभी ऐसा होता है । डॉक्टर ने एक गोली लेने को कहा है । उस गोली से दिन में ज्यादा पिशाब होगा और रात को पिशाब नहीं आयेगा, और नींद भी आयेगी, ऐसा डॉक्टर का कहना है । किन्तु उससे उलटा ही होता है ! पिशाब करने बार-बार उठने से नींद उड़ जाती है ।

तब हमने पूछा, 'सामान्य प्रकार से पहले की साधना का रीएक्शन, प्रत्याघात अब आपको किस प्रकार हो सकता है ? आपने कई बार कहा था कि 'संतों का साधना के

★आपश्री साबरमती हरिजन आश्रम पर सेवा देते थे, तब साधना भी गुप्तरूप से करते थे और गँवार या बेवकूफ होने का दिखावा करते थे । इससे मित्रों और अन्य भाई-बहनें उनकी मज़ाक भी करते । एक बार आपश्री शौच के लिए जा रहे थे, तब वहाँ की कन्याओं ने उनको कहा, 'चूनीभाई, आज नहीं जाओगे तो नहीं चलेगा ?' और चूनीभाई मुस्कुराते हुए वापस मुड़ गये । मलमूत्र पर उनका कैसा काबू था, इसकी यह घटना गवाह है ।

बाद का जीवन परार्थ होता है । इससे जो कुछ उसे होता है, वह सब किसी-किसी के शरीर के संबंध में ही होता रहता है, सही न ?'

श्रीमोटा ने कहा, 'ऐसा क्या सब को कह सकते हैं ? वह समझने के लिए ठीक है ।'

हठयोगी का निष्फल प्रयोग

बुधवार की सुबह जल्दी लगभग पाँच बजे पूज्यश्री रोज़ की तरह सेक लेते थे, तब उन्होंने सत्संग करने का कहा । इससे मैंने एक हठयोगी की बात कही : 'ब्लिट्झ' नाम के एक अंग्रेजी साप्ताहिक ने राव नाम के हठयोगी की पानी पर चलकर दिखाने की शक्ति का प्रदर्शन मुंबई के एक उपनगर में आयोजित किया था । उस समय पर थोड़े पत्रकार और कुछ सम्माननीय व्यक्ति भी वहाँ उपस्थित रखे थे । किन्तु वह योगी राव पानी पर चलने के बदले पानी में बैठ गये ! प्रयोग निष्फल गया । (यह प्रयोग श्रीसत्यसाँईबाबा को चुनौती देने के लिए आयोजित किया गया था ।)

चेतन का अमर्यादितपन

श्रीमोटा ने कहा, 'यद्यपि मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ, किन्तु ऐसा सब सँभव है । हमारे शरीर के रोम-रोम में वायु रहा हुआ है, वह वायु कुंभक की क्रिया से निकाल

देने में आवे तो शरीर हलका फूल जैसा हो जाय, इसमें बिलकुल आश्चर्य नहीं है★ । हठयोग भी ईश्वरप्राप्ति के लिए एक मार्ग है । किन्तु वह सरल नहीं है और संक्षिप्त भी नहीं है । उसमें अनेक जन्म निकल जाते हैं । किन्तु उस शक्ति का प्रदर्शन योग्य नहीं है । चेतन सब जगह प्रकाशित होता है । देहधारी होने से मनुष्य में चेतन मर्यादित होता है, फिर भी निमित्त मिलने पर उस चेतन की उपस्थिति का प्रमाण, उसका अमर्यादितपन दिखाई देता है, वह भी सच बात है ।'

'वोर एट फ्रंटएन्ड'

पूज्यश्री गुरुवार को दोपहर को कुंभकोणम् जाने के लिए रवाना हुए । स्टेशन पर बीसेक भक्त आये थे । 'नवनीत' मासिक में उनका जीवनचरित्र प्रसिद्ध हुआ था, वह उनको दिखाया । वह देखकर उन्होंने 'नवनीत' की संपादिका बहन श्री कुंदनिका कापडिया का आभार मानने का हमें कहा । उनके चरणस्पर्श करने के लिए आनेवाले प्रत्येक भक्त को आपश्री यथायोग्य सूचन करते थे । एक भक्त को कहा, 'वोर एट फ्रंट, एन्ड पीस एट होम' याद रखना चाहिए । बाहर भले लड़ो, किन्तु घर में शांति रखना ।

★ श्रीअरविंद उनकी साधना के दरमियान कई बार जमीन से लटकते हुए स्वस्तिकासन की हुई स्थिति (Levitation) में उनके निजी मित्रों को दिखे थे । यह हकीकत है ।

जो होता है, वह हमारे विकास के लिए है, ऐसा ही मानकर उसे स्वीकार करना ।'

और 'हरिःॐ' के घोष के साथ ट्रेन रवाना हो गई ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२३)

न सद्गुरु कोई आकार, न सद्गुरु स्थूल शरीर स्वयं,
स्वरूप से भाव सद्गुरु है, फिर क्या भाव अतीत भी वह।

('जीवनकथनी' पुस्तक से) – **मोटा**

श्रीमोटा कुंभकोणम् से वापस मुंबई दिनांक २४-७-१९६६ के दिन पधारे । वी. टी. स्टेशन से सीधे सेठ नटवरलाल चिनाई के वहाँ गये । शारीरिक तबियत यों तो अच्छी लगती थी ।

'अब शरीर टूट चूका है'

शाम को चार बजे कुछ भक्त आये । बात-बात में किसी ने उनके शरीर के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा, 'इस शरीर में चार बीमारी हैं – काँचबिन्द, पाईल्स, प्रोस्टेट ग्लेन्ड और रीढ़ के मनके खिसक जाने की, किन्तु उसे प्रेम से भोगने की है । इससे होनेवाले दर्द किसे कहूँ ? रीढ़ की बीमारी तो मिटे ऐसी ही नहीं है । कोई हर्ज नहीं । लोग जीवित किसीको नहीं समझते हैं । मर जाने के बाद

सब लिखेंगे, 'उसे इतनी सारी बीमारीयाँ थी, फिर भी वे काम करते थे !' थोड़े नरम आवाज से कहा, 'अब शरीर टूट गया है । ज्यादा घूम नहीं सकता, इससे समाज के काम नहीं हो सकते हैं । भगवान की इच्छा होगी, वहाँ तक करेंगे ।'

'चीला छांड़ तीन्हु चले'

उन्होंने एक और सार्वजनिक उपयोगी योजना का ख्याल दिया :

'नदिओं के उद्‌गम तक कोई पैदल चलकर जाय, रास्ते में मिलनेवाली वनस्पतिओं की खोज करे और अभ्यास कर के उसके महत्त्व के बारे में सार्वजनिक जानकारी देवे, वैसे लोगों को हमें मदद करनी चाहिए ।'

एक भक्त ने पूछा : ऐसे कार्यों में सरकार मदद न करे ?

श्रीमोटा : सरकार को कोई परवाह नहीं है । प्रधानों को भाषण करते रहना है । उनसे कोई आशा रखने जैसी नहीं है ।

उसके बाद उन्होंने नींव की तालीम पर जोर दिया । चेतन के अनुभवी पुरुष चालू लीक पर चलनेवाले नहीं होते, उसके संदर्भ में उन्होंने एक दोहा कहा,

'चीले चीले तीन्हु चले - कायर, केर, कपूत
चीला छाँड तीन्हु चले - शायर, शेर, सपूत'

ऐसे (अनुभवी) लोग अनोखा, अलग ऐसा समाज के लिए उपयोगी काम कर के दिखाते हैं । ऐसा उन्होंने फिर कहा ।

भक्ति करे वह.... मंदता ना दिखावे

दिनांक २५-७-१९६६ सोमवार के दिन पूज्यश्री 'सहकारनिवास' में पधारे । वे कुछ मिनट चंद्रकांत मेहता के वहाँ बैठे और फिर मेरे वहाँ पधारे, तब जो सत्संग हुआ था उसके अंश:

प्रश्न : जो भक्ति करता हो, वह दिन प्रतिदिन के कार्यों के संबंध में मंदता दिखायेगा ?

श्रीमोटा : शुरूआत में मंदता आये, क्योंकि तब उसे उसकी (मंदता आई हो उस बारे में) जानकारी नहीं होती है । मुझे भी ऐसा हुआ था । बाद में मालूम पड़ा कि यह ठीक नहीं है । प्रतिदिन का मिला हुआ काम ठीक होना ही चाहिए और साथ-साथ में भक्ति भी होनी चाहिए ।

उसके बारे में उनकी एक पद्यरचना का अंश :

भक्ति, उत्साह, उमंग, उल्लास, तनदिही, उद्यम,
प्रेरित करे कर्म, भक्ति का क्रम ऐसा सनातन ।

प्रश्न : मोटा, आप कराची में थे, तब आपको साँईबाबा मिलते थे तो पहले से आपको मालूम होता, इससे आप मिलने जाते थे या एकाएक मिलते थे ?

श्रीमोटा : नहीं, एकाएक मिलते थे ।

प्रश्न : कइओं को ऐसा कहते सुना है कि उन्हें बाबा का आवाज सुनाई दे, भक्तों को सूचना देते सुन सके और उस अनुसार वे करते । यह सुनना सँभव है ?

श्रीमोटा : 'हाँ ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(२४)

अनेकानेक कैसी है, मोह की तो परंपरा !
एक के बाद क्या एक धारा चला करे सदा;
नया नया ही अद्‌भुत संसार मोह का क्या है !
चक्कर, व्यूह वह कैसे-कैसे उसके अपार हैं !-
('मोह' पुस्तक से) - **मोटा**

उसे हम गुरु मानते हैं

दिनांक २०-१२-१९६६ के दिन सुरत आश्रम पर पूज्यश्री की परिचर्या के लिए सुप्रसिद्ध डॉक्टर श्री मंचेरशा आये थे, तब श्रीमोटा बालक के समान वर्तन करने लगे ! लगभग दस भक्त बैठे थे । श्रीमोटा पलंग पर पलथी लगाकर और कमर पर लुंगी लपेटकर बैठे थे। वे बहुत आनंद में थे ।

डॉ. मंचेरशा ने सलाह दी थी कि पलथी पर बैठना और मुड़े हुए घुटनों को पकड़कर एक के बाद एक हिलाते

रहना । उनके पैर पर सूजन दिख रही थी । इससे डॉक्टर ने पूछा 'आप कितनी दफा पैर हिलाते थे ?'

श्रीमोटा : 'सौ-दो सौ बार'

डॉक्टर : 'इतनी सारी बार नहीं हिलाना है ।'

श्रीमोटा : आपने पीछले समय दी हुई किक (लात) से अच्छा लगता था । ऐसी ८-१० लातें लगाईये न ! फिकर नहीं...। श्रीमोटा ऐसा बोलते जाय, घुटनें हिलाते जाय और उछल-उछल कर हँसते जाय । फिर आपश्री ने कहा, 'बावाजी, आप हमारे गुरु । जो हमारा कुछ करे, उसे हम गुरु मानते हैं ।'

'आपके दु:ख में हिस्सा लेना है ।'

मौनसप्ताह पूरा होने पर उसमें से बाहर आनेवाले और मौन में बैठने जानेवाले और अन्य मुलाकातिओं के सामने पूज्यश्री कुछ देर बोलते थे । उससे पहले भीखुकाका 'हरि को भजते हुए अभी तक किसीकी लाज गई नहीं जानी रे' भजन अत्यंत भाव से गाते । उस रविवार के दिन पूज्यश्री ने अपने संबोधन में कहा :

'आप सब मेरे पास आकर अपने दु:खों का निवेदन करते हो, किन्तु वह पूरा नहीं करते हो, पर्दा रखते हो । वैसा नहीं होना चाहिए । आपके सुख में नहीं, किन्तु दु:ख में मुझे हिस्सा लेना है । अब थोड़े वक्त के लिए 'यह'

शरीर है । मुझे ऐसे तो मरना भी नहीं है और जीना भी नहीं है । किन्तु शरीर चलेगा कब तक ? तो वहाँ तक मैं आपकी मदद करूँ ।'

बच्चों को सुधारने की बात छोड़ दो

आज अनेक जन उनके स्वजन संबंध में मेरे पास आकर फरियाद करते हैं । कहते हैं कि 'मेरा लड़का मेरा कहना नहीं मानता है ।' तो मेरी आपको सलाह है कि भाई, बच्चों को सुधारने की बात छोड़ देना । हमें अपने स्वयं को सुधारना है । आज काल ऐसा आया है कि युवान संतान माँबाप का कहा नहीं मानेंगे, फिर तो सेवा करने की बात ही कहाँ रही ? यदि बड़ी उम्र के संतानों के साथ झगड़े हुआ करते हो तो एक दिन प्रेमभाव से उसे कह देना कि 'भाई, अलग होकर रहो, जिससे हम प्रेमभाव से रह सके । यह बात मैं किसी दो स्वजनों के नाम देकर व्यक्तिगत नहीं कहता हूँ, किन्तु सब को कहता हूँ ।'

'भगवान ने लाज रखी'

फिर उन्होंने चमत्कार के बारे में बोलते हुए कहा, 'अनेक पूछने आते हैं कि अमुक महात्मा ऐसे चमत्कार करते हैं, तो वह क्या है ?' जैसे सूर्य को उसकी गरमी तथा प्रकाश सहज है, अग्नि को उसकी गरमी कुदरती होती है, उसी प्रकार आत्मनिष्ठ व्यक्ति में आत्मा का प्रकाश

कुदरती रूप से प्रकाशित होता है । आत्मा की शक्ति बाहर आती है । किन्तु ऐसा कोई निमित्त मिले तब बाहर आती है । ज्यों की त्यों बाहर नहीं दिखेगी । आपको मालूम होगा डॉ. जगन्नाथ के बचाव की घटना । उसे तैरना नहीं आता था और मौन में से निकलकर वे तापी में स्नान करने गये थे । पानी में बहाव तेज था, किन्तु प्रभुकृपा से वे रांदेर के पास सही-सलामत बाहर निकल आये थे । यदि वे बचे न होते तो आश्रम को कलंक लग जाता, किन्तु भगवान ने लाज रखी★ ।

दृष्टि वापस मिली

उसके बाद श्रीमोटा ने मुझे सुरत शहर में जाकर मंजुलाबहन तमाकुवाले को मिलने और उनकी दाहिनी आँख की जा चुकी दृष्टि किस प्रकार वापस मिली, वह जान लेने की सूचना दी । इससे मैं मंजुलाबहन को जाकर मिला । उनके पास से मुझे जानकारी मिली कि १९६१ में उन्हें 'मेनिन्जाईटीस' की बीमारी हुई थी । इससे उनकी दाहिनी आँख की दृष्टि चली गई थी । तब १०१ दिन अस्पताल में रहना पड़ा था । सुरत के आँख के डॉक्टर ने 'अब कुछ नहीं हो सकता है' ऐसा स्पष्ट कह दिया था ।

★इस अलौकिक घटना के बारे में संपूर्ण ब्योरा श्रीनंदुभाई लिखित 'आश्रम की अटारी से' पुस्तक में दिया गया है ।

तमाकुवाला कुटुंब पूज्यश्री के प्रति बहुत भावनावाला और सेवा करनेवाला माना जाता था ।

उसके बाद पूज्यश्री ने उस बहन को १९६१ के अगस्त में २१ दिन तक उनके अपने घर में मौन-एकांत लेने का सूचन किया । उस दरमियान बिलकुल अंधेरे में रहने का, कुछ पढ़ना नहीं । सिर्फ 'हरिः ॐ' का जप किया करने का । उस तरह मंजुलाबहन ने मौन लिया । श्रीमोटा तो तब कुंभकोणम् आश्रम में थे ।

२१ दिन बाद उस बहन को दाहिनी आँख से कुछ-कुछ दिखने लगा । दिनप्रतिदिन ज्यादा अच्छे से अच्छा, आज बहुत अच्छा दिखता है । अब वे अच्छी तरह लिख-पढ़ सकते हैं । 'यह पूज्य श्रीमोटा के प्रताप से है ।' ऐसा उन्होंने हमें कहा था । उस २१ दिन के मौन के दरमियान मंजुलाबहन को 'अंधेरे में पूज्यश्री का छायादर्शन भी हुआ करता था' ऐसे उन्होंने जोर देकर कहा ।

दिमाग के दर्दी का उद्धार

पूर्वोक्त मंजुलाबहन के कुटुंबी (ससुर) बाबुभाई तमाकुवाले को १९६० में 'मेनिन्जाइटीस' हो गया था और उनके दिमाग को असर हुई थी एवम् उनकी तबियत गंभीर हो गई थी । उस वक्त उनके भाइओं ने श्रीमोटा को कुछ करने की विनती की थी । तब श्रीमोटा ने कहा था कि

'यदि अब इसके बाद बाबुभाई को दूसरी किसी भी व्यापारी प्रवृत्ति में सामिल न करो और वे ईश्वरस्मरण करते रहे तो मैं ईश्वर के सम्मुख सहाय के लिए पुकार करूँ ।' सब भाई कबूल हुए थे और बाबुभाई उसमें से बच गये थे । उसके बाद बाबुभाई वर्ष का बहुत सा समय मौन में बैठकर ईश्वरस्मरण में बिताते थे और वैसा करते-करते दिनांक २०-८-१९८९ के दिन ७६ वर्ष की उम्र में उनका अवसान हुआ था ।

....तो मर जा मुए ऐसी बददुआ देंगे

दिनांक ३-१-१९६७ की सुबह सब भोजन करने बैठे । किसी भक्त ने मलाई-पूरी भेजी थी, जिसे श्रीमोटा सब को आग्रह कर-कर के जिमाते थे । उस दरमियान एक बहन को उन्होंने कहा कि 'तुम फरवरी में (दीक्षादिन निमित्त से) आणंद आना । यह साहब (उस बहन के पति) किराया ना दे तो देख लेंगे, किन्तु तुम्हें आना है । यदि वह (पतिदेव) मना करे तो मर जा मुआ ऐसी बददुआ देंगे । उसको ठीक कर देंगे । पूज्यश्री ने शुद्ध ग्राम्य भाषा में थोड़े गंभीररूप से प्रिय बुजुर्ग की भाँति ऐसा कहा, इससे हमें सुनने में आनंद आया ।'

'गांधीजी काल-पुरुष'

हमेश की तरह भोजन के बाद आपश्री आराम करने

गये । बारह बजे बाहर पलंग पर सोये । सत्संग हुआ तब मैं और डाहीबहन दो ही थे । इससे सत्संग अच्छा हुआ ।

प्रश्न : मोटा, गांधीजी का पुनर्जन्म हो गया होगा ?

श्रीमोटा : वह उनके संकल्प पर आधारित है । अन्यथा, कभी भी वे जन्म ले सकते हैं और वह हिंद में ही । गांधीजी कालपुरुष थे । उनका झुकाव ज्यादा आध्यात्मिक साधना के प्रति नहीं था, फिर भी वे आध्यात्मिक पुरुष तो थे ही । उनकी सभी प्रवृत्ति ईश्वर को समर्पित थी । समाज की उस समय की आवश्यकता (डीमान्ड ओफ धी टाईम) के अनुसार ऐसे पुरुष जन्म लेते हैं ।

जुड़े हुए रहना चाहिए

प्रश्न : मोटा, आप स्त्री का पुनर्जन्म लेनेवाले हो ऐसा सुना है, क्या वह सच बात है ?

श्रीमोटा : (मुस्कुराते हुए) हाँ, क्योंकि मुझे स्त्रिओं के लिए काम करना है, जो इस (पुरुष) देह से नहीं हो सकता है ।

प्रश्न : आप दक्षिण में जन्म लेंगे ?

श्रीमोटा : निश्चित नहीं ।

प्रश्न : देहत्याग के बाद कितने समय में ?

श्रीमोटा : तुरंत ही★ ।

प्रश्नकर्ता : प्रभु, हमें आपके साथ रखना ।

श्रीमोटा : उसका आधार आपके पर है । अभी आप सब मिले हो, वह ज्यों के त्यों मिले हो ? जुड़े हुए रहना चाहिए ।

उसके बाद हम उनके चरणस्पर्श कर के बिदा हुए ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२५)

सभी संसारिओं के साथ जीवन 'यह' जीने का है,
निरा वह नग्न उनका सब प्रत्यक्ष हमारी नजर में
फिर भी नहीं बोलना है, समझ वहाँ रखना है,
– संपूर्ण क्या चुप्पी ! फिर भी मिलना है साथ में !

– **मोटा**

पूज्य श्रीमोटा दिनांक ९-४-१९६७ के दिन मुंबई पधारे, क्योंकि दिनांक १९-४-१९६७ के दिन श्रीचंद्रकांत मेहता पूज्यश्री का 'नया अवतार दिन' का उत्सव मनानेवाले थे । दिनांक ११-४-१९६७ के दिन आपश्री 'सहकारनिवास' में

★कुछ वर्ष बाद जैसे-जैसे गुजरात में उनके भक्तों में वृद्धि होती गई वैसे-वैसे उनको भावि जन्म में साथ रखने के हेतु से उन्होंने पुनर्जन्म देर से लेने का कहा था ।

पधारे, तब हुए सत्संग में से कुछ हिस्सा यहाँ दिया है ।

कुदरत की चाल के बीच में हस्तक्षेप ?

प्रश्न : एक प्रश्न शायद धृष्टतापूर्ण लगे तो माफ करनाजी । योगनिष्ठ, चेतननिष्ठ महात्मा कुदरत की चाल के बीच में हस्तक्षेप कर सकते हैं ?

श्रीमोटा : नहीं ।

प्रश्न : कई संत हवा में से खाद्य, पेय और अन्य वस्तुएँ उत्पन्न करते हैं । तो वैसा ही ज्यादा मात्रा में बिहार जैसे अकाल के स्थलों पर जहाँ भूखमरी है, वहाँ नहीं कर सकते ?

श्रीमोटा : ऐसे महात्मा से पूछो न ।

प्रश्न : आप उस कक्षा के हो, जानकार हो, इसलिए पूछता हूँ । (तब श्रीनंदुभाई बोले, '**मोटा,** अभी आप पास में हो इसलिए आपको पूछते हैं ।'

श्रीमोटा : 'कुदरत के कानून के बीच में नहीं आ सकते हैं, कोई महात्मा आयेंगे भी नहीं ।'

किसका मानना - माँबाप का या सद्‌गुरु का ?

प्रश्न : मोटा, माँबाप का कहा मानना या सद्‌गुरु का ?

श्रीमोटा : दोनों का मानना चाहिए ।

प्रश्न : वह किस प्रकार हो सकता है ?

श्रीमोटा : व्यावहारिक बाबतों में माँबाप का मानना और जीवनविकास की बाबत में गुरु का मानना चाहिए ।

प्रश्न : विवाह जैसी बाबत में किसका मानना चाहिए ?

श्रीमोटा : इस बाबत में गुरु की सलाह मानना चाहिए ।

सुकोमल हृदयवाले मोटा

हरमुखभाई जोगी के पत्नी हसमुखबहन के साथ बातचीत करते हुए श्रीमोटा ने कहा, 'परीक्षा की सीझन चल रही है । किरण को खड़े-खड़े खिला दिया न ?... प्रकाश को दहीं नहीं खिलाया ?...' फिर अपने बारे में बातें कहने लगे । परीक्षा के वक्त मेरी माँ मुझे दहीं खाने के लिए देवे, तब मैं बायाँ हाथ सामने लाता । उस वक्त वह कहती कि 'तेरा नसीब ही टेढ़ा है, इससे बायाँ हाथ सामने लाता है ।' यों, मैं उसे चिढ़ाता और वह चिढ़ती । किन्तु मैं स्वादी सही ।' पापड़, अचार ऐसा सब मुझे बहुत रुचिकर था । हम बहुत गरीब थे, फिर भी मेरी माँ कहीं से भी माँगकर लाकर भी खिलाती थी । ऐसा कहते-कहते तो उनका गला भर आया और आँखें गीली हो गई, जो उन्होंने रूमाल से पोंछ ली । माँ के लिए कितना प्रेमभाव ! आपश्री उनकी माँ की या उनके गुरुमहाराज की बातें करे, तब गद्गद हो जाते और सुननेवाले भी द्रवित हो

जाते थे । भीड़भरी सभा में भी रो पड़ते थे ! कितना सुकोमल उनका हृदय !

मेरी माँ मुझे नहीं समझती

उनकी माँ के बारे में ज्यादा बताते हुए आपश्री ने कहा, 'मेरी माँ मुझे नहीं समझती । मैं उसे बहुत लाड़ करूँ तो वह चिढ़ जाती । जब मैंने देशसेवा का व्रत लिया, तब वह कहने लगी की देशसेवा ! पक्षिओं को दाने खिलाने के तो पैसे नहीं हैं और देशसेवा करने निकला है। मैं जोर से भजन गाऊँ, नाचूँ तो वह भी उसे पसंद नहीं था । इससे दुर्गाबहन (स्व. महादेवभाई देसाई के पत्नी) उसे कहते, 'सूरजबहन, चूनीलाल तो बहुत अच्छा बेटा है। क्यों उसे डाँटते हो ?' दुर्गाबहन मुझे समझते सही और मेरे पर उन्हें भाव भी सही ।'

गुरुमहाराज अकेले प्रेम करे

दिनांक १७-४-१९६७ के दिन सुबह में आपश्री हमारे यहाँ एकाएक पधारे । और उन्होंने बिना शक्कर-दूध की सिर्फ तीन पत्ती उबालकर बनाई हुई चाय पी । चाय पीते-पीते आपश्री गोपाल के साथ बातें करते हुए कहने लगे कि, 'तुम्हें तेरी माँ को चिढ़ाना और हररोज नया-नया नाश्ता माँगना । मेरी माँ को मैं बहुत प्रेम करता था, फिर भी वह मुझे गालियाँ देती थी । बेचारी को वक्त नहीं

मिलता था । गरीबी के कारण वह दूसरों का बहुत काम करती थी । हाँ, मेरे गुरुमहाराज अकेले मुझे प्रेम करते ।'

सभी कारण का मूल

गोपाल : 'मेरी माँ की कुछ आकांक्षाओं को मैं पूरी नहीं कर सकता हूँ, इससे वह नाखुश रहती है और चिढ़ती है । मुझे क्या करना चाहिए ?'

श्रीमोटा : सभी कारणों का मूल हमारे में रहा हुआ है । मैंने स्वयं सहन किया है, अनुभव किया है । मैं अठारह व्यक्तिओं के बीच काम करता था । सभी के मन मुझे रखना पड़ता था । सभी को अनुकूल होकर मैं रहता था । अरे, अभी भी जिसके वहाँ जाऊँ, उसके वहाँ भी अनुकूल होकर रहता हूँ । उस समय पर (साधनाकाल दरमियान) अच्छा काम करूँ तो भी मेरे पर खीजते और बूरा काम हो तो भी खीजते । इससे मैं अपने आपको टोक-टोक के और गम खाकर, मुझे दिया गया छोटे से छोटा काम उत्तम रीति से करने का प्रयास करता था । **कोई अपने को प्रेम करे या अपने पर गुस्सा करे, उसका मूल तो हमारे में है ।** यह बात समझने जैसी है । इसलिए अपने आपको ही हमें समझना चाहिए और हमारे में रहे हुए कारणों को खोजना चाहिए । ऐसा करोगे तो सब समझ में आ जायेगा ।

इतने में श्रीनंदुभाई घर के दरवाजे पर टकोर कर के अंदर आये । पूज्यश्री हँसते-हँसते बोले, 'भाई ने हमें खोज लिया ।' और दोनों बिदा हुए ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२६)

प्रभु क्या एक साथ रहा है सत असत में ।
फिर भी दोनों से बिलकुल अलग ही है साथ में !

('जीवनझलक' पुस्तक से) – **मोटा**

दिनांक १९-४-१९६७ बुधवार, रामनवमी का दिन अर्थात् पूज्य श्रीमोटा का 'निर्गुण साक्षात्कार दिन' । उनके शब्दों में कहें तो 'नया अवतार दिन ।' श्री चंद्रकान्त मेहता ने मुंबई में सचिवालय के जीमखाना होल में उत्सव आयोजित किया था । प्रारंभ में भजन हुए बाद में पूज्यश्री ने संक्षिप्त में सारगर्भित प्रवचन किया । उसका सार निम्नानुसार दिया गया है :

संसार के जहर पीओ

मुझे दूसरा कुछ नहीं कहना है । नामस्मरण और चित्तशुद्धि करो । **शब्द में निरंतरता प्रगट होने पर आकाशतत्त्व विकसित होता है । इससे सत्त्वगुण अग्रभाग में आता है और रजस एवम् तमस गौण बन जाते हैं ।**

जीवन में यही करना है । मुझे विद्वत्ता की बातें करना नहीं आती है । शांति और प्रसन्नता रखकर प्रेम से जो भी सब कुछ सहन करो । **जहर (संसार के) पीओ, किन्तु ज्ञानपूर्वक पीओ ।'**

मुझे भगवान को दक्षिणा देनी है । मैंने उसके पास से जो प्राप्त किया है, वह मुझे वापस देना है । इसलिए आपके पास दान माँगता हूँ । आपके पास से लेकर मैं समाज को वापस देता हूँ ।

नया अवतार यानी क्या ?

जैसे बीमारी में से मनुष्य उबर जाय, तब उसे नया अवतार मिला ऐसा कहते हैं, उस प्रकार **जीवदशा में से विकास प्राप्त कर के मनुष्य आत्मनिष्ठ बने, उसके पटल खुले (ज्ञान हो जाय) तब नया अवतार हुआ ऐसा कहा जायेगा ।** किन्तु ऐसे मनुष्य को हम समग्ररूप से जान नहीं सकेंगे । उसे विचारों की परंपरा नहीं होती है । उसे स्वप्न नहीं होते हैं । वह सत में व्याप्त है और असत में भी व्याप्त है, वह परस्पर विरोधाभासी है । फिर भी वह सब से पर है ।

कार्यक्रम पूरा होने के बाद आपश्री रात को ही नडियाद गये । जाते-जाते हमें कहा, 'भाई, कारखाना बराबर चलाना । इस वाक्य का मर्म समझने में हमें जरा देर लगी ।' (यानी कि भगवान का नाम लेना ।)

मैं कौन ?

पूज्य श्रीमोटा मुंबई में थे, तब एक बार श्रीढेबरभाई और श्रीमंकोडीसाहब पूज्यश्री को मिलने आये थे । तब ढेबरभाई ने श्रीमोटा को पूछा, 'मैं कौन ? उस पद्धति से जीवनविकास करने की श्रीरमणमहर्षि की सलाह सरल नहीं है ?'

श्रीमोटा : एक प्रकार से वह सरल है जरूर, किन्तु 'मैं कौन ?' इस प्रश्न का निरंतर रटन होना चाहिए, घुटते रहना चाहिए । उसके प्रति 'अवेरनेस' अर्थात् कि जाग्रति सतत जाग्रति रहनी चाहिए तो ही उसकी असर होगी । किसी भी प्रकार का साधन करें उसमें सातत्य, जाग्रति और श्रद्धा होने चाहिए । जैसी-जैसी प्रकृति, अभिगम और लगन वैसा-वैसा साधन वह स्वीकार करे, उसका कोई हर्ज नहीं है ।'

आत्मनिष्ठ बनने में कई जन्म चले जाते हैं

प्रश्न : मोटा, गीता में भगवान कहते हैं कि 'कई जन्मों की साधना के बाद साधक मुझे पाता होता है ।' तो सामान्य प्रकार से कितने वर्ष होंगे ऐसा करते ? कितने जन्म होंगे ?

श्रीमोटा : हरएक के लिए निश्चित काल नहीं हो सकता । हरएक के कर्म और संस्कार पर उसका आधार है ।

प्रश्न : एक ही जन्म में कोई आत्मनिष्ठ हो सकता है क्या ?

श्रीमोटा : नहीं । अरे ! मेरे जैसे को सात-सात जन्म तक साधना करनी पड़ी थी । पीछले जन्म में मेरे एक गुरु थे, वे इस जन्म में गृहस्थ का जीवन जी रहे हैं ।

प्रश्न : वह बहुत आश्चर्यजनक नहीं कहा जायगा ?

श्रीमोटा : इस जन्म में वह सुखी संसार भोगेगा । आनेवाले अगले जन्म में वह साधु बनेगा । इससे बहुत आश्चर्य करने जैसा नहीं है ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२७)

जूठा ना कुछ उसे चले, उसे सब से पहले,
समर्पण कर अपना सकल प्रसादीरूप लो फिर सब ।

('जीवनसंदेश' पुस्तक से) - **मोटा**

माटुंगा में श्रीमोटा

श्रीमोटा दिनांक १७-५-१९६७ के दिन डांग के जंगल का एकांतवास छोड़कर माटुंगा (मुंबई) में एक भक्त की बेटी की शादी में उपस्थित रहने पधारे थे । इससे उनके दर्शन करने हरमुखभाई जोगी, चंद्रकांत मेहता और मैं ऐसे तीन जने गये थे । हम सब को देखकर आपश्री राजी हुए और सब को प्रेम से मिले । उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं

लगता था । उन्हें बहुत भारी खाँसी थी और दमा भी था । उनकी आवाज़ बैठ गई थी और आँखे एकदम छोटी हो गई थी । उनको पेट में दर्द भी था । उनके साथ थोड़ी बातचीत करने के बाद उन्होंने हमें तीनों को भोजन करने बैठायें ।

जप से चेचक मिटे

दरमियान एक बहन पूज्यश्री के पास आकर कहने लगी कि 'मेरी बेटी को चेचक निकली थी । हमने तुरंत ही आपको याद कर के 'हरिःॐ' का जप शुरू कर दिया । पहले दिन ही थोड़ी चेचक निकली वह निकली, फिर बंद हो गई !' श्रीमोटा ने हमारी सामने सूचक नजर कर के देखा, हमने सहज मस्तक झुकाकर नमन किया ।

संजोगों से घबरा जाना नहीं

रात को उन्हें बिदा करने कुछ भक्त स्टेशन पर आये थे । उसमें थे 'जन्मभूमि' दैनिक के संपादकमंडल के एक सदस्य ज्योतीन्द्र मझमुदार । पूज्यश्री के चरणस्पर्श करते हुए वे रो पड़े । पूज्यश्री ने अपने हृदय पर निशानी करते हुए कहा, 'इसके साथ संबंध बाँधो । संजोगों से घबरा जाना नहीं । आश्रम पर आना ।' उस भाई के हृदय का बोज इससे हलका हुआ हो, ऐसा उन्हें लगा और 'हरिःॐ' के घोष के बीच ट्रेन रवाना हुई ।

निर्भय बनाने के लिए

युवानों में निर्भयता आवे वह श्रीमोटा का एक बड़ा हेतु था और इससे आपश्री अनेक रीत आजमाते थे । अहमदाबाद के चीमनभाई महाजन की दो बेटिओं को निर्भय बनाने के लिए श्रीमोटा ने क्या किया था वह देखें । एक बेटी को उन्होंने नडियाद आश्रम के वटवृक्ष पर बाँधी हुई मचान पर एक रात सुलाई थी । दूसरी बेटी को पीपल पर सोने को कहा था, किन्तु उसे वहाँ अनुकूलता नहीं हुई । इससे उसे मौनमंदिर में बिठाया । बाद में दोनों बहनों को अपने घर छत पर अकेले सोने को कहा था ।

बहनें निर्भय और सशक्त बनें उसके लिए उन्होंने 'महाजन शक्तिदल' नामक ट्रस्ट को एक लाख रुपये दिये कि जिससे उसके ब्याज में से हिंमत, साहस, निर्भयता और अनोखा ऐसा सेवाकार्य करनेवाली बहनों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रति वर्ष 'गुजरात व्यायाम प्रचारक मंडल' इनाम दे सके ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२८)

लोगों से बढ़िया जो होते हैं, चित्त उनके
– समर्थ जानने कौन ? गूढ़ से गूढ़ वे सदा ।

('जीवनसंदेश' पुस्तक से) – **मोटा**

श्रीमोटा की मुलाकात पर विजयगुप्त मौर्य

पूज्य श्रीमोटा मद्रास (चेन्नाई) जाते हुए दिनांक १२-७-१९६७ के दिन मुंबई में रुके । मुझे देखकर बोले, 'मुंबई समाचार' में आई हुई प्रश्नोत्तरी देखी । वह सब कहाँ से लाये ? मैंने उत्तर देते हुए कहा कि 'वह सब एकत्रित किया था और आपने वह देखा था । इससे उन्होंने कहा कि 'अच्छा, ऐसा सब को पसंद आता है सही ।'

शाम को करीब पाँच बजे 'जन्मभूमि' दैनिक के कालम लेखक श्रीविजयगुप्त मौर्य मेरे साथ श्रीमोटा को मिलने आये । वे करीब एक घंटे तक बैठे । पूज्यश्री ने उनको गुणभाव विकासक योजनाओं के बारे में बताया, उसके बाद सत्संग हुआ ।

श्रीविजयगुप्त : आपने संन्यास क्यों नहीं लिया ?

श्रीमोटा : संन्यास वृत्ति का हो, लोगों को गुणभाव को पोषण दे ऐसी योजनाओं के लिए दान देना पसंद नहीं है । मंदिर बँधवाने में, भोजन करवाने में और ऐसी दूसरी बाबतों में लोग धन खर्च कर सकते हैं ।' तब श्रीमौर्य ने कहा, 'लोग अपने को पुण्य कितना मिलता है, उस हेतु से ही दान करते होते हैं ।

वह संभव ही नहीं है

उसके बाद श्रीमौर्य ने पूछा, 'आप देहत्याग करने के

लिए नर्मदा नदी में कूद पड़े थे, किन्तु वापस ऊपर फेंके गये थे, वह किस प्रकार हुआ था ?'

श्रीमोटा : वह पता नहीं है, किन्तु किनारे पर फेंक दिया गया था, वह हकीकत है ।

श्रीविजयगुप्त विज्ञान और तर्क के सहारे पर चलनेवाले हैं । दैवीशक्ति या चमत्कार में वे बिलकुल नहीं माननेवाले हैं । 'इससे जिसे तैरना न आता हो, वह पानी में गिरने के बाद बाहर किस प्रकार फेंका जायेगा ? ऐसा होना संभव ही नहीं है,' 'ऐसा उनका कहना था । श्रीमोटा को हुई मिरगी की बीमारी 'हरिःॐ' के जप करने से मनोबल बढ़ा इससे मिरगी की बीमारी मिट गई हो । मंत्र में जादू है, शक्ति है, उसमें वे नहीं मानते हैं ।

उसके बाद श्रीविजयगुप्त ने 'जन्मभूमि में प्रकाशित होती उनकी 'व्यक्तिविशेष' की कालम में पूज्यश्री के बारे में एक लेख लिखकर उनके कर्मयोग की प्रशंसा की थी ।

अनोखे कार्य की कद्र

दूसरे दिन श्रीमोटा 'सहकारनिवास' में हरमुखभाई जोगी के वहाँ पधारे । उनके दर्शन को अनेक स्वजन भाईबहन आये । 'नवनीत' के संपादिका कुंदनिकाबहन कापड़िया भी आये थे । श्रीमोटा ने उनको चंदन की एक सुंदर कलात्मक पेटी उपहार में दी । **उनोखे कार्य करनेवालों को, परीक्षा**

में पहले नंबर पर पास होनेवालों को, नृत्य, संगीत और अन्य ललितकला में अग्रस्थान पर आनेवालों को आपश्री नगद रकम या किसी वस्तु की भेंट देते थे । इस प्रकार भेंट और दान देने का काम उन्होंने लगभग १९४१ की साल से शुरू किया था । १९४१ में किसी ने उनको एक हजार रुपये भेंट में दिये थे । जो उन्होंने कराची तरफ किसी विभाग में चलनेवाले राहत कार्य में दे दिये थे । यों उनको निजी मिले हुए उपहार-भेंट और उनके पुस्तकों की आय उन्होंने कभी भी अपने पास नहीं रखी थी । एक वक्त किसी ने पूछा था कि **'ऐसे भेंट-उपहार देने के पीछे आपका हेतु क्या है ?' तब उत्तर में उन्होंने कहा था कि 'इससे सामनेवाले की भावना का विकास होता है और उसे *मोटा* में रस जाग्रत होता है ।'**

जुलाई की १५ वीं दिनांक को आपश्री मद्रास (चेन्नाई) गये ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(२९)

युद्ध यानी सिर्फ संहार यह समझ बहुत अधूरी है । युद्ध से खंडन और मंडन दोनों होते हैं । युद्ध अर्थात् खंडन-मंडन दोनों ।

– **मोटा**

कुंभकोणम् आश्रम के बारे में

श्रीमोटा मद्रास (चेन्नाई) से मुंबई सेन्ट्रल स्टेशन पर दिनांक १७-८-१९६७ के दिन शाम को चार बजे पहुँचे और 'वेईटिंग रूम' में आराम करने लगे ।

उन्होंने पहले एक प्रवचन में कहा था कि 'कुंभकोणम् आश्रम जिस जगह पर है, वहाँ एक महात्मा की समाधि है । वहाँ पर पूरी दुनिया के शब्द हैं ।' उस बारे में ब्योरेवार कहने की हमारी विनती करने पर उन्होंने कहा, 'इस होल में (वेईटिंग रूम में) पूरी दुनिया के शब्दों की तरंग है या नहीं ?'

हाँ जी, अेपरेटस हो तो सुनी जा सकती है ।

तब पूज्य श्रीमोटा ने कहा, 'तो उसी प्रकार वहाँ भी है ।' और उस महात्मा की समाधि देखकर और वहाँ का वातावरण अच्छा लगा, इससे मैंने वहीं पर ही आश्रम करने का तय किया ।'

प्रश्न : मोटा, उस महात्मा के बारे में और कुछ खास जानने के लायक है क्या ?

श्रीमोटा : वे महात्मा बहुत समय पूर्व कहीं से आकर वहाँ रहे थे । कुछ दूर एक राजा रहता था । उसके पेट में दर्द उठा । वह किसी भी प्रकार से मिटता नहीं था । इससे किसीकी सलाह से राजा ने उस महात्मा को अपना इलाज करने के लिए आने का संदेश भेजा । तब महात्मा

ने कहा था कि 'गरज हो तो यहाँ आवे।' फिर राजा उनके पास गया। तब राजा को महात्मा ने कहा कि 'मेरे पाँव धोकर पानी पी जा, तेरा दर्द मिट जायेगा।' और उस प्रकार पानी पी जाने से उसका दर्द मिट गया!'

कुछ देर बाद आपश्री प्लेटफोर्म पर गये। लगभग चालीस जितने भाईबहन बिदा देने आये थे। एक बहन को आपश्री ने कहा, 'अहमदाबाद में मेरी शादी (हीरक महोत्सव) है, इससे तुम्हें आना है, आओगी न? मेरे गीत गाना पड़ेंगे।' उस बहन ने 'हाँ' कहा।

उनके जीवनचरित्र में आश्रमों का इतिहास देने का होने से उस बारे में उनके श्रीमुख से सभी तथ्य सुनने के लिए मुझे सुरत आश्रम पर जाना था। इससे उन्होंने मुझे हो सके उतनी जल्दी सुरत आने का फरमाया। उसके बाद आपश्री ट्रेन में जाकर बैठे और 'हरिःॐ' के घोष के बीच ट्रेन रवाना हुई।

■

॥ हरिःॐ ॥

(३०)

आपने जो दिया है हमें, हमने नहीं रख लिया वह,
आपका दिया हुआ वह वापस जाकर, चरणों में
किया अर्पण।

– मोटा

हरिःॐ आश्रमों का इतिहास

श्रीमोटा के साथ तय किये अनुसार मैं दिनांक २-९-१९६७ के दिन सुरत आश्रम पर गया, तब पूज्यश्री ने कहा, 'जितनी बात करना हो, उतनी अभी कर लेवे, क्योंकि मुझे तीन बजे शहर में जाना है और कल सुबह 'चिन्मय मिशन गृप' के सभ्य सत्संग के लिए आनेवाले हैं ।'

साबरमती आश्रम में श्रीगणेश

प्रश्न : मोटा, मौनएकांत पद्धति कब से शुरू हुई ?

श्रीमोटा : १९४६ के जून में साबरमती आश्रम में उसके श्रीगणेश हुए और १९५० तक वहाँ चला । हरिजन आश्रम में विनोबाजी की 'मीरा-कुटिर' में एक पर्दा रखकर साधक मौन लेता । उस वक्त उसके भोजन, शौच, पिशाब-पानी इत्यादि की व्यवस्था मैं करता था । उसके बाद १९५५ के मई महीने में नड़ियाद में आश्रम की स्थापना हुई । १९५४ में यहाँ (जहाँगीरपुरा, सुरत में) तापी नदी के घाट पर के एक मंदिर के कमरे में पर्दा रखकर भीखुकाका (प्रथम व्यवस्थापक ट्रस्टी हरिःॐ आश्रम, सुरत-३९५००५) को ५१ दिन का मौन दिया था । १९५६ से यहाँ आश्रम का निर्माण शुरू हुआ था ।

कुंभकोणम् आश्रम

प्रश्न : मोटा, कुंभकोणम् आश्रम की स्थापना कब हुई ?

श्रीमोटा : हाँ, हमारे भाई (श्रीनंदुभाई) और उनके मामा गोपालदास मेहता और अन्य भाईओं ने इकट्ठे होकर १९४८ में आश्रम की स्थापना के लिए रुपये ८८ हजार नकद और २३ हजार की कीमत के मकान की व्यवस्था कर दी थी, किन्तु 'वह लेकर मैं क्या उसका बदला दे सकूँगा ?' ऐसे विचार से सभी रकम वापस दे दी थी★ । किन्तु दो वर्ष बाद १९५० में वहाँ, कावेरी नदी के किनारे आश्रम की स्थापना की ।

बस्ती से दूर क्यों ?

प्रश्न : 'मोटा, हरि:ॐ आश्रम नदी के किनारे एकांत में स्थापित हुए हैं, उसके पीछे कोई खास कारण है क्या ?

श्रीमोटा : पहले के समय में ऐसे आश्रम नदी के

★१९३९ के सितंबर में हरिजन सेवा संघ (साबरमती) में से निवृत्त होकर श्रीमोटा १९४०-४१ दरमियान त्रिचि गये थे। श्रीनंदुभाई उनके मामा गोपालदास मेहता के साथ हीरा, माणिक, मोती इत्यादि का व्यापार करते थे । श्रीमोटा नंदुभाई को उनकी साधना में मार्गदर्शन करते थे तब से श्री नंदुभाई ने, श्रीमोटा की और हरि:ॐ आश्रम की सेवा १९८८ के मार्च तक कर के निवृत्ति ली ।

किनारे स्थापित होते थे, क्योंकि एक तो पानी की सुविधा रहती थी । दूसरा जलतत्त्व विचारों की उग्र तरंगों को फीका करता है । और बस्ती से दूर आश्रम इसलिए रखने में आते हैं कि बस्ती में चेतन के आंदोलन हमें आसानी से नहीं मिलते हैं ।

नडियाद आश्रम के बारे में आगाही

प्रश्न : मोटा, नडियाद का आश्रम आपने किया उसके पहले उसी जगह पर दूसरे साधु रहते थे न ?'

श्रीमोटा : हाँ, नडियाद में शेढी नदी के किनारे बिलोदरा गाँव में कबीरपंथी साधु रहते थे और उनके उपयोग किया हुआ एक चबूतरा आज भी वहाँ मौजूद है । उस चबूतरे पर वे साधु आराम करते थे । मौन में बैठनेवाले भी वहाँ आराम करते हैं । उस समय के कबीरपंथी श्री पहेलदासजी महाराज इस जगह पर रहते थे । उन्होंने उनके देहत्याग के पहले भविष्यवाणी की थी (जो एक व्यक्ति के पास लेखित है) कि इस जगह पर कोई तपस्वी होगा★ । मेरे 'इस' शरीर की जाति के एक कुबेरदास

★ १९२४-२५ में श्रीमोटा के सद्गुरु श्रीकेशवानंदजी धूनीवाले दादा के शिष्य श्रीबालयोगीजी महाराज ने **मोटा** को इसी जगह पर रात को पेड़ पर बिठाकर नामस्मरण करवाया था और उन्होंने श्रीमोटा को कहा था कि 'इस जगह पर तेरा आश्रम होगा ।'

भावसार जो नडियाद में 'भारत भुवन हिंदु होटेल' के मालिक थे, उन्होंने मुझे आश्रम के लिए लगभग पंद्रह हजार की और सर सी. वी. मेहता ने भी पंद्रह हजार की मदद की थी । इस प्रकार इस कबीरपंथी जगह पर अपना पक्का आश्रम बना । सुरत के आश्रम की अपेक्षा यहाँ शुरूआत में बहुत असुविधा थी, किन्तु प्रभुकृपा से सब गूढ़ रीति से सरल हो जाता था । सन् १९६१ में दोनों आश्रम 'चेरिटेबल ट्रस्ट' के रूप में रजिस्टर किये गये थे ।

वैद्यराजों की सभा में

दोपहर तीन बजे श्रीमोटा को शहर में जाना था । सुरत के वैद्यों की सभा (मंडल) ने एक हॉल निर्माण किया था, उसमें पधरावनी करने के लिए पूज्यश्री को आमंत्रण था । शहर में हॉल के पास पहुँचने पर श्रीमोटा को कुर्सी में बिठाकर पहली मंज़िल पर ले जाये गये । क्योंकि अब आपश्री से बिलकुल सीढ़ियाँ चढ़ी नहीं जाती थी । पलथी पर बैठ सके वैसा नहीं था । फिर भी उन्हें गद्दी-तकिये पर बिठाया गया । तब वे एक घंटे तक पलथी पर बैठे । उनके लिए कुर्सी लेने जाने की मैंने तैयारी दिखाई, किन्तु उन्होंने मना कर दिया ।

मग्न होकर आहुति दे देना चाहिए

सुप्रसिद्ध वैद्यराज श्रीबापालाल वैद्य ने प्रासंगिक बोल

कहने के बदले पूज्यश्री की प्रशंसा करना प्रारंभ किया, वह पूज्यश्री को पसंद नहीं आया । उसके बाद पूज्यश्री ने प्रवचन करते हुए कहा कि 'विद्याप्राप्ति के लिए मग्न होकर आहुति दे देना चाहिए । समर्पण करनेवाले जाग्रत होंगे, तब सच्चा तेज प्रकट होगा । सतत, दीर्घकाल तक, सतत से मनन-चिंतन हो तो ही आयुर्वेद विद्या सजीवन होगी ।'

अपने प्रयोग का स्मरण

पूज्यश्री ने सतत प्रयोग करते रहने की बाबत पर जोर दिया । साधनाकाल दरमियान उन्होंने अपने शरीर पर किये हुए प्रयोग की बात कहते हुए कहा कि 'मेरे गुरुमहाराज की सूचना अनुसार कंडें की बहुत सी धूनियाँ गोलाकार जमा कर उसे फिर सुलगाकर तपते गर्मी के दिनों में धूनियों के बीच शिला पर बैठकर साधन किया था । कई घंटों तक वैसी गरमी में बैठने के बाद मैं बाहर आता और बाद में नीम का रस पीता था । ऐसा करने का हेतु काम-विकार और विषय मिटाने का था ।'

श्रेष्ठ आश्वासन

इस कार्यक्रम के बाद आपश्री उनके एक भक्त के वहाँ स्वजन के अवसान बाबत आश्वासन देने गये थे । वहाँ उन्होंने कहा कि 'श्रेष्ठ आश्वासन नामस्मरण से मिलेगा । वह

अखंडित रूप से तेरह दिन तक करें। मृतात्मा की शांति के लिए भी वही अच्छा और सच्चा उपाय है।'

'गुणभाव' के बारे में स्पष्टीकरण

दिनांक ३-९-१९६७ की सुबह सुरत शहर से श्री वैकुंठभाई शास्त्री 'चिन्मय मिशन स्टडी ग्रुप' के पच्चीस सदस्यों को लेकर आश्रम पर आये, तब जो सत्संग हुआ :

वैकुंठभाई : मोटा, हरि का मार्ग है वीर का, नहीं कायर का काम देखो... उस काव्य का मूल सत्य क्या होगा ?

श्रीमोटा : उसमें कोई गूढ़ अर्थ या रहस्य नहीं है... वह तत्त्व हमें काम करने की प्रेरणा देता रहता है। कई बार जान-बूझकर प्रयत्न होते रहते हैं। किन्तु जो कुदरती प्रयत्न होता है, उसके और प्रयासों से होनेवाले कार्य के बीच फर्क होता है। तो वैसा प्रयत्न कब फलेगा ? गुण और भाव हो तब ऐसा प्रयत्न फलता है। 'गुण और भाव' के बिना कुछ प्रगट नहीं होता है। गुण अर्थात् हिंमत, साहस, शौर्य, धैर्य, तितिक्षा, सेवा, त्याग, परोपरकार इत्यादि। और भाव वह सूक्ष्म है। किसी भी गुण के साथ भावना (प्रेम) मिली हुई ना हो तो वह गुण प्रकाशित होता नहीं है, शोभित होता नहीं है। इससे उसका परिणाम

फलता नहीं है । **भावना का दूसरा लक्षण श्रद्धा है ।** बिना श्रद्धा का काम अफल है । श्रद्धा के भी लक्षण हैं –

गति को दृढ़ प्रेरित कर के, श्रद्धा क्या कर्मशील है !
प्रेरणा, भाव से और ज्ञान से, श्रद्धा सर्जनशील है ।

चर्चा करने से अहम् बढ़ेगा

चेतन का प्रत्यक्ष अनुभव करना हो तो पहले मस्तिष्क रखना ही पड़ेगा । प्राप्त कर्म को संपूर्ण रूप से पूरा करना ही पड़ेगा । उसे वर्तन में उतारना चाहिए । द्वंद्वातीत, गुणातीत होना पड़ेगा । यदि चेतन का अनुभव करना हो तो । यदि किसीको साधनाक्षेत्र में प्रवेश करना हो तो इस प्रकार प्रथम पहले मस्तक रखना पड़ेगा ।

प्रश्न : उसके लिए मार्ग कौनसा ?

श्रीमोटा : अनेक मार्ग हैं, किन्तु जप उत्तम साधन है । किन्तु उसका उठाव जीवन में नहीं आता है, क्योंकि रागद्वेष फीके नहीं पड़ते हैं । इसलिए सतत नामस्मरण करने के साथ मौन, अभय और नम्रता विकसित करने पड़ेंगे । प्रति दिन बारह, तेरह घंटे तक स्मरण हो तो सभानता और विवेकशक्ति क्रियाशील होगी, तब हम 'उस' के रास्ते पर हैं, ऐसा कह सकते हैं । ज्यादा पढ़ना नहीं । चर्चा करने से अहम् बढ़ेगा । मेरे गुरुमहाराज की सीख है ।

स्मरण से पैसे कमा सकते हैं ?

प्रश्न : भगवान के स्मरण से पैसे कमा सकते हैं ?

श्रीमोटा : हाँ, उससे एक प्रकार की सहाय मिलती है। बुद्धि तेजस्वी होती है, विकसित होती है और सुझ-बुझ बढ़ती है। सूझ-बूझ के कारण कमाई होती है। बुद्धि निर्मल होती है। दुःख के प्रसंगों में शांति मिलती है। प्रयोग कर के देखो। बारह से चौदह घंटे तक स्मरण ले जाव।

जाग्रत नर का सेवन करो

प्रश्न : मंत्र-जाप किस प्रकार करना ?

श्रीमोटा : मंत्र साधारण रीति से कल्पित देवी-देवता के होते हैं। 'कल्पित' इसलिए कि 'राम', 'कृष्ण', 'शिव' इत्यादि को हम चित्रों से ही पहचानते हैं। वही चित्र सच्चे हैं ऐसा नहीं कह सकते। सच्चा तो सिर्फ 'ॐ' है। कबीर को राम का मंत्र था। किन्तु उन्होंने भी 'संतों ! जाग्रत नर को सेना।' ऐसा ललकारा था। तो ऐसे 'जाग्रत नर' को आप जप करते वक्त आपके सामने रखो।

एक स्थान पर, समय पर और नियमित

किसी भी एक मंत्र को लेकर एक स्थान पर और एक ही समय पर पूर्वाभिमुख या दक्षिणाभिमुख बैठकर ब्राह्म मुहूर्त में नहा-धोकर स्वच्छ होकर, नियमित सतत

जप करना चाहिए । आसन कोई भी रखो । गीताजी में सब कहा है । आधार के लिए किसी देव का चित्र रखो या 'ॐ' का चित्र आपके सामने रखो । गुरु किये हो तो उनका चित्र सामने रखो । जब मैं साधना के लिए स्मशान में रात्रि के समय जाता, तब पलथी लगाकर कर बैठता और खंभे के साथ मेरी कमर और सीने के हिस्से को एक जने के पास बँधवा लेता था, जिससे आसन अस्थिर ना हो । ऐसे सीधे बैठकर मैं लंबे समय तक जप-ध्यान करता ।

महात्मा को भगवान कह सकते हैं ?

प्रश्न : मोटा, महात्मा को भगवान कह सकते हैं ?

श्रीमोटा : गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः' - ऐसा कहा गया है न ? किन्तु वह किसके लिए ? जिसने अपना गुरू किया हो उसके लिए । फिर भी देहधारी महात्मा भगवान की तुलना में नहीं आते । समुद्र और कुल्हिया में का समुद्र का पानी के बीच उनके गुणधर्म का साम्य है, फिर भी दोनों के बीच में अनंतता, विस्तार इत्यादि का फ़र्क़ होता है । यह समझना चाहिए ।

इस प्रकार सुबह के साढ़े सात से नौ बजे तक पूज्यश्री का सत्संग चला । बीच में वर्षा कुछ समय के लिये आ गई थी । इससे सब चौक में से उठकर बरामदे में जाकर बैठे । साढ़े नौ बजे सब बिखरे ।

भोजन के समय पूज्यश्री ने उनकी थाली में से एक

भाखरी (गेहूँ की सख्त मोटी रोटी) और थोड़ी छाछ मुझे दिये, तब Thanks God ! ऐसा बोल उठा ।

'मैं तो भिखारी हो गया'

दोपहर करीब तीन बजे गुजरात के शिक्षामंत्री श्री गोरधनदास चोखावाला पूज्यश्री के दर्शन को आये । श्रीमोटा सोये-सोये मंत्रीश्री को कहने लगे कि 'गोरधनभाई, आपने सुरत में तरणकुंड (Swimming Pool) निर्माण करने के लिए शहरीजनों को अपील की थी, किन्तु कोई तैयार नहीं हुआ, तब मैंने मेरे आश्रम में से ८५ हजार रुपये दे दिये । मैं तो अभी भिखारी हो गया । अब समाचारपत्रों द्वारा आप कोई अपील करो । मुझे 'अखिल हिंद तरण स्पर्धा' में सवा लाख रुपये देने हैं । वह सब मैं कहाँ से लाऊँगा ? यह तो मेरा आपके साथ निजी संबंध है, इससे कहता हूँ ।'

चोखावाला : आप अपील करोगे तो क्या नहीं होगा ?

श्रीमोटा : नहीं भाई, फ़र्क़ पड़ता है । इसलिए मेरे लिये इतना करो । इसलिए आपको लिखा था ।

श्रीचोखावाला ने वैसा करने की हाँ कही ।

भलाई के कामों के लिए इनाम

उसके बाद श्रीमोटा ने कहा कि 'मेरा विचार पूरे गुजरात की शालाओं के ११ वर्ष की उम्र तक के विद्यार्थिओं

को भलाई के काम करने के लिए इनाम देने की योजना बनाने का है । मैं आपको दो लाख रुपये एकत्रित कर दूँगा । उसके ब्याज में से सरकार इनाम देवे । अमुक लिखे हुए चाँदी के सिक्के तैयार करवाने का काम आपको कर देना पड़ेगा । क्योंकि सब मशीनरी आपके पास तैयार होती है, इससे देर नहीं लगेगी ।'

श्रीचोखावाला संमति में सिर हिलाते जाते थे और सुनते जाते थे । भलाई के कामों में कौन-कौन से काम आयेंगे उसकी सूची श्रीमोटा ने बाद में अहमदाबाद जाकर मैं भेज दूँगा ऐसा कहा ।

समुद्र तैरने की स्पर्धा

उसके बाद अखिल हिंद स्तर पर गुजरात का समुद्र तैरने की स्पर्धा के संबंध में श्रीमोटा ने बात की । फिर कहा कि 'सुरत की एक क्लब के १०-१५ सदस्य मेरे पास आये थे । वे सब जुलाई-अगस्त महीने में एक जगह तैरने गये थे, इससे उन्हें आश्रम की ओर से पाँच सौ रुपये जितनी रकम इनाम में देने में आयेगी । उससे आगे कहा कि 'युवानों तैरने के लिए उत्साहित हो, ऐसा कुछ करना चाहिए ।'

चाय-पानी लेने के बाद श्रीचोखावाला बिदा हुए ।

नौकर के लिए प्रेमभाव

पूज्यश्री उनके आश्रम के सेवकों के लिए भी कैसा

प्रेमभाव रखते थे, वह इन दिनों दरमियान देखने में आया । आश्रम का काम करनेवाला एक छोटी उम्र का लड़का कई दिनों से बीमार था । उसे बुख़ार रहता था । पूज्यश्री ने डाहीबहन को उस लड़के के शरीर पर 'स्पन्ज़ करने का सूचन किया, क्योंकि उसने दो दिन से स्नान नहीं किया था । श्रीनंदुभाई भी उसकी नाड़ देखते रहते और बुखार नापते रहते थे । एक डॉक्टर रांदेर से उसकी जाँच करने आये । तब पूज्यश्री ने उनको कहा कि 'भाई, हररोज आते रहना और लड़के की चिकित्सा करना । आपका जो चार्ज हो, वह आपको लेना है ।' तब डॉक्टर ने कहा कि '**मोटा**, चार्ज क्या लेना है ?' उसके बाद पूज्यश्री ने कहा कि 'लड़के को इस स्थिति में उसके गाँव नहीं भेज सकते हैं । दवाई-परिचर्या करने पर भी जब लड़के का बुख़ार नहीं उतरा, तब उसे अस्पताल में दाखिल किया । वहाँ उसे अच्छा हुआ ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(३१)

हृदय के भाव पर मुझे भूमिका चलने के लिए
जगत में कहीं स्थिर होने मुझे तो स्थान-भाव ही है ।

('जीवनसंदेश' पुस्तक से) – **मोटा**

जीवंत यज्ञ

सुरत में दिनांक ५-११-१९६७, रविवार को श्री छगनलाल रेशमवाला ने पूज्य श्रीमोटा के ७० वर्ष पूरे होने के कारण एक मिलन समारंभ आयोजित किया था । गुर्जर मोहल्ले में विशा लाड वणिक बाड़ी का हॉल भक्तों से ठसाठस भरा हुआ था । श्रीमथुरीबहन खरे ने भावपूर्ण स्वर से भजन गाये । उसके बाद पूज्यश्री ने प्रवचन किया ।

'अभी आर्थिक संजोग अच्छे नहीं हैं, इससे ऐसे उत्सव होने देता हूँ, क्योंकि उसके कारण मेरी सामाजिक प्रवृत्तिओं को मदद मिलती है । मेरे लिए उसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है । यह जीवंत यज्ञ है और सच्चा यज्ञ है । शरीर चलेगा, वहाँ तक करता रहूँगा ।'

धर्म किस पर खड़ा है ?

कई पूछते हैं कि 'आपकी इन योजनाओं में धर्म कहाँ आया ? धर्म की किस प्रकार वृद्धि होती है ?' **मैं पूछता हूँ कि धर्म किस पर खड़ा है ? तो कहते हैं, 'गुण और भाव' पर । तब ही भगवान जीवंत प्रत्यक्ष होगा । आज समाज घोर तामस में पड़ा हुआ है । मात्र धन से समाज उन्नत नहीं होगा । धन के साथ-साथ प्रजा में गुण और भाव प्रकट होने चाहिए ।**

‘आज की शिक्षा से यह काम चाहिए उतना नहीं होगा, क्योंकि शिक्षा का ढाँचा बेकार है । शिक्षको में प्राण नहीं है । इससे वे क्या सिखा सकेंगे ?’

‘आर्थिक तंगी से कभी विवशता भोगना नहीं । हिंमत से जीवनसंग्राम खेलो । खमीर और खुमारी प्रकट हो तो विवशता का अनुभव नहीं होगा ।’

अर्जुन को दर्शन क्यों ?

उसके बाद हुए प्रश्नोत्तर में एक युवान ने पूछे हुए सवाल से पूज्यश्री राजी हो गये थे । प्रश्न था कि ‘अर्जुन अभिमानी था, फिर भी उसे श्रीकृष्ण भगवान ने विश्वरूप दर्शन क्यों करवाया ?’

पूज्यीश्री ने उत्तर में कहा, ‘अर्जुन श्रीकृष्ण पर सखाभाव से प्रेम रखता था । इससे उसका अभिमान श्रीकृष्ण ने गीता सुनाकर तोड़ा । युधिष्ठिर कुछ कम लायक नहीं थे, फिर भी अर्जुन का सच्चा सखाभाव के साथ शरणागतिभाव था । इससे दिव्य दर्शन करवाया ।’

शिष्यभाव से नहीं किन्तु मित्रभाव से आइये

उपस्थित भाईबहनों को आपश्री बहुत जोर देकर कहने लगे, ‘आप मेरे पास शिष्यभाव से मत आना । दूसरी कोई साधना मत करो, मौन में भी न बैठ सको तो भी चलेगा । किन्तु आप मेरे साथ मित्रता रखना ।

आपको शायद ऐसा लगे कि **'मोटा,** पैसे माँगेंगे ।' तो पैसे भी मत देना । यद्यपि जो पैसे मिलते हैं, वे मैं वापस समाज को दे देता हूँ । खैर, मित्रता रखोगे तो आपको कैसी सहाय मिलती है, कैसा आत्मविश्वास प्रगट होता है, जीवन में कैसा रस पड़ता है, कैसी सूझ प्रकट होती है, उसका अनुभव होगा । गोपीभाव तो हमारे में आ सके वैसा नहीं है । वह तो मुश्किल है । इसलिए ईश्वर के प्रतिनिधि रूप संत-महात्माओं के साथ मैत्री करो ।'

उसके बाद उपस्थित भाईबहन की ओर से गुरुदक्षिणा देने में आई और प्रसाद लेकर सब बिखरे ।

यत्नेषु किम् द्रारिद्रयम् ?

शाम को शहर में से आश्रम पर आये । तब रास्ते में पूज्यश्री बोले, 'शरीर अब बहुत थक गया है ।' बोलते-बोलते भी उन्हे हाँफा चढ़ता था । बहुत थक गये थे । आश्रम में पहुँचते ही चौतरे पर पड़े हुए खाट पर आपश्री सो गये । भक्तों उनके पैर दबाने लगे । कुछ लोग बोलते रहते थे, इससे उनकी ऐसी आदत के संदर्भ में उन्होंने कहा, *'वचनेषु किम् दारिद्रयम्'* बोलने में क्या जाता है । *'यत्नेषु किम् दारिद्रयम् ?'* वह किसीको नहीं सूझता है ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(३२)

आपके पास ढेर है और उसमें से कण मात्र,
आपने यदि दिया, क्यों उसे हृदय में गीनती करते हो क्या ?

('जीवन-अनुभव-गीत' पुस्तक से) - **मोटा**

लक्ष्मी का उपभोग नहीं

दिनांक ३-२-१९६८ शनिवार को मैं नडियाद आश्रम पर गया। ठंड के कारण पूज्यश्री प्रवेशमार्ग के सामने खाट पर धूप सेकते बिराजमान थे। आपश्री ने मुझे दूर से देख लिया, इससे एक सेवक को सामान लेने भेजा। मैंने उनके पास जाकर नमन किया और चरण चूमे। उन्होंने सब के समाचार पूछे।

भोजन के समय सब चौक में बैठे। बाजरे का सरस कड़ा रोट, अंदर तील ड़ाले हुए, दाल-भात और सब्जी भोजन में थे। भात के संबंध में आपश्री ने कहा कि 'देख भाई, भात हम ऐसा (लाल रंग का मोटा) खाते हैं। अच्छी क्वोलिटी के तीन पंखवाले, कमोद और बासमती चावल आश्रम को भेंट मिलते हैं, किन्तु हम तो उसे बेच डालते हैं और रकम प्राप्त करते हैं। हम ऐसे हलके चावल खाते हैं। गरीब को तो ऐसे ही चलते हैं। लक्ष्मी का उपभोग नहीं करना चाहिए। समाज आज लक्ष्मी के साथ व्यभिचार कर रहा है।' 'हरि:ॐ' आश्रम में कभी चूले पर कड़ाही नहीं

चढ़ती है और आश्रम में फरसान भी नहीं बनाया जाता है । गेहूँ की रोटी भी नहीं बनती है । आश्रम के रसोईघर में भाखरी (गेहूँ की सख़्त मोटी रोटी) और बाजरे के रोट बनते हैं, किन्तु भक्तगण वार तहेवार को फरसान-मिष्ठान्न भेजे तो स्वीकार किया जाता है ।

पूज्यश्री को अभी दमा ज्यादा है और बुख़ार तो था, 'ब्लडप्रेशर' भी ऊँचा था । इससे उन्होंने सिर्फ कॉफी पी । बाद में वे आराम करने अपने कमरे में गये ।

क्वचित् ही परमार्थ करे

एकाध घंटे बाद पूज्यश्री बाहर आये, तब आये हुए एक भाई ने पूछा, '**मोटा,** कोई आज्ञा है ?' तब पूज्यश्री ने कहा, 'खास तो कुछ नहीं है । सब स्वार्थ तो करते हैं । कोई एक परार्थ करता होता है । जब परमार्थ तो कोई क्वचित् ही करते हैं । इसलिए परार्थ और परमार्थ करते रहना चाहिए ।

कुछ देर के बाद दो पोस्टमेन आये । 'मनीओर्डर' आया था । उसमें 'हीझ होलीनेस श्रीमोटा' ऐसा लिखा था । इससे आपश्री ने पोस्टमेन को पूछा कि '**मोटा**' इतना लिखूँ, हस्ताक्षर करूँ तो चलेगा न ? पोस्टमेन ने 'हाँ' कहा । पोस्टमेन हररोज इतनी दूर से आवे, इससे उसे हररोज नाश्ता दिया जाता है ।

दरमियान इन्दुकाका पूज्यश्री के घुटने के पीछे के हिस्से में अमुक खास तेल मालिश करने लगे, जो एक घंटे तक मालिश करने का नियम । ज्यादा नहीं और कम नहीं ।

'वह फोकट नहीं जाता है'

श्रीमोटा शाम को डभाण श्रीरावजीभाई पटेल (नडियाद आश्रम के प्रमुखश्री) के वहाँ गये । (आपश्री रावजीकाका के घर को अपना 'मायका' मानते थे ।) वहाँ कुछ देर बैठने के बाद वे हजामत कराने बैठे, तब नाईभाई को कहा, 'कल मेरी शादी है । एक भी काँटा नहीं रहने देना ।'

रावजीभाई की विधवा बहन डाहीबहन पूज्यश्री की सेवा में रहते थे, किन्तु वे (डाहीबहन) जमीन पर फिसल जाने से उन्हें थोड़ी चोट आई थी, इससे सात दिन से वे उनके भाई के (रावजीभाई के) घर पर रहते थे और उनकी जगह इन्दुकाका सेवा में थे । इससे श्रीमोटा ने रावजीभाई से पूछा, 'डाहीबहन ने मेरे साथ विवाह किया तो फिर मेरे से अलग कैसे हो सकते हैं ?' 'नहीं हो सकते हैं ।' पूज्यश्री ने कहा, (रावजीभाई के घर पर) 'हाँ, मेरे जैसे के साथ रहने में तप है । जल्दी सुबह तीन-चार बजे उठकर तो सोने तक काम करना, बिलकुल आराम नहीं । किन्तु वह फोकट नहीं जाता है, हंअ...भाई ।'

फिर डाहीबहन बोले, **'मोटा,** बीमार व्यक्ति आश्रम में नहीं रह सकता, इससे क्या करूँ ? आप कहो तब आ जाऊँ ।'

तब श्रीमोटा ने कहा, 'बुधवार सुबह से आ जाना ।'

...इससे सब निपट जाय

भोजन के समय उन्होंने एक केला और सेवफल की कुछ फांके ली । भोजन करते-करते आपश्री एक भाई को संबोधित करते हुए बोले कि 'इन्हें और इनकी पत्नी के बीच मनमुटाव है । 'बहादुर' का खिताब दिया है, किन्तु वैसे नहीं होते हैं । अरे ! हाँ में हाँ मिलाना तो सब निपट जाय... एक बार गिर के जंगल में सिंह के पास (उसे) धकेल देना पड़ेगा । तब रावजीभाई सम्मति देते बोले कि 'ठीक है ।'

जिसके साक्षी नहीं उसकी बात नहीं

भोजन कर लेने के बाद श्रीमोटा आश्रम की तरफ गये । रास्ते में आपश्री ने कहा, 'मैं जब साधना करता था, तब मेरी साधना को श्रीसाँईबाबा ने 'फाइनल टच' (अंतिम ओप) दिया था । मेरे गुरुमहाराज ने जो-जो संतों के नाम लिए थे और उनके हृदयप्रदेश में उनके दर्शन करवाये थे, उन-उन संतों के दर्शन मुझे हुए थे और उनके पास से मुझे मदद भी मिली थी ।'

मैंने पूछा, 'अक्कलकोट के स्वामी श्रीसमर्थ और ताजुद्दीनबाबा के भी दर्शन हुए थे न ? उनके बारे में आपने कुछ विशेष लिखा लगता नहीं है ।'

श्रीमोटा : हाँ, किन्तु उसके कोई साक्षी नहीं हैं । इससे उस बारे में लिखा नहीं है । मेरे गुरुमहाराज की आज्ञा थी कि 'जिस-जिस प्रसंग के कोई साक्षी ना हो उसकी बात नहीं लिखना या नहीं करना चाहिए । वर्ना दुनिया के लोग हाँसी करेंगे...' नंदुभाई को भी उनके बारे में कुछ विशेष नहीं बताया है ।

अघोरीबाबा का सामना

हिमालय के प्रवास पर जाते हुए श्रीमोटा को किसी अघोरी यानी कि पिशाचवत् परमहंस को देखने की इच्छा थी। इससे बहुत मेहनत कर के कई खड़े चढ़ाव चढ़ने के बाद श्रीमोटा अघोरीबाबा की जगह पर पहुँचे थे । वह जगह अत्यंत दुर्गंध फैलाती और घृणा उत्पन्न हो ऐसी थी । मलमूत्र और हड्डियाँ यहाँ वहाँ पड़े हुए थे । श्रीमोटा जब उस जगह पर पहुँचे, तब अघोरीबाबा हाज़िर नहीं थे । बाबाजी आधी रात को आते थे और दिन में चले जाते थे । तीसरे दिन उन्होंने श्रीमोटा को दुर्गंध से सिर फट जाय ऐसा कुछ पेय दिया । उस बारे में बात करते हुए श्रीमोटा ने कहा कि 'हम तो भगवान का नाम लेकर पी

गये ।' बाबाजी खुश हो गये । उनकी इच्छा मुझे वहीं रख लेने की थी । मैंने मना किया तो उन्होंने धमकी दी कि 'यदि मैं उनके पास नहीं रहूँगा तो मारा जाऊँगा ।' मैं तो नीचे उतर गया, किन्तु रास्ते में मुझे बार-बार शौच जाना पड़ा । मैं गंगाकिनारे सो रहा । एक बंगाली साधु ने मेरी सेवा की । कुछ दिन बाद मेरे में शक्ति आई, तब चल सका । उस साधुमहाराज को मेरे पास के थोड़े रुपये देने लगा, किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किए और थोड़ा आगे जाकर वे अदृश्य हो गये । इस प्रकार मेरे गुरुमहाराज ने मुझे मरते-मरते बचाया, वह सौ प्रतिशत सच्ची बात ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(३३)

निरर्थक ना कुछ अकारण बनता, सर्व में हेतु उसका
रहता छीपा हुआ पूरे जीवन में जुड़ा हुआ वह तो ।

('जीवन-पगले' पुस्तक से) – **मोटा**

श्रीमोटा की पत्रशैली

पूज्यश्री स्वजनों को कैसे पत्र लिखते थे, उनकी लेखनशैली कैसी थी और पत्र द्वारा कैसा सद्बोध देते, वह जानने के लिए उदाहरण के रूप में एक पत्र निम्नानुसार दे रहे हैं :

प्रिय भाई...

आपका दिनांक १५-५-१९६८ का लिखा हुआ पत्र और प्रेस कटिंग्ज हमें मिले हैं । चंद्रकांतभाई, योगिनीबहन, पूज्य बा सब की बहुत प्रेम से खबर पूछनाजी । जो जिसके साथ जीवनभर के लिए जुड़े हुए हैं, उसे जो पसंद हो, उसमें यदि हृदय के भाव से साथ न दे सकते हो तो भगवान के लिए हमारे से क्या होनेवाला है ? तब ऐसी भावना से ऐसा समझना कि इससे तो हमारी जो एक नापसंदगी की मनोवृत्ति हो, उसे निर्मूल करने ऐसे मिले हुए कर्म का हेतु है । जीवन का श्रेयार्थी चाहे जैसे अपने को नापसंद ऐसे कर्म आकर मिलने पर उसका घुमाव जीवन के विकास के हेतु के साथ सतत ज्ञानभान के साथ मोड़ते रहता है । बहादुर नाम रखा है - ऐसी पल में वही - चेतकर, जागकर, विकास के हेतु भाव से वर्तन करना चाहिए... बहन को, गोपाल को सप्रेम स्नेह...

मोटा का सप्रेम स्नेह !

पूज्यश्री कभी किसीको 'अ.सौ.' 'चि.' इत्यादि उसके नाम के पहले नहीं लिखते थे, वैसे ही '**मोटा** के आशीर्वाद' या '**मोटा** की शुभकामनाएँ वैसा पत्र के अंत में नहीं लिखते थे । छोटे या युवान को 'प्रिय भाई' और 'प्रिय बहन' लिखते वयोवृद्ध भाईबहन को 'जयेष्ठ' या 'पूज्य' लिखते । पत्र के अंत में 'आपके **मोटा** का स्नेह' आपके

मोटा का सप्रेम प्रणाम इत्यादि लिखते थे । उन्होंने कभी किसीके सिर पर हाथ रखा हो ऐसा नहीं देखा है । वे पीठ पर हाथ घुमाते या तो कंधा दबाते । निकट के भक्त की छाती पर हाथ फेरते । उन्होंने कभी किसीको 'गुरु' के संबंध से पत्र लिखा हो वैसा पत्र नहीं देखा है । आपश्री बारबार कहते थे कि 'कोई मेरा शिष्य नहीं है, मैं किसीका गुरु नहीं हूँ... मित्र बनकर आवे तो भी बहुत है ।' और उसी प्रकार उनका पत्रव्यवहार होता था । उनको लिखे गये हरएक पत्र का उत्तर आपश्री ने या श्रीनंदुभाई ने दिया है, वह एक नोट करने योग्य बाबत है ।

बारह महीने बाद मुंबई में

पूज्यश्री लगभग बारह महीने बाद दिनांक ३०-६-१९६८ के दिन मुंबई पधारे । पिछले जुलाई में मद्रास से वापस लौटते थोड़े घंटे मुंबई में ठहरे थे । पहले तो आपश्री दो या तीन महीने में मुंबई पधारते थे । किन्तु अब गुजरात में उनके स्वजन बढ़ने से उनको अधिक लोग पहचानते हुए हैं । इससे वहाँ के शहरों और गाँवों में से अधिक दान मिलने लगे हैं । इससे मुंबई आने का कम हो गया था ।

बहनों में अभय प्रगट हो

श्रीमती पूर्णिमाबहन पकवासा पूज्यश्री के दर्शन को आये और कहने लगे कि '**मोटा**, हम आपके गुजरात में

आते हैं, सरकार की ओर से जमीन मिलेगा...' श्रीमोटा ने उनके काम की प्रशंसा की और सूचन किया कि 'बहनों में अभय, साहस, हिंमत प्रगट हो वैसा करना । नामस्मरण-ध्यान इत्यादि करे तो वह भी अच्छा ।'

मरीज़ों की सेवा वह भगवान की सेवा

दूसरे दिन सुबह आपश्री सेठ नटवरलाल चिनाई के वहाँ से 'सहकारनिवास' में आये । हरमुखभाई के वहाँ जाने से पहले थोड़ी मिनट के लिए हमारे वहाँ पधारे । गोपाल ने जब उनको प्रणाम किया, तब मैंने कहा कि 'गोपाल, श्रीसत्यसाँईबाबा की भक्ति करता है और उनकी सूचना के अनुसार वह अस्पताल जाकर मरीज़ों को फल इत्यादि बाँटता है ।' पूज्यश्री ने कहा कि **'मरीज़ों की सेवा करते वक्त 'भगवान की सेवा करते हैं' वैसा भाव रखना ।'**

सद्‌गुरु की सतत सभानता

उसके बाद पूज्यश्री ने कहा, 'Constant awareness of God or Guru - ईश्वर या सद्‌गुरु की सतत सभानता, स्मरण और जाग्रति रखी जाय तो जीवन में आगे बढ़ सकोगे ।'

प्रश्न : ऐसी awarness सभानता के लक्षण क्या होंगे, **मोटा** ?

श्रीमोटा : उससे जीवन में नम्रता, मौन, अभय खिलते हैं और विकार शांत होते हैं ।

प्रश्न : सद्गुरु हमारा सब कर देंवे ?

श्रीमोटा : नहीं, किन्तु ऐसी पूरी शरणागति हो तो ऐसा हो सकता है । मेहनत करे तो ही प्राप्त होगा, भाई ।

उसके बाद दूध-मिसरी का स्वीकार कर के आपश्री हरमुखभाई के वहाँ गये ।

ज्ञान का अपच

दिनांक १-७-१९६८ सोमवार को शाम को 'सहकारनिवास' में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन करने में आया था । श्रीमोटा प्रवचन करनेवाले हो, ऐसी सार्वजनिक सभा का मुंबई में पहली बार ही आयोजन हुआ था । पहले तो श्रीमोटा के जीवन की झाँकी और उनके 'मिशन' अर्थात् कि मुख्य कार्य के संबंध में लेखक द्वारा ख्याल दिये जाने के बाद पूज्यश्री ने प्रवचन करते हुए कहा, 'एक कदम काफी होता है । आज ज्ञान का अपच हुआ है । आत्मा की और चोटी की बड़ी बड़ी बातें होती हैं, किन्तु वास्तव में कुछ प्राप्त नहीं होता है । इससे नामस्मरण-जप खास करना चाहिए । अभय-नम्रता विकसित करना चाहिए । कामक्रोधादि रोकने के प्रयत्न होने चाहिए ।'

उनकी योजनाओं के बारे में बोलते हुए आपश्री ने बताया कि 'समाज में गुण और भावना का विकास हो

और हिंमत और निर्भयता, धैर्य और सहिष्णुता जीवन में गूँथ जाय उसके लिए कुछ कर रहा हूँ । ऐसे गुणों के साथ प्रभुप्रेम की भावना जुड़नी चाहिए । हिंमत और साहस तो लूटेरों में भी होते है । वैसे गुणों के साथ भावना जुड़ी हुई नहीं होने के कारण लूटेरा लूटेरा ही रहता है और इससे ऐसे का जीवनविकास नहीं होता है । इससे मैं 'गुण और भावना' के विकास पर हमेशा जोर देता हूँ ।

प्रवचन करते-करते आपश्रीको बहुत दमा चढ़ा । इससे आपश्री ने बोलना बंद किया । दूसरे दिन आपश्री मद्रास (चेन्नाई)की ओर जाने के लिए निकले ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(३४)

कुछ बोझ जैसा लगता हो, कुछ गमगीनी में डूब गये हो या दूसरी कोई नकारात्मक वृत्ति का जोर उमड़ता लग रहा हो, तब एकांत में जाकर बहुत जोर से 'हरिःॐ' की पुकार लगाना । इससे चित्त की प्रसन्नता का आनंद फिर से अनुभव कर सकोगे ।

– **मोटा**

एरोप्लेन द्वारा मुंबई में

दिनांक १५-८-१९६८ की दोपहर श्रीमोटा अहमदाबाद

से एरोप्लेन में मुंबई पधारे, क्योंकि १६ वीं के दिन आचार्य श्री बी. एल. कोटक के पुत्र के विवाह में उपस्थित रहना था; एवम् सेठ नटवरलाल चिनाई विदेश जानेवाले थे । इसलिए उन्हें बिदा देनी थी । आपश्री ने कई वर्षों से प्लेन की सफर छोड़ दी थी । किन्तु दिनांक ६-८-१९६८ के दिन गुजरातभर में भारी बारिश और आँधी के कारण रेलवे मार्ग बंद हो गया था । सुरत शहर और दूसरे कई शहरों में बाढ़ के पानी से भयंकर तबाही हुई थी । सेंकडों पशु बह गये थे और मानव पायमाली भी हुई थी ।

आश्रम को बाढ़ के पानी की असर

सुरत आश्रम को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ था, किन्तु रसोईघर में, ओफिस विभाग में तथा मौनमंदिरों में पानी भर गये थे । थोड़ी लकड़ियाँ बह गई थी । बाढ़ के पानी फैल गये होते हुए भी रसोईघर की कच्ची दीवारें मजबूती से खड़ी थी । सब आश्रमवासी और मौनमंदिर के साधक ऊपर की मंज़िल पर चढ़ गये थे । एकमात्र बाबुभाई तमाकुवाले ने मौनमंदिर नहीं छोड़ा था । अंदर पानी घुटना तक भर गया था, इससे झूले पर टेबुल रखकर उसके पर आप बैठे रहे थे । और ऐसे बाढ़ के पानी में जाकर भी आश्रम के एक सेवक श्रीझीणाभाई उन्हें चाय पहुँचा देते थे ।

ईश्वर के वहाँ अन्याय नहीं है

प्रश्न : दुनिया में दिखनेवाले सभी दुःख, त्रास, अराजकता, अन्याय इत्यादि देखते हुए कई बार ईश्वर के अस्तित्व के बारे में शंका उत्पन्न होती है । यदि ईश्वर सचमुच हो तो ऐसा सब कैसे संभव है ?

श्रीमोटा : ऐसे प्रश्न कई बार उपस्थित होते हैं । जहाँ असमानता है, वहाँ ईश्वर इस तरह एक समानता लाता होता है । फिर बड़े पैमाने पर अनाचार भी होता है न ? एक्शन और रीएक्शन का कानून सदाकाल चलता है । ईश्वर के वहाँ अन्याय नहीं है । प्रश्न पर से ऐसा लगता है कि लोगों में मंथन होता है, किन्तु वह सच मानो तो केवल चर्चा के लिए ही होती है । ऐसी चर्चाएँ इस मार्ग में बिलकुल जरूरी नहीं है । जिस ने सच्चे दिल से वह मंथन किया होगा, उसे एक दिन उसकी समझ आयेगी । जगत के बड़े हिस्से के मनुष्यों के हृदय में किसी न किसी प्रकार के भगवान या देव के संबंध में भावना रही ही होती है । इससे ऐसा कह सकते हैं कि वह भावना सुषुप्तरूप से संपूर्ण जगत में पड़ी हुई है । यह हकीकत हमारे गले पूरेपूरी उतर गई हो तो हमारे जीवन के ध्येय को हमें सतत ज्यादा से ज्यादा आतुरतावाला बनाना चाहिए । उसके लिए नामस्मरण वह बड़े से बड़ा साधन है ।

आकस्मिक मृत्यु और जीव की गति

प्रश्न : ऐसी आपत्ति में मनुष्य की अचानक मृत्यु हो जाय, तब उस जीव की कैसी गति होती होगी ?

श्रीमोटा : वह प्रेतयोनि में जायेगा । बहुत कम लोग ऐसे समय में ईश्वर को याद करते हैं । यदि उस वक्त नामस्मरण हो जाय तो बहुत अच्छा होता है, किन्तु वह संभव नहीं है । जो भक्त होगा, उससे ईश्वरस्मरण हो सकेगा ।

प्रश्न : मोटा, प्रेतयोनि में जीव की आयुमर्यादा कितनी होगी ?

श्रीमोटा : मानवजीवन की आयु मर्यादा से थोड़ी ज्यादा ।

चेतन के आंदोलन कैसे पकड़े जा सकते हैं ?

प्रश्न : चेतन के आंदोलन किस प्रकार पकड़ सकते हैं ?

श्रीमोटा : यदि हमारा हृदय हमारे गुरुमहाराज में या अन्य किसी महात्मा में केन्द्रित हुआ हो तो वैसे आंदोलन पकड़े जा सकते हैं । उसके लिए सदा जाग्रति रहनी चाहिए, चेतनात्मक एकाग्रता होनी चाहिए ।

प्रश्न : भक्त से जीवदशा में गलती हो जाय तो वह उसके सद्‌गुरु द्वारा बच सकता है ?

श्रीमोटा : हाँ, किन्तु वैसी भक्ति प्रकट हुई होनी चाहिए ।

प्रकृति के वश नहीं होना चाहिए

प्रश्न : कभी-कभी नामस्मरण करते-करते ऐसा उत्साह आ जाय कि कूदने की इच्छा हो जाय, जबकि कई बार बैठ जाते हैं, तो तब क्या करना ?

श्रीमोटा : जब व्यापार करते हुए नफा होता है, तब बढ़ी हुई आय को हमें कहीं किसी में रोकनी चाहिए तो ज्यादा नफा होगा । यदि उसे खर्च कर डालें तो कुछ नहीं बचेगा । वृद्धि नहीं होगी । इसलिए **साधन करते हुए ऐसा उत्साह प्रकट हो, तब तो ज्ञानपूर्वक स्वस्थ रहकर, उस उत्साह का नामस्मरण में उपयोग करना चाहिए ।** जिससे ज्यादा से ज्यादा लाभ हो । और जब कोशिश करने पर भी नामस्मरण ना हो तो उसका कारण हमारी प्रकृति है । इससे प्रकृति के वश नहीं होना चाहिए और ज्यादा प्रयत्नपूर्वक साधना में लगे रहना चाहिए ।

परदेश जाते भक्त को शुभकामना

दूसरे दिन जल्दी सुबह पाँच बजे सेठ नटवरलाल चिनाई को बिदा करने पूज्यश्री हवाईअड्डे पर गये । उनके साथ चार भक्त भी थे । चिनाई सेठ ने पूज्यश्री को सोने में मढ़ी हुई तुलसीमाला पहनाई और पूज्यश्री ने फूलहार

और सूत की आँटी चिनाई सेठ को पहनाई । बाद में पूज्यश्री ने उन्हें आलिंगन दिया । बहुत से आगंतुक श्रीमोटा को देख रहे थे । क्योंकि आपश्री तो उनके हमेशा के अनुसार लुंगी और खेस में सज्ज थे । थोड़ी पहचानवाले पारसी भाईओं में से एक मज़ाक़-पसन्द बावाजी ने मज़ाक़ में कहा कि, 'you can produce a ticket and fly - आप हवा में से टिकट पैदा करे और ऊडे ।' तब पूज्यश्री ने उनके सामने देखकर मोहक रूप से स्मित किया ।

विवाह प्रसंग में उपस्थिति

श्रीमोटा हवाईअड्डे पर से श्रीकोटकसाहब के पुत्र के विवाह प्रसंग में गये । उनके हाथों से वरवधू का हस्तमेलाप हुआ और हार पहनाने में आये । फिर सब भोजन करने गये । शाम को छ बजे विवाह निमित्त से सत्कार समारंभ का आयोजन किया गया था । उसमें भी पूज्यश्री उपस्थित रहे । कोटकसाहब ने पूज्यश्री को रुपये १००१/- तथा टीके की आई रकम १५००/- अर्पण किये ।

दूसरे दिन विमानमार्ग से पूज्यश्री अहमदाबाद गये ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(३५)

जीवन सर्वस्व मालिक का है, मालिक की मर्जी अनुसार और हुक्म उठाकर प्रेम से, हमें जीना है !

('जीवन-अनुभव-गीत' से) - **मोटा**

श्रीमोटा को मधुप्रमेह

पूज्यश्री लगभग छ महीने बाद दिनांक २७-२-१९६९ के दिन फिर से मुंबई पधारे । उन्हें 'डायाबिटीस' अर्थात् मधुप्रमेह हुआ है ऐसा कहते थे । इस रोग के बाहर के लक्षण सभी दिखते थे, किन्तु डॉक्टरों की परीक्षा में उसका इशारा भी नहीं है । 'सचमुच ऐसा हो सकता है ?' ऐसा उनको पूछने पर उन्होंने मुस्कुराते हुए 'हाँ' कहा । १९४४ में जब आपश्री त्रिचि में थे, तब उन्हें कई-कई प्रकार के अभिनव ऐसे रोग होते और मिट जाते । डॉक्टर परेशान हो जाते और आपश्री को क्या दवाई देना, वह उन्हें समझ में नहीं आता था ।

शिरडी-साकोरी की ओर

दिनांक २८-२-१९६९ की दोपहर को आपश्री 'सहकारनिवास' में पधारे और दिनांक १-३-१९६९ के दिन चंद्रकान्त मेहता के साथ नांदेड़ गये । एक छोटी बस और एक छोटी कार चंद्रकान्त ने की थी । जिसमें पूज्यश्री

के साथ श्रीरावजीभाई पटेल, डाहीबहन और दूसरे चार जने थे । यह कार्यक्रम भाई चंद्रकान्त ने उनके नांदेड के कारखाने का उद्‌घाटन पूज्यश्री के हाथ से करवाने के लिए आयोजित किया था । इससे नांदेड पहुँचते पहले उन्हें शिरडी और साकोरी भी ले गये थे । २०-२५ वर्ष बाद दूसरी बार आपश्री शिरड़ी गये वैसा उन्होंने कहा । नांदेड दो दिन रुककर आपश्री दिनांक ४-३-१९६९ के दिन मुंबई वापस आये । भाई चंद्रकान्त ने पूज्यश्री को बड़ी रकम का दान भी दिया था ।

'बोले बिना चले ?'

दिनांक ६-३-१९६९ के दिन श्रीमोटा 'सहकारनिवास' में हरमुखभाई जोगी के वहाँ छठी मंजिल पर सुबह जल्दी पधारे । वहाँ कुछ देर रुककर आपश्री एकाएक हमारी रूम पर आये, तब लगभग साढ़े पाँच बजे होंगे । आपश्री ने पूछा कि 'आप हररोज जल्दी उठते हो ?' 'हाँ जी ।' पूज्यश्री ने थोड़ी चाय पी और भाई चंद्रकान्त के वहाँ जाने के लिए बिदा हुए । इस वक्त उनका शरीर बहुत सूख गया था । खा सकते नहीं । गले की तकलीफ थी । बातबात में आपश्री ने कहा कि 'डॉक्टर ने ज्यादा बोलने से मना किया है, किन्तु बोले बिना क्या चलेगा ?'

■

॥ हरिःॐ ॥

(३६)

आकाश में फैली हुई है अनंत जो अनंतता,
वैसी प्रत्यक्ष है गूढ़ श्रीहरि की अनंतता ।
सूर्य की पहचान कराती है उषा, प्रभात, तेज वह
वैसा अनुभवी से कुछ झाँकी हो हरि की जो ।

- मोटा

महाराष्ट्र सरकार को एक लाख का दान

दिनांक २-४-१९६९ के दिन श्रीमोटा सुरत से मुंबई पधारे और सेठ नटवरलाल चिनाई के वहाँ गये । दिनांक ३-४-१९६९ को आपश्री चिनाई शेठ के साथ माथेरान गये और दिनांक ६-४-१९६९ को मुंबई वापस आये और 'वेलार्ड व्यु' में भाई चंद्रकान्त मेहता के वहाँ ठहरे । दिनांक ७-४-१९६९ के दिन शाम को आपश्री हमारे वहाँ भोजन करने पधारे । तब उन्होंने पहले से जो कहा था उसके अनुसार खिचड़ी, कढी़ और सब्जी बनाये थे, वह आपश्री ने आरोगे ।

इस वक्त आपश्री एक लाख रुपये इकट्ठे करने के संकल्प के साथ मुंबई आये थे, किन्तु गले की तकलीफ के कारण मुलाकातिओं के साथ ज्यादा बात नहीं कर सकते थे । पूज्य चाचाजी (गुरुदयाल मल्लिकजी) गले के

कैन्सर की बीमारी के कारण आखरी अवस्था में थे । इससे उन्हें मिलने के लिए उनके मुकाम पर पूज्यश्री गये । तब चाचाजी उन्हें देखकर बहुत राजी हुए थे । यद्यपि आपश्री बोल नहीं सकते थे ।

दिनांक ९-४-१९६९ के दिन बुलाई गई प्रेस कोन्फरन्स में महाराष्ट्र के वित्त और खेलकूद विभाग के मंत्री श्री वानखेड़े ने हरिःॐ आश्रम की ओर से 'रुपये एक लाख का दान प्रति वर्ष अखिल हिंद समुद्र तरण स्पर्धा आयोजित करने के लिए राज्य को मिलेगा' ऐसी घोषणा की । इस बात को हरएक भाषा के समाचारपत्रों ने प्रसिद्ध कर स्वागत किया । श्रीवानखेडे ने इस प्रकार के दान का एक नये प्रयोग की तरह सत्कार किया और पूज्यश्री का उन्होंने आभार माना ।

भगवान की नकल करते रहो

दसवीं तारीख को पूज्यश्री मानवमंदिर की मुलाकात को गये । तब वहाँ छोटे बालकों ने सुंदर गीत गाए । कई लेखक भाईबहन वहाँ आये थे । एक भाई ने आखिर आखिर में पूज्यश्री को कहा कि 'मैं कई प्रसिद्ध लोगों की बोली, वर्तन इत्यादि की नकल कर सकता हूँ ।' तब पूज्यश्री ने सूचन किया कि 'अरे भाई ! तो फिर भगवान की नकल करो ।'

एक भाई 'ईश्वर रहस्यमय है, समझ नहीं सकते...'

इत्यादि बोल रहे थे । तब उनका वाक्य पूरा करे उससे पहले ही उन्हें रोककर श्रीमोटा बोले, 'वह बुद्धि में नहीं आता है, इससे ऐसा सब पूछना नहीं । वक्त बरबाद किए बिना कुछ साधना करो ।'

११वीं की शाम को आपश्री सुरत गए !

■

॥ हरिःॐ ॥

(३७)

भले जो देना हो वह, आप देना हृदय से वह,
'गिनती कुछ मत रखना' हृदय से प्रार्थना आपको ।

('जीवन-अनुभव गीत' से) – **मोटा**

स्थानशुद्धि के लिए यज्ञ

दिनांक ११-५-१९६९, रविवार के दिन पूज्य श्रीमोटा चंद्रकान्त मेहता के वहाँ पधारे । भाई चंद्रकान्त 'वेलार्ड व्यु' में नये ब्लोक में रहने जानेवाले थे, उससे पहले पूज्यश्री के हाथ से वहाँ यज्ञ करवाना था । नई जगह में होम-हवन किसलिए होते हैं, उसका कारण समझाते हुए पूज्यश्री ने कहा, 'नये निवास में शुभ-अशुभ, दैवी-आसुरी तत्त्वों का वास होता है । इससे वैसे स्थान की शुद्धि करने के लिए यज्ञ करना योग्य है ।' 'चंद्रकान्तभाई की माँ को आटे की सात छोटी कटोरियाँ बनाकर उसमें दीया जलाने

और यज्ञ चले वहाँ तक उसे जलते रखने का श्रीमोटा ने सूचन किया । उसका हेतु 'सात पितृओं को याद कर के उन्हें संतुष्ट रखने का होता है, ऐसा भी उन्होंने कहा ।'

किशोरों के लिए प्रेम

गुजरात सरकार के मुख्य सचिव श्रीललितचंद्र दलाल और उनके मित्र श्रीभगवानदास कोटक (जो पूज्यश्री के लोनावला के यजमान थे) हरमुखभाई के वहाँ भोजन के लिए आनेवाले थे, किन्तु भोजन का समय हो जाने पर भी वे आये नहीं, तब पूज्यश्री ने और सब मेहमानों ने अपना आसन लिया । पूज्यश्री ने नियम अनुसार प्रार्थना करने के लिए दो छोटे किशोरों को पूछा कि 'भाई, अब हम 'ॐ' बोलें ?' उन्होंने हाँ कही । इससे सब ने 'ॐ सहनाववतु' की प्रार्थना कर के भोजन शुरू किया । पूज्यश्री ने भोजन करते-करते किशोरों से पूछा कि 'क्या चाहिए ? भोजन अच्छा है न ?' इत्यादि । किशोरों की एक बड़ी बहन वहाँ थी । उसे छोटे भाइओं की सँभाल रखने की पूज्यश्री ने सलाह दी । भाई चंद्रकान्त जगह के अभाव के कारण सब के साथ भोजन करने नहीं बैठे थे, यह देखकर पूज्यश्री ने उन्हें अपने बिलकुल पास एक छोटी कुर्सी रखवाकर भोजन के लिए बिठाया । इस प्रकार आपश्री छोटेबड़े हरएक की हृदयपूर्वक सँभाल रखते थे ।

अग्नि वह प्रत्यक्ष शक्ति

दिनांक १२-५-१९६९, सोमवार को चंद्रकान्त के नये ब्लोक में पूज्यश्री के हाथ से यज्ञ होनेवाला होने से बहुत स्वजन भाईबहन आये थे । चंद्रकान्त के सभी बड़े भाई-बहन, मामा आदि कुटुम्बीजन, मित्रों और अन्य ।

पूज्यश्री ने शुरूआत करते हुए कहा, 'अग्नि वह प्रत्यक्ष शक्ति है । जैसे इस अग्नि में घी, जौ इत्यादि की आहुति देकर वातावरण शुद्ध करते हैं, उसी प्रकार हमारे शरीर की अग्नि को हमारे पँच प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, और अहम् आदि कामक्रोधादिक को भगवानरूपी वेदी में आहुति देकर धुंधलाते अग्नि को प्रज्वलित करना है और चित्त को शुद्ध करना है । हमारे अंदर की अग्नि जब शुद्ध होकर प्रज्वलित होगी, तब कामक्रोधादि नष्ट होंगे और ईश्वर की झाँकी होगी ।' बाद में उन्होंने अग्नि प्रगट करने के लिए स्वरचित श्लोक गवाया :

अग्नि प्रगट करें भाव से, अग्नि अंतर की गहराई में
हृदय में सुलगाने के लिए, प्रार्थना करें हे प्रभु ! तुझे ।

उसके बाद जौ की आहुति १०९ बार दी गई । उसके बाद श्रीफल की आहुति देने में आई । अंत में गृहप्रवेश की प्रार्थना और 'जय जगदीश हरे' की आरती कराने में आई ।

अंत में सब को प्रसाद बाँटा गया । पूज्यश्री को शाल, श्रीफल, फूलहार और दक्षिणा अर्पण करने में आये । आरती में रखी गई रकम और चंद्रकान्तभाई व उनकी पत्नी को बुजुर्गों द्वारा चरणस्पर्श करने पर जो भेंट मिली वह रकम (रुपये १२५+५८४) भी पूज्यश्री को समर्पित करने में आई ।

कहा है उतना करोगे तो भी काफी है

एक्साईज विभाग के एक पारसी ऑफिसर श्री केला-वाला उनके कुटुंब के साथ पूज्यश्री के दर्शन को आये थे । उन्होंने पूज्यश्री को शरीर के स्वास्थ्य के बारे में पूछा, तब श्रीमोटा ने स्वास्थ्य के समाचार नहीं पूछने का कहा, और पत्र लिखने को भी मना करते हुए खास जोरपूर्वक कहा कि 'मुझे राजी करना हो तो मैंने कहा है, उतना (नामस्मरण इत्यादि) करोगे तो भी बस है ।'

अपरिचित को उच्छिष्ट चाय

बारहवीं तारीख को बाहर के मुलाकातिओं के लिए दोपहर दो से चार का समय जाहिर किया गया था । इससे कई भाईबहन तो पहली बार ही आये थे । पूज्यश्री के चरणस्पर्श करने एक वृद्ध सज्जन को आगे आना था, किन्तु बीच में कुछ बहनें बैठी थी, इससे वे पीछे ही बैठ गये । दरमियान पाँच-छ कप चाय के आये । पूज्यश्री को बिना चीनी की फीकी चाय मिली, जो उन्होंने थोड़ी पी

और फिर पीछे बैठे हुए भाई को बची हुई चाय का कप भेजते हुए पूछा, ‘भाई, यह चाय बिना चीनी की है तो आप पीना पसंद करेंगे ?’ ‘हाँ जी,’ कहकर उन्होंने पूज्यश्री द्वारा दी गई चाय पी ली । पूज्यश्री ने उनको पूछा कि ‘भाई, चाय अच्छी लगी ?’ ‘हाँ जी, प्रसाद था, इसलिए हर्ज नहीं ।’ तब पूज्यश्री ने जैसे आशीर्वाद देते हो वैसे हाथ का पंजा ऊँचा करते कहा, ‘तो तो अच्छा भाई ।’

पूज्यश्री ने बिलकुल अपरिचित व्यक्ति को अपनी उच्छिष्ट चाय दी वह आश्चर्य की बात नहीं है ? उसके पहले दिन भी आपश्री ने उनका उच्छिष्ट दूध एक स्वजन को पीने के लिए दिया था, वह भी याद आया । **‘अनुभवी का कोई भी कर्म बिना हेतु का नहीं होता है,’ उतना ही कह सकते हैं ।**

‘शक्ति अनुसार देना’

इतने में आर. आर. सेठ की कंपनी के व्यवस्थापक धीरुभाई मोदी, उनकी माताजी और पत्नी को लेकर आये । वे पूज्यश्री के पुस्तकों की बिक्री भी करते हैं और प्याऊ के लिए दान की रकम भी इकट्ठी करते हैं, इससे उस निमित्त से एकत्रित हुए रुपये ९००/- की रकम उन्होंने पूज्यश्री को दी । तब श्रीमोटा ने कहा कि ‘भाई, आप हमारा ऐसा काम करते हो, इससे आनंद होता है । बहुत अच्छा काम करते हो ।’ दरमियान कोई भाई थोड़े रुपये

और एक आम उनके (पूज्यश्री के) आगे रख गये थे, उसमें से आपश्री ने वह आम दो हाथ से लेकर अपने मस्तिष्क पर लगाई, तब आँखे बंद की और फिर मस्तिष्क झुकाकर धीरुभाई को आम दिया । ऐसा दृश्य कभी ही देखने को मिलता था । धीरुभाई ने श्रीमोटा को अपने वहाँ प्रसाद लेने आने का आमंत्रण दिया । श्रीमोटा ने वह स्वीकार करते हुए कहा, 'मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ फी-दक्षिणा लेता हूँ ।' धीरुभाईने कहा, 'शक्ति अनुसार दूँगा' तब श्रीमोटा ने कहा, 'हाँ, शक्ति अनुसार देना ।'

कृपा तो बरसती ही रहती है

'गुरुमहाराज की कृपा' के संबंध में प्रश्न होने पर पूज्यश्री ने कहा, 'कृपा तो बरसती ही रहती है, किन्तु कोई उसे लेनेवाला है कहाँ ?' सूर्य की गरमी जगह-जगह पड़ती रहती है - मकान पर, पत्थर पर, मिट्टी पर, घास पर, सब पर । यह बात सच है न ?

'हाँ, जी ।'

'फिर भी उस गरमी का असर प्रत्येक पर एकसमान नहीं होता है ।'

श्रीदयानंद सरस्वती के बारे में

'शक्ति अनुसार' दक्षिणा देने की धीरुभाई की बात पर से पूज्यश्री ने श्रीदयानंद सरस्वती के बारे में बोलते हुए कहा, 'दयानंद सरस्वती को उनके सद्‌गुरु श्रीविद्यानंदजी

खूब मारते थे । जब उनका वेद इत्यादि का अभ्यास पूरा हो गया, तब उनके गुरुमहाराज ने दक्षिणा माँगी । दयानंदजी ने कहा,' 'क्या दूँ ? मेरे पास कुछ नहीं है !'

तब गुरुमहाराज बोले, 'जा, जगह-जगह घूमकर वेद का प्रचार करना । वह मेरी दक्षिणा ।' और श्रीदयानंदजी ने आज्ञा का पालन किया ।

भक्त का क़र्ज़

अपना उदाहरण देते हुए पूज्यश्री ने कहा, 'आश्रम की स्थापना करने के लिए मुझे एक लाख रुपये मिले थे, किन्तु वह लेकर उसके बदले में मैं क्या दूँगा ?' ऐसे विचार से वह पैसे वापस कर दिये थे । समय बीतने पर गुरुमहाराज ने एक बार पुकार कर कहा कि 'जाओ, तुम आश्रम बाँधो । तुझे देनेवाले का क़र्ज़ तुम्हारे सिर पर नहीं रहने दूँगा ।' इससे मैंने आश्रम बाँधा (कुंभकोणम् में) । 'संतमहात्मा पूर्वजन्म में किसीका लिया हुआ इस जन्म में चूका देते हैं । जिसकी उसको (लेनेवाले को) खबर भी नहीं होती है । श्रीमद् राजचंद्र ने उनका पीछले जन्म का दो लाख रुपये जितना क़र्ज़, इस जन्म में कमाकर चूका दिया था ।'

कंजूस व्यक्ति का विकास

श्रीरावजीभाई पटेल ने पूछा, 'यदि कोई धनवान

व्यक्ति सिर्फ दो ही रुपये देवे, तो क्या उसका अध:पतन होगा ?'

श्रीमोटा ने कहा कि 'कंजूस तो कंजूस ही रहेगा । उसके जीवन का विकास नहीं होगा ।'

प्रश्न : 'प्रभु की यानी कि गुरु की कृपा के बिना 'उस' (इश्वर) की ओर मुँह नहीं फिरता है, यह तो सही बात है न ?'

श्रीमोटा : सब पर ईश्वर की कृपा बरसती रहती है, किन्तु उसे ग्रहण करनेवाले कहाँ होते हैं ?

अशांति का कारण

एक प्रतिष्ठित घर के बहन ने पूछा, '**मोटा,** आत्मा को बहुत अशांति होती है और ऐसा बारबार होता है, तो क्या करना चाहिए ?'

श्रीमोटा : आत्मा को अशांति नहीं होती है । अशांति तो हमारे दिल को होती है । ऐसा होने का कारण हमें स्वयं खोज लेना चाहिए और उस कारण को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए । **अपनी नापसंदगी और आग्रहों के कारण हमें अशांति होती है । हमारा जो बात-बात में आग्रह रखने का स्वभाव होता है, वह बदलना चाहिए ।**

कुत्ते को अंतःप्रेरणा

मैंने पूज्यश्री को कहा कि 'एक साधु जैसा व्यक्ति अपने पालतु एक सुंदर सफेद कुत्ते को लोगों के झुंड़ में घूमाता है और अपने पूछे हुए प्रश्नों के जवाब खड़े हुए मनुष्यों में से जिसे लागू पड़ते हो वैसे मनुष्य को वह कुत्ता खोज कर दिखाता है । कुछ दिन पहले गोपाल ऐसे एक झुंड में चौपाटी पर खड़ा था, तब कुत्ते के मालिक ने कुत्ते से पूछा, 'इन लोग में कौन जीव परदेश यात्रा कर के सफल होकर वापस आनेवाला है ? ऐसे जीव को बताव, भैरव !' (भैरव कुत्ते का नाम) और भैरव गोपाल के पास आकर खड़ा रहा और मुँह ऊँचा कर के दिखाने लगा ! तो कुत्ते में ऐसी शक्ति★ होगी ?'

श्रीमोटा ने कहा, 'इन्ट्युइशन' अर्थात् अंतःप्रेरणा से वह वैसा कर सकता है ।

उस दिन शाम को पूज्यश्री सुरत गये । अब आपश्री ट्रेन में दरवाजे के पास भक्तों के भाव ग्रहण करने नहीं आते हैं । किन्तु श्रीनंदुभाई आकर खड़े रहते हैं ।

■

★ हमारा पुत्र गोपाल दिनांक ६-६-१९६९ के दिन अमेरिका आगे अभ्यास करने गया था । इतना सच है, किन्तु वह आज तक हमेशा के लिए वापस नहीं आया है, वह नोट करना चाहिए । नौकरी में से निवृत्त होगा, तब वापस आने की आशा ।

॥ हरिःॐ ॥

(३८)

आपको मिलनेवाले काम प्रभु के समझो, बिलकुल कचवाट के बिना, वह बहुत प्रेमपूर्वक करो । प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ़ शुभ संकेत रहा हुआ है ।

('जीवनपराग' से) – **मोटा**

पूज्यश्री का 'रक्षा दिन'

आज तक पूज्यश्री के तीन ही उत्सव मनाये जाते थे : दीक्षादिन – वसंतपंचमी के दिन, नया अवतार दिन– रामनवमी के दिन, एवम् जन्मदिन उत्सव भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन । दिनांक १–६–१९६९ के दिन बारडोली के पास वणेसा गाँव (जि. सुरत, गुजरात) में श्रीठाकोरभाई पटेल ने 'रक्षा दिन' मनाया । (श्रीमोटा मिरगी की बीमारी से ऊबकर नर्मदाजी में शरीर का अंत लाने के लिए कूद पड़े थे, किन्तु दैवी रीति से बच गये थे उस निमित्त से★)

'...तब आपकी कसौटी ।'

यह प्रसंग एकदम अंदर के दूर के गाँव में आयोजित हुआ था, इससे भक्तों की उपस्थिति थोड़ी कम थी ।

हमने पूज्यश्री के दो सुंदर फोटो खरीदे । एक फोटो

★ इस घटना के संबंध में विस्तृत माहिती के लिए देखिये श्रीमोटा कृत 'नर्मदापदे' ।

पर पूज्यश्री ने हस्ताक्षर करते हुए लिखा, 'मेरे सिर पर विष्टा का टोकरा उंडेला गया हो, तब आप सब की सच्ची कसौटी होगी ।' बहुत ही गूढ़ार्थवाला वाक्य ।

मथुरीबहन खरे के भजन के बाद उन्होंने थोड़ा प्रवचन किया, जिसमें कहा कि 'आप सब मिले हो तो मिलते रहना । सतत नामस्मरण करते रहना और आप आपका जीवन बरबाद मत करना ।'

उस समय हुई प्रश्नोत्तरी के अंश :

मौनमंदिरों से लाभ

प्रश्न : मोटा, मौनमंदिर में बैठने से क्या लाभ होगा ?

श्रीमोटा : मौनएकांत का समय मेरे मन उस-उस जीव के साथ (इस जीव को) जुड़े हुए रहने की क्रिया है । मौन में बैठनेवाले श्रेयार्थी के साथ मेरा संबंध हो जाता है और इससे उसे अंतर्मुख होने की शक्ति मिलती है ।

प्रश्न : इस योजना का विचार किस प्रकार मिला ?

श्रीमोटा : स्वानुभव से । **साधना के लिए मौन, एकांत, अभय, नम्रता, भजन, कीर्तन, स्मरण और आत्म-निवेदन यह आठ जरूरी अंग है ।** उन सब को विकसित करने के लिए गुरुमहाराज के आदेश से यह मौनमंदिर का विचार आया । संसार में रहनेवाले लोग ऐसे काल में

जंगल में जाकर साधना नहीं कर सकेंगे। इससे यह योजना गुरुमहाराज की प्रेरणा से हुई है।

प्रश्न : मौनमंदिर में पूरा समय जप-ध्यान ना हो सके और ऊब जाय तब क्या करना ?

श्रीमोटा : आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ना, भजन गाना।

प्रश्न : मौनमंदिर का लाभ लेने से व्यक्ति में एकदम बदलाव आ सकेगा क्या ?

श्रीमोटा : नहीं, एकाएक वह जीव का शिव नहीं हो जायेगा। किन्तु इस साधन का नियमित आश्रय लेने से उस जीव के चित्त पर चेतन के संस्कार प्रबलरूप से पड़ेंगे और वह संस्कार कभी भी एक दिन उदय वर्तमान हुए बिना नहीं रहेंगे।

■

॥ हरिःॐ ॥

(३९)

न पहचाना जाय कभी जो मन इंद्रियों से,
जिसे न प्रपात जल का डुबा सकता;
सोखा नहीं जा सकता वायु से थोड़ा जो कभी,
ऐसे प्रभु ! हृदय से तुमको नमन करता हूँ मैं।

('तुज चरणे' पुस्तक से) – **मोटा**

'...वह नर–मानव'

श्रीमोटा दिनांक १२–७–१९६९ के दिन मुंबई पधारे और श्रीनटवरलाल चिनाई के वहाँ जाकर फिर शाम को 'सहकारनिवास' में आये और चंद्रकान्तभाई के वहाँ रुके । उसके बाद देर शाम को हमारे वहाँ पधारे । पुरषोत्तम मास होने से आपश्री को तुलसीपत्र की माला अर्पण की । वह देखकर आपश्री ने डाहीबहन को कहा कि 'इस तुलसी की चाय आनेवाले कल को करना ।' उनकी पूजा–आरती इत्यादि करने के बाद जब गोपाल की ओर से रुपये २०३/– की भेंट रखी, तब उन्होंने पूछा, 'गोपाल ने भेंट देने का कहा था ?' 'हाँ, जी ।'

उसके बाद हमने गोपाल के लिए 'एरोग्राम' लेटर पर दो शब्द लिखने के लिए पूज्यश्री को विनती की, तब वे सोये हुए थे, फिर भी करवट बदलकर उन्होंने निम्न लिखित वाक्य लिखा :

हरिःॐ

चाहा हुआ काम जो पूर्ण करे वह नर–मानव

दिनांक १२–७–१९६९ –मोटा

बोधदायी भाव

पूज्यश्री की एक खासियत नोट करने जैसी है । किसीके भी घर पर आपश्री जाते, तब वे घर में रखे हुए देवदेविओं के चित्र के पास जाकर नमस्कार करे । उस

प्रकार हमारे वहाँ भी उन्होंने नमस्कार किये । और जाने से पहले हमारे देवमंदिर के पास बैठकर हाथ जोड़े । हमने उनको साष्टांग दंडवत् नमस्कार किये । उसके बाद आपश्री 'वेलार्ड व्यु' में चंदाभाई के घर पर सोने के लिए गये । श्रीनंदुभाई हिसाब करने बैठे । प्रतिदिन की दान की आय का हिसाब मिलाकर वे लिख लेते थे । चाहे जितनी देर हो जाय फिर भी । कई बार मुंबई में उन्हें रात के बारह बजे तक हिसाब मिलाते देखा है । उनके साथ पत्रव्यवहार की सामग्री इतनी संपूर्ण रहती कि जैसे 'मोबाइल-पोस्ट ओफिस ।'

'चाहे जिसकी भक्ति करे, उसमें किसीको क्या !'

दिनांक १३-७-१९६९, रविवार, पूज्यश्री दैनिक समाचारपत्र देख रहे थे । गुजरात हाईकोर्ट के जस्टीस भगवतीसाहब श्रीसत्यसाँईबाबा के भक्त होने से उनके वहाँ 'बाबा' पधारे थे और रहे थे, तब उस समय के मुख्य मंत्री श्रीहितेन्द्र देसाई और उनके मंत्रीमंडल के सदस्य एवम् न्यायाधीश इत्यादि बाबा के दर्शन के लिए गये थे, उस बारे में समाचारपत्रों में उसकी आलोचना हुई थी । इस संबंध में बात निकलने पर पूज्यश्री ने कहा, 'चाहे जितना बड़ा पद पर मनुष्य हो, वह किसीकी भी भक्ति करता हो, उसमें दूसरे को क्या ? क्या उन लोगों को हृदय जैसा

कुछ नहीं होता है ?' भगवतीसाहब ने आलोचना के जबाव में लिखा था कि 'ऐसी आलोचना की मैं बिलकुल परवाह नहीं करता हूँ । यों श्रीमोटा ने श्रीभगवतीसाहब के अभिगम को टेका देते श्रीकाँटावालासाहब और श्रीमती पूर्णिमाबहन पकवासा इत्यादि राज़ी हुए थे ।'

सहन करे उसे प्रभु प्रेम करे

शाम को श्रीमोटा भाईलालभाई पटेल के वहाँ विलेपार्ले भोजन के लिए गये, तब वहाँ श्रीमती सरोजबहन काँटावाला ने भजन गाये । फिर कई बहनों ने तरह-तरह के प्रश्न पूछे । उसमें से मुख्य-मुख्य निम्न अनुसार हैं :

प्रश्न : बहनों को अभी भी सब दबाते हैं तो क्या करना ?

श्रीमोटा जवाब देवे उसके पहले पुरुषों में से एक भाई बोले कि 'बहन अब दबती नहीं हैं ।

तब एक रोबदार दिखनेवाली बहन ने कहा, 'गाँव में देखिए, बहनों की क्या हालत है ? अरे ! शहरों में कई बहनें जलकर मरती हैं या उन्हें जलाया जाता है ।'

पूज्यश्री ने उस बहन की बात का समर्थन किया, फिर सहन करने पर जोर देते हुए आपश्री ने बताया कि 'जो सहन करते हैं, उसको प्रभु प्रेम देता है ।'

भोजन के बाद श्रीमोटा रात आठ बजे 'वेलार्ड व्यु' में आ गये ।

सोमवती अमावास्या के दिन

दिनांक १४-७-१९६९, सोमवती अमावास्या पुरुषोत्तम मास का अंतिम दिन था । पूज्यश्री ने कहा, 'आज बहुत पवित्र दिन है । मेरे यहाँ (चरण दिखाकर) थोड़ा-थोड़ा रखोगे तो बहुत पुण्य मिलेगा । लोग आज नदी पर नाहने जायेंगे, मंदिर जायेंगे, महादेव की पूजा करे...' तब हमारे मन में विचार आया कि 'यहाँ जीवंत देव-महादेव बिराजमान है, तो उनकी पूजा क्यों नहीं करना ?'

पूज्यश्री ने दाढी करवाने के बाद हाथ-मुँह धोये और लुंगी पहनकर बैठे । इससे डाहीबहन, नर्मदाबहन काँटावाला, योगिनीबहन मेहता आदि ने एक के बाद एक पूज्यश्री की पूजा की और पाँच-पाँच रुपये दक्षिणा में रखे, व 'हरिःॐ' की धुन बोलते-बोलते उनकी प्रदक्षिणा की । उस समय आपश्री आँखें बंद कर के दो हाथ जोड़कर बैठे थे । उस वक्त का उनका दर्शन अति दिव्य था । उपस्थित रहे हुए स्वजन सात्त्विक आनंद का अनुभव कर रहे थे ।

'वह तुम्हारा धर्म'

मुंबई के समाचारपत्र और सामयिकों में पूज्यश्री और आपश्री के आश्रमों के बारे में उनकी इजाजत से हम से जो थोड़ा बहुत लिखा जाता था, उसके संदर्भ में उन्होंने हमें सूचन दिया कि 'ऐसा लिखना आपने शुरू किया है, इससे

वह आपका धर्म माना जायेगा, इससे वह धर्म आपको निभाना है । यह आपका प्राप्त कर्म और यह आपकी सेवा भी है ।'

धीरुभाई मोदी के वहाँ

शाम को आपश्री थोड़े भक्तों के साथ दो कार में सांताक्रुझ धीरुभाई मोदी के वहाँ गये । धीरुभाई ने बहुत सुंदर प्रकार से पुष्पहार इत्यादि से पूज्यश्री का स्वागत किया । गृहप्रवेश करते वक्त उनके चरणकमल कुमकुमवाले पानी में भीगोकर एक सफेद साफ कपड़े पर लिये, फिर उन्हें गादी पर आसन दिया । धीरुभाई के गुरुमहाराज भी पधारे थे । उनकी पहचान श्रीमोटा को दी गई ।

पूरा कमरा भाईबहनों से ठसाठस भर गया था । इस मंगलप्रसंग पर विवाहप्रसंग से भी ज्यादा उत्साह-उमंग से बहनों ने सुंदर वस्त्र और अलंकार पहने थे । धीरुभाई की मातुश्री ने भजन गवाये और अन्य बहनों ने सुंदर रीति से समूह स्वर में उन भजनों को गाया । उसके बाद सत्संग हुआ ।

साकार या निराकार भक्ति के बारे में

प्रश्न : साकार से निराकार भक्ति ज्यादा योग्य नहीं है ? मुसलमान और क्रिश्चन निराकार को भजते हैं न ?

श्रीमोटा : हम हमारे माँबाप के चित्र रखते हैं न ?

उसके द्वारा उन्हें प्रत्यक्ष प्रकट करने का हेतु होता है । एक आधार के रूप में, अवलंबन के रूप में साकार की जरूर है । मुसलमान काबा में पत्थर को पूजते हैं और उसे अति पवित्र मानकर उस पर फूल चढ़ाते हैं । क्रिश्चनों क्रोस को यानी कि जिसस को वंदन करते हैं । वह सब साकार ही है, इससे साकार को भजने में कुछ गलत नहीं है । साकार में से निराकार में जा सकते हैं । निराकार की भक्ति, साधना करना मुश्किल है ।'

फिर सब प्रसाद लेकर बिदा हुए ।

'अरे ! अरे ! ऐसा नहीं करना ।'

सांताक्रुझ से रात को 'वेलार्ड व्यु' में चंदाभाई के घर आकर श्रीमोटा पलंग पर सो गये । उनके पास योगिनीबहन खड़े थे । श्रीमोटा ने उनको पूछा, 'उदय को (उनका बड़ा बेटा) आप मारते हो क्या ?' शरमाकर उन्होंने 'हाँ' कहा । तब दो हाथ जोड़कर पूज्यश्री बोले, 'अरे ! अरे ! ऐसा नहीं करना !' फिर दूसरे बेटे पिंकी को पूछा कि 'उदय तुझे मारता है ?' उसने 'नहीं' कहा । योगिनीबहन बोले, 'शायद वह मारे भी सही ।' इससे पूज्यश्री ने उदय के सिर पर हाथ रखकर ऐसा नहीं करने का कहा । दोनों लड़कों को पूज्यश्री ने बहुत प्रेम किया । एक बार उदय को देखकर उन्होंने कहा था कि 'यह (उदय) हमारी जाति का है ।'

दिनांक १५-७ को जल्दी सुबह आपश्री हरमुखभाई के वहाँ पधारे और १६ वीं की दोपहर तक रुके । दोपहर को मद्रास जाने के लिए निकले ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(४०)

(शिखरिणी-मंदाक्रांता)

जिससे कई जगत पर के सर्व सामान्य ऐसे,
जिन्होंने निज जीवन में कुछ सामर्थ्य पाया;
ऐसी शक्ति गूढ़, सकल को खेला ही जहाँ,
उस शक्ति के सभी खिलौने, हम तो बेचारे ।

('जीवनपगले' पुस्तक से) - **मोटा**

दक्षिण के प्रवास से मुंबई में

श्रीमोटा दिनांक १६-८-१९६९ के दिन कुंभकोणम्, मद्रास, त्रिचि, पूणे इत्यादि स्थानों पर जाकर मुंबई पधारे । उनके स्वागत के लिए कुछ भक्त वी. टी. स्टेशन पर उपस्थित थे । श्रीमोटा के पैर में चप्पल नहीं थे । वह देखकर हम से उस बारे में पूछा गया । इससे आपश्री ने मुस्कुराहट के साथ कहा, 'तुम दिलवाव न ।' इससे मैंने नीचे झुककर कागज पर आपश्री के पैर का नाप लिया, फिर वे सेठ नटवरलाल चिनाई के जिनको बीमार होने के कारण हरकिसन होस्पिटल में दाखिल किये थे, उन्हें देखने

गये । मैंने जे. जे. एन्ड सन्स की दूकान से रबर की चप्पल खरीदी, किन्तु पूज्यश्री को वह अनुकूल नहीं आये, इससे होस्पिटल से निकलकर हम सब जे. जे. एन्ड सन्स की दुकान पर गये, जहाँ श्रीमोटा ने चप्पल और मोजड़ी भी ली । इस दुकानवाले पूज्यश्री के प्रशंसक होने से उन्होंने चप्पल तथा मोजड़ी के पैसे नहीं लिए ।

आलसी दाता

वहाँ से सब मरीन ड्राईव पर श्रीभगवानदास कोटक के वहाँ गये, क्योंकि वे बीमार थे । वहाँ चाय पीकर श्री नंदुभाई और मैं एक व्यापारी - एम. डी. मेहता के वहाँ फोर्ट में गये । उन्होंने तीन-चार महीने पहले पूज्यश्री को पाँच हजार का दान देने की बात की थी, किन्तु फिर उनकी ओर से कोई जवाब नहीं था । उनकी ओफिस पर जाकर श्रीनंदुभाई ने दान के वचन की याद दिलाई कि तुरंत ही सेठ ने पाँच हजार का चेक लिखकर दिया । आश्चर्य के साथ आनंद हुआ, क्योंकि वे पत्र का जवाब नहीं देते थे या टेलिफोन पर मिलने के लिए समय नहीं देते थे । जब प्रत्यक्ष मिलने गये, तब तुरंत ही चेक दे दिया ।

केनेडियन युवान का जपयज्ञ

रोबिन आर्मस्ट्राँग नाम का केनेडा का युवान, रांदेर आश्रम पर लगभग तीन महीना और कुंभकोणम् आश्रम पर

बारह महीने से कुछ ज्यादा समय (३८८ दिन) मौन में बैठा था, और 'हरि:ॐ' का जप किया था । उसके बारे में पूज्यश्री ने कहा, 'वह ३८८ दिन तक अंदर रहा था, मानो कि हरि:ॐ मय हो गया । बाद में उसमें पागलपन के चिह्न दिखाई दिये थे और उसका उसके मन पर काबू नहीं रहा था । इससे वह अपने कपड़े निकाल डालता, कमरे की वस्तुएँ फेंक देता था । बेहोश रहता ।'

प्रश्न : मोटा, उसका क्या कारण ?

श्रीमोटा : जहाँ तक आंतरशुद्धि नहीं होगी, वहाँ तक साधना का फल नहीं मिलेगा । उसे कुछ-कुछ समय के फासले से मौन में बैठने की सलाह दी है ।

वह उसकी धुन का कारण

प्रश्न : बारह महीने तक मौन में बैठे रहना वह कोई मामूली बात नहीं कही जा सकती है न ?

श्रीमोटा : हाँ, किन्तु वह उसकी धुन का कारण था । बाद में पता लगा कि उसके माँबाप को छोड़कर कामधंधे की परवाह किये बिना, भाईसाहब भटकने निकल पड़े थे । वह हिप्पी जैसा था, इससे शायद उसे अंदर बंद रहना पसंद होगा । उसने हमारे कोई शास्त्र नहीं पढ़े हैं । सिर्फ 'हरि:ॐ' का रटन करता था, जप करता था, उसमें से उसके अंतर की समझ खूल गई होनी चाहिए । किन्तु

चित्तशुद्धि नहीं हुई होने से उससे आगे बढ़ना आसान नहीं है★ ।'

यात्रा पर जाने वाले को सलाह

१९६९ के सितम्बर में सारसा (आणंद) में पूज्यश्री के जन्मदिन का उत्सव समारंभ था, किन्तु गुजरात में हुए कौमी हुल्लड़ों के लिए पूज्यश्री ने वह उत्सव समारंभ रद्द करवाया था । इससे हमने श्रीनाथजी के दर्शन करने जाने का कार्यक्रम बनाया । श्रीनाथजी जाने से पहले अहमदाबाद पूज्यश्री के दर्शन करने के लिए हम रुके । आपश्री तब श्रीनंदुभाई के बड़े भाई वाडीभाई के वहाँ थे । इससे हम सब वहाँ गये । योगिनीबहन ने दिये हुए रुपये ५००/- और 'जीवनपाथेय' पुस्तक की बिक्री के रुपये १२५/- हमने पूज्यश्री को दिये । एवम् हम श्रीनाथजी के दर्शन को जा रहे हैं, ऐसा कहा, तब उन्होंने हमें सलाह दी कि 'यात्रा पर जावे तब कम से कम वापस आने का हो, वहाँ तक सांसारिक वातें करने की बिलकुल छोड़ देना चाहिए, किन्तु आजकल तो यात्रा के नाम पर घूमने जाते हैं ।'

और फिर हम पूज्यश्री के चरणस्पर्श करते बिदा हुए ।

■

★ रोबिन आर्मस्ट्रोंग फिर अपने देश गया और वहाँ स्थिर हुआ व वहाँ कामधंधे में लग गया था । ऐसा पूज्यश्री के उपर लिखे गये उसके पत्रों में से जानने को मिलता है ।

॥ हरि:ॐ ॥

(४१)

चरणरस भक्ति-जल-छलक, हृदय छलक पर छलक
तुझे हरि मार मार के, प्रभु नहलाने का है ।

('जीवन-अनुभव-गीत' पुस्तक से) - **मोटा**

भगतभाई के विवाह में

आर. आर. सेठ एन्ड कंपनी के मालिक श्रीभगतभाई के विवाह प्रसंग पर श्रीमोटा दिनांक २६-१२-१९६९ के दिन मुंबई पधारे । महालक्ष्मी माता के मंदिर के पास टी. जी. पेवेलियन में विवाहसमारंभ रखा गया था । ११ बजे विवाह हुए, तब पूज्यश्री उपस्थित रहे थे । विवाह के निमित्त स्वागतसमारंभ शाम को छ बजे था । पूज्यश्री उनके स्वजनों के साथ छ बजे के पहले वहाँ पहुँच गये । उसके थोड़ी मिनट बाद नवदंपती आये और पूज्यश्री के चरणस्पर्श किये, तब पूज्यश्री ने आशीर्वाद दिये । भगतभाई ने पूज्यश्री को रुपये एक हजार की भेंट दी ।

शरीर को महत्त्व नहीं

आर. आर. सेठ एन्ड कंपनी के व्यवस्थापक धीरुभाई के प्रश्न के उत्तर में श्रीमोटा बोले, 'शरीर सोखने लगा है । वह कोई अनंतकाल तक टिक सकनेवाला है क्या ? शरीर को महत्त्व नहीं देना चाहिए । **शरीर वह गुरु नहीं है ।**

चेतना के संबंध की भावना वह गुरु है और हमारा संबंध कुछ यहीं पर ही पूरा हो जानेवाला नहीं है । वह तो चलता ही रहनेवाला है ।'

उसके बाद उसी रात को आपश्री अहमदाबाद गये ।

श्रीमोटा का जीवनचरित्र

दिनांक १४-२-१९७० के दिन धीरुभाई मोदी उनके एक मित्र और मैं सुरत आश्रम पर गये । पूज्यश्री ने सब से पहले धीरुभाई को उनकी मातुश्री, जो मौनरूम में बैठे थे, उन्हें बाहर से 'हरिःॐ' कहने का सूचन किया ।

हम सब भोजन कर के आये । इससे श्रीमोटा ने हमें श्रीनंदुभाई के साथ पहले तो (पूज्यश्री के) 'जीवनचरित्र' का पुस्तक छापने की बाबत में बात कर लेने का कहा । इससे श्रीनंदुभाई के साथ पुस्तक की बिक्री के ऊपर रोयल्टी, संपादक मंडल, भेंट की जानेवाली कोपियाँ इत्यादि के बारे में चर्चा की । आखिर में तय हुआ कि 'आर. आर. सेठ एन्ड कंपनी कुल १२५० पुस्तक की छापेंगे । १५ प्रतिशत रोयल्टी ५० प्रत भेंट के रूप में दी जाय और पुस्तक के सभी अधिकार आश्रम के रहेंगे ।'

संपादक मंडल में धीरुभाई ने चार जनों के नाम का सूचन किया; श्रीनंदुभाई, श्रीईश्वर पेटलीकर, श्रीरमेश भट्ट और श्रीरतिलाल मेहता । श्रीनंदुभाई ने उनकी असमर्थता दिखाई इससे फिर तीन व्यक्तिओं का संपादक मंडल बना ।

चरित्रलेखन की तैयारी

उसके बाद हम सब पूज्यश्री के पास गये । उनकी साधना, कर्मयोग आदि और जीवन के ब्योरे देने के लिए हमने आपश्री से विनती करने पर उन्होंने कहा कि 'मैं किस प्रकार मेरे स्वयं के बारे में लिखा सकता हूँ ? मैं कुछ नहीं कह सकूँगा ।' तब मैंने पूछा, '**मोटा**, आपकी मदद के बिना हमारे से क्या लिखा जायेगा ?' श्रीमोटा ने कहा, 'सब लिखा जायेगा ।'

आखिर मैंने उनको कहा कि, 'मैं कभी कभार टेपरेकोर्डर लेकर आऊँगा और जो कुछ पूछूँ उसका जवाब तो दोगे वह टेप करूँगा ।' पूज्यश्री ने संमति दी । हमने श्रीनंदुभाई से भी हो सके उतनी इस संबंध में मदद करने की विनती की और उन्होंने भी पूज्यश्री के जीवन के संबंध की नोट-टिप्पणी और सूचन देने की तैयारी दिखाई । उस नोट पर से अपना विस्तृत जीवनवृतांत श्रीमोटा स्वयं कहे वह टेप कर लेने का हमने तय किया । उसके बाद १० से १५ दिन के अंतर से दिलीप मणियार और मैं सुरत आश्रम पर पूज्यश्री को मिलने जाने लगे और हमारे प्रश्नों के आपश्री जो जवाब देते वह टेप कर लेते थे । इस प्रकार उनके जीवनचरित्र का बहुत बड़ा हिस्सा प्रभुकृपा से तैयार होने लगा था ।

चेतननिष्ठ का व्यवहार

परस्पर के संबंधों के आरंभ के बारे में पूज्यश्री को कुछ कहने की विनती करने पर उन्होंने कहा, 'संसारी जीवों के संबंधों के बारे में ऐसा कह सकते हैं कि लोग एकदूसरे के ऋणानुबंध से मिलते हैं । किन्तु अनुभवी-चेतननिष्ठ आत्मा के लिए वही नियम नहीं हो सकता । रास्ते पर जाते हुए बिलकुल अनजान मनुष्य का हित चेतननिष्ठ आत्मा के हाथ से एकाएक हो जाय, जिसकी उस मनुष्य को खबर भी न हो और जो मनुष्य बहुत वर्षों से ऐसे महात्मा के पास रहा हुआ हो, फिर भी उसका कुछ नहीं होता हो ।'

प्रश्न : मोटा, ऐसा क्यों होता होगा ?

श्रीमोटा : वह हमारे जैसे मनुष्यों से नहीं समझा जा सकेगा या बुद्धि से नहीं नापा जा सकेगा । ऐसे चेतननिष्ठ आत्माओं के नियम अलग-अलग होते हैं, इससे उनके व्यवहार नहीं समझे जा सकेंगे ।

गुरुमहाराज के साथ का संबंध

प्रश्न : मोटा, आपने लिखा है कि गुरुमहाराज ने स्वतः आकर आपको दीक्षा दी थी । उसका अर्थ यह कि वे आपको पहचानते थे या कोई पूर्व का आपके साथ संबंध था ऐसा ही माना जायेगा न ?

श्रीमोटा : समझने के लिए ऐसा कह सकते हैं, फिर भी ऐसे महापुरुषों का व्यवहार नहीं समझ सकेंगे । ऐसे महात्मा निरीच्छ और मुक्त होने से, उनको पूर्व का संबंध कैसे हो सकता है ? क्योंकि उन्हें प्रारब्ध तो होता नहीं है । फिर भी संसारिओं को समझने के लिए ऐसा कहना हो तो कह सकते हैं । सचमुच ऐसे लोगों का संबंध नैमित्तिक होता है ।

साँईबाबा की प्रार्थना - गझल

प्रश्न : मोटा, आप अभी साँईबाबा को उद्देशकर प्रार्थना और गझल लिख रहे हैं ?

श्रीमोटा : हाँ, चंदाभाई (चंद्रकान्त मेहता) को साँईबाबा के लिए भाव है । इससे उसके आधार को मेरे में लेकर साँईबाबा को संबोधित करता हूँ । ठीक-ठीक लिखी गई है । थोड़ी ज्यादा लिखी जायेगी । बाद में कोई हरि का लाल मिलेगा तो छापेंगे । हमें उसके (छपने की) झमेले में नहीं पड़ना है★ ।'

यह है भक्त के भाव को वज्रलेप बना देने का पूज्यश्री की उत्तम कला का एक उदाहरण ।

भक्त के खातिर 'तपश्चर्या'

शाम को लगभग पाँच बजे पूज्यश्री आश्रम के चौक

★'साँईस्तवन' नाम से वह गझलें प्रसिद्ध हुई हैं ।

में खाट पर बैठकर नगीनभाई★ नामक एक सेवक के छोटे पुत्र के हाथ की रेखाएँ देख रहे थे । तब मैं वहाँ पहुँचा, तब आपश्री बोले, 'इस नगीनभाई ने मेरी बहुत सेवा की है और बहुत समय बाद मेरे पास एक ही वस्तु माँगी थी । उसकी यह इच्छा संसारी होते हुए भी वह पूरी करने के लिए तपश्चर्या करनी पड़ी थी और प्रभुकृपा से वह फली भी है★★ ।'

प्रश्न : 'आपको तपश्चर्या ? तप करने के दिन तो कभी के पूरे हो गये, **मोटा** !'

श्रीमोटा : (सुंदर स्मित करते) नहीं भाई, तप करना पड़ता है ।

'इसकी कोई पद्धति नहीं है'

प्रश्न : 'मोटा, ऐसी बात निकली है तो एक ऐसा दूसरा प्रश्न पूछने की धृष्टता करूँ ?'

श्रीमोटा : पूछो !

प्रश्न : हमारे ही वृत्त के एक पुराने स्वजन हैं और उन्होंने भी आपकी बहुत सेवा की है, किन्तु उनके मन की

★श्री नगीनभाई गोविंदभाई पटेल, सिंगणपोर, सुरत, एल. आई. सी. में नौकरी करते थे ।

★★ इस बारे में अमुक हकीकत प्रसिद्ध नहीं करने की पूज्यश्री की आज्ञा होने से यहाँ संपूर्णरूप से नहीं लिखी गई है ।

एक ऐसी इच्छा पूरी नहीं हुई है, इससे वे कभी-कभी निराशा व्यक्त करते रहते हैं ।

श्रीमोटा : (हँसते-हँसते) बात करते हैं न ?

'हाँ जी' तब उन्होंने जवाब में मात्र मुस्करा दिये । दोपहर को ही उन्होंने चेतननिष्ठ की रीति की समझ दी कि 'इसकी कोई रीति नहीं है । हमारी बुद्धि से यह सब नहीं समझ सकेंगे ।' यही सिद्धांत सभी बाबतों में लगाना है★ ।

मित्रता करने की सलाह

इतने में धीरुभाई आ पहुँचे । इससे उन्हें श्रीमोटा कहने लगे कि 'हमारे में से कोई साधना नहीं कर सकेगा । ज्यादा से ज्यादा एक-दो घंटे कुछ हो तो हो । किन्तु उससे ज्यादा नहीं होगा । ८-१० घंटे स्मरण हो तो ही सही । इसलिए साधना की बात जाने दो, मेरे साथ मित्रता करो; वह सरल है ।'

प्रश्न : मित्रता से उसका काम आगे बढ़ेगा ?

श्रीमोटा : यद्यपि चेतन में प्रगट होने का तो नहीं हो सकेगा । ऐसा होने में तो बहुत देर लगेगी, किन्तु संस्कार पड़ेंगे और सहारा मिलेगा । प्रयोग कर के देखो ।

★ऐसी बाबतों के बारे में साँईबाबा कहते थे कि 'हम ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं' - वह याद आता है ।

धीरुभाई की इच्छा पूज्यश्री के साथ कुछ निजी बात करने की थी । इससे उनके पास के हम सब वहाँ से खिसक गये ।

मढ़ीवाले डॉक्टर की सलाह

दूसरे दिन सुबह चार बजे डाहीबहन पूज्यश्री को तेल मालिश कर रहे थे । हमने भी उसमें हिस्सा लिया । तब पूज्यश्री ने कहा, मंचेरशा मढीवाला ने कहा है कि 'हर दिन तेल मालिश करवाना, वर्ना मेरुदंड के दर्द के कारण भविष्य में पैर अकड़ जायेंगे ।' बायाँ पैर पर असर लगती है भी सही । इससे यह मालिश करवाता हूँ ।

प्रश्न : मोटा, मेरुदंड और कमर के दर्दवाले तो बैठ ही नहीं सकते हैं, नीचे भी झुक नहीं सकते हैं, किन्तु आप तो बराबर पलथी लगाकर बहुत देर तक बैठते हैं । क्या अनुकूल है ?

श्रीमोटा : बैठना अनुकूल नहीं है । दरद करता है, किन्तु सोते रहने से बड़ा फोडा हो जाता है और पीठ दरद करती है । डॉक्टर कहते हैं कि 'कोलन वोटर लगावो ।' अरे भाई ! इतना महँगा कोलन वोटर हम कहाँ से उपयोग कर सकते हैं ? पैसे किसके बाप के हैं ? 'वह' करावे वैसा करें और रहें, किन्तु अपने से पैसे का दुरुपयोग नहीं हो सकता है ।

तेल मालिश करने के बाद श्रीमोटा को कमर पर 'दुःखदबाव' लेप लगाने में आया । उसके बाद आपश्री खाट पर सो जाते हैं । भक्तों नीचे बिछायी हुई दरी पर बैठते और सत्संग होता ।

सच्चा धर्मलाभ

सुबह साढ़े पाँच बजे आपश्री और श्रीनंदुभाई, बारडोली के पास के वांकानेर गाँव जानेवाले थे । इससे स्वजन एक के बाद एक जाने लगे । मैंने उनके पैर पर सिर झुकाया और चरण चुमे । तब पूज्यश्री अत्यंत प्रेमभाव से धीरे से बोले, 'जय प्रभु ! जय मेरे प्यारे ! जय श्रीहरि !' सुनकर गद्गद हो गया । सच्चा धर्मलाभ मिला ।

उसके बाद हम तीनों ने (धीरुभाई और उनके मित्र सहित) मुंबई की ओर प्रयाण किया ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(४२)

सूक्ष्म में सूक्ष्म संपूर्ण और जो फिर भी अव्यक्त है,
फैलता है होने पर व्यक्त आधार से रोम-रोम में

– **मोटा**

श्रीझीणाकाका के लिए हृदयपूर्वक सँभाल

तय हुए अनुसार दिनांक ३-९-१९७० के दिन भाई

दिलीप मणियार और मैं आश्रम पर गये । हमें देखकर श्रीमोटा ने कहा कि 'आईये साक्षर !' कुछ औपचारिक बातें करने के बाद आपश्री ने कहा कि 'जिज्ञासा' का थोड़ा लिख लूँ, वहाँ तक में आप नहाधोकर तैयार हो जाईए और प्रसाद लेने के बाद कुछ भी पूछना हो तो पूछकर टेप कर लेना ।'

रसोईघर में भोजन करने बैठे तब आपश्री झीणाकाका को कहने लगे कि 'झीणाभाई, आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं लगता है । आप बीमार पड़ोगे तो (रसोईघर का) क्या होगा ? आश्रम बंद करना पड़ेगा । अगर ऐसा हो तो किसी लड़के को साथ में रखो और जो देना पड़े वह दो ।' श्रीझीणाकाका ने कहा कि '**मोटा**, मेरा शरीर अच्छा है★ ।'

भोजन के बाद आपश्री ने उनका 'पुरोहित' के रूप में किये गये कार्यों के बारे में टेप करवाया । उसके बाद कहा कि 'हमें सुबह साढ़े पाँच बजे डुमस जाना है तो

★ श्रीझीणाकाका (श्रीझीणाभाई मकनजी पटेल) सुरत आश्रम के निर्माण के समय श्रीमोटा की दृष्टि में आये थे और तब से उन्होंने उनको आश्रम के लिए ले लिए थे, वे आज तक ट्रस्टी के रूप में आश्रम की सेवा करते हैं । श्रीझीणाभाई निरीच्छ समर्पित जीवात्मा है ।

उससे पहले जो कुछ पूछना हो वह पूछ लेना । जितना काम हो जाय उतना अच्छा ।'

डुमस की ओर

दिनांक ४-९-१९७० शुक्रवार सुबह साढ़े पाँच बजे सेठ श्रीचूनीभाई रेशमवाला की जीप गाड़ी आई । पूज्य श्रीमोटा और श्रीनंदुभाई के साथ रमेशभाई भट्ट सहित चारपाँच जने डुमस के लिए रवाना हुए ।

रास्ते में एक भक्त श्रीछोटुभाई (बिल्डर कोन्ट्रेक्टर) के वहाँ सात-आठ मिनट रुके । शायद ही कभी देखने को मिले वैसा दृश्य वहाँ देखने को मिला । श्रीछोटुभाई पूज्य श्रीमोटा के चरणस्पर्श कर के वापस जाते समय, पीठ घूमाकर नहीं जाते हुए, चेहरा श्रीमोटा के सामने ही रखते हुए पैरों से पीछे-पीछे चलते हुए गये । हम देवमंदिर में जाते हैं, तब भी ऐसे आचार का पालन नहीं करते हैं ।

ऐसा करते सेठ चूनीभाई के बंगले पर पहुँचे । रास्ते में श्रीमोटा ने नवाब के समय की एक बात करते हुए कहा कि 'एक साधु घूमते-घूमते वहाँ आ गया और उसने नवाब के पास में शौच किया । इससे उसे जेल में डाल दिया ! किन्तु गाँव के एक मुखिया ने साधु के बारे में सच्ची बात की, इससे उसे छोड़ दिया गया था ।'

पूज्यश्री डुमस में थे, तब श्रीछोटुभाई हररोज दो बार

आते और दूध भेजते, शाकभाजी या अन्य कोई भी चीज-वस्तु चाहिए तो रसोईघर में जाकर महाराज से पूछताछ भी करते । यद्यपि सेठ चूनीभाई रेशमवाला ने चार-पाँच दिन का सामान पहले से भेज दिया था । बारिश के कारण हम सब को दो दिन ज्यादा वहाँ रुकना पड़ा । तब श्रीछोटुभाई के वहाँ से आवश्यक सामान हमें मँगाना पड़ा था ।

श्रीमोटा ने भजन गाया

पूज्यश्री के बारे में लिखा गया पुस्तक 'जीवन और कार्य' शुक्र और शनिवार ऐसे दो दिन पढ़कर सुनाया गया । और उसके बाद 'जिज्ञासा' पर उनके द्वारा लिखे गये काव्य पढ़े गये एवम् उसकी पहली आवृत्ति छपवाने के लिए यथायोग्य विभाग में उन सब को व्यवस्थित किया गया । कभी-कभी पूज्यश्री वह काव्य स्वयं गाते थे । उसका कुछ हिस्सा टेप किया गया था । श्रीमोटा उनके साधनाकाल के दरमियान स्वरचित भजन गाते थे, उसमें से एकाध भजन गाने की विनती करने पर उन्होंने निम्न लिखित भजन गाया :

हरि ! मैं क्या करूँ रे ? मुझे चैन मिले नहीं कहीं भी !

चित्त लगे ना मेरा किसी बारे में, मन में मथन भारी
क्यों धकेल दिया मुझ को प्रवाह भँवर में भारी...हरि ।
सुंदर मेल था जमा हुआ मेरे जीवन का बापु

किस ने मेरा घर बरबाद किया जो था सजा सजाया ?...हरि ।
जीवनपथ में कहाँ से आये, सूखे रेगिस्तान ?
रसकस मेरे उड़ गये कहाँ से आये ये तूफान ?...हरि ।
अस्थिर होती मेरी नाव, चढ़ा मेरा मन बवंडर में,
निवृत्ति-प्रवृत्ति के बीच में, क्यों फसाया मुझे ?...हरि ।
जैसा सूझा करता रहा, आधार तुझ पर रखकर,
अब क्यों भटकाता मुझे, आई जब मुझे आँधी ?...हरि

पूज्यश्री का रौद्र स्वरुप

पूज्यश्री के जीवनचरित्र के बारे में कितनेक लेख जो मैंने लिखे थे, उससे उनको संतोष नहीं हुआ था, इससे उन्होंने वे सब लेख फिर से बराबर सँवारकर लिखने कहा । 'चुने हुए मोती' नाम का एक प्रकरण इस पुस्तक के लिए लिखा था । उसमें से बहुत से प्रसंग 'मुंबई समाचार' दैनिक में 'गोपाल' के नाम से प्रकाशित हुए थे । इससे पूज्यश्री ने सूचन किया कि हरएक ऐसे-ऐसे प्रसंग के नीचे 'मुंबई समाचार' और प्रकाशित होने का दिनांक लिखना । उसके सामने मेरे से ऐसी दलील हो गई कि 'हम ऐसा ना लिखे तो नहीं चलेगा ? क्योंकि वे प्रसंग किसी भी प्रकार से 'मुंबई समाचार' की मालिकी के नहीं हैं । उसके संपादक ने उन प्रसंगों को प्रकाशित करने का पुरस्कार नहीं दिया है । अर्थात् बिना मूल्य के प्रकाशित हुए हैं ।'

तब पूज्यश्री ने मुख और आवाज घूमाकर उन्होंने सख्ताई से कहा कि 'ऐसा लिखने में हमारा क्या नुकसान है ? उलटा मुंबई समाचारवालों को अच्छा लगेगा ।' आपश्री के रौद्र स्वरूप को देखकर मैं तो जम गया । इस वक्त आपश्री के विविध पहलूओं का अनुभव हुआ और आपश्री ने मेरे अहम् को डपटकर मुझे पाठ पढ़ाया ।

बारिश से लबालब

शनिवार की रात एकाएक मौसम बदला और मूसलाधार बारिश गिरना शुरू हुई, जो सोमवार तक सतत होती रही । इससे सुरत और भरुच जिले में और सौराष्ट्र में भारी बाढ़ आई और सेंकडों मनुष्य और पशुओं की मौत हुई । करोडों रुपये का आर्थिक नुकसान भी हुआ ।

दिनांक ६-९-१९७० से १९-९-१९७० तक मुंबई से अहमदाबाद की ट्रेनें बारिश को कारण बंद रही थी और उसके बाद भी कई दिनों के बाद वाहनव्यवहार नियमितरूप से हुआ था । इससे पूज्यश्री और मंडली का रविवार की शाम को डुमस छोड़ने का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा और मंगलवार की सुबह ग्यारह बजे श्री हसमुखभाई रेशमवाला बड़ी लोरी लेकर आये तब सुरत जा सके ।

स्वजनों के लिए सहानुभूति

सुरत आश्रम में भी पानी भरा गये थे । पूज्यश्री ने

कहा कि 'जब-जब बाढ़ आये और आश्रम में सब मुश्किल में आ जाते थे, तब-तब मैं उनसे दूर ही था । ऐसे समय पर हम स्वजनों के साथ हों तो अच्छा ।' इस प्रकार आपश्री ने अपनी भावना दिखाई थी । फिर, लेखन कार्य के संदर्भ में कहा, 'भले बारिश हुई और रास्ते बंद हो गये, किन्तु इससे हमें ज्यादा समय साथ रहने का मिला और हमारा काम अच्छा हुआ वह 'उस' की कृपा मानना चाहिए । प्रभुकृपा से हमारा काम अच्छा होगा, चिंता नहीं है ।'

'जिसे दृष्टि हो वह देखे'

दिनांक ५-९ से ७-९ के दरमियान हुई मुसलाधार बारिश के दरमियान चमत्कारिक कही जा सके वैसी दो घटनाएँ हुई । पहली रात को दिनांक ५-९ के दिन हम जिस मकान में रहे थे, उसके सभी कमरे पानी से भरा गये थे । श्रीनंदुभाई जो बाहर ओटे पर सोये थे, वे भी आधी रात को उठकर अंदर चले गये थे, किन्तु श्रीमोटा जो बाहर चबूतरे पर मच्छरदानीवाले पलंग पर सोये थे, वह पलंग और आसपास की जगह बिलकुल गीली नहीं हुई थी । श्रीमोटा तो उठकर अंदर जाना चाहते थे, किन्तु सब की नींद में खलल न हो, इसलिए वे बाहर ही सो रहे थे, ऐसा आपश्री के कथन से समझा था ।

दिनांक ६-९-१९७०, रविवार के दिन पूरे डुमस में बिजली बंद हो गई थी । तब भी हमारे मकान में बिजली चालू थी । दोपहर को करीब दो बजे के आसपास पूज्य श्रीमोटा जिस कमरे में हमारे सामने 'जिज्ञासा' पर लिखे हुए काव्य पढ़ रहे थे, तब 'बल्ब' बंद हो गया और दूसरे ही पल चालू हो गया, किन्तु दूसरे कमरे में अंधेरा था । इस प्रकार पूज्यश्री का काम आधा पौना घंटा चला और जैसे काम पूरा हुआ कि कमरे की बिजली गई । तब हम में से बहुत ऐसा बोल उठे, 'अरे वाह !' उस समय श्रीमोटा सहज भाव से बोले कि 'जिसकी दृष्टि हो, वह देखे और इस घटना को समझे ।'

दिनांक ७-९-१९७० सोमवार के दिन डुमस में नये रहने आये हुए एक लेखक श्रीईश्वरलाल देसाई, उनकी पत्नी के साथ पूज्यश्री को मिलने आये थे, किन्तु तब आपश्री सोये हुए होने से वे वापस चले गये थे । जब उनको इस बात का पता लगा, तब आपश्री स्वयं हम सब को लेकर ईश्वरभाई से मिलने गये थे ।

शक्ति का व्यक्त होना

इन दिनों दरमियान पूज्यश्री ने एक बार मुझे खास जोर देकर पूछा था कि 'रतिभाई, **मोटा** का जीवनचरित्र प्रकाशित करने के लिए आपने आर. आर. सेठ एन्ड

कंपनी को सूचन किया था ?' ऐसा पूछने का कारण यह था कि आपश्री कभी भी अपने बारे में या आश्रम के बारे में स्वयं कुछ भी लिखकर प्रकाशित करने या कराने में नहीं मानते थे ।

मैंने कहा, 'हृदय में ऐसी इच्छा सही कि आपका जीवनचरित्र कोई प्रकाशित करे, किन्तु मैंने स्वयं उन्हें कभी ऐसा सूचन नहीं किया था ।'

श्रीमोटा : तो वैसी इच्छा उन्हें किस प्रकार जाग्रत हुई होगी ?

मैंने कहा, 'आपके संबंधित एक स्मृतिग्रंथ★ का अवलोकन 'जन्मभूमि' में प्रसिद्ध हुआ था, जो धीरुभाई ने पढ़ा होगा और उसमें से उन्हें आपका जीवनचरित्र प्रकाशित करने की प्रेरणा मिली होगी ।'

श्रीमोटा : बिना कहे यह जीवनचरित्र प्रकाशित करने कोई तैयार हो जाय, उसमें मैं ईश्वर की शक्ति का व्यक्त

★पूज्य श्रीमोटा की ७० वीं जन्मजयंती 'हीरक महोत्सव' के रूप में मनाने में आई । तब एक स्मृतिग्रंथ प्रकाशित किया गया था और उसका अवलोकन 'जन्मभूमि' में प्रकाशित हुआ था, वह धीरुभाई (आर. आर. सेठ एन्ड कंपनी के मेनेजर) ने पढ़ा था और उसके बाद उसकी कुछ कोपियाँ उन्होंने खरीदी भी थी । तब से उन्हें श्रीमोटा पर भाव जाग्रत हुआ था ।

होना समझता हूँ ।

और इस प्रकार आनंद उल्लास के वातावरण में भी बारिश से हुई बरबादी के कारण जरा गंभीर भाव में श्री हसमुखभाई रेशमवाला मोटर लोरी लेकर आये, तब हम सुरत पहुँचे ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(४३)

भाव में ज्ञान का भाग, भाव में भक्ति पूर्ण है –
जन्मता है भाव से कर्म, भाव ऐसा त्रिवेणी है ।

('भाव' पुस्तक से) – **मोटा**

ढोंगी संत

दिनांक १०–१०–१९७० के दिन मैं दिलीप मणियार के साथ सुरत आश्रम पर गया था । तब पूज्यश्री का कुछ वक्तव्य टेप कर लिया । उसके बाद आपश्री के शरीर की बीमारी के संबंध में बात हो रही थी, तब दिलीप मणियार ने कहा कि '**मोटा**, आपको कायकी बीमारियाँ आती हैं ?' आप ढोंग करते हो । उससे बोलते तो बुला गया, किन्तु श्रीमोटा ने उसे सोने के मुकुट पर 'ढोंगी संत' ऐसा कोरनी कर के भरसभा में उन्हें (श्रीमोटा को) वह पहनाने का आदेश दिया । दिलीप मणियार ने ऐसा बोलने के

लिए माफी माँग ली, फिर भी ऐसा सोने का मुकुट उसे करवाना पड़ा था । भरसभा में श्रीमोटा ने वह सिर पर पहना था और फिर वह बेच दिया था ।

भक्त के हाथ से सत्कर्म

पूज्यश्री भक्तों के हाथ से सत्कर्म करवाते थे, उसका एक उदाहरण दूँ तो उसे आत्मप्रशंसा नहीं मानने विनती है । आपश्री नडियाद जाने के लिए निकले, उसके पहले उन्होंने मेरी पत्नी कीर्तिदा को एक चिट्ठी लिखकर कहा था कि 'कुंभकोणम् में थोड़े गरीब विद्यार्थिओं को इडली खिलाने के लिए पिछले वर्ष रुपये ७०/- दिये थे । इस वक्त तुम रुपये ३५/- देना ।' बस तब से हर वर्ष ऐसा सत्कर्म आपश्री की प्रेरणा से होता रहता है ।

दूसरा उदाहरण : नडियाद में उनके एक भाभी रहते थे, जो मिल में नौकरी करते थे । श्रीमोटा कभी-कभी भाभी के वहाँ जाकर 'रोट का टुकड़ा' माँगकर खाते और उनके कल्याण के लिए प्रार्थना करते ।

उसी प्रकार एक बार हमारे वहाँ कृपा कर के उन्होंने भोजन करने के बाद जाते-जाते मधुरभाव से बोलते हुए कहा था कि 'खानेवाले का भला हो और खिलानेवाले का भी भला हो ।'

■

॥ हरिःॐ ॥

(४४)

सच्चे हृदय की नम्रता, भेड़ के जैसी नहीं होती, उसमें तो अग्नि का प्रचंड तेज और शक्ति भी रही होती है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

आरामगृह में श्रीमोटा

लगभग बारह महीने बाद पूज्यश्री दिनांक २२-७-१९७१ के दिन मुंबई पधारे, तब आपश्री के पास से जानने को मिला कि आपश्री ने तीन जनों को गझलें लिखकर भेजी हैं। (१) कु. डो. सुजाता, (२) श्रीकांतिलाल काँटावाला और (३) डॉ. कांताबहन । पूज्यश्री जिसके लिये लिखते उसके पास से दक्षिणा लेते और उस रकम का उपयोग शिक्षा के लिए होता था ।

श्रीमोटा एक-दो भक्तों को लेकर कुंभकोणम् गये और दिनांक २-८-१९७१ के दिन विमानमार्ग द्वारा मुंबई वापस आये । इस मुसाफरी की व्यवस्था 'एलेम्बिक केमिकल्स'वाले सेठ रमणभाई अमीन ने की थी ।

आपश्री मुंबई एरपोर्ट से सीधे 'मुंबई सेन्ट्रल' स्टेशन पर आये और आरामगृह में एक कोच पर आराम करने लगे । पलंगवाले कमरे में आराम करने की व्यवस्था हो

सकती थी, फिर भी उन्होंने मना किया । बिस्तर में से तकिया निकलाने का भी मना किया और उनका साफा उन्होंने सिर के नीचे रखकर तकिया बनाया । कोच छोटा था । इससे पैर सीकुड़कर सो गये । उससे पहले उपस्थित भक्तों को उन्होंने श्रीनंदुभाई के पास जाकर बैठने की सूचना दी । इस प्रकार उन्होंने तीन घंटे तक आराम किया ।

उस वक्त का वहाँ का दृश्य : आसपास बालक खेल रहे थे । चार-पाँच मुसाफिर आरामकुर्सी में लंबे होकर सोये हुए थे, तो कई बैठे-बैठे नींद के झोंके खा रहे थे । सामान अव्यवस्थित पड़ा हुआ था । पास के रेस्टोरन्ट में से तली जा रही वस्तुओं की गंध आ रही थी ।

यदि उनकी इच्छा होती तो पास में रहनेवाले उनके किसी स्वजन के फ्लेट पर आपश्री जा सकते थे, किन्तु उन्होंने पहले से किसीके वहाँ नहीं जाने का तय किया था । आपश्री कई बार कहते कि 'नर्क में भी सो जाने की तैयारी रखना चाहिए ।' शाम की ट्रेन से आपश्री सुरत गये ।

श्रीमोटा को खड़े होने में मुश्किल

दिनांक ८-८-१९७१ के दिन मैं सुरत आश्रम पर गया । उन्हें नमन करने पर उन्होंने कहा, 'फ़ुर्सत पाने पर पैर पर तेल मालिश करने के लिए आना ।'

तेल मालिश करने के लिए बैठने पर डाहीबहन (जो एक पैर पर तेल मालिश कर रहे थे) ने कहा कि '**मोटा** को कुंभकोणम् में पैर में बिलकुल ठीक नहीं था । खड़े भी नहीं हो सकते थे । पैर अकड़ गये थे । इससे खड़े होकर चल नहीं सकते थे । हसमुखभाई (श्रीनंदुभाई के मामा के बेटे) एक खास तेल लाये हैं । वह बहुत महँगा है । साठ रुपये किलो । उससे थोड़ा फायदा है ।' पूज्यश्री बोले, 'ऐसा तेल इस तरफ मिलता है या नहीं यह प्रश्न है ।'

एक बहन के तुक्के

मुंबई की एक बहन ने आठ पन्ने भरकर एक पत्र पूज्यश्री को लिखा था और ऐसी शिकायत की थी कि 'आप दूसरों के सामने हमारी निंदा क्यों करते हो ?' मैंने पूज्यश्री से कहा, 'उस बहन ने मुझे भी ऐसा जब कहा, तब बहुत आश्चर्य हुआ था और उनको मैंने कहा था कि 'आपकी बात मैं सपने में भी मानने को तैयार नहीं हूँ ।' तब पूज्यश्री ने कहा, 'वह तो उनके (उस बहन के) मन के तुक्के थे ।'

शाम का भोजन करने के बाद पूज्य श्रीमोटा ने मौन में बैठे हुए एक अमेरिकन युवान का निवेदन जोर से पढ़ने का कहा । निवेदन पूरा सुनने के बाद श्रीमोटा ने कहा कि 'वह समझा है जरूर... वह कल (रविवार को) बाहर

निकले, तब उसके साथ बातें करना । सत्संग करना ।'

इतने में एक युवान संन्यासी मौन में बैठने के लिए आये । उन्हें भोजन के लिए कहा, तब उन्होंने 'भूख नहीं है, ऐसा कहा तब श्रीमोटा ने उनको एक केला दिया ।'

पैर पड़ने का क्या अर्थ ?

'आर. आर. सेठ की कंपनी ने कितने पुस्तक बेचे ?' ऐसा आपश्री ने पूछा । मैंने बताया कि 'खास नहीं ।' वह सुनकर आपश्री कहने लगे, 'जो हमारा काम करे, वह हमारा भक्त । कोई खाली-खाली चरणस्पर्श करे उसका कोई अर्थ नहीं है । सब गलत धारणा लेकर बैठे हैं । पैर पड़ने का क्या अर्थ-यदि कोई काम न करे तो ?'

लोगों को तैयार खिचड़ी चाहिए

मुंबई में एक विधवा बहन ने पूज्यश्री के समक्ष अपनी तकलीफ बताई थी, वह याद करते हुए उन्होंने कहा, 'उनकी बेटी का विवाह नहीं हो रहा है । मैं क्या करूँ ? मेरे पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि मैं वह करा सकूँ । आजकल लोगों को तैयार खिचड़ी चाहिए । कोई भी महात्मा एक अनजाने को कुछ नहीं दे देते हैं । पहले संबंध बाँधो । संबंध विकसित करो, उसकी कुछ सेवा करो । उसके हृदय में आप प्रवेश करो, फिर उसकी मदद की आशा रखो । किन्तु ऐसा नहीं करना है और थोड़े पैसे भेंट

में रखे यानी कि वह महात्मा आपकी सभी उलझनें सुलझा देने के लिए बँध गया है, ऐसी वे लोगों की गिनती होगी ऐसा लगता है ।

दूसरे दिन रविवार को पूज्यश्री ने जिसकी बात की थी, वह अमेरिकन युवान मौन में से बाहर आया । उसने खादी की लुंगी और बनियान पहना था । उसके साथ बात करने पर उसने बताया कि 'अमेरिका के युवानों को अभी की राजकीय नीति, सामाजिक व्यवस्था इत्यादि पसंद नहीं है । उनको सच्चा सुख और शांति चाहिए । इससे वे नशीली दवाइओं का सहारा लेते हैं और अंत में भारत की तरफ दृष्टि करते हैं । इसमें ज्यादा प्रमाण में हिप्पी होते हैं ।'

उसके बाद हमने पूज्यश्री के चरण में वंदन कर के बिदा ली ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(४५)

निमित्त साथ ऐसे की जुड़ी हुई जो होगी,
स्वीकारात्मक भूमिकावाले भले न हो वे;
फिर भी संस्कार उसके दूसरे में तो प्रवेश करेंगे,
लम्बी अवधि का ऐसा संबंध, 'प्राण' प्रेरित करेगा ।

('निमित्त' पुस्तक से) – **मोटा**

जीवनचरित्र के लिए फोटो

जब से पूज्यश्री का जीवनचरित्र छपाने का तय हुआ, तब हमारे कइओं के मन में विचार आया कि पूज्यश्री के जीवन के और आश्रम के फोटो बिना पुस्तक अधूरा रहेगा । इसलिए यह सब फोटो किस तरह प्राप्त किये जा सकते हैं यह सोचने लगे । दरमियान हमारे एक परम मित्र लेफ्टनन्ट कर्नल बलवंत भट्ट (रिटायर्ड) की मुलाकात हुई । और जब उन्हें मालूम हुआ कि श्रीमोटा का जीवनचरित्र लिखा जा रहा है और आर. आर. सेठ की कंपनी उसे प्रकाशित करनेवाली है तो वे (बलवंत भट्ट) राजी हुए । वे कभी-कभार मौन में भी बैठते थे । इससे उन्हें श्रीमोटा के प्रति भाव भी था । फिर वे निष्णात फोटोग्राफर थे, यद्यपि व्यावसायिक नहीं★ । उन्होंने कहा कि 'ऐसे पुस्तक में फोटो होने चाहिए ।' मैं भी इसी विचार का हूँ, किन्तु फोटो कौन ले सकेगा ? कितने स्थलों पर घूमना पड़ेगा ? ऐसा मैंने कहा । इस पर बलवंतभाई ने तुरंत कहा, 'चलो, हम फोटो लेते हैं । आप श्रीमोटा को पूछ लिजीए । आपश्री और श्रीनंदुभाई थोड़ा मार्गदर्शन देंगे तो अपने खर्चे से फोटो लेकर आयेंगे ।'

★ महात्मा गांधी की दांडीकूच का सुप्रसिद्ध फोटो श्रीबलवंतभाई ने लिया था । उसकी बड़ी रंगीन कोपी साबरमती आश्रम की दीवार पर रखी हुई है ।

मैंने कहा कि 'श्रीमोटा को एतराज नहीं होगा, किन्तु उसके खर्च का क्या ?'

बलवंतभाई ने कहा कि 'खर्च की चिंता मत करना । फिल्म से लगाकर 'नेगेटिव-पोझिटिव' निकालने तक का पूरा खर्च मेरा ।'

'अच्छा, बहुत सुंदर । हम दोनों साथ में जायेंगे । सफर का खर्च 'फिफ्टी-फिफ्टी' बराबर ।'

'कबूल' उन्होंने तुरंत ही हाँ कही ।

पूज्यश्री की शक्ति के प्रताप से

मैंने तुरंत ही यह बात पूज्यश्री को एवम् श्रीनंदुभाई को कही । वे राजी हुए । श्रीनंदुभाई ने पूज्यश्री के जन्मस्थान से लेकर आश्रम हुए उन सब स्थानों कि सूची बनाकर दी और जिस-जिस जगह पर परिचय करवाने की जरूरत थी, उस-उस जगह पर परिचित भाईओं पर पत्र भी लिख कर दिये । इससे हमारा काम बहुत सरल हो गया । सुरत आश्रम के और पूज्यश्री के फोटो लेकर श्रीबलवंतभाई ने काम आरंभ किया । इससे कुल मिलाकर डेढ़ सौ फोटो लिए गये । इस फोटो लेने के कार्य के दरमियान हमें जो कुछ भी आकस्मिक मदद प्रवास दरमियान मिला करती थी, वह पूज्यश्री की शक्ति का प्रताप था, इतना कहे बिना नहीं रह सकते ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(४६)

मरकर फरागत होना जीते, सही वह मरना योग्य ही हैं,
हमने उस मृत्यु को भेंटकर जीवन को क्या स्वीकार किया है!

('जीवन-अनुभव-गीत' पुस्तक से) – **मोटा**

निमित्त मिले तो...

हम दोनों दिनांक २३-१०-१९७१ के दिन सुबह जल्दी सुरत आश्रम पर गये थे । कुछ देर बाद पूज्यश्री नड़ियाद से आये । उनसे अब ज्यादा चला नहीं जा सकता था । उनके पैर, कमर और घुटने पर सुबह शाम वैद्य ने बताये हुए तेल का मालिश होता था । आपश्री ने कहा, 'शरीर अब उसकी मर्यादा पार कर रहा है, किन्तु प्रभुकृपा से माइन्ड एलर्ट है - दिमाग साबूत है, इतना अच्छा है ।'

'**मोटा,** आपका माइन्ड तो साबूत ही रहे न ?'

'नहीं, यदि ऐसा निमित्त मिले तो वह भी ठिकाने न रहे ।'

हलके हाथ से कोड़े

भोजन करने बैठते समय पूज्यश्री हमेश हलके मूड़ में आ जाते थे और जिसे कुछ सलाह देने जैसी हो उसे परोक्ष रूप से सलाह देते थे, किसीको डाँटना हो तो मिठास से

डाँटते थे और किसीके प्रति प्यार भी दिखाते थे । एक बहन को संबोधित करते हुए बोले :

'...यहाँ न आवे तो उसे दो-चार व्यक्तिओं द्वारा उसे बाँधकर ले आना... यह भी साँईबाबा का ही (स्थान) है, ऐसा समझना... वह (उसके पति) आनेजाने के किराये के पैसे ना देवे तो मैं दूँगा, किन्तु तुम आती रहना । तुम आती हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है । तेरे बिना मुझे स्नेह कौन करेगा ?'

मेरी ओर हाथ दिखाकर आपश्री ने कहा, 'इन्हें चमत्कार में बहुत रस है । अरे ! डुमस में सब जगह अंधेरा था, फिर भी हमारी अकेले की जगह पर लाइट चालू रही थी । फिर, वहाँ पूरी रात मुसलाधार बारिश हुई, फिर भी (चबूतरे पर सोते हुए भी) मेरा पलंग गीला नहीं हुआ । वह कैसा चमत्कार ! उसका इन लोगों को भान नहीं है । और चमत्कार देखना चाहते हैं !... करना कुछ नहीं । नहीं भजन, नहीं प्रार्थना, नहीं स्मरण और कुछ नहीं... उनके दिल में हमारे लिए कैसी भावना और प्रेम है, वह देखा ।'

भोजन के बाद आपश्री आराम करने गये । एकाध घंटे बाद उठकर उन्होंने स्वयं अपनी दाढ़ी बनाई, क्योंकि दाढ़ी बनानेवाला नाई नहीं आया था ।

श्रीमोटा की मदद

पूज्यश्री के जीवनचरित्र के लिए फोटो के बारे में बात निकलने पर मैंने उन्हें सावली, कालोल, पेटलाद, वडोदरा, गरुडेश्वर, सुरपाणेश्वर इत्यादि स्थानों पर होकर आने की बात की । पेटलाद की स्कूल के और उनके निवासस्थान के फोटो लेने गये । तब भारी बारिश हो रही थी, फिर भी श्रीबलवंतभाई ने हिंमत से फोटो लिए यह बात कहकर कहा कि 'वह फोटो कैसे आयेंगे वह पता नहीं है, क्योंकि आकाश घनघोर था और बारिश भी जोर से हो रही थी ।' तब पूज्यश्री ने कहा, 'फोटो अच्छे आयेंगे★ ।' सुरपाणेश्वर के पास के रणछोड़जी के मंदिर पर पहुँचने के लिए पूरा रेती का लंबा रास्ता पार करना था, किन्तु उसमें पगडंड़ी जैसा कुछ नहीं था । इससे हम अंदर ही अंदर घूमा करते थे, तब ऐसे वक्त पर मंदिर के पूजारी आ पहुँचे । उन्होंने हमें प्रभुकृपा से सीधे रास्ते का मार्गदर्शन दिया था ।

वह बात की तब आपश्री मुस्करा दिये और विशेष में कहा कि 'जीवनचरित्र लिखने की यह सच्ची बात है । उस-उस जगह पर जाकर सब देखोगे, तब सच्चा ख्याल

★ जब फोटो धुलने के बाद आये, तब वह बिलकुल अच्छे आये थे ।

आयेगा और उसमें लीन हो जावोगे और उसके बाद लेखन में प्राण प्रगट होगे । आप सब ने यह बहुत अच्छा काम किया ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(४७)

प्रभु को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं । साधना के अनंत प्रकार हैं और भगवान के दर्शन भी अनंत रूपों में होते हैं ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

'...फिर भी भक्ति बढ़ी ?'

दिनांक २६-११-१९७१ के दिन श्रीमोटा मुंबई पधारे । मुझे देखते ही आपश्री बोले, 'उस बारिश में लिये हुए फोटो★ का चमत्कार देखा फिर भी भक्ति कितनी बढ़ी ?' दो-तीन बार उन्होंने वह बात याद दिलाकर प्रश्न किया । मैंने नकार में सिर हिलाया ।

चिनाई सेठ के वहाँ दोपहर तक रुककर आपश्री

★श्रीबलवंत भट्ट और मैं पेटलाद की हाईस्कूल और एक मकान कि जहाँ पूज्यश्री पढ़े थे और रहे थे उसके फोटो लेने गये थे । तब मूसलाधार बारिश हुई थी । फिर भी फोटो अच्छे आये थे । उसके संदर्भ में श्रीमोटा ने ऐसा कहा था ।

'वेलार्ड व्यु' में चंद्रकान्त मेहता के वहाँ पधारे । दैनिकों में 'आज के कार्यक्रम' के कालम में पूज्यश्री के यहाँ के कार्यक्रम के बाबत विवरण था, इससे आपश्री के दर्शनार्थिओं की संख्या बढ़ गई थी ।

पूज्यश्री माँ आनंदमयी का स्मरण

पूज्यश्री के दर्शन के लिए एक 'हार्ट स्पेश्यालिस्ट' डॉक्टर आये कि जो श्रीमाँ आनंदमयी के भक्त हैं, ऐसा उनका परिचय देते हुए श्रीमोटा ने कहा कि 'माताजी एक बार मेरे दक्षिण के आश्रम पर (कुंभकोणम्) पधारे थे और वे फिर साबरमती आश्रम पर भी आये थे, किन्तु मैं तो भूत । शहर में कहीं घूम रहा था । किसी ने मुझे माताजी के आने के समाचार दिये, इससे मैं साबरमती आश्रम पर गया और आपश्री के दर्शन किये । आपश्री मुझे मिलने के लिए मेरी प्रतीक्षा में बैठे रहे थे ।'

'अब समय कम है'

दिनांक २७-११ के दिन आपश्री मलाड में स्थित डॉ. सूचक की 'मेटर्निटी एन्ड जनरल होस्पिटल' में गये थे । वहाँ सत्संग होल में कई दर्शनार्थी आये थे । वहाँ दीवार पर अनेक महात्माओं के फोटो थे । पूज्यश्री ने उनको नमन किया । फिर डॉ. सूचक ने श्रीमोटा के बारे में संक्षेप में कहा और श्रीमोटा ने उनकी समाजोपयोगी गुणभाव की

प्रेरक ऐसी योजनाओं का ख्याल देकर दान देने की विनती की ।

पूज्यश्री ने वहाँ प्रसाद लिया और फिर अंधेरी श्री सुरेन्द्र वाडीलाल के वहाँ गये । दोनों जगह ठीक-ठीक रकम दान में मिली ।

दिनांक २८ को आपश्री वापस 'वेलार्ड व्यु' में पधारे । श्रीकेलावाला कर के उनके एक पुराने भक्त वहाँ आये थे । उनको संबोधित करते श्रीमोटा ने कहा कि 'अबे ! अब मेरे मरने का समय हो गया है, इसलिए मदद कर । अभी नहीं समझ में आयेगा । मरने के बाद सब कहेंगे कि **मोटा**, ऐसा था और वैसा था । उसके बाद समझ में आयगा ।'

दिनांक २९ को सुबह में आपश्री घाटकोपर गये और शाम को वापस 'वेलार्ड व्यु' में हरमुखभाई के वहाँ गये । इस प्रकार इस समय आपश्री ने इधर-उधर ज्यादा मिलने जाने का रखा था, क्योंकि बड़ी रकम इकट्ठी करने का आपश्रीने संकल्प किया था ।

पूज्य चाचाजी को श्रद्धांजलि

दिनांक ३०-११ की जल्दी सुबह पाँच बजे मुझे बुलाकर कहा कि 'पाँच मिनट में तैयार होकर नीचे खड़े रहो । बाहर जाना है ।' चाचाजी (गुरुदयाल मल्लिकजी) का

देहावसान कुछ दिन पहले चेम्बूर में उनके एक भक्त डॉ. फूलवर के वहाँ हुआ था । उन्होंने पूज्यश्री को उनके निवास पर पधारने का आमंत्रण दिया था । इससे आपश्री चेम्बूर गये । डॉक्टर के घर में प्रवेश करते ही आपश्री की दृष्टि चाचाजी की तसवीर पर पड़ी । इससे आपश्री ने ऊँचे होकर चाचाजी की तसवीर को स्पर्श कर के नमस्कार किये । तब होल में सात-आठ भाई-बहन उपस्थित थे । चाचाजी के बारे में कुछ बोलने की विनती करने पर आपश्री ने हिंदी में बात कही :

'मैं कराची में मेरे एक बुजुर्ग ('बापु' यानी परसदभाई मेहता,★ सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी के मेनेजर) के वहाँ रहता था । तब पहली बार चाचाजी के दर्शन किये थे । और तब से उनके साथ मित्रता हो गई थी । उनकी सादगी, उनकी नम्रता, भोलापन और सर्वजन के प्रति का उनका प्रेमभाव का मुझे स्पर्श हुआ था । उसके बाद मैं शांतिनिकेतन में (कलकत्ता) एक महीने के लिए रहने गया था, तब वहाँ चाचाजी के साथ मेरी कई बार मुलाकात हुई थी । यों हमारी मित्रता गाढ़ बनी थी । वे नम्रता की मूर्ति थे । आपश्री जो प्रेम बहाते थे, उसकी गंगधारा में स्नान

★ उनकी तरफ से श्रीमोटा को बहुत सहारा मिलता था ।

करने का मुझे सद्‌भाग्य प्राप्त हुआ था । इससे मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ । उनका सदैव प्रसन्न मन और हसता चेहरा देखकर मुझे बहुत आनंद मिलता था ।'

उसके बाद भोजन हुआ । भोजन सादा लेकिन स्वादिष्ट था । जो पूज्यश्री को बहुत पसंद आया । खास कर के काबूली चने की 'आईटम' आपश्री को पसंद आई । इससे आपश्री ने पूछा कि 'हमारी ओर ऐसे चने नहीं होते हैं ?' मैंने कहा कि 'गुजरात में छोटे चने मिलते होंगे, इतने बड़े शायद नहीं मिलते होंगे । ऐसे चने उबले हुए आलू के साथ रगड़ा बनाने में यहाँ उपयोग करते हैं ।' इससे आपश्री ने कहा कि 'थोड़े ले लेना ।' डॉ. फूलवर ने मँगवा देने का कहा । उसके बाद पूज्यश्री आराम करने गये ।

सिर्फ प्रशंसा काम की नहीं

पूज्यश्री शाम को ब्रीच केन्डी एक भाई के वहाँ गये । तब वहाँ आये हुए एक व्यापारी गृहस्थ श्रीमोटा की प्रसंशा करने लगे । 'ओ हो ! **मोटा** ! आपके संबंध में तो मैं कितना समाचारपत्रों में पढ़ता हूँ । आपके दर्शन करने का अहमदाबाद में मुझे बहुत इच्छा थी, किन्तु ऐसा नहीं हो सका । आज लाभ मिला । आप बहुत अच्छा काम करते हैं...' पूज्यश्री ने उस भाई को बीच में अटका कर कहा कि 'सिर्फ प्रशंसा किसी काम की नहीं । काम

पसंद हो तो फंड देवे ।’ उसने कहा कि ‘हाँ, हाँ, **मोटा,** जरूर ।’ और जाते-जाते रुपये २५/- थाली में रखते गये ।

उतने में एक भाई उनकी पत्नी को लेकर धबराये हुए आये और कहने लगे, ‘**मोटा,** बहुत देर हो गई । कभी का निकला था पर जल्दी नहीं आ सका ।’ इससे श्रीमोटा ने कहा कि ‘गरज हो तो जल्दी निकलना चाहिए ।’

विद्यार्थिओं को

उसके बाद पूज्यश्री ‘वेलार्ड व्यु’ में वापस आये, तब कई विद्यार्थी दर्शन के लिए वहाँ आकर बैठे थे । पूज्यश्री ने उनको एकाग्र होकर अभ्यास में लग जाने की और फालतु समय बरबाद नहीं करने की सलाह दी और आशीर्वाद लेने की वृत्ति छोड़ देने को भी कहा ।

मौन कहाँ लेना चाहिए ?

दिनांक १-१२-१९७१ के दिन तीन प्रतिष्ठित कुटुंब की शिक्षित बहनें मिलने आई । उनमें से एक बहन ने प्रश्न पूछने की अनुमति माँगी । तब पूज्यश्री ने कहा कि ‘दुनिया में कुछ मुफ्त में नहीं मिलता है यह जानते हो न ?’

‘हाँ, जी ।’

तो दक्षिणा रखिये । इससे बहन ने दक्षिणा रखी ।

अब पूछो जो पूछना हो वह । पूज्यश्री ने कहा ।

प्रश्न : घर में मौन रहकर साधना करनी और आश्रम के मौन कमरे में बैठना उन दोनों में क्या फर्क है ?'

श्रीमोटा : संसारी का घर और एकांत में आये हुए आश्रम का मौन कमरा उन दोनों के बीच फर्क समझ सको तो कहाँ बैठना ज्यादा अच्छा वह आप स्वयं ही तय कर सकोगे और समझ भी सकोगे । जो भी लोग आश्रम में मौन में बैठने आते हैं, उन्हें आप पूछकर देखो तो आपको खयाल आयेगा । मेरे से मेरे आश्रम के महत्त्व के बारे में कुछ नहीं कहा जायेगा ।

मुंबई में छ दिन रहकर पूज्यश्री ने फंड एकत्रित करने के लिए बहुत मेहनत की और ठीक-ठीक प्रमाण में दान प्राप्त किया । आपश्री का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण आपश्री ने अब भोजन करने के आमंत्रण स्वीकार करने पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया था । जो रुपये ५०१/- देने को तैयार हो, उनके वहाँ भोजन करने जाने का आमंत्रण स्वीकार करना, ऐसा तय किया था ।

दिनांक १-१२-१९७१ की शाम को आपश्री सुरत गये ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(४८)

गत जीवन के पुराने स्मरण हमें आवे और उस प्रकार हम सोचें वह साधक के लिए इष्ट नहीं है... सब भगवान को सौंपकर निश्चिंत रहें ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

स्वप्न के संबंध में

दिनांक १५-४-१९७२ के दिन मैं सुरत आश्रम पर गया । भोजन के बाद पूज्यश्री ने सत्संग करने को कहा । इससे मैंने कहा कि '**मोटा**, C.A. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद उसके ही, परीक्षा में बैठने का और असफल होने के भय के स्वप्न बारबार आते हैं । उसका क्या कारण होगा ?

श्रीमोटा : उस परीक्षा में पास होने के लिए बहुत मेहतन करनी पड़ी होगी । उसके संस्कार चित्त पर गहरे पड़े होंगे । इससे उसके स्वप्न आते हैं । किन्तु आपको अब उस संबंध में कोई विचार नहीं करना है ।'

पूज्यश्री के साथ यह बात करने के बाद वैसे स्वप्न आने बंद हो गये थे ।

द्रौपदी के चीरहरण के बारे में श्रीमोटा का आक्रोश

'हरि को भजते अभी तक किसीकी लाज गई नहीं

जानी रे'★ यह भजन पूज्यश्री को क्यों प्रिय है, उसकी बात करते-करते द्रौपदी की मदद में सभा में बैठे हुए महानुभावों में से कोई नहीं गया, इस बात पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा ।

'भरी सभा में द्रौपदी के चीर दुःशासन खींचने लगा, तब कोई माई का लाल उसकी मदद के लिए दौड़ा नहीं । भिष्म पितामह की बात समझ सकते हैं कि वे ज्ञानी पुरुष थे, अनुभवी थे । इससे उन्हें विशेष कुछ प्रयोजन नहीं था । किन्तु दूसरे सब सगे-संबंधी और महारथिओं में से किसीका भी खून क्यों नहीं खौल उठा ?

★ साधनाकाल दरमियान श्रीमोटा ने उनकी मौसी के पास से अपने बड़े भाई की टी. बी. की बीमारी का इलाज करवाने के लिए रुपये ७००/- उधार लिये थे । वह वसूल करने मौसी **मोटा** को जाहिर में अपमानित करती । इससे उन्हें बहुत दुःख होता था । दरमियान 'हरि को भजते...' यह भजन उन्हें सुनने में आया । उसका उन्होंने सतत रटन किया । प्रार्थना करते रहे और एक दिन एक अनामी व्यक्ति की ओर से आपश्री को सात सौ रुपये डाक द्वारा मिल गये और अपना कर्ज तब चुका सके । बस, तब से वह भजन उन्हें अति प्रिय हो गया था और आश्रम में आज भी यह भजन रविवार की सुबह की प्रार्थना में गाया जाता है ।

वह समझ में नहीं आता है★ । ऐसी निःसहाय स्थिति में कोई भी मर्द उसकी मदद के लिए नहीं दौड़ा, तब उसने भगवान को पुकारा । इससे भगवान ने उसके चीर पूरे । यह सब जानकर भगवान के प्रति मुझे भाव जागृत हुआ और प्रार्थना करने लगा, तब भगवान ने मेरी भी लाज रखी ।'

पूज्यश्री ऊँचे आवाज से मुझे संबोधित करते हुए कहने लगे, 'सुना न ? चमत्कार-चमत्कार क्या करते हो ? भक्ति करो, फिर चमत्कार चाहिए उतने होंगे ! मेरी सास के निकल पड़े हैं !'

कर्म की गठरियाँ

फिर उन्हें शहर में जाने का वक्त हुआ । इससे दूसरी लुंगी पहनते-पहनते बोले, 'मुझे एक ही बात का दुःख है कि मेरे पास आनेवालों का दुःख मैं दूर नहीं कर सकता हूँ ।'

'क्यों प्रभु' ?

★ इस बारे में एक उपकथा : श्रीमोटा जब हाईस्कूल में थे, तब उन्होंने एक निबंध में 'महाभारत रागद्वेष का इतिहास होने का लिखा था ।' और शिक्षक ने उनके विचार की कद्र की थी और उन्होंने कहा था कि 'चूनीलाल, भविष्य में तुम बहुत बड़े व्यक्ति बनोगे ।'

श्रीमोटा : क्योंकि उनके कर्म उनके आड़े आते हैं ।

प्रश्न : वह दुःख कौन से ? संसारी या आध्यात्मिक ?

श्रीमोटा : 'सब प्रकार के... किन्तु कर्म बीच में आवे इससे क्या करूँ ? कर्म की गठरी छूटे तो न ? कोई कुछ करता नहीं है । उनके आवाज में दर्द था ।

एकाश्रय जरूरी

उसके बाद आपश्री जादवजीभाई की कार में शहर की ओर गये । उनके मकान का खातमुहूर्त पूज्यश्री के हाथ से करवाने का था । कार में सामने ही भगवान स्वामीनारायण, श्रीरामदेवपीर और पूज्य श्रीमोटा के फोटो रखे थे । वह देखकर आपश्री ने जादवजीभाई से कहा कि 'सब संतों के प्रति हमें आदर होता ही है, किन्तु हमें आगे बढ़ना हो तो एकाश्रय रखना जरूरी है । मुझे भगवान स्वामीनारायण के लिए बहुत प्रेमभाव है । उनके द्वारा उस काल में की गई समाजोपयोगी सेवा अनोखी है । किन्तु हमें हमारा भाव विकसित करने के लिए एक का आश्रय (एकाश्रय) बहुत जरूर का है ।'

जादवजी भगवान स्वामीनारायण के भक्त । इससे पूज्यश्री ने यह सद्बोध दिया था । फिर आपश्री ने खातमुहूर्त की विधि उनकी रची हुई प्रार्थना के साथ की ।

विधि पूरी होने के बाद जादवजीभाई को कहा कि 'विघ्न तो आयेंगे, किन्तु हम दृढ़ रहकर भगवान के शरण में जायेंगे तो विघ्न दूर हो जायेंगे, वह निश्चित है ।'

उसके बाद मैंने मुंबई जाने के लिए पूज्यश्री की आज्ञा माँगी, तब आपश्री ने मुंबई के सभी स्वजनों के नाम बोलकर सब को याद करते 'हरिःॐ' कहा । जैसे साक्षात् माँबाप !

■

॥ हरिःॐ ॥

(४९)

सपनों को हम पूरी तरह ठोस रूप से जैसे फेंक देनेवाले नहीं हैं वैसे पूरी तरह ठोस रूप से महत्त्व भी देना नहीं है; फिर भी उससे दिशासूचन मिल सकता है सही ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

सपने : संस्कारों की खिचड़ी

१५-४-१९७२ के बाद मई मास में एक बार मैं सुरत आश्रम पर गया था, तब मुझे देखते ही श्रीमोटा ने पूछा, 'क्यों अब परीक्षा के सपने आते हैं ?'

'ना जी, परीक्षा के सपने तो बिलकुल बंद हो गये

हैं । फिर भी दूसरे तो आते ही हैं । आपके सपने भी कई बार आते हैं ।'

श्रीमोटा : भाई, उसे बहुत महत्त्व नहीं देना चाहिए । सपने वह तो अनेक प्रकार के संस्कार जो चित्त में पड़े होते हैं, उसकी खिचड़ी बनकर प्रकट होते हैं । कभी उसमें से हमें समझ भी पड़ती है । जो सचमुच साधक है, उसे उसके सद्‌गुरु की ओर से स्वप्न के द्वारा मार्गदर्शन मिलता है । मुझे मेरे गुरुमहाराज ने सतत पाँच बार एक ही प्रकार का सपना दिखा-दिखाकर अमुक साधना करने का सूचन किया था, तब मैं समझ सका और फिर उस अनुसार मैंने साधना की थी ।'

श्रेष्ठ दान

प्रश्न : मोटा, आप 'गुण और भाव' के विकास के लिए दिया गया दान दूसरे दानों से श्रेष्ठ है, ऐसा बारबार कहते हो । माफ करना, यों पूछने की धृष्टता के लिए, किन्तु उसका कारण ठीक समझ में नहीं आता । तो उस संबंध में समझायेंगे ?'

श्रीमोटा : पूछ सकते हो हंअ....। दूसरे दान निरर्थक हैं, ऐसा नहीं कहता हूँ, किन्तु उसके पहले **समाज में 'गुण और भाव' का विकास हो, उसके लिए किया हुआ दान चिरंजीव है । मरते वक्त जीव 'गुण और भाव' को साथ**

लेकर जाता है । चेतन के अनुभव के लिए 'गुण और भाव' का बहुत महत्त्व है । गुण और भाव से ही जीवन समृद्ध होता है । गुण और भाव के बिना समाज उन्नत नहीं होगा । जहाँ गुण और भाव है, वहीं धर्म है । इससे ऐसे दान से समाज में 'गुण और भाव' बढ़ेगे और दूसरे जन्म में भी साथ में रहते हैं । इसलिए इस दान का क्षेत्र उत्तम है ।

साधु का अस्पताल

प्रश्न : मोटा, आजकल कई कालाबाजार करनेवाले और धनवानों के वहाँ महात्मा ज्यादा प्रमाण में जाते रहते हैं, ऐसी टीका हो रही है । उस बारे में आप क्या कहते हैं ?

श्रीमोटा : दूसरों की बात करने के बदले मैं मेरी अपनी ही बात करूँ । सामान्य रीति से संकटग्रस्त मनुष्य या किसी बाबत में उलझ गये हुए मनुष्य महात्मा के पास जाते हैं । दवाखाना में दर्दी ही जायेगा वैसे साधु के पास ऐसे साधु नहीं, किन्तु संसारी ही जायेगा। फिर वह गरीब हो या धनवान । और धनवान के पास महात्मा को रखने की ज्यादा सुविधा होती है । इससे उसके वहाँ ज्यादा जाते हैं । उसमें क्या हो गया ? इससे उस महात्मा को गरीब मनुष्य के लिए भाव नहीं होता है, ऐसा नहीं मानना

चाहिए । मैं कभी किसीको बुलाने नहीं जाता हूँ । जिसे आना हो, वह आवे । सुरत के नवाबी राज्य समय के निर्मलदासजी नाम के एक महात्मा का नाम सुना है ? उनके वहाँ नवाब आवे, सेठ लोग आवे और एक वेश्या भी आती थी । नवाब आदि ने महात्मा के वहाँ आनेवाली वेश्या को मना करने का कहा । उस महात्मा ने वह बात नहीं मानी । इससे बाद में नवाब और दूसरे उनके वहाँ जाते बंद हो गये, किन्तु वेश्या सत्संग करती रही और परम भक्त बन गई । इस प्रकार साधु महात्मा के मन सब समान है । उलटा गुम हो गये भेड़ की वे प्रथम जाँच करते हैं ।

आसक्ति कैसे दूर हो ?

प्रश्न : मोटा, कोई भी आसक्ति दूर होना बहुत मुश्किल है । तो क्या करना चाहिए ?

श्रीमोटा : हमें जिसके लिए आसक्ति हो, उसका काम नहीं करना ऐसा नहीं । निमित्त मिलने पर ऐसा काम बदले की आशा नहीं रखते हुए प्रेम से और प्रभुप्रीत्यर्थ करना । क्योंकि आसक्ति में सूक्ष्म इच्छाओं को पोषण करने की वृत्ति होती है । उसका निवारण करने संस्कारों की शुद्धि करने के लिए जबरदस्त प्रयास करना चाहिए ।

■

॥ हरि:ॐ ॥

(५०)

आपका जो-जो कुछ होता हो, प्रभु को आत्मभाव से निवेदन करो,
सब कुछ खिलाकर बाद में ग्रहण करो वह प्रसादीरूप से;
जूठा उसे तो कुछ न अर्पण करो, नहीं पसंद ऐसा उसे,
चखाये बिना तो हृदय प्रभु को, नहीं कोई स्वाद लेना ।

('जीवनपगले' पुस्तक से) – **मोटा**

हमारा धर्म तो चाहने का है

कुंभकोणम् के आश्रम पर जाते हुए दिनांक १४-७-१९७२ के दिन श्रीमोटा मुंबई पधारे । भाई चंद्रकान्त ने उन्हें लगभग ३ फीट लंबाहार पहनाकर साँईबाबा के बारह जितने फोटो अर्पण किये । पूज्यश्री ने मुस्कराकर दोनों हाथ से चंद्रकान्त के गाल दबाये और पीठ थपथपाई । सेठ नटवरलाल चिनाई के वहाँ एक दिन रुककर आपश्री दूसरे दिन चंद्रकान्त के वहाँ 'वेलार्ड व्यु' में पधारे और आते ही तुरंत आराम करने के लिए सो गये । चंद्रकांत के मातुश्री पूजा करने आये । श्रीमोटा ने कहा, 'मुझे बैठा करो ।' उसके बाद पूजा हुई । बाद में चंद्रकान्त की मातुश्री ने कहा कि '**मोटा**, आपके चेले को सीधा करो ।'

'मेरा कोई चेला नहीं है ।' **मोटा** ने कहा ।

चंद्रकान्त के मातुश्री किसी गृहकलह के कारण अकुलाये

हुए थे । इससे उन्होंने फिर से श्रीमोटा को कहा कि 'आप चंदा का बहिष्कार करो ।'

तब श्रीमोटा ने कहा कि 'हमारे लिए सब समान हैं । मेरे से किसीका बहिष्कार नहीं हो सकता । हमारा धर्म तो चाहने का है । जिसस क्राइस्ट ने एक शरीर बेचनेवाली स्त्री पर जुल्म करने के लिए तैयार हुए लोगों से क्या कहा था वह याद है ? उन्होंने कहा था कि 'आप में से जो पवित्र हो, वह इस स्त्री को पत्थर मारे ।' झुंड में से कोई नहीं निकला । हमें तो गुम हुए भेड़ की सँभाल रखना है ।'

'वह जीवित बैठा है ।'

बाहर जाने से पहले पूज्यश्री ने चंदाभाई के पास जाकर उन्हें प्यार किया । उनके सभी स्वजन गंभीर और उदासीन चेहरे से खड़े थे । पास के कोने में साँईबाबा का सुंदर, रंगीन और पूरे कद (लगभग पाँच फूट) का चित्र था । उसके सामने हाथ लम्बाकर श्रीमोटा सब को संबोधन करते हुए पूरे गंभीर भाव से बोले कि 'चाहे जैसे महाराजा से कहोगे तो भी कुछ होनेवाला नहीं है । यह (साँईबाबा) मरे नहीं है, जीवंत जागृत बैठा है ! उसे आर्त और आर्द्र दिल से प्रार्थना करो । दूसरा कुछ काम नहीं आयेगा और कोई कुछ कर भी नहीं सकेगा ।'

■

॥ हरिःॐ ॥

(५१)

संसार हरि की लीला, उसमें जो हरि को स्तवे,
भजे, खेले ही आनंद से, हरि की भक्ति में हृदय से,
खेलते हरि के भाव से, वह नित्य का होते,
संसार में जीना बहुत रसमय लगता सदा ।

(‘भावपुष्प’ पुस्तक से) – **मोटा**

मुंबई सेन्ट्रल के वेइटिंग रूम में

दिनांक २२-८-१९७२ के दिन पूज्यश्री बेंगलोर से एरोप्लेन द्वारा मुंबई पधारे । किसीके वहाँ नहीं जाते हुए वे सीधे ‘बोम्बे सेन्ट्रल’ गये । वहाँ के वेइटिंग रूम में आपश्री को ‘व्हील चेर’ में बिठाकर ले गये । उनका शरीर एकदम दुबला हो गया था । आपश्री को ऐसिडिटी की तक़लीफ़ भी शुरू हो गई थी । इससे आपश्री ने सिर्फ केले आरोगे । फिर बात करते-करते कहा कि ‘इस बार लेखन अच्छा हुआ है । गीताजी के ज्यादा श्लोक भी फिर लिखे हैं और ‘कृपा’ पर भी अनुष्टुप छंद में लिखा गया है ।’

कुर्सिओं की कमी के कारण उपस्थित भक्तों को आसपास बैठने और दो-तीन स्वजनों को उनके पास में कोट पर बैठने को कहा । जिनको बैठने में संकोच होता था, उनको श्रीमोटा ने कहा, ‘बैठ सकते हो, बैठिये, मेरे

पास में ।' फिर थोड़ी बातचीत कर के आपश्री ने आराम किया ।

तांबे के बाजूबन्द की भेंट

एक घंटे बाद आपश्री प्लेटफोर्म पर आये । उस समय मुंबई में वातव्याधि और अस्थिओं की कुछ बीमारिओंवाले हाथ की कलाई पर तांबे का बाजूबन्द पहनते थे और ऐसा कहा जाता था कि 'उससे बहुतों को फायदा हुआ है ।'

एक बहन ने श्रीमोटा को तांबे का बाजूबन्द देते हुए कहा कि '**मोटा**, इस बाजूबन्द का कालाबाजार हो रहा है । एक रुपये की कीमत के इस बाजूबन्द के चालीस रुपये लेते हैं ।' ऐसा कहकर एक बाजूबन्द पूज्यश्री को दिया । पूज्यश्री ने तब कहा कि 'मैं तो यह बेच दूँगा ।' सब हँस दिये ।

फिर आपश्री उनके डिब्बे में जाकर बैठे और 'हरिःॐ' के घोष के साथ ट्रेन रवाना हो गई ।

राजकोट में जन्मदिन उत्सव

राजकोट में दिनांक २४-९-१९७२ के दिन पूज्यश्री का जन्मदिन उत्सव मनाया गया । शुरूआत में भजन गाये गए, फिर एक भाई संस्कृत में पूज्यश्री की प्रशस्ति करनेवाला काव्य पढ़ने लगे, तब उन्हें रोककर पूज्यश्री ने कहा, 'रहने दो ! मुझे गलत प्रशंसा नहीं चाहिए । कहे अनुसार कर के दिखावो, तो ही मुझे संतोष होगा ।'

‘साहब’ शब्द का उपयोग क्यों ?

श्रीढेबरभाई इस प्रसंग पर प्रमुखस्थान पर थे, किन्तु उनको पहुँचने में देर हो गई । श्रीढेबरभाई ने कहा, ‘मेरी तबियत नरम है । इससे देर हो गई ।’ उस समय श्रीमोटा ने कहा कि ‘तो फिर प्रमुखस्थान नहीं लेना था ।’

पूज्यश्री ने प्रवचन करते हुए श्रीढेबरभाई का उल्लेख ‘ढेबरभाई साहब’ कहकर करते । इससे ‘साहब कहाँ से ?’ ऐसा ढेबरभाई ने पूछा । तब श्रीमोटा ने कहा कि ‘कबीर साहब जिस अर्थ में ‘साहब’ कहते हैं, उस अर्थ में मैं बहुतों को ‘साहब’ कहता हूँ ।’

उनके प्रवचन का सार निम्न अनुसार :

पैसे से कृपा नहीं मिलती है

- ‘अनुभवी को जब निमित्त मिलता है, तब वह अपनेआप प्रकट होते हैं, व्यक्त होते हैं, किन्तु उसके बाद ‘उस’ का वह संग्रह नहीं करता है । वह तो ‘उस’ को समर्पण कर के खाली और खाली ही रहता है ।’
- ‘पचीस प्रतिशत परमार्थ करो तो हम सरकार से अच्छे काम करने में आगे निकल जायेंगे ।’
- ‘कृपा और आशीर्वाद की बात मत करना । मेरे साथ प्रेमसंबंध बाँधोगे तो कुछ होगा । मुफ्त में कुछ मिलता नहीं है । महँगी वस्तु ऐसे माँगने से नहीं मिलती है । पैसे देने से भी कृपा नहीं मिलेगी । मुझे

पैसा देनेवाला तो मेरा हजार हाथवाला भगवान बैठा है । बाकी कृपा और आशीर्वाद की बातों से समाज बोदा, पंगु हो गया है ।'

मेरी मानता मत रखना

- 'भगवान के होकर रहो । भगवान मूर्ख को भी विद्वान बनाते हैं । इसलिए कर्म करो । कर्म के बिना भक्ति साकार नहीं होती है ।'
- 'मेरे पास आकर बात करोगे और सलाह माँगोगे तो मैं दूँगा और भगवान को प्रार्थना करूँगा ।'
- 'कोई मुझे पैसे देते हैं तो वह मैं ईश्वर को अर्पण कर देता हूँ और देनेवाले के कल्याण की इच्छा करता हूँ । इसलिए मेरी मानता - मनौती मत रखना ।'

उसके बाद खिचड़ी-शाक का प्रसाद लेकर सब बिखरे । उस दरमियान श्रीढेबरभाई ने एकांत में बैठकर श्रीमोटा के साथ सत्संग किया था, ऐसा जानने में आया था ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५२)

'हरि' में राचने जिसके तत्पर सभी मनादि हैं,
आनंदमग्न उसकी प्रसन्नता क्या निराली है !

(बेंग्लोर से ९-७-१९७२) - **मोटा**

सुरत में दीक्षा दिन उत्सव

दिनांक ४-२-१९७३ के दिन सुरत में पूज्यश्री का दीक्षादिन उत्सव मनाया गया । शुरूआत में मथुरीबहन खरे ने भावपूर्ण भजन गाये । उसके बाद पूज्यश्री ने दिये हुए प्रवचन का संक्षिप्त सार निम्न अनुसार :

दीक्षा, संन्यास, कर्म इत्यादि के बारे में

- दीक्षा अर्थात् 'डेडिकेशन ओफ लाईफ' । किसी उच्चतम आशय में फना हो जाना ।
- संन्यास का अधिकार किसे ? जिसकी नसनस में, रगरग में, श्वासोश्वास में ईश्वरभावना सराबोर हो गई हो उसे ।
- किसीको कहना नहीं कि 'मैं तुम्हारा गुरु हूँ । आप में से कोई शिष्य होने की तमन्नावाला नहीं है । ऐसों के चेहरे अलग होते हैं । फिर भी मित्र बनकर रहोगे तो भी मुझे वह अच्छा लगेगा । मेरा काम करोगे तो वह पसंद पड़ेगा ।'
- 'इस' शरीर के कष्टमय, दर्दमय दिनों के दरमियान भगवान के भजन इत्यादि अस्खलित रूप से लिखे जाते हैं, वह मेरे लिए बहुत बड़ी महत्त्व की और आनंद की बात है ।

परमार्थ के लिए कर्म करना चाहिए

- मेरे सगे भाई (मूलजीभाई) का अवसान हुआ, किन्तु वहाँ नहीं गया । वहाँ दोड़कर जाऊँ तो उसमें स्वार्थ से कर्म किया कहा जायेगा । किन्तु परमार्थ के लिए कुछ होता हो तो अभी ऐसी (बीमारीवाले) शरीर की हालत में भी खड़ा हो जाऊँगा । (एक बार आपश्री अपने शरीर की परिचर्या के लिए सुरत के एक 'अस्पताल' में दाखिल हुए थे, वैसे समय पर आश्रम में एक जने का विवाह तय हुआ था, इससे जल्दी सुबह भारी ठंड होते हुए भी वहाँ से निकलकर आश्रम पर गये थे और विवाह करवाया था ।)

दान के संबंध में

- दान के पीछे आज ज्ञान नहीं है । आज दान वह व्यवहार की रूढ़ि हो गई है । अबे भाई ! **जो भी दो, प्रेम से कुछ दो । भाव और ज्ञानपूर्वक दो । त्याग के साथ परमार्थ भी अग्रभाग में हो तो धर्म का आचरण किया कहा जायेगा ।**
- अभी रुपये का अवमूल्यन होगा । इसलिए पैसे से चीजवस्तु खरीद कर रखो । ऐशो आराम की चीजवस्तुओं की खरीदी में पैसे मत रोको, क्योंकि उसका कोई अर्थ नहीं होगा ।

लक्ष्मी अपवित्र नहीं होती है

- कोई-कोई लोग मुझे ड़ाँटते आते हैं कि 'आप कालाबाजार का पैसा क्यों लेते हो ?' (तदुपरांत, ऐसा कहनेवाले ऐसे सेठ लोग ही होते है !) अरे ! भई ! लक्ष्मी अपवित्र नहीं होती है । तदुपरांत, उस लक्ष्मी को मैं समाज को वापस दे देता हूँ। मेरे लिए उपयोग नहीं करता हूँ, यह आप नहीं जानते हो क्या ?

मुक्ति के लिए माँग

- लोग कैसा-कैसा माँगने आते हैं। एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्य करनेवाली बहन मेरे पाँव पड़कर प्रार्थना करती है, '**मोटा,** मुझे मुक्ति मिले ऐसी कृपा करो ।' बोलो, क्या कहना ? कृपा ऐसे नहीं मिलती है। मेरे में ऐसी शक्ति भी नहीं है । पढ़े-लिखे लोग भी जब ऐसा माँगते और बोलते आते हैं, तब बहुत गुस्सा आता है। उन्हें कोई साधन-भजन करना नहीं है और मुक्ति चाहिए । हमें बहुत इच्छा हो कि आपके लिए कुछ करें, परंतु क्या करें ? (उन्होंने अपनी प्रिय पंक्तिओं द्वारा पुकार किया ।)

हमें तो आप में प्रवेश कर कर्म करना है,
किन्तु बारह मन के क्या सभी द्वार पर ताले हैं !

■

॥ हरिःॐ ॥

(५३)

'जगत को चाहने के लिए कृपा से तो दिया हमें जीवनव्यापार', फलित करना रहा वह हमें क्या !

('जीवनसंदेश' पुस्तक से) – **मोटा**

प्रेम के अधिकारी

पूज्य श्रीमोटा गुरुपूर्णिमा निमित्त से दक्षिण में गये थे और दिनांक २५–६–१९७३ से ६–७–१९७३ तक मुंबई में रुके थे ।

स्टेशन से आपश्री चिनाई सेठ के वहाँ जा रहे थे, तब योगिनीबहन ने उनके बेटों के बाहरगाँव अभ्यास के लिए भेजने की बाबत में उनकी सलाह माँगी, तब पूज्यश्री ने मना किया और कहा कि 'वे अभी छोटे हैं और माँ–बाप के प्रेम के अधिकारी हैं ।'

अब फुर्सत पाओ

दिनांक २६–६ के दिन आपश्री सी. आर. के वहाँ पधारे । सी. आर. के मातुश्री ने कई बाबतों के बारे में बहुत शिकायत की । तब पूज्यश्री ने उनको स्पष्टरूप से बहुत समझाया वह उनके शब्दों में –

'माँ, जाने दो वह सब । अब सब से फुर्सत पाना शुरू करो । मैं भी फुर्सत पाना शुरू करता हूँ । और कुछ

(आश्रम के लिए) फंड एकत्रित करना हो, वह मैं एकत्रित कर लेता हूँ । आप अब दूसरी बातों में से मन वापस लेना शुरू करो । यह सब (स्वजन) कोई साथ में नहीं आयेंगे । सिर्फ भगवान का नाम साथ में आयेगा । उसे ही अब याद करो । दूसरी किसी माथापच्ची में पड़ना नहीं । भगवान का स्मरण करते रहो ।'

पैसे की माया

मैं मेरी माँ को मेरे साथ लेकर मेरे गुरुमहाराज के दर्शन कराने के लिए एक बार तैयार हुआ था । तब मेरी माँ ने कहा कि 'सोमला को (स्व. सोमाभाई, श्रीमोटा के छोटे भाई) साथ ले ले ।' छोटा भाई उसे बहुत प्यारा था । मैंने कहा कि 'माँ, सोमला अभी छोटा है । वह कुछ नहीं समझेगा और किराया निरर्थक खर्च करना पड़ेगा ।' उसे किसी तरह समझाई ।

'फिर साँईखेडा (सद्गुरु धूनीवाले दादा के वहाँ) पहुँचे । — गुरुमहाराज तो बिलकुल नग्न - दिगंबर और चाहे जैसा बोले । इससे मेरी माँ ने कहा, 'अरे, बाप रे ! इसके पास कहाँ मुझे लाया ?' मैंने उसे बहुत समझाई कि 'माँ, देख तो सही, आराम के साथ उनका दर्शन कर । तुम्हारा कल्याण हो जायेगा ।'

फिर तो माँ को उसके पास के पाँच रुपये जो थे, वह

गुरुमहाराज को देने के लिए मैंने कहा, तब माँ ने कहा कि 'हाँ, तुमने तो मुझे बहुत दे दिया है न ?' उसने पाँच रुपये नहीं दिये । बहुत समझाने पर भी ! किन्तु एक दिन बाजरी के पकौड़े कर के गुरुमहाराज को खिलाये थे । ऐसी पैसे की माया है, माँ !

श्रीजीबावा का रटन करो

'तो माँ, अब सब छोड़ने लगो★ । जिसे जैसा करना हो वैसा करने दो । झगड़े हो तो झगड़ने दो (घर में जो कुछ होता हो उस संदर्भ में) हमें उससे अलग रहना है ।'

अपने को मिलते इतने सारे दान के संबंध में उन्होंने कहा, 'देखिए, **आप सब मुझे पैसे देते हो, किन्तु उसमें से मैं मेरे लिए कुछ भी नहीं रखता हूँ । सब आश्रम में जमा होता है । हरि:ॐ आश्रम का जैसा प्रबंध होता है, वैसा देश में और किसी आश्रम का नहीं होता होगा, उसकी मैं गारंटी देता हूँ ।** इसलिए इन सब की माया दूर कर के श्रीजीबावा का रटन करो । इस प्रकार उन्होंने एक संतप्त वृद्ध माता को हो सके उतना आश्वासन और सलाह दी ।'

साँईबाबा ने थप्पड़ मारी

दोपहर को पूज्यश्री के पास चंद्रकान्तभाई, हरमुखभाई,

★ ये सी. आर. के मातुश्री १९७७ में श्रीजीचरण को प्राप्त हुए थे ।

धीरेशभाई, इत्यादि बैठे थे । तब उन्होंने उनके 'बापु' को (परसदभाई एन. मेहता कराची में सिंधिया स्टीमशीप नेवीगेशन कंपनी के मेनेजर को) शिरड़ी में २८ दिन का मौन दिया था, तब की बात करते हुए कहा कि 'एक बार साँईबाबा के समाधिमंदिर में आरती हो रही थी, उसका मुझे भान नहीं रहा । क्योंकि मैं ध्यान में डूब गया था और एक कोने में बैठा हुआ था । उतने में बाबा मेरे ध्यान में दिख आये ।

वे वरद हस्त ऊँचा कर के सब को आशीर्वाद देते थे और मेरे पास आये और मुझे थप्पड़ मारकर बोले, 'अबे, आरती के वक्त सब खड़े हैं और तुम क्यों बैठे हुए हो ? खड़े हो ।' मैंने उनकी माफी माँगी और खड़ा हुआ।'

उनके मन को डगमगाना नहीं

एक नवोदित भक्त ने पूज्यश्री से पूछा कि : 'मेरे गुरुमहाराज ने मुझे लक्ष्मीजी का अनुष्ठान करने की सलाह दी थी, किन्तु कुछ होता नहीं है तो मुझे वह छोड़ देना चाहिए या नहीं ?'

श्रीमोटा : ऐसे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता है ।

किन्तु वह भाई उत्तर के लिए ज़िद करने लगे, तब श्रीमोटा को वह पसंद नहीं आया । आपश्री ने बारबार उस

बाबत नहीं पूछने का कहा और फिर गीताजी का श्लोक बताते हुए कहा :

न बुद्धिभेदं जनयेत् अज्ञानां कर्मसंगिनाम् ।
जोषयेत् सर्व कर्माणि विद्वान् युक्तःसमाचरन् ॥

(३-२६)

अर्थात् कर्म में आसक्तिवाले अज्ञानिओं के मन को ज्ञानी पुरुष को डगमगाना नहीं चाहिए या उन्हें कर्म से दूर रहने के लिए उत्तेजन नहीं देना चाहिए, किन्तु स्वयं को सभी कर्म अच्छी तरह से कर के उनके पास सभी कर्म भक्तिभाव से करवाना चाहिए ।

बाद में उस भाई को अपनी भूल समझ में आने पर श्रीमोटा की माफी माँगी और आश्रम की सेवा में लग गये थे ।

अनुभवी का कार्य

दिनांक ७-७-१९७३ की सुबह जल्दी पूज्यश्री प्लेन द्वारा बेंगलोर जाने के लिए 'एरोड्रम' की ओर निकले, तब आपश्री कुछ पंक्तियाँ बोले, जिसका भावार्थ ऐसा था कि 'अनुभवी और मुक्त का कार्य मौलिक, स्वाभाविक और अनोखा होता है ।'.... भगवान ने कैसे-कैसे गूढ़ विषयों पर (एबस्ट्रेक्ट विषयों पर) लिखवाया है । जैसे कि 'स्वार्थ', 'रागद्वेष', 'जिज्ञासा', 'कृपा', 'श्रीसद्गुरु' इत्यादि ।

ऐसा लेखन कहीं देखने में नहीं आता है । वर्षों बाद कोई अभ्यासी जागेगा और देखेगा तब कहेगा कि कोई व्यक्ति (बहुत विद्वान और अनुभवी) निकला था जिसने लिखा है । अभी किसीको उसका पता नहीं लगेगा या कदर नहीं करेंगे ।'

■

॥ हरि:ॐ ॥

(५४)

पाप, पुण्य नहीं देखता है, 'हरि' ऐसा कृपालु है,
'हृदय का गहरा भाव' भोजन हरि का ही वह;
हरि को खुश करे ऐसे भाव से जो प्रेम से सदा,
ऐसे को निज का जानकर स्थान दे निज दिल में ।

('भावपुष्प' पुस्तक से) – **मोटा**

भक्त की याद में आँसु

१९७३ के दिसम्बर के अंतिम सप्ताह दरमियान हम दोनों और योगिनीबहन सुरत आश्रम पर गये थे । योगिनीबहन तीन दिन के लिए मौन में बैठनेवाली थी । मौन में जाने से पहले उनके पति ने भेजी हुई दान की रकम और चंदन का हार पूज्यश्री को दिये । उसका स्वीकार करते हुए पूज्यश्री की आँख में प्रेम के आँसु आ गये । योगिनीबहन ने पूज्यश्री को दंडवत् प्रणाम किए । उनकी पीठ थपथपाते हुए पूज्यश्री बोले कि 'जाव बराबर बैठना । नाम तो योगिनी है नहीं तो फिर फोगिनी !'

भजन में भंग हो, वह माफ नहीं हो सकता

दूसरे दिन जल्दी सुबह लगभग साढ़े पाँच बजे पूज्यश्री भजन लिखवा रहे थे और भाईश्री रजनीभाई★ लिख लेते थे और टेप भी कर लेते थे । इतने में एक बहन चाय लेकर आये और वे बोले, 'प्रभु ! चाय लाई हूँ ।' भजन लिखवाने का पूरा होने पर आपश्री ने कहा, 'इस (चाय लानेवाली बहन) ने मेरे भजन में भंग करवाया है, वह बहुत गलत किया (बहुत गंभीरता और सख्ती से) भजन में जो भंग करवाये, वह माफ नहीं हो सकता, माफ नहीं हो सकता, माफ नहीं हो सकता ।'

कुछ देर बाद मुझे संबोधित करते हुए कहा कि 'अबे ! इतने अनुभव होने पर भी भक्ति कहाँ प्रगट हुई है ? याहोम कर के कूद पड़ने का कहाँ हुआ है ।'

जाने कैसे मेरे से हिंमत से कहा गया कि **'मोटा,** मारो न तमाचा की जिससे मुँह घूम जाय ।'

'मेरे कहे अनुसार करते हो तो मारूँ ।' फिर, डाँटते हुए बोले, 'हमसे हमारा सँभाला नहीं जा रहा है और दूसरे के पचड़े में क्यों पड़ना चाहिए ? सच्ची जिज्ञासा यदि जागृत हुई हो तो स्मरण, भजन, निवेदन इत्यादि क्यों नहीं होते हैं ?'

★वर्तमान ट्रस्टी श्रीरजनीभाई बर्मावाला

चोगिनीबहन तीन दिन बाद मौन में से बाहर आये, इससे हम पूज्यश्री के चरणस्पर्श कर के मुंबई गये ।

घूमने जाते समय भी भजन-लेखन

दिनांक २७-१-१९७४ के दिन अहमदाबाद में पूज्यश्री का दीक्षादिन कई भक्तों की ओर से मनानेवाले थे, किन्तु राजकीय तूफानों के लिए पूज्यश्री ने उत्सव बंद रखवाया । उनकी सूचना से ।

दिनांक २०-२-१९७४ के दिन मैं सुरत आश्रम पर गया, तब ही पूज्यश्री बाहर से घूमकर आये थे । उनकी व्हीलचेर में टेपरेकोर्डर रखा था, उसे दिखाकर आपश्री ने कहा कि 'घूमने जाते हुए भी भजन का काम चालू है !'

कितनी बीमारियाँ !

घूमकर आने पर तुरंत पिशाब करने जाने का श्रीमोटा का नियम । फिर मिट्टी के पींड पर गुदा का हिस्सा दबा रहे, उस प्रकार आपश्री बैठते थे, क्योंकि उन्हें गुदा के पास रीढ़ की हड्डी दर्द करती थी, वैसा आपश्री कहते थे । सेक करने की इलेक्ट्रिक थैलियाँ दोनों पसलियों के पास पूरे समय रहती । प्रवास दरमियान भी कार में ऐसी थैलिओं को गरम रखने की व्यवस्था की जाती थी, क्योंकि कार के झटके से दर्द बढ़ता जाता था । आँखों में काँचबिंद हुआ था । दिन में तीन-चार बार श्रीमोटा

आँखों को ठंडे पानी में डुबाते थे । कमर में दर्द 'स्पोन्डिलाइटीस' के कारण था ही । तदुपरांत पैर के घुटनें भी दर्द करते थे । इससे मालिश किया जाता था । सिर में पीड़ा होती थी ।

एसिडिटी के कारण तब आपश्री दूध और फलाहार ही लेते थे । रात को नींद नहीं आती थी । प्रोस्टेटग्लेन्ड की बीमारी के कारण रात को चार-छ बार पिशाब करने उठना पड़ता था । पहले तो डाहीबहन उनकी सेवा में चौबीस घंटे रहते थे । किन्तु (१९७४ में यह लेखक पूज्यश्री को मिलने गये थे) तब सुरत शहर से पुष्पाबहन दिन में आपकी सेवा करते और रात में आश्रम के कोई सेवक सेवा में रहते थे । बिस्तर में बैठने या खड़े होने के लिए किसीका सहारा लेना ही पड़ता था, तब 'फलकच्युएटिंग बी.पी.' यानी की खून के दबाव में असाधारण ऐसी कम-ज्यादा होने की तक़लीफ़ थी । डायाबिटीस तो था ही । कितनी बीमारियाँ ।

फिर भी

फिर भी पूज्यश्री मुलाकातिओं के साथ बातें करते । भक्तों की शंका का समाधान करते । सतत भजन-लेखन करते । तदुपरांत मौनमंदिर में बैठे हुए साधकों की स्थूल और सूक्ष्मरूप से सँभाल भी लेते । उनका सब कुछ ही

घड़ी की सुई के अनुसार नियमितरूप से चला करता । जैसे सूर्य, चंद्र और ग्रहों की गति एकसी, जैसे मौसम का चक्र सतत घूमता है, उसी प्रकार पूज्य श्रीमोटा का सब अखंडरूप से चला करता था ।

पत्रव्यवहार बंद

उनके कार्यक्रम में (१९७४ में जब इस लेखक ने लिखा तब) यदि कोई बदलाव किया हो तो वह एक : सब पत्रव्यवहार आपश्री देखते, किन्तु अब उन्होंने वह भी देखना छोड़ दिया है । अब सब श्रीनंदुभाई सँभालते हैं । सलाह लेने जैसी हो तो वे पूज्यश्री के पास जाकर चर्चा कर लेते हैं । इतना समय जो बचता है, उसका आपश्री भजन लिखने, लिखवाने में या तो पुस्तकों की प्रस्तावना लिखवाने में या फिर 'प्रुफ-रीडिंग' करने में उपयोग करते हैं ।

तेल मालिश

सर्दी में आपश्री शरीर पर तेल मालिश करवाते । उस प्रकार आज उन्होंने मालिश करवाया और स्नान तो देर से गरम पानी से किया था । किन्तु उसके पहले यानी कि मालिश के बाद उन्होंने बिस्तर की चद्दर खराब न हो, इसलिए कपड़े के एक टुकड़े से शरीर को अच्छी तरह पौंछ लिया, क्योंकि मालिश सुबह जल्दी होता और स्नान

देर से भोजन के पहले । इससे आपश्री उस समय दरमियान सोते-सोते भक्तों के साथ सत्संग करते थे । पहले लगभग हररोज आपश्री हजामत करवाते थे, किन्तु अब तीन दिन में करवाते हैं, क्योंकि अब आपश्री की बाहर की मुलाकातें और प्रवास बहुत कम हो गये हैं । अब वे गर्म पानी से स्नान करते हैं । जबकि पहले सुरत आश्रम में होते थे, तब श्रीझीणाकाका बाल्टियाँ भरभरकर उनके शरीर पर डालते थे । पानी प्रपात की तरह उनके शरीर पर गिरता, तब उनके दर्द होते शरीर में खास कर के पीठ और कमर के हिस्से को कुछ आराम मिलता । **साबुन का आपश्री कभी उपयोग नहीं करते थे ।**

भोजन के समय

स्नान निपटाकर आपश्री व्हीलचेर में बैठकर रसोईघर में जाते । अब यद्यपि आपश्री दाल, चावल, रोटी नहीं खाते हैं, किन्तु राब और फलफलादि लेते हैं । फिर भी सब से आगे कुर्सी पर बैठकर आपश्री बातें करते हैं, मेहमानों को बराबर भोजन करवाने की सूचना भी करते हैं । कोई आगंतुक स्वजन भाई-बहन की यदि आपश्री हलकी मज़ाक़ भी करने जैसी हो तो करे और सब को हसावे, किन्तु किसीको बुरा न लगे उसका ध्यान भी रखे । उसके बाद आपश्री एकाध घंटा आराम करने जाय । उसके

बाद चौतरा पर की खाट पर आकर सोये । अब दोपहर में किसीको आश्रम में आने की मनाई कर दी है । किन्तु बाहरगाँव से आनेवाले स्वजन पूज्यश्री के पास आकर बैठ सकते हैं और सत्संग भी कर सकते हैं । आनेवाले किसी को आपश्री उनके पत्रों की या उनके भजनों की कोपी करना हो तो वह काम बतावे और आपश्री के पास बैठकर, आगंतुक स्वजन वह-वह काम करे ।

अंदर में सब जो भरा हुआ हो, उसका उबाल आवे

प्रश्न : मोटा,' अभी कुछ स्थिर नहीं रहता है, निर्णय बराबर नहीं लिये जा सकते हैं, तो क्या करना ?

श्रीमोटा : आप कहाँ स्थिर हो कि जिसमें स्थिरता आवे ? पहले का अंदर भरा हुआ हो, वह सब मौका मिलते ही उबलेगा । वह कुछ बाहर से नहीं आता है । ऐसे समय प्रार्थना, भजन, आत्मनिवेदन, स्मरण, सत्पुरुषों का समागम इत्यादि करना चाहिए । जब साधनाकाल दरमियान मेरी ऐसी स्थिति थी, तब मैं अनेक भजन लिख लिखकर गाता था। 'केशवचरणकमल पर' में केशव को (गुरुमहाराज को) संबोधितकर जो सब प्रार्थनाएँ - ऐसी स्थिति में से निकल ने के लिए - हुई थी वही लिखी गई हैं ।'

'हाँ जी' मैंने आगे कहा कि 'मन ऐसा लुच्चा है कि हमें इधर से उधर भटकाकर भुलावे में डाल देता है ।'

तब श्रीमोटा एकदम जोश में बोले कि 'गलत बात। यदि मन मनुष्य के रूप में होता तो आपको वह तमाचा मारकर कहता कि 'गलत तो आप हो और कसूर मेरा निकालते हो ?

ऐसे वक्त पर मजबूत रहकर क्यों नहीं योग्य कदम उठाये ? हमेशा 'पोझिटिव' यानी कि रचनात्मक विचार करने चाहिए। **निम्न विचार आवे, तब अच्छी प्रवृत्ति में जुड़ जाना चाहिए या जोर से स्मरण करने लग जाना चाहिए।**

शाम को पाँच बजे आपश्री बाहर घूमने जाने को तैयार हुए। मैंने उनके चरणस्पर्श कर के उनके चरणों को चूमा। तब उनकी ओर से पीठ पर जोशीले धप्पा की प्रसादी मिली और मैंने बिदा ली।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५५)

लक्षण, क्षेत्र और दिशा उसके नहीं एकदेशीय
ऐसे को मानवी नापे, नाप कैसे सके रे ?

('जीवनपराग' पुस्तक से) – **मोटा**

हमारी इज्जत बढ़ती है

१९७४ के जून महीने में पूज्यश्री मुंबई पधारे। आपश्री

का मुकाम हरमुखभाई जोगी के वहाँ था । तब कितनेक स्वजन उनके दर्शन के लिए आये थे । चौपाटी के पास रहनेवाले श्रीवसंतभाई कोटक, सपरिवार दर्शन के लिए आये थे और कुछ देर बाद जब वे जाने के लिए खड़े हुए, तब पूज्यश्री ने उनको कहा कि 'भाई, आप ऐसे आते रहना । मुझे पसंद है । आपके आने से हमारी इज्जत बढ़ती है । बाकी मेरे पास कौन आवे ?' यह सुनकर बहुतों को हँसी आ गई । वसंतभाई ने तब कहा कि 'नहीं, नहीं, **मोटा**, इज्जत तो हमारी बढ़ती है ।'

सब उथल-पुथल हो जायेगा

किसी ने कहा **: 'मोटा,** आजकल मंदिर बहुत निर्माण हो रहे हैं ।'

श्रीमोटा : मंदिर बाँधना और यज्ञ करना वह इस समय जरूरी नहीं है । अरे ! ऐसा काल आ रहा है कि आपके मंदिर भी उखाड़ डालेंगे, सब उथल-पुथल हो जायेगा । सब साधु-संन्यासी आज लीक पर चल रहे हैं ।

एक पारसी युवान ने आकर अपने विवाह के संबंध में सलाह माँगी, तब पूज्यश्री ने कहा, 'गरीब घर की लड़की से शादी करना । पैसेवाले की लड़की सब सहन नहीं करेगी । यद्यपि सब धनवानों की लड़कियाँ ऐसी नहीं होती । कोई-कोई अच्छी भी होती है । मैं गरीब हूँ, इसलिए ऐसा नहीं कहता हूँ ।'

भ्रष्टाचार कब खत्म होगा ?

'नवनीत' मासिक की पूर्व की संपादिका श्रीमती कुंदनिकाबहन कापडिया ने पूज्यश्री को पूछा कि 'भ्रष्टाचार कब खत्म होगा ?'

श्रीमोटा : जहाँ तक लोग अंतर्मुख नहीं बनेंगे, वहाँ तक कुछ नहीं होगा । हरएक व्यक्ति दूसरे को सुधारने का विचार किए बिना, स्वयं को सुधारना, अपनेआप को सुधारना चाहिए । कितने सारे लोग भाषण कर के दूसरे सब को सुधारने का प्रयत्न करते हैं । किन्तु उससे क्या हुआ ? महात्मा गांधीजी कितना कर गये । किन्तु उससे सब सुधरे नहीं हैं । स्वराज मिला, किन्तु उथल-पुथल नहीं हुई, उसका यह परिणाम है । लोगों में सच्चा धर्म जाग्रत होगा, तब भ्रष्टाचार खत्म होगा ।

साधना के लिए श्रेष्ठ समय

दिनांक ३-६-१९७४ के दिन भाई चंद्रकान्त मेहता के वहाँ पाँच भक्त पूज्यश्री के पास बैठे थे, तब चंद्रकान्त ने पूछा, '**मोटा**, साधना के लिए श्रेष्ठ समय कौन सा माना जाय ?'

श्रीमोटा : साधना के लिए रात के बारह से जल्दी सुबह के तीन बजे तक का समय श्रेष्ठ समय माना जाता है । उस वक्त आप गुरुमहाराज को याद करोगे तो 'वह'

आपको जरूर मदद करेंगे । तब अकुलाहट जैसा लगे, नींद आवे तो भी उन सब को दूर कर के, निश्चयपूर्वक स्मरण, जप और प्रार्थना में लग जाना चाहिए । मैं स्मशान पर उसी टाईम पर जाता था । पहली बार जब मैं वहाँ गया, तब मुझे पसीना आ गया था, किन्तु मैंने जाना चालू रखा । मैं एक खंभे के साथ मेरे शरीर को बँधवा देता था, जिससे खिसक नहीं सकता था । ऐसे आदत डालेंगे तो कुछ मुश्किल नहीं है ।

सच्चे अनुभवी की सुहबत

उपरोक्त कथन के संदर्भ में कोई भाई धीरे से बोले कि युवानी के दरमियान ऐसी साधना या रतजगा हो सकता है । उम्र बढ़ने पर किस प्रकार होगा ? पूज्यश्री के कान पर ये शब्द जाने पर आपश्री ने कहा कि 'सच्चे अनुभवी की सुहबत रखते हैं, वह निरर्थक नहीं जाती है । **यह इंदुकाका और जयश्री मेरी कितनी सेवा करते हैं ? वे मुझे बहुत प्यारे हैं । इससे कोई लोग मुझे पूछते हैं कि 'इन लोगों का 'ट्रान्सफर्मेशन' – प्रकृति का रूपांतर हो गया है ?' ऐसा परिवर्तन होगा या नहीं यह अलग बात है, किन्तु उनके मृत्यु के समय कैसा होता है वह देखना ।'**

मृत्यु के समय ऐसे जीव की दशा

प्रश्न : वह किस तरह से ? क्या होता है वह समझायेंगे प्रभु ?'

श्रीमोटा : हमारे शरीर में स्थूल, सूक्ष्म और कारण ऐसे तीन शरीर हैं । स्थूल शरीर के मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् स्थूल रीति से - निम्न या ऊर्ध्व - संस्कारों अनुसार कार्य करते हैं । वह हम देख सकते हैं । सूक्ष्म शरीर है, वह अनुभवी महात्मा की सुहबत के कारण उसके चेतनवाले संस्कार जाने-अनजाने पकड़ लेता है । सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर के कर्म के साथ ऐसा संबंध नहीं है । **स्थूल शरीर से कैसे भी खराब कर्म हुआ करे, फिर भी संस्कारवशात् जीवदशावाला व्यक्ति सच्चे महात्मा का सत्संग करता होता है । (वह दूसरी कोई साधना न करता हो तो भी) इससे उसका सूक्ष्म शरीर चेतननिष्ठ के संस्कार पकड़ लेता है । इससे मृत्यु के समय पर वह इश्वर को याद कर सकता है और उसकी मृत्यु होने पर सूक्ष्म शरीर उन संस्कारों को लेकर जाता है । इससे उसकी ऊर्ध्वगति होने में मदद मिलती है । इसलिए स्थूल शरीर से चाहे जैसी निम्न प्रवृत्ति हुआ करती हो, फिर भी चेतननिष्ठ के साथ मित्रता रखकर उसकी सुहबत में रहना अत्यंत लाभदायी है।'**

उसके बाद श्रीमोटा ने उनके साधनाकाल दरमियान गुरुमहाराज श्रीकेशवानंदजी ने आपश्रीको एक मरणासन्न 'गाँव का अधम मनुष्य' कहा जाय ऐसे मनुष्य की मृत्यु समय की स्थिति देखने एक गाँव में भेजा था, वह बात

की । वह मनुष्य अंतकाल पर गुरुमहाराज श्रीधूनीवाले दादा को बहुत याद कर के प्रार्थना कर रहा था; उसके गुनाहों की माफी माँग रहा था और ऐसा करते-करते शांति से उसने आखरी साँस ली ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५६)

जीवन व्यापार करने की प्रभु ने पीढ़ी खोली है,
कुछ दिये बिना सौदा कुछ भी नहीं होनेवाला है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) - **मोटा**

श्रीमोटा को 'डायाबिटीस'

हम पूज्यश्री के पास दिनांक १४-९-१९७४ के दिन सुरत आश्रम पर गये थे । आपश्री के पाँव पड़ते हुए मैंने पूछा कि '**मोटा,** दो महीने में शरीर ऐसा क्यों हो गया ?' आपश्री ने कहा कि 'दो बार डायाबिटीस हो गया ।' आपश्री झूले पर बैठे थे और एक सेवक उनकी पीठ पर तेल मालिश कर रहे थे । आपश्री की आवाज बहुत धीमी और कमजोर थी । जबान तुतलाती थी, आँखे संकुचित और छोटी हो गई थी, फिर भी तेजस्वी थी और चेहरे पर दर्द का एक भी चिह्न नहीं दिखता था । चेहरा सदैव मुस्कराता, मज़ाक़ करता, बातें करने के लिए आतुर था । आपश्री के पैर एकदम छड़ी जैसे पतले हो गये थे । इससे

खड़े नहीं रह सकते थे । चमड़ी का रंग बदल गया था । वे कहते थे कि 'खून का पानी हो गया है ।' तदुपरांत हृदय थोड़ा चौड़ा हो रहा है । इससे डॉक्टर ने 'ट्रान्क्वीलाइझर' की (नींद आ जाय वैसी) गोलियाँ देना शुरू कर दी है । इससे नींद बहुत आती है । फिर भी नियम अनुसार सुबह चार बजे उठकर नित्यकर्म से निपटकर वापस सो जाते हैं ।

'तुम मेरी गुरु'

मुंबई से आई हुई नयना नाम की कन्या को आपश्री ने 'नयना, नयना !' कहकर स्नेह दिखाया और पूछा कि 'माँ के साथ कैसा चल रहा है ? अभ्यास एकदम अच्छा चल रहा है न ? .... पिताजी डाँटते है क्या ?' तब नयना कुछ नहीं बोलते हुए मुस्कराती रही । जब वह बिदा लेने के लिए चरणस्पर्श करने गई, तब आपश्री ने उसकी पीठ पर हाथ घुमाया और उसका हाथ थपथपाया, फिर उसका हाथ खुदने अपने सिर पर रखते हुए कहा कि 'तुम मेरी गुरु हो ।'

'यह' शरीर ज्यादा नहीं चलेगा

दिनांक २६-१०-१९७४ के दिन हम सुरत आश्रम पर थे, तब आपश्री ने कहा कि 'यह' शरीर अब टूटा-फूटा हो गया है । हार्ट को असर हुई है । चेहरा फूला हुआ और

मुस्कराता हुआ रखकर सब के साथ प्रेम से बातें करता हूँ । इससे शरीर की बीमारी और दर्द का खयाल नहीं आयेगा, किन्तु 'यह' शरीर अब ज्यादा नहीं चलेगा । १०-१२ महीने चले तो चले । तो हमारे पर प्रेम रख सको तो रखना ।' (श्रीनंदुभाई के साथ बात करने पर वे कहते कि 'ऐसा तो आपश्री बहुत समय से कह रहे हैं । किन्तु ज्यादा चिंता करने जैसा नहीं है ।')

'हुक्म हो तो...'

तदुपरांत आपश्री ने कहा, 'ईश्वर रखे वैसे रहें ।' 'उस' का हुक्म हो तो अभी शरीर छोड़ दूँ । 'उस' को प्रार्थना करता हूँ, किन्तु हुक्म नहीं है । प्रेम से सब सहन करेंगे । इसलिए सहन करने की शक्ति के लिए प्रार्थना करें ।

ऐसी स्थिति में भी आपश्री भजन लिखते । दरमियान पास बैठे हुए कई स्वजनों के लिए चाय मँगवाई । आपश्री ने बिना चीनी की चाय पी । फिर सत्संग करने का फरमाया ।

जीवनचरित्र के लिए फोटो

आपश्री के 'जीवनचरित्र' में छापने के फोटो लिए जा रहे थे, उस बाबत मैंने कहा कि 'उन सब फोटो का आल्बम बलवंत भट्ट आपको भेंट देना चाहते हैं ।' 'वह मुझे मेरी हयाती दरमियान मत देना, वर्ना मैं बेच डालूँगा !'

बनारस में पूज्यश्री को निर्गुण का साक्षात्कार हुआ था, तब आपश्री जिस मकान में थे, उस जगह का फोटो लेने का हमारा विचार था । उस बाबत में आपश्री को पूछा तब आपश्री ने कहा कि 'मुझे उस जगह के बारे में कुछ याद नहीं है । दो बार मैं वहाँ गया था और दूसरों के साथ पत्रव्यवहार भी हुआ था । उसमें जगह का पता हो सकता है, किन्तु मैंने वह पत्र सँभाल कर नहीं रखे हैं ।' और निःस्पृहरूप से बोले कि 'उस ओर के फोटो लेने मत जाना, सिर्फ यात्रा के लिए जाना हो तो जाना ।' इससे हमने बनारस के उस स्थान के फोटो लेने जाने का विचार छोड़ दिया ।

साधना के लिए दैवी सहाय

प्रश्न : मोटा, आप साधना करने जिस-जिस जगह पर जाते थे, वह किस प्रकार तय करते थे ? क्या गुरुमहाराज आपको आज्ञा करते थे ?

श्रीमोटा : मुझे उन जगहों का 'विझन' यानी कि दर्शन होता था, फिल्म की तरह मेरी दृष्टि के समक्ष आते थे । नदी, पर्वत, गुफा, जंगल, झाड़ी-टेकरे इत्यादि दिखता था । फिर मैं जगह की तलाश करता और जगह मिलने पर वहाँ साधना करने बैठ जाता था ।

प्रश्न : एकाध महीने की छुट्टी लेकर जब आप

साधना करने जाते, तब भोजन आदि का प्रबंध किस प्रकार होता था ?

श्रीमोटा : मेरे पास सामान में खास कुछ नहीं रहता था । ओढ़ने-बिछाने के लिए धोती का उपयोग करता और तकिये के लिए सपाट पत्थर जैसा रखता था । यद्यपि नींद मुझे दो-तीन घंटे जितनी आती थी । एकांत स्थान हो तो नग्न रहूँ तो भी एतराज नहीं था । भोजन के बारे में सच कहूँ । दो-चार दिन के उपवास होने के बाद कोई न कोई सब्जी-रोटी दे जाता था । मैं दे जानेवाले का आभार मानता और उसे दिन में एक ही बार भोजन दे जाने की विनती करता ।

प्रश्न : उन लोगों को आपकी उपस्थिति के बारे में किस प्रकार पता लगता था ।

श्रीमोटा : मैं भोजन लानेवाले को पूछता कि 'भाई आपको मेरी यहाँ उपस्थिति का पता किस प्रकार लगा ? मैं भूखा हूँ, उसका समाचार किस प्रकार मिला ?' तब वे कहते कि 'सपने में कोई आकर मुझे कह गया' या फिर 'आपके दर्शन हुए और फलां जगह पर आप साधना करने बैठे हो और आपको भोजन की आवश्यकता है ।' यह कैसी मेरे भगवान की कृपा ?

प्रश्न : इतने दूर जाने-आने और रहने के खर्च की व्यवस्था किस प्रकार करते थे ?

श्रीमोटा : 'मेरे बुजुर्ग जिन्हें मैं बापु कहता था (पी. एन. मेहता - कराची में सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी के मेनेजर) वे मुझे रुपये भेजते थे ।'

कामवासना

प्रश्न : कामवासना को कम करने का या निर्मूल करने का कोई उपाय है क्या ?

श्रीमोटा : कामवासना को प्रोब्लेम, महा प्रश्न के रूप में क्यों मानते हो ? उससे घबराना नहीं । वह भी शरीर का एक धर्म है । जैसे-जैसे सात्त्विक गुण बढ़ते जायेंगे, वैसे-वैसे कामवासना कम होती जायेगी । वासना को उत्तेजित करे वैसा वाचन, वैसी फिल्में और वैसी सुहबत छोड़ दो । सत्त्वगुण बढ़े वैसा प्रयत्न किए बिना कुछ नहीं होगा । ऐसे समय खास जाग्रति रखनी चाहिए ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५७)

एक रात में जीवन बदल नहीं सकेगा । 'एक पल में सब बदल जाता है,' ऐसा जो कई बार कहने में आता है, उसमें अत्युक्ति साधारणतः होती है । स्वभाव का रूपांतर एकदम संपूर्णरूप से नहीं होता है ।

('जीवनपराग' पुस्तक से) - **मोटा**

प्रकृति

एक नवयुवान व्यापारी व्यापार में एकाएक बहुत कमाने पर पूज्यश्री को अंजलि भर-भर कर दान देवे और स्वगृह में उनकी पधरावनी कर के सुंदर सत्कार करे । ऐसा लगभग चार वर्ष तक उनका सत्संग चला होगा । एक बार सात दिन के लिए मौन में भी बैठ गये थे । उसकी भक्ति गजब की दिखती थी । कौटुंबिक रीति से बहुत सुखी थे । छ व्यक्ति का परिवार । समाज में अच्छी प्रतिष्ठा । बुद्धिमान, मधुर वाणी और आकर्षक व्यक्तित्ववाला यह युवान पूज्यश्री पर जैसे कुरबान हो गया था और पूज्यश्री भी उसके पर प्रेम बरसाते थे ।

दरमियान प्रकृति के खेल शुरू हुए । उसके जीवन में प्रेमत्रिकोण रचाया । पत्नी को तलाक़ देकर दूसरी युवती के साथ विवाह करने का उसने तय किया । कुटुंबीजन इससे बहुत दुःखी हुए ।

एक दिन वह भाई पूज्यश्री की अनुमति लेने गये । श्रीमोटा ने साफ मना किया । श्रीमोटा पैसे से खरीदे जाय वैसे महात्मा नहीं थे ।

इससे भाईसाहब की कमान छटकी । पूज्यश्री की ओर से मुख मोड़ लिया । पत्नी को तलाक़ देने की प्रवृत्ति जोर से शुरू की । उसके स्वजन पूज्यश्री को कुछ करने की

प्रार्थना करते थे। श्रीमोटा ने उनको केवल प्रार्थना, सचमुच प्रार्थना किया करने की सलाह दी ।

पत्नी लाचार होकर तलाक़ लेने को तैयार हो गई । उसके लिए सब एक दिन सोलिसिटर की ओफिस में एकत्रित हुए। चर्चा दरमियान उस युवती के साथ भाईसाहब की उग्र चर्चा हुई । किसी भी कारण से और तकरार लगभग मारपीट तक पहुँच जाय वैसी स्थिति हो गई । परिणाम स्वरूप वह युवती ओफिस छोड़कर चली गई ! उसकी आँख खुल गई ! परिणाम स्वरूप तलाक़ की बात खत्म हो गई ।

हमारे भाईसाहब ने उसके बाद अपने स्वजनों का त्याग कर के अन्यत्र भटकना शुरू किया । अपने व्यापार धंधे की बरबादी कर दी । देनदार हो गये । अंत में बहुत दुःखी हुए। अब कई वर्षों के बाद उन्हें अपने घर वापस लौटना है, किन्तु बड़ी उम्र के बेटे पिता का सत्कार करने, स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं, फिर भी उसकी पत्नी और सगे भाई बहन उसकी मदद कर रहे हैं ।

अब उस भाई को जाननेवाले कई ऐसा प्रश्न पूछते थे कि जिस व्यक्ति ने श्रीमोटा को दानगंगा से नहला दिया था, उसकी बुद्धि को विकृत हो जाते, उसकी गाड़ी उलटी पटरी पर जाते समय उन्होंने क्यों नहीं बचा लिया ?

पूज्यश्री ने जवाब दिया :

'जो लोकोत्तर है, उसका मन परखने सही
– वह शक्तिमान है कौन ? मानवी की नहीं बिसात ।'

पूज्यश्री क्या कर सकते ? वे कोई जादूगर नहीं हैं कि 'एक दो तीन' कहकर वैसे मनुष्य को बकरा बना देवे । ऐसा चमत्कार कोई महात्मा नहीं कर सकते हैं, करेंगे भी नहीं । प्रकृति ज्यों की त्यों, अपनेआप, एकाएक बदलती नहीं है, चमत्कारों से वह नहीं सुधर सकती है ।

पूज्यश्री ने एकबार बहुत दुःख के साथ कहा भी था कि 'मुझे उसका दुःख है कि आपके कर्म आड़े आने के कारण आपका दुःख दूर नहीं कर सकता हूँ ।'

फिर भी देखिए, उस युवती की बुद्धि रहस्यमय तरीके से घूम गई । तलाक़ की बात सदा के लिए बंद हो गई । उसकी पत्नी उसके बेटों के साथ उपरी तौर पर आराम से दिन बिता रही है । पुलिस और कोर्ट के चक्कर (पति के कारण) खाते हुए भी हिंमत से, हुशियारी से, निर्भयता से तरह-तरह के दबाव और धमकिओं की परवाह किये बिना ! उतना कम है ? इसमें पूज्यश्री की शक्ति का, परमेश्वर की कृपा का कितना हिस्सा होगा वह कौन जानता है ? श्रीमोटा को कभी-कभी ऐसा बोलते सुना है कि 'हमारे पेट में पड़ा हुआ किसीका नमक हम भूल नहीं

सकते हैं । उसका बदला ईश्वर उसकी रीति के अनुसार दिये बिना नहीं रहेगा ।'

एक दूसरी बात याद रखने जैसी है । उस भाई के ओवर फ्लोईंग कलकल ध्वनि के साथ बहते हुए भाव के कारण पूज्यश्री उससे बहुत स्नेह करते थे और उस कारण सूक्ष्म शरीर में पड़े हुए चेतन के संस्कार एक दिन उदय हुए बिना नहीं रहेंगे । इस मतलब का कथन आपश्री को कई बार ऐसी दूसरी सभी घटनाओं के संबंध में करते हुए सुना है ।

■

॥ हरिःॐ ॥

(५८)

वह है प्रताप 'पद की रज-धूलिका का,
ढ़ोल बजाकर जगत को कहता हूँ - ध्यान देना ।'

– **मोटा**

देहत्याग करने का निर्णय

पूज्यश्री श्रीमोटा ने १९७४ से पत्र लिखना बंद कर दिया था । स्वजनों को मिलने आने की और पत्र लिखकर समाचार पूछने की मनाई कर दी थी । नामस्मरण और सत्कर्म करने की जो सलाह उन्होंने दी थी, उस प्रकार आचरण करने के लिए सब स्वजनों को भारपूर्वक बता

दिया गया था । आपश्री ने समाचारपत्र भी पढ़ना छोड़ दिया था । १९७६ में उनके शरीर की बीमारी असहनीय दर्द देने लगी थी और शरीर की सेवा दूसरों के सहकार से लेनी पड़ती थी । इससे आपश्रीको लगा कि 'इस' शरीर का उपयोग करवाने की अब ईश्वर की इच्छा नहीं है । इससे आपश्री ने अपने देह का त्याग करने का मन से निश्चय कर लिया ।

अंतिम गुरुपूर्णिमा

आपश्री गुरुपूर्णिमा के दिन सामान्य रूप से त्रिचि और कुंभकोणम् आश्रम पर रहते थे । किन्तु १९७६ की गुरुपूर्णिमा के दिन उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण आपश्री सुरत आश्रम पर ही रहे । **वैसे तो आपश्री यह गुरुपूर्णिमा गुजरात के किसी अज्ञात स्थल पर रहकर बिताना चाहते थे, किन्तु सुरत के कुछ भक्तों ने गुरुपूर्णिमा के निमित्त से रुपये पचीस हजार इकट्ठे कर के अर्पण करने की तैयारी दिखाई, इससे आपश्री रुक गये थे ।** ऊपर से इस दिन की पीछली रात को पूरे गुजरात में मूसलाधार बारिश हुई थी और सभी रास्ते लगभग बंद हो गये थे । फिर भी पूर्णिमा की जल्दी सुबह लगभग ढ़ाई सौ जितने स्वजन आश्रम पर पहुँच गये और गुरुवंदना कर के लगभग एक लाख रुपये अर्पण किये ।

नड़ियाद आश्रम पर अंतिम दिन

दिनांक ११-७-१९७६ की सुबह सात बजे पूज्यश्री नड़ियाद जाने के लिए निकले, किन्तु चारपाँच घंटे बाद सुरत आश्रम वापस आये । क्योंकि बारिश के पानी के कारण रास्ते बंद थे । दूसरे दिन (दिनांक १२-७-१९७६) रास्ता खुलने पर आपश्री शाम को नड़ियाद आश्रम पर पहुँचे ।

दिनांक १६ को उनका प्रोस्टेट का दर्द बहुत बढ़ गया और पिशाब बंद हो गया । बारिश के कारण रास्ते बंद जैसे थे, फिर भी नडियाद के एक किडनी स्पेशियालिस्ट डॉक्टर को बुलाया गया । १७वीं को डॉक्टर आये और श्रीमोटा के शरीर की जाँच की । डॉक्टर ने श्रीमोटा के साथ बात कर के उनकी परिस्थिति जानी, किन्तु वे वैसे कोई साधन लेकर नहीं आये थे कि जिससे श्रीमोटा को तुरंत पिशाब करा सके, इससे श्रीमोटा की स्थिति विषम बनी ।

दूसरे दिन पूज्यश्री के पहचानवाले डॉ. वीरेन्द्र देसाई सभी साधन और संपूर्ण तैयारी के साथ शाम को चार बजे आश्रम पर आने के लिए निकले । सड़क से आश्रम आने के खेतों में से निकलते हुए रास्ते पर कीचड़ में पैदल चलते हुए वे आश्रम पर आ पहुँचे और पूज्यश्री की अनुमति लेकर उन्होंने दो ही मिनट में केथेटर द्वारा लगभग दो लिटर जितना पिशाब बाहर निकाला ।

१९ वीं तारीख को आपश्री ने अंतिम संदेश सोते-सोते लिखकर श्रीनंदुभाई को अपने चश्मेघर में रखकर दिया । जो निम्नानुसार था ।

वसियतनामा

॥ हरिःॐ ॥

जिस किसीको इस विषय में संबंध हो उनके लिए -

मैं चूनीलाल आशाराम भगत उर्फ़ **मोटा** निवासी हरिःॐ आश्रम, नडियाद लिखता हूँ कि मेरी राजीखुशी से अपने आप मेरे देह का त्याग करने की इच्छा रखता हूँ । यह देह बहुत रोगों से घिरा हुआ है । अब लोककल्याण के काम में आ सके वैसा नहीं है । रोग ठीक होने की आशा भी नहीं है । इससे आनंदपूर्वक देहत्याग करना उत्तम है, और उसके लिए योग्य पल पर मैं वैसा कर लूँगा ।

मेरे शरीर का अग्निसंस्कार एकांत में शांत जगह पर मृत्युस्थल पर बिलकुल पास में करना । और वह भी आप छ जने की उपस्थिति में ही करना । ज्यादा इकट्ठे नहीं करना, वैसा मेरे सेवकों को मैं फरमाता हूँ ।

मेरे अस्थि को भी नदी में संपूर्णरूप से बहा देना ।

मेरे नाम का ईंट-चूने का कोई स्मारक नहीं करना । **मेरे मृत्यु के निमित्त जो कुछ फंड इकट्ठा हो, उसका उपयोग गाँवों में शाला के कमरे बँधवाने में करना ।**

चूनीलाल आशाराम भगत उर्फ़ 'मोटा'

दिनांक १९-७-१९७६

श्रीमोटा ने माया का समापन किया

जुलाई २१ की शाम को श्रीमोटा ने उनकी सेवा में रहनेवाले श्रीराजुभाई को बुलाकर कहा, 'मुझे व्हीलचेर में बिठाकर पूरे आश्रम में घूमा दो ।'

राजुभाई ने श्रीमोटा को पहियेवाली कुर्सी में बिठाकर प्रदक्षिणा करते हो वैसे आश्रम के चारों और घूमाया । श्रीमोटा पौधे, वृक्ष, मकान जो आता जाता था, उसे प्रणाम करते-करते आगे बढ़ते जाते थे । ऐसा करते-करते श्रीमोटा हररोज नहाते थे, उस टब के पास आये, तब उन्होंने राजुभाई से ऐसा कहा कि 'मेरे नाहने का यह टब वैकुंठकाका का है । कल जल्दी से उनके वहाँ पहुँचा देना ।'

अशुभ के निशान

आगे से निश्चित हुए अनुसार जुलाई २२ को जल्दी सुबह आश्रम से फाजलपुर जाने के लिए पूज्यश्री तैयार हुए । बारिश मुसलाधार हो रही थी, फिर भी वे रुके नहीं । श्रीमोटा ने रामभाई और राजुभाई को पुकारा और कहा, 'मुझे तिरपाल के नीचे लेकर कार में बिठा दो । एकदम जल्दी । बिलकुल देर मत करना ।' तुरंत श्रीमोटा के ऊपर तिरपाल रखकर उन्हें कार के पास ले गये और कार में बिठा दिया । दो कार की गई थी । श्रीनंदुभाई, श्रीरामभाई पटेल, डॉ. कांताबहन पटेल और श्रीराजुभाई आदि साथ

में थे । कार जैसी आश्रम के दरवाजे में से निकली कि तुरंत ही आश्रम की लाईट बंद हो गई । श्रीगोरधनकाका के मुख से सहज उद्‍गार निकल गया कि 'नडियाद आश्रम पर श्रीमोटा अब वापस नहीं आयेंगे ।'

यह प्रसंग सूचक इसलिए है कि श्रीमोटा के मातुश्री नड़ियाद में गंभीर बीमारी में थे, तब श्रीमोटा बनारस में जिस कमरे में प्रार्थनामय स्थिति में थे, तब बिजली एकाएक बंद हुई और श्रीमोटा जान गये कि नडियाद में माँ ने देह त्याग दिया ।

हंस की उड़ान

पूज्यश्री ने श्रीनंदुभाई को फाजलपुर पहुँचने पर सूचन किया कि रमणभाई अमीन (एलेम्बिक कोमिकलवाले) को पूछकर देखो कि '**मोटा,** आज अपना देह उनके बंगले में त्याग करनेवाले हैं, यदि उनकी अनुमति हो तो ठीक है वर्ना सुरत आश्रम पर जाकर त्याग करेंगे ।' श्रीनंदुभाई ने रमणभाई से बात की । तब सेठ रमणभाई पलभर के लिए तो स्तब्ध हो गये, किन्तु तुरत ही कहा कि 'यह घर पूज्यश्री का ही है । उनकी इच्छानुसार आपश्री कर सकते हैं ।'

बात पक्की हो गई । इससे सब अपने-अपने काम पर लग गये । श्रीमोटा ने चश्मे, माला और घड़ी श्रीरामभाई

को देते हुए कहा कि 'भाई को दे आईये ।' श्रीरामभाई ने वैसा किया ।

सामान्य रीतिरिवाज के अनुसार श्रीमोटा कुछ काम हो तो यह वस्तुएँ उनकी सेवा में रहनेवाले भाई या बहन को देते और काम पूरा होने पर वापस ले लेते थे । उसके बदले आज ये वस्तुएँ नंदुभाई को क्यों दी गई ? श्रीनंदुभाई तुरंत श्रीमोटा के पास गये तो श्रीमोटा ने नंदुभाई से कहा, 'आज चार बजे के बाद मैं देहत्याग करूँगा ।'

श्रीनंदुभाई ने कहा कि '**मोटा,** अभी बारिश बहुत है । शरीर का अग्निसंस्कार करने में तक़लीफ़ होगी । तो कुछ ज्यादा समय बिताइये तो...'

'नहीं, पूज्यश्री ने जोर देकर कहा कि 'अग्निसंस्कार करने की स्थिति न हो तो शरीर को मही नदी में धकेल देना ।' *धीस इज नोट ए मेटर ओफ डिस्कशन'* (यह चर्चा का विषय नहीं है) आपश्री का निश्चय अटल था ।

फाजलपुर के फार्महाउस का नामकरण नहीं हुआ था था । उसका नाम लिखी हुई तख़्ती आ गई थी । नाम रखने में आया था 'हरिस्मृति'। श्रीमोटा को वह दिखाई गई । श्रीमोटा ने कहा 'अभी ही वह लगा दो ।'

तुरंत उसकी व्यवस्था की गई । मकान को 'हरिस्मृति' की तख़्ती लग गई और फार्महाउस 'हरिस्मृति' में बदल

गया । श्रीमोटा हरि के घर जानेवाले थे, उसी दिन यह हुआ यह भी एक संजोग ही है न !

आपश्री ने दस बजे थोड़ासा भोजन लिया । दूसरों को भोजन करने को कहा । फिर बरामदे में सोये । तीन बजे सोते-सोते दाहिनी करवट पर सोकर कुछ पत्र और चिट्ठियाँ लिखकर भी नंदुभाई को दी ।

चार बजे पूज्यश्री ने श्रीरमणभाई और राजुभाई को उन्हें व्हीलचेर द्वारा अंदर की रूम में ले जाकर पलंग पर सुलाने का कहा । उस प्रकार वे पलंग पर सो गये । उसके बाद उन दोनों को बाहर जाने और श्रीनंदुभाई को अंदर भेजने का कहा । आपश्री ने श्रीनंदुभाई को कुछ भी पूछना हो तो पूछ लेने का कहा । तब भाई (श्रीनंदुभाई) इतना ही बोले कि 'मेरी शक्ति होगी वहाँ तक आश्रम की सेवा करूँगा★ ।'

श्रीनंदुभाई ने आपश्रीको पूछा कि 'आपको पिशाब के लिए यह केथेटर रखा है और प्लास्टिक की थैली बांधी

★ इससे पहले श्रीनंदुभाई ने कई बार पूज्यश्री को कहा कि, 'आपकी उपस्थिति नहीं होगी, तब मैं आश्रम छोड़कर चला जाऊँगा ।' आपश्री यह सुन लेते ऐसा श्रीनंदुभाई ने कहा था । किन्तु जाने कैसे पूज्यश्री की अंतिम घड़ी पर उनके मुँह से अचानक यह शब्द निकल पड़े कि 'मेरी शक्ति होगी, वहाँ तक आश्रम की सेवा करूँगा ।'

है, वह निकाल लेवे ?' पूज्यश्री ने कहा कि 'नहीं, उसे मत निकालना । वह तो मेरी जीवनसंगिनी है ।' श्रीनंदुभाई से बातचीत पूर्ण होते ही उन्होंने रमणभाई, धीरजबहन, रामभाई, डॉ. कांताबहन और राजूभाई को भी कमरे में बुलवाया । उसके बाद वे आखरी बार बोले, 'अब मुझे कोई बुलाना नहीं और छूना भी नहीं । तुम्हें अंदर बैठना हो तो अंदर बैठो । बाहर जाना है तो बाहर जा सकते हो ।'

आपश्री ने दोपहर बाद ४-२० बजे आँखें बंद की । सभी ने कमरे में बैठना ही पसंद किया । सब यहाँ वहाँ बैठकर 'हरिःॐ' का स्मरण करने लगे । श्रीनंदुभाई पूज्यश्री के पलंग के पास एक स्टूल पर बैठकर 'हरिःॐ' 'हरिःॐ' जपने लगे । आठ घंटे बीत गये, तब श्रीनंदुभाई को सहज प्रेरणा हुई और उन्हें लगा कि पूज्यश्री १-३० बजे (जल्दी सुबह) देह का त्याग कर देंगे★ ।

रात के साढ़े बारह बजे डॉ. कांताबहन ने श्रीमोटा की नाड़ी की धड़कन गीनी थी । जो ३०-३५ तक थी, और १-२५ बजे धड़कन बंद हो गई थी । 'स्टेथोस्कोप' से भी पता लगा कि हृदय बंद हो गया था । पूज्यश्री के ओठ थोड़े खुल गये थे । उसके सिवा शरीर में कहीं खिंचाव

★श्रीअरविंद ने भी शुक्रवार सुबह १-३० बजे देहत्याग किया था । तदुपरांत आपश्रीको भी प्रोस्टेट का दर्द था ।

या दूसरा कोई भी चिह्न नहीं था । सुबह छ बजे तक में आपश्री का शरीर में कोई बदलाव नहीं हुआ था ।

दिनांक २३-७-१९७६ के दिन श्रीनंदुभाई ने १-३० से ५-३० बजे तक में जो संदेश और पत्र लिखने थे, वह लिखकर पूरे किये ।

अस्थि विसर्जन

सुबह छ बजे के बाद पूज्य श्रीमोटा के शरीर को श्री रमणभाई के बंगले के पीछे मही नदी के किनारे की कगार पर चिता तैयार कर सुलाया गया । बारिश बंद हो गई थी । घी का दीया नहीं, अगरबत्ती नहीं, चंदन का टुकड़ा भी नहीं । श्रीमती धीरजबहन अमीन के आग्रह से श्रीमोटा के शरीर को मात्र 'स्पन्ज' किया गया था । श्रीरामभाई पटेल ने सूचन किया कि '**मोटा** तो नंगेबाबा की जमात के । इतनी लुंगी की भी क्या जरूरत है ?' इससे आपश्रीकी लुंगी भी निकाल ली गई, और श्रीरमणभाई द्वारा अंतिम अग्निसंस्कार हुआ । लगभग एक घंटे में पूज्यश्री का शरीर संपूर्ण रूप से मिट्टी में मिल गया । आपश्रीकी आज्ञा अनुसार अस्थि-राख फ़ावड़े से खींचकर मही नदी में पूर्णरूप से समर्पित कर दिये गये । हरिः ॐ तत् सत् ।

सुबह ९-४५ बजे प्रसाद लेकर सब बिखरे । श्रीरमणभाई और श्रीमती धीरजबहन वडोदरा गये । बाकी के सब नडियाद आश्रम पर गये । प्रथम श्रीनंदुभाई ने अकेले आश्रम में प्रवेश किया । आश्रमवासिओं को आश्चर्य हुआ । भाई ने (नंदुभाई ने) सब को समाचार दिये कि '**मोटा** ने देहत्याग किया और उनके शरीर का अग्निसंस्कार कर के वापस आये हैं ।'

इस प्रकार पूज्य श्रीमोटा ने एक महायोगी की तरह निरुपयोगी हो चुका शरीर, अंग पर के वस्त्र उतारकर के फेंक देते हैं वैसे स्वेच्छा से त्याग दिया और अति विशाल फलक पर काम करने के लिए महाप्रयाण किया । यह हकीकत समाज की आँखें खोलनेवाली हुई है । वह तो आपश्री के देहोत्सर्ग के बाद आपश्री की कल्याणकारी योजनाओं के लिए समाज की ओर से बहनेवाली दानगंगा उसकी साक्षी है ।

॥ हरि:ॐ ॥

■

॥ हरिःॐ ॥

श्रीमोटा ने अपना देहत्याग की प्रक्रिया प्रारंभ करते पहले (२२-७-१९७६) चार बजे छोटे-छोटे सात पत्र लिखे थे, यहाँ निम्नानुसार है ।

(१)

॥ हरिःॐ ॥

जिस-जिस ने मुझे मदद की है, मेरा काम किया है उन-उन का आभार मानता हूँ । भगवान उनका यश-कल्याण करो ।

(२)

॥ हरिःॐ ॥

हमारा हमने छिपा रखा नहीं है,
सब खुलकर सरल-सरल रीति से लिखा ।
नहीं लिखा हुआ, नहीं विद्वानों ने, नहीं कविओं ने
कभी भी नहीं लिखा है ।
हमने अपने आप तो कभी नहीं लिखा है
कभी किसीके कहने से और पैसे उसके देने से
हमने उसका वैसा लिखा है ।

(३)

॥ हरिःॐ ॥

कभी भी गुजराती साहित्य में न लिखा हुआ लिखा ('निमित्त', 'श्रद्धा', 'श्रीसद्गुरु', 'भाव', 'रागद्वेष', 'स्वार्थ')
ऐसा ऐसा किसीको सूझा और लिखा ।

(४)

॥ हरिःॐ ॥

उसका यश मेरे प्रभु को जाय ।
कभी विचारकर के लिखा नहीं ।
हरएक काव्य थोड़े समय में लिखा था,
और वह भी लेखन के पैसे मिले हैं तब ।

दिनांक २२-७-१९७६ - **मोटा**

(श्रीमोटा का पूर्वोक्त लेखन उनके पुस्तकों के संबंध में है । कोई जिज्ञासु अध्यात्ममार्ग के विषयक विषयों पर लिखने का पूज्यश्री को सूचन करे, विनती करे, तब आपश्री दान लेकर लिखे । यद्यपि वह पैसे तो हमेशा सामाजिक उन्नति के कार्यों के पीछे ही उपयोग किये जाते थे, यह आश्रम के हिसाब की बही साक्षी है ।)

(५)

॥ हरिःॐ ॥

हुलास से हमने किया है,
निराशा को तो हमने सपने में भी नहीं जानी है,
आये हुए काम को पूरे हर्ष से स्वीकार किया है,
गुरुमहाराज के हुक्म को हृदय के आनंद से पालन किया है ।

(६)

॥ हरिःॐ ॥

गुरुमहाराज जीवंत प्राणी है ऐसा नहीं है ।
वह तो उन्हें या हमें जरूरत हो
मनुष्य जैसे होकर हमारे सामने होकर
जो भी हमारा सुलझा देते हैं ।
सही समय पर सही समय के भक्त का
न रोक के रखते हैं ।
निज के भक्त का काम कभी भी न रोकते हैं ।

– मोटा

(७)

॥ हरिःॐ ॥

सही समय पर सही समय के
भक्त का न रोक के रखते हैं
निज के भक्त का काम कभी भी
न रोकते हैं ।

दिनांक २२-७-१९७६ **– मोटा**

❑

परिशिष्ट

॥ हरिःॐ ॥

श्रीमोटा के वक्तव्य

पूज्य श्रीमोटा देह में थे, तब उनके जीवन के चार में से तीन दिन दीक्षादिन (वसंतपंचमी), निर्गुण साक्षात्कार (नया अवतार दिन (रामनवमी) और जन्मदिन (भादौ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी)★ उनके भक्तों के द्वारा सार्वजनिक रूप से मनाये जाते थे । गुरुपूर्णिमा का दिन कौटुम्बिक रूप से अधिकतर कुंभकोणम्, त्रिचि में मनाया जाता था । किसी भी भक्त को गुरुपूर्णिमा के दिन कुंभकोणम्, त्रिचि जाने की सख्त मना थी । (उस समय आपश्री ने दिये हुए व्यक्तव्य का सार जो अन्यत्र विगत से नहीं लिखे गये हैं, वे यहाँ प्रस्तुत हैं । उनके देहविलय के बाद मात्र साक्षात्कार दिन (रामनवमी) और जन्मदिन मनाये जाते हैं ।

दीक्षादिन (वसंतपंचमी)

दीक्षा का अर्थ जीवदशा की स्थिति में से उच्च विकास की स्थिति में गतिमान होने का कदम ।

भगवान के लिए जिसमें ज्वालामुखी जैसी तमन्ना हो, उसका इसमें काम है । तो दूसरों को क्या हाथ जोड़कर

★निर्गुण साक्षात्कार दिन के मिलन समारंभ के समय दिया हुए व्याख्यान अन्यत्र आ गया है । इससे फिर से नहीं उतारा है ।

बैठे रहना चाहिए ? नहीं, नामस्मरण करो, भजन करो, सत्संग करो, सत्कर्म करो, चित्तशुद्धि करो ।

जप में सिद्ध हो जाओगे तो ध्यान में सहजरूप से जा सकोगे । बाकी नींव का काम किये बिना, चित्तशुद्धि किए बिना ध्यान करने के और कुंडलिनी जाग्रत करने के लोभ में मत पड़ना । वह व्यर्थ प्रयास है, मिथ्या प्रयत्न । यह मार्ग संग्राम खेलने का मार्ग है । संग्राम के बिना शक्ति नहीं मिलेगी ।

नामस्मरण से कामक्रोधादि फीके होंगे ? हाँ, जब शब्द में सततता प्रकट हो, तब आकाशतत्त्व विकसित हो और आकाशतत्त्व विकसित होगा, तब सत्त्वगुण प्रगट होगा और तब ही रजस और तमस फीके होंगे । इससे प्रकृति को जैसी है वैसी रखकर भगवान के मार्ग पर नहीं जा सकेंगे ।

सच्ची जिज्ञासा होगी तो सच्चा गुरु मिलेगा । किन्तु गुरु के लिए जहाँ-तहाँ व्यर्थ प्रयास मत करना, नहीं तो भटक जाओगे ।

महात्मा से, सद्‌गुरु से हमें लाभ कब मिलता है ? उसका हम निमित्त हो तब । उसमें हम सराबोर हो गये हो तब । ७-११-१९६६ के दिन एक भाई का रेलवे दुर्घटना में पैर कट गया था और आठ पसलियाँ टूट गई थी । उसी पल 'हरिःॐ' का जप हुआ और सद्‌भाग्य से बच गए ।

॥ हरि:ॐ ॥

गुरुपूर्णिमा दिन

मूर्तिपूजा का आरंभ

वेदकाल में गुरु की प्रथा नहीं थी, तब ऋषि थे, गुरुकुल थे । शिष्य पढ़ने के लिए वहाँ जाते, किन्तु भावना का जैसे-जैसे पतन होता गया वैसे-वैसे भावना का मिडियम-वाहन सूक्ष्म में से स्थूल होता गया । उस भावना की कोमलता रखने के लिए मूर्तिपूजा का आरंभ हुआ । उन लोगों ने जीवन का स्वीकार किया था । उसके बाद की अवधि में संसार मिथ्या होने का विचार उत्पन्न हुआ । शंकराचार्य ने यह कहा, किन्तु वह सब रिलेटीव-सापेक्ष है।

अणु-परमाणु का खेल

चेतन की अपेक्षा से जगत मिथ्या है । उसका रहस्य अलग है । जो कुछ दिखता है, वह सब अणुपरमाणु का बना हुआ है । उदाहरण के लिए सोना वह पारे के अमुक प्रमाण में से बना हुआ है । उस प्रमाण में कम ज्यादा हो जाय तो सोना, सोना नहीं रहेगा । इस प्रकार पूरा खेल अणुपरमाणु का है । इससे अनुभवी पुरुषों ने कहा कि 'यह जगत मिथ्या है, फिर भी यह सब चेतन से भरा हुआ है और इससे दृश्यमान है ।'

संसार मिथ्या नहीं है

प्राचीन ऋषिमुनिओं ने संसार को 'मिथ्या' नहीं कहा था। वे प्रजोत्पत्ति भी करते, किन्तु वह कामवासना से प्रेरित होकर ऐसा सुख नहीं भोगते थे। चेतना की भावना से प्रेरित होकर, वह संस्कार चालू रखने के लिए संतान पैदा करते थे। यह भाव हमारी समझ में शायद न आवे, फिर भी वह हकीकत है।

गुरु का अर्थ समझने जैसा है। जिस ने सगुण और निर्गुण (चेतन) का अनुभव किया है, वह गुरु। शंकराचार्य वे द्वैतवादी थे। उन्होंने निर्गुण का अनुभव किया था। अंत में श्रीनगर में उनको सगुण का भी अनुभव हुआ था। ऐसे जबरदस्त अद्वैतवादी ने कितने सारे और सुंदर भक्तिस्तोत्र की रचना की है। तदुपरांत श्रीनगर में पंचायतन (विष्णु, शिव, पार्वती, गणेश और सूर्य) की प्रतिष्ठा की। इस प्रकार निर्गुणवादी को नीचे उतरना पड़ा। सगुण में, क्योंकि भावना को पकड़ने के लिए कोई साधन तो देना ही चाहिए। तदुपरांत, समाज ऐसा उच्च ज्ञान समझ नहीं सकेगा। इस प्रकार उन्होंने जीवन का स्वीकार किया।

– तो इंद्रियों को संकोचा जा सकेगा

शंकर भगवान के मंदिर में दृष्टि डालें तो एक सुंदर नंदी है और उसके पास कछुआ है। चौमासा चरा हुआ,

मदमस्त साँड़ हो, किन्तु जिसका मुख महादेव तरफ घूम जाने पर उसकी इंद्रियाँ कछुए की तरह संकुचित हो जाय, अंतर्मुख हो जाय और विकास सध जाय, वैसे हम नंदी जैसी जीवदशा में प्रसन्न रहनेवाले ईश्वर की ओर मुख घूमा दें तो कछुए की तरह इंद्रियों को सकेल सकते हैं और जीवनविकास साध सकते हैं । यह महादेव के नंदी और कछुए के प्रतीक की बात हुई ।

मेरे शरीर की यह आखरी (१९६५-७०) अवधि है । इस दरमियान आपका प्रेम संपादन कर लूँ यही एक मेरी इच्छा है । **आप सब पैसे देते हो, किन्तु वह मेरा मुख्य कर्तव्य नहीं है । आप में भगवान के संबंध में भाव प्रगट हो, यह देखना मेरा मुख्य कर्तव्य है ।**

अनुभवी को पहचाना जा सकता है ?

मैं तो भगवान का मुनीम हूँ । समाज का कारकुन हूँ । मुझे कोई गुरु के रूप में पूजाना नहीं है । फिर भी जब आप सब मेरे पास आते हो, तब मुझे आपको कुछ कहना चाहिए । बहुत से पूछते हैं कि अनुभवी आत्मा को पहचाना जा सकता है ? हाँ, क्यों नहीं पहचाना जा सकता है ? उसके लक्षण होते हैं । उसे कौन पहचान सकता है ? जिससे दीर्घकाल तक, प्रेमभक्तिपूर्वक, सद्‍भाव से संग किया हुआ परिचय हो तो उससे वैसा आत्मा पहचाना जा सकता है ।

उसके लक्षण

शरीरधारी, अनुभवी आत्मा निमित्त मिले तो अचेतन को भी चला सकता है । ज्ञानेश्वर महाराज ने चबूतरा को चलाया था । मेरे मौनमंदिर में (नड़ियाद आश्रम में) चबूतरा चारों तरफ से हिल गया था । पूछीए रमाकांत जोषी को । यों चेतनवाले सत असत दोनों में व्याप्त होते हैं । उन्हें स्थल-काल की मर्यादा नहीं होती । वह अनेक शरीर एक साथ ले सकता है । दिलीप (मणियार) को मेरे दो शरीर दिखे थे । उस एक्साइज कलेक्टर को मौन में 'मोटा' दिखे थे । मौन में बैठनेवाले को चेतना के साथ संपर्क होता है । ऐसा सब आपको★ ही कहता हूँ, क्योंकि आप मेरे स्वजन हो और आपका हित मेरे दिल में है ।

संबंध की शृंखला

शरीरधारी महात्मा को प्रारब्ध होता है सही, किन्तु वह जली हुई रस्सी की ऐंठन जितना हलका, पतला । उसके कारण उसे निमित्त मिलता है, किन्तु जो चेतन है, उसे प्रारब्ध नहीं है । फिर भी मुक्तात्मा को बंधन नहीं होता ।

ऐसे महात्मा निमित्त के कारण मिलते हैं । श्रीबालयोगी महाराज को मैं पहचानता नहीं था, फिर भी आपश्री साबरमती के किनारे (अहमदाबाद) बैठकर मुझे (नडियाद

★श्रीनंदुभाई के मामा, भाई, भतीजे आदि

में से) बुला रहे थे । इस प्रकार सब का पूर्व संबंध है, यह दर्शाता है । वह संबंध की एक शृंखला है । उसका हमें पता नहीं होता है ।

कालपुरुष पकेगा

यह सब कहने का हेतु एक ही है । आपका नमक मेरे पेट में पड़ा है । इससे मेरा कर्तव्य आपको जाग्रत करने का है । मैं किसीको बुलाने नहीं गया था । सब अपनेआप मिले हो और मिलोगे । मैंने ऐसी बात दूसरी किसी जगह पर नहीं कही है ।

इसलिए बहुत देर हो जाय, उसके पहले भावना प्रगट करो । पैसे का अच्छे मार्ग पर उपयोग करो । एक काल ऐसा आयेगा, जब सब जगह अराजकता फैलेगी । मुझे स्पष्ट दर्शन होते हैं । मैं ज्योतिषी नहीं हूँ । उथलपुथल अवश्य होगी । प्रजा में चेतन प्रगट करने के लिए उथलपुथल होनी चाहिए और वह होगी ही । फिर कोई कालपुरुष ऐसा पैदा होगा और सब अच्छा हो जायेगा, किन्तु वह कब होगा, यह मैं नहीं जानता हूँ । काल के भी तबके आते हैं, यह ध्यान में रखना । हरिःॐ तत् सत् ।

जन्मदिन : दिनांक ४-९-१८९८ (भाद्रपक्ष कृष्ण चतुर्थी, संवत १९५४)

आप सब मेरा जन्मदिन मनाने एकत्रित हुए हो, उसके

लिए मैं क्या कहूँ ? एक गरीब आदमी को भगवान ने कुछ बड़ा बनाया उसके लिए मैं मेरे गुरुमहाराज का ऋणी हूँ । उसके कारण आज आप मुझे जिस स्थिति में देखते हो, उसके लिए आप सब का भी आभार मानता हूँ ।

अन्यथा मेरे जैसे का कौन भाव पूछनेवाले थे ! एक रंगरेज का लड़का, जिसकी माँ ने लोगों के अनाज पीसकर-कूटकर उसके लड़के का पालन-पोषण किया । पिता तो अल्लाह की गाय जैसे और वे मैं छोटा था, तब चले गये । उसके बाद हमारी मुश्किलें बढ़ती गई । इससे छोटी उम्र से मजदूरी करना शुरू किया । कई अपमान सहन किए। बीच-बीच में थोड़ा पढ़ा जाता था, किन्तु एक दिन अपमान असह्य होने पर पढ़ने की जागृति हुई । इससे चपरासी का काम करता और पढ़ता, मित्रों की सेवा करता और पढ़ता, मजदूरी करता और पढ़ता, क्योंकि आराम से, बेफ्रिकी से पढ़ने के लिए पैसे नहीं थे । वडोदरा कालिज में भी गया था । भगवान मदद करता रहता था । यह सब आप जानते हो, इससे उसकी लंबी बात नहीं करूँगा ।

पेटलाद में तीन साल मैं एक संरक्षक के वहाँ रहा था । वहाँ सात-आठ नौकर थे । मालिक मेरे गुणों के कारण राजी रहते थे और मैं प्यारा लगता था । इससे दूसरे सब मेरी ईर्षा करते थे । इससे वहाँ भी मुझे सहन करना

पड़ा था । फिर भी मैं सब काम करता था । बीमारी में सब की सेवा करता । मुझे पढ़ने की तत्परता थी । मुझे बहुत गरज थी, इससे मैं सब का मन जीतने का प्रयास करता था ।

मनुष्यमात्र यदि अपने दोषों का पृथक्करण करे, अपने स्वभाव को सुधारने का प्रयास करता रहे तो उसे मालूम होगा कि दुःख का मूल कारण उसके अपने में है ।

घर की मालिकी भी अपनी स्वयं की अकेले की या दो जने की मानना नहीं, समझना नहीं । मालिकीपने का भान छोड़ते जाने का है । घर में हम जो चाहे वैसा ही हो वैसा आग्रह कभी भी मन में नहीं रखना चाहिए ।

इससे मेरी गरीबी के कारण जो-जो सुविधा मैं प्राप्त नहीं कर सका था, वह दूसरों को मिले, शिक्षा, खेलकूद इत्यादि मिले, इसके लिए भगवान के मुनीम के रूप में मैं योजनाएँ करता हूँ ।

समाज में भलाई बढ़े, चारित्र्य बढ़े यह मेरा प्रयत्न है । सब सत्कर्म करते हैं, किन्तु अपना-अपना सँभालकर करते हैं । मैंने बीस वर्ष तक देश की सेवा की है । इससे रोट मेरा पेन्शन है । मैं भीख माँगता हूँ, किन्तु वह समाज के कार्य के लिए माँगता हूँ ।

समाज में गुण और भावना नहीं प्रकट होंगे, तब

तक समाज उन्नत नहीं हो सकेगा । उपदेश से यह काम नहीं होगा । कथावार्ता से भी चाहे वैसा सुधार नहीं होता है । इससे मैं भाषण करने के बदले कर्म करता हूँ और बालक, बहनें, किशोर, युवान अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, शरीर मजबूत बने और साल में एकाध सप्ताह के लिए एकांत में बैठकर भगवान का नाम ले । इसके लिए मेरे गुरुमहाराज की आज्ञा अनुसार आश्रमों की स्थापना की है । उसके लिए मैं कभी विज्ञापन नहीं देता हूँ, फिर भी लोग उसका ठीक-ठीक प्रमाण में लाभ लेते हैं ।

इस प्रकार आप सब सत्कर्म करो, नामस्मरण करो और जीवनविकास साधो, यही मेरी प्रार्थना है ।

॥ हरिःॐ ॥

❑

॥ हरीःॐ ॥

सूची

अक्कलकोट के स्वामी ५१, १८१
अखिल हिंद तरण स्पर्धा १७२
अग्नि प्रत्यक्ष शक्ति १९९
अघोरीबाबा १८१
अनाहतनाद ५१
अनुग्रह ३६
अनुभवी के लक्षण ३१६-३१७
अरविंद (श्री) १३५
अवतार-नया ११५, १५२
आज का शिक्षण १७५
आत्मनिष्ठ १५३
आनंदमयी मा २४९
आश्रम नदीकिनारे क्यों १६३
आश्रम के लाभ के लिए मौन-एकांत के श्रीगणेश १६२
आश्रम साबरमती १६२
आहुति देने की रीत ४४
इन्दुबहन भट्ट ६, ७, ८, ९
उत्तम दान ११६
उपासनी महाराज ४, १४
एकाग्रता ६२, ६६
एकाश्रय २५८
ओम सहनाववतु ७४
कठिन काल की आगाही ११६, ३१८
कबीरपंथी पहेलदास महाराज की आगाही १६४
कराची में **मोटा** १६
कामवासना २९४
कीर्तिदा २, ६, २२, २३, ३२
कुंडलिनी ६, १०७
कुंदनिका कापडिया १३५, १५८
कुंभकोणम् आश्रम १६०, १६३
कूत्ते को अंतःप्रेरणा २०५
कृपा २०२, २६७, २७१
केदारनाथजी ११
केशवानंदजी ४१
किसका मानना ? माबाप का या सद्गुरु का ? १४७
कोटक साहब ६२, ७८, ९६
खांतिलाल मोदी ११, १२
गाँवो की दशा ७४
गायत्रीमंत्र ७३
गांधीजी ७४

गीता ३, ४, ७३, ९७, १७०, २७६,
गुण और भाव ८०, ८९, ११६, १६७, १७४
गुरुकृपा १२४
गुरुचरण की महिमा ९८
गुरु की नडियाद आश्रम बारे में आगाही १६४
गुरु की दरकार १३१
गुरु को खोजने जाने जरुरत नहीं है ९२
गुरु का प्रेम १४९
गुरु का **मोटा** के साथ सम्बन्ध २२२
गुरुमहाराज का हुक्म १५, १२१
गुरुदयाल मल्लिकजी (चाचाजी) १९५, २५०, २५१
गोदडिया महाराज १२१
गोदावरीमाता १४
गोपाल ३७
गोरधनदास चोखावाला १७१, १७२
चमत्कार १४१, १४२, १५५
चंपकभाई ८, १०, १३
चरण ९८
चर्चा करने से अहम बढ़े १६८
चिदानंद महाराज ७७
चिन्मय मिशन २१, ८४, १६७
चिन्मयानंदजी (स्वामी) २४, १०४
चीमनभाई (महाजन बुक डिपोवाले) २०, २३, १०६
चेतननिष्ठ १४७, २२२, २२५
चेतन का अमर्यादितपन १३४
चैत्य सम्बन्ध १०९, ११०
जगत मिथ्या है ? १२५
जप एक स्थान पर, एक समय पर, नियमित, सतत १६९
जप का उद्‌गमस्थान ५
जवाब अंदर से मिलेगा ९६
जाग्रत नर का सेवन १६९
जिसस क्राईस्ट २६४
झीणाभाई २२७
ठक्करबापा ३४, ३५
डाहीबहन १७९
डिवाईन लाईफ सोसायटी ७७
ढेबरभाई १५३, २६७, २६८
ढोंगी संत ३१
तरणस्पर्धा १९६
तंद्रावस्था ५४

तांत्रिक मंत्रों के बारे में ८
तादात्म्य भाव ७३, ७४
तुज चरणे १२३, १२४
ताजुद्दीनबाबा ५१, १८१
दयानंद सरस्वती २०२
दान ८९, ११६, २७०
दिलीपकुमार रॉय २०
दीक्षा, संन्यास बारे में २६९
दुर्गाबाई १४
द्रौपदी का आर्तपोकार ११२
ध्यान ५, ७३
धीरेशभाई ३, ५, १६, ७१, १११
धूनीवाले दादा १५, ५१, २७३
नटवरभाई चिनाई ६, ११, ३०, ४९, ७७
नडियाद आश्रम १६४
नथ्थुराम शर्मा १२०
नंदुभाई ३, ४, ७, १३, १४, २१, ३०, ३२, ३८
नये अवतार का अर्थ ११५
नामस्मरण ६१, ६२, ७३, ८२, ८५, ८७
नारायण स्वामी ८४
नित्यानंदजी ४८
निर्मलदासजी २६२
नियमित बही लिखने का आग्रह ३४
परमहंसों ११७, १२०
परसदभाई एन. मेहता १९
प्रकृति ७५, ११८, २९५, २९७
प्राणायाम १०७
प्रार्थना १०९
प्रारब्ध और पुरुषार्थ ८०, ८६
पुनर्जन्म ७९
पूर्णिमाबहन पकवासा ७७, ८७, १८४, २११
बापालाल वैद्य १६५
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या ९५, १२५
भक्ति २१०, २१३
भगवती (जस्टीस) २१०, २११
भगवान ३६, ८२, १०२, १०९, १४१
भजगोविंदम् ९५
भजन २७८, २७९
भागवत ९
भाव २९, ६६
भावना ८९
भास्करभाई २०

भीखुकाका ३४, ३५, १४०, १६२
भेंट से भावना का विकास १५९
मगरमच्छ दिखाव ११८
मथुरीबहन ११५, १७४
महापुरुष की संगत ३६
मनोदुःख का मूल कारण—अहम्
८१
मंचेरशा मढीवाला १३९, २२६
मंत्रजाप १६९
मुक्तात्मा ३
मुगटराम महाराज ४८, ४९
मूर्तिपूजा का आरंभ ३१४
मृत्यु के बाद की विधियाँ ८६
मूलजीभाई (पू. मोटा के भाई)
२७०
मैं कौन ? १५३
मोटा अज्ञातवास में १०५
मोटा आदर्श शिक्षक २९, ११३
मोटा मुक्तानंदजी के आश्रम में
४७
मोटा रेलवे स्टेशन के आरामगृह
में २३८, २६५
मोटा व्यवहारदक्ष २८
मोटा शिरडी में १८, ४९
मोटा शून्य होने का कहते हैं २८
मोटा कहे, हमारा धर्म चाहने
का है २६३
मोटा कहे, हमारा संबंध पैसे का
नहीं है ९०
मोटा कहे, मिला हुआ वापस
नहीं देते २३
मोटा कहे, नारा बाँधने का अर्थ
४३
मोटा कहे, सभी कारणों का मूल
कारण हमारे में १५०
मोटा कहे, सभी मुझे पागल
मानते हैं ९८
मोटा कहे, मौन कहाँ लेना ?
२५३
मोटा कहे, संत बंत नहीं होना है
३०
मोटा के आश्रम कुंभकोणम्
१६०, १६३
मोटा के आश्रम नडियाद १०६,
१६४, ३००
मोटा के आश्रम सुरत १८८
मोटा का पुनर्जन्म उत्सव ११५

मोटा के अंतिम पत्रों ३०९, ३१०, ३११
मोटा के हलके कोड़े २४५
मोटा के हस्त से यज्ञ ४२
मोटा की उधार लड्डू के लिए माँग ३२
मोटा की कदरभावना १५८, १५९
मोटा की अंतिम गुरुपूर्णिमा २९९
मोटा के जेलवास की बात १३२
मोटा की तीखा खाने की आदत ११२
मोटा की ध्यानावस्था ७, ८३
मोटा की नौकरों के लिए सँभाल ३८
मोटा की निर्भय बनाने की रीत १५६
मोटा की नंदुभाई को उनकी पत्नी की सेवा करने की आज्ञा ३९
मोटा की पत्रशैली १८२
मोटा की बीमारियाँ ५७, ६१, १३६
मोटा की भक्त का कल्याण करने की कला २२३-२४
मोटा की व्यावहारु दृष्टि ५२
मोटा की शक्ति के परचे १४१-४२-४३
मोटा की शक्ति के प्रताप से २४४
मोटा की स्वजनों के लिए सहानुभूति २३२
मोटा की साधना १६९, १७४
मोटा का कर्तव्य ३१६
मोटा का जीवनचरित्र २२०
मोटा का रौद्र स्वरूप २३१
मोटा का वसियतनामा ३०१
मोटा का कथन :
संतानो को प्यार करो ३३
मोटा का धंधा-चाहने का २६२, २७२
मोटा का जन्मदिन ३१८
मोटा का जीवंतयज्ञ १७४
मोटा का तादात्म्यभाव ५८
मोटा का देहत्याग का निर्णय २९८
मोटा का द्रौपदीचीरहरण के लिए आक्रोश २५५
मोटा का पत्रव्यवहार २८१
मोटा का पुनर्जन्म १४५
मोटा का रक्षादिन २०६

मौनमंदिरों ४७, ६२, ६४, ६८,
७७, २०७
यज्ञ ४२, ४३, १७४
रजनीभाई बर्मावाला २७८
रमणमहर्षि ७९, १५३
रामकृष्ण मिशन (श्री) ७७
राम और कृष्ण ६९
रामकृष्ण परमहंस ४
रामायण ९
रावजीभाई ७१, १७९, २०३
रोबीन आर्मस्ट्रोंग २१६
लक्ष्मी का उपभोग नहीं १७७
लक्ष्मी अस्पृश्य नहीं है २७१
लेख पर मेख ३८
विकारों के हमले १०८
विजयगुप्त मौर्य १५७, १५८
विनोबाजी की नाममाला ११०
विवेकचुडामणि २४
विमल महाराज (स्वामी) ७७
विवेकानंद ४, १०४
विष्णुभगवान २२
विष्णुसहस्त्रनाम ९, १०७
वेदांत २०, २१, ९४, ९५
वोर एट फ्रन्ट एन्ड पीस एट होम
१३५
शंकराचार्य २०, ३६, ७६, ९२,
९५, ३१४
शांति १०, २०, ४५, ७९, ८३,
९०, ९८, १२४, १२८, १३१,
१३६, १५२, १६७, १६९,
२४२, २८९
श्रीजीबाबा का रटण २७४
श्रीमद् राजचंद्र २०३
सत्संग ५९
सत्य साँईबाबा ११२, १२६, १२७,
१३४
सरोजबहन काँटावाला ३५, ७८
सद्गुरु १११, ११७, १२४, १३०
साकार या निराकार भक्ति २१३
साधना पश्चात् का जीवन १३३
साधना के लिए श्रेष्ठ समय २८६
साध्य के लिए साधन १३०
स्वप्नें २५५, २५९
स्वामीनारायण २५८
साधन १९, २१
साहब ५, २६७
साकोरी (आश्रम) १४

साकार-निराकार से भी आगे ९७
संसार के जहर १५१
संस्कार २५, २५९
संन्यास (वृत्ति का) १५७
संत (ढोंगी) ३१, २३६
सम्बन्धों का मूल ६७
साँईबाबा २, १६, १७, १८, १९, २२, ४०, ४९, ५०, ५१, ९४, ९६, १३८, १८०, २२३, २७४, २७५
सुमतिबहन २५, २६
सोमाभाई २, २७३
स्रोतस्विनीबहन १९, २०
सौदामिनी राव ७०
हठयोगी का निष्फल प्रयोग १३४
हरमुखभाई २, ३, ४, १०, ६, ११, २४, ४२, ४९, ६४, ८२, ९२, १११
हरि को भजते १०३
हरिजन आश्रम ६५
हरिःॐ आश्रम १, ५३, ५४
हरिःॐ मंत्र १११, १४३
हंस की उड़ान ३०३
हेमंतकुमार नीलकंठ १३

॥ हरिःॐ ॥

आरती

ॐ शरणचरण लीजिए, प्रभु शरणचरण लीजिए
पतित को उबार लीजिए (२) कर पकड़ हृदय लगा लीजिए...
ॐ शरणचरण.

मन–वाणी के भाव आचरण में उतरें प्रभु (२)
मन, वाणी और दिल को (२) कृपा कर एक करें...ॐ शरणचरण.

सभी स्वजनों के साथ, दिल में सद्‌भाव जगें, प्रभु (२)
भले अपमान हुए हो (२) तब भी भाव बढ़े...ॐ शरणचरण.

हीन प्रकार की वृत्ति; ऊर्ध्वगमन करने, प्रभु (२)
प्रभुकृपा से मथन करावें (२) चरणशरण पाने...ॐ शरणचरण.

मन के सकल विकार, प्राणयुक्त वृत्ति, प्रभु (२)
बुद्धि की सभी शंकाएँ (२) चरणकमल में द्रवित हो...ॐ शरणचरण.

जैसे भी हो प्रभु, वैसे ही दीखें, प्रभु (२)
मति मेरी खुली रहे (२) स्पष्ट ही परखें...ॐ शरणचरण.

दिल में कुछ भरा हो, उससे सब उल्टा, प्रभु (२)
मुझसे कभी न हो (२) ऐसी मति दें...ॐ शरणचरण.

जहाँ जहाँ गुण और भाव, वहाँ दिल मेरा टिके, प्रभु (२)
गुण और भाव की भक्ति (२) मेरे दिल में संचरित करें...ॐ शरणचरण.

मन, मति, प्राण प्रभु । तुम्हारे भाव में तल्लीन रहे, प्रभु (२)
दिल में तेरी भक्ति की (२) लहरे उछलें...ॐ शरणचरण.

– मोटा

साधना-मर्म

१. मुख से या मन में जागृत रूप से जप, साथ ही हृदय-प्रदेश पर ध्यान तथा चेतना के साथ चिंतन सह भावात्मक भाव का रटन ।

२. प्रत्येक क्षण में सतत समर्पण : अच्छे तथा बुरे दोनों का ।

३. साक्षीभाव, जागृति, विचारों की शृंखला न जोड़ें ।

४. हो सके उतना अधिक वाचिक और मानसिक मौन रखें, अभ्यस्त हो, अत्यधिक शरणभाव से जीवन में चेतनापूर्वक जागृति को व्यवस्थित करें ।

५. आग्रह प्रभु-चिंतन के अलावा सभी आग्रहों को छोड़ें, नम्रता रखें, शून्य होने का ध्येय रखें ।

६. बहुत भावपूर्ण हृदयस्थ हो आर्द्र और आर्तभाव से प्रार्थना करें, भगवान को सभी सुख-दुःख बतलाते रहें, उनके साथ आत्मनिवेदन द्वारा बहुत गहरा व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें, मन में कुछ भी विचार न आने दें।

७. आ पड़ते काम प्रभु के समझो - जरा भी कचवाट बिना उसे खूब प्रेमपूर्वक करो । बहुत प्रेमपूर्वक करें । प्रत्येक प्रसंग, घटना हमारे कल्याण के लिए ही है और प्रत्येक प्रवृत्ति हमारे अपने विकास के लिए होनी चाहिए । प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ शुभ संकेत रहा हुआ है ।

८. आत्मलक्षी-अंतर्मुखी बनें, मात्र अपनी दुनिया में रहें । जान बूझकर अपने आपको न उलझने दें ।

९. अन्य की सेवा ही प्रभु सेवा समझें, सेवा लेनेवाले, सेवा देनेवाले पर, सेवा करने का अवसर देकर उपकार करते हैं । राम ने दिया है और राम को दे रहे हैं, वहाँ मेरा-मेरा कहाँ रहा ? तुम्हारा इस जगत में है क्या ?

१०. प्रत्येक कार्य, प्रत्येक बातचीत, व्यवहार हमारे ध्येय को गति दे ऐसे उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर करें । पढ़ते-लिखते समय और प्रत्येक कर्म करते समय भाव की स्मरण धारणाओं का अभ्यास करते रहें ।

११. वृत्ति का मूल खोजें, उसका पृथक्करण करें । उसमें खोये बिना, उसका तटस्थतापूर्वक और स्वस्थतापूर्वक निरीक्षण करें ।

१२. प्रभु की प्रत्येक कला, सौन्दर्य, रम्यता, विशुद्धता आदि प्रसादिओं में रहे भाव का उसके-उसके अनुरूप भाव का हमारे में अवतरण हो ऐसी प्रार्थना करें ।

१३. अर्मि, आवेश और प्रेमभाव को ऐसे ही न जाने दें एवं उसमें मिश्रित भी मत हो जाना । उसका साधना में उपयोग करें, तटस्थता बनाए रखें ।
१४. खाते और पानी पीते हुए जीवन में चेतनशक्ति के अवतरणभाव की प्रार्थना करें । शौच, पेशाब आदि क्रियाओं के समय विकारों, कमजोरियों इत्यादि का विसर्जन के भाव से प्रार्थना करें ।
१५. स्थूलता को त्यागकर सूक्ष्म तत्त्व को ध्यान में रखें । वृत्ति की शुद्धि करें, भाव की वृद्धि करें ।
१६. प्रभु सचराचर हैं । 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना रखें ।
१७. प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को देखो । किसी के भी काजी न बनें, किसी को भी जल्दी से अभिप्राय न दें, वाद-विवाद न करें, अपना आग्रह न रखें, दूसरों में शुभ हेतुओं का आरोपण करें, मानसिक और सार्वत्रिक उदारता जीवन में प्रगट करें, अत्यधिक प्रेमभाव बनाए रखें, प्रकृति का रूपान्तर करना है, उसे लक्ष में रखकर प्रकृतिवश होनेवाले कर्मों को वश न होकर आगे बढ़ें, फल की आसक्ति त्यागें, स्वयं पर होते अन्यायों, आ पड़ते दुःखों आदि का मूल हम में ही है, ऐसा दृढ़तापूर्वक मानें, गुरु में प्रेमभक्तिभाव दृढ़ बनाये रखें । अमीप्सा, इनकार और समर्पण का त्रिवेणीसंगम उद्भव करो, सदा प्रसन्नता बनाए रखें, कृपा और पुरुषार्थ के युगल को जीवन में उतारें, प्रत्येक कर्म के आदि, मध्य और अंत में प्रभु की स्मृति बनाए रखें, मन को निःस्पंद करें, रागद्वेष निर्मूल करने की जागृति रखें, हुए आध्यात्मिक अनुभवों को नित्य के जीवन में आचरण में लावें, कहीं भी किसी भी दायित्व से भागें नहीं, जो भी प्रभु-इच्छा से प्राप्त हो, उसे प्रभु-प्रसाद समझ कर प्रसन्नता से लें । कहीं भी किसी से तुलना न करें, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति यह मन का भ्रम है, जीवन-साधना के लिए सब कुछ सानुकूल ही होता है, प्रभुमय—उनके मूक यंत्र—होने की ही एक अब उत्तेजना जीवन में रखें ।
१८. कर्म में, कर्म का महत्त्व नहीं है, परन्तु जीवन के भाव का सतत एकसमान, सजग चिंतन रहा करे, यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है । ऐसा सजग अध्ययन कर्म करते हुए प्रत्येक क्षण में बनाए रखें ।

-श्रीमोटा

पूज्य श्रीमोटा के जीवन का परिचय

जन्म	: ता. ४-९-१८९८ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी, संवत १९५४
स्थान	: सावली, जिला वडोदरा (गुजरात)
नाम	: श्री चूनीलाल
माता	: श्रीमती सूरजबा
पिता	: श्री आशाराम
जाति	: भावसार
उपनाम	: भगत
१९०३	: कालोल में निवास, गरीबी का आरंभ
१९०६	: मजूरी के काम
१९१५	: तौला की नौकरी
१९१६	: पिता की मृत्यु ।
१९०५ से १९१८	: टुकड़ों में पढ़ाई के साथ कठिन मजदूरी ।
१९१९	: मैट्रिक उत्तीर्ण ।
१९१९-२०	: वडोदरा कॉलेज में ।
दि.६-४-१९२१	: कॉलेज का त्याग ।
१९२१	: गुजरात विद्यापीठ में ।
१९२१	: विद्यापीठ का त्याग । हरिजन सेवा का आरंभ ।
१९२२	: मिरगी की बीमारी से तंग आकर गरुड़ेश्वर की चट्टान से आत्महत्या का प्रयास, दैवी रक्षा; 'हरि:ॐ' जप से रोग मिटाने का सफल प्रयोग ।
१९२३	: 'तुज चरणे' तथा 'मनने' की रचना ।
१९२३	: वसंतपंचमी को पूज्य श्रीबालयोगीजी द्वारा दीक्षा । श्रीसद्‌गुरु केशवानंद धूणीवाले दादा के दर्शन के लिए सांईखेड़ा गए । रात्रि को श्मशान में साधना और दिनभर प्रभुप्रीत्यर्थ हरिजन सेवा ।
१९२४	: डाकोर में मगचमच्छ से मिलन, हिमालय की प्रथम यात्रा ।

१९२६ : विवाह - हस्तमिलाप के अवसर पर समाधि का अनुभव। हरिद्वार कुंभमेले में श्री बालयोगीजी की तलाश।

१९२८ : हरिजन आश्रम, बोदाल में सर्पदंश -परिणाम स्वरूप 'हरिः ॐ' जप अखंड हुआ।

१९२८ : 'तुज चरणे' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन।

१९२८ : प्रथम हिमालय-यात्रा।

१९२८ : साकुरी के पूज्य श्रीउपासनीबाबा का नडियाद में आगमन, उनके आदेश पर साकुरी गये, वहाँ मलमूत्र के बिस्तर में सात दिन।

१९३० : मन की नीरवता का साक्षात्कार।

१९३० से ३२ : इस दौरान साबरमती, विसापुर, नासिक और यरवडा जेल में। उद्देश्य देशसेवा का नहीं, साधना का। कठोर परिश्रम और लाठी चार्ज के दौरान प्रभुस्मरण-मौन। विद्यार्थियों को समझाने के लिए विसापुर जेल में सरल गुजराती भाषा में श्रीमद् भगवद्गीता को लिखा—'जीवनगीता'।

१९३४ : सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार। मल-मूत्र के आधार पर पचीस दिन की साधना। हिमालय की दूसरी यात्रा

१९३४ से १९३९ : हिमालय की तीसरी यात्रा। इस दौरान हिमालय में अघोरीबाबा के पास जाना हुआ। बाद में नर्मदा धुंआँधार के प्रपात के पीछे की गुफा में साधना। चैत्र मास में ६३ धूनियाँ कलाकर नर्मदा किनारे खुले में शिला पर नग्न बैठकर साधना। कराची में नर्क चतुर्दशी की रात्रि को समुद्र में शिला पर ध्यान, चालीस दिन के रोजे, 'समुद्र में चले जाने का हुक्म और ईद के दिन पूरे शहर में नग्न अवस्था में घूमकर घर जाने का हुक्म। शिरडी के सांईबाबा के प्रत्यक्ष दर्शन—आदेश—साधना के अंतिम चरण का मार्गदर्शन।

१९३९ : दि. २९-३-३९ : रामनवमी विक्रम संवत १९९५ काशी में निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार। हरिजन सेवक संघ से त्यागपत्र। 'मनने' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन।

१९४०	:	दि. ९-९-४० : हवाई मार्ग से अहमदाबाद से कराची जाने का गूढ़ आदेश ।
१९४१	:	माता का अवसान ।
१९४२	:	हरिजन सेवक संघ से अलग होने पर भी हरिजन कन्या छात्रालय के लिए मुंबई में चन्दा इकट्ठा किया । दो बार सख्त पुलिसमार— देहातीत अवस्था के प्रमाण ।
१९४३	:	२४, फरवरी गाँधीजी के पेशाब के जहरीले जन्तुओं का अपने पेशाब में दर्शन । नैमित्तिक तादात्म्य का अनुभव ।
१९४५	:	हिमालय की यात्रा - अद्‌भुत घटनाएँ ।
१९४६	:	हरिजन आश्रम, अहमदाबाद मीराकुटिर में मौनएकांत का आरंभ ।
१९४७	:	आश्रम स्थापने का विचार ।
१९५०	:	दक्षिण भारत के कुंभकोणम् (तामिलनाडु) में कावेरी नदी के किनारे हरि:ॐ आश्रम की स्थापना । (सन १९७६ में देहत्याग के बाद आश्रम बंद कर दिया गया ।)
१९५४	:	सूरत तापी नदी के किनारे कुरुक्षेत्र जहाँगीरपुरा के श्मशान में मौनएकांत का आरंभ ।
१९५५	:	दि. २८-५-५५ : जूना बिलोदरा, शेढी नदी के किनारे, नडियाद, गुजरात, हरि:ॐ आश्रम की स्थापना ।
१९५६	:	दि. २३-४-५६ सूरत (गुजरात) तापी नदी के किनारे, कुरुक्षेत्र जहाँगीरपुरा में हरि:ॐ आश्रम की स्थापना ।
१९६२	:	समाजोत्थान की प्रवृत्ति, उत्सव मनाने की संमति ।
१९७० से १९७५	:	शरीर में पीडाकारी वेदना के साथ सतत प्रवास, वार्तालाप और साधना का इतिहास, श्रद्धा, निमित्त, रागद्वेष, कृपा आदि भाववाही विषयों पर लेखन - प्रकाशन ।
१९७६	:	१९-७-१९७६ देहत्याग का संकल्प, आश्रम नडियाद २२-७-१९७६ देहत्याग विधि का प्रारंभ : सायंकाल ४ बजे से फाजलपुर (वडोदरा, गुजरात) मही नदी के किनारे श्री रमणभाई अमीन के फार्म-हाउस में । २३-७-१९७६ देहविसर्जन

॥ हरि:ॐ ॥

हरि:ॐ आश्रम में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों का लिस्ट

क्रम	पुस्तक	प्र.आ.
१.	पूज्य श्रीमोटा एक संत	१९९७
२.	कैंसर का प्रतिकार	२००८
३.	सुख का मार्ग	२००८
४.	दुर्लभ मानवदेह	२००९
५.	प्रसादी	२००९
६.	नामस्मरण	२०१०
७.	हरि:ॐ आश्रम (श्रीभगवानकेअनुभवकास्थान)	२०१०
८.	श्रीमोटा के साथ वार्तालाप	२०१२
९.	विवाह हो मंगलम्	२०१२
१०.	बालकों के **मोटा**	२०१२
११.	विद्यार्थी **मोटा** का पुरुषार्थ	२०१२
१२.	मौनमंदिर का मर्म	२०१३
१३.	मौनमंदिर का हरिद्वार	२०१३
१४.	मौनएकांत की पगडंडी पर	२०१३
१५.	मौनमंदिर में प्रभु	२०१४

●

English books available at Hariom Ashram Surat.
January - 2020

No.	Book	F. E.
1.	At Thy Lotus Feet	1948
2.	To The Mind	1950
3.	Life's Struggle	1955
4.	The Fragrance Of A Saint	1982
5.	Vision Of Life - Eternal	1990
6.	Bhava	1991
7.	Nimitta	2005
8.	Self-Interest	2005
9.	Inquisitiveness	2006
10.	Shri Mota	2007
11.	Rites and Rituals	2007
12.	Naamsmaran	2008
13.	Mota for Children	2008
14.	Against Cancer	2008
15.	Faith	2010
16.	Shri Sadguru	2010
17.	Human To Divine	2010
18.	Prasadi	2011
19.	Grace	2012
20.	I Bow At Thy Feet	2013
21.	Attachment And Aversion	2015
22.	The Undending Odyssey (My Experience Of Sadguru Sri Mota's Grace)	2019

●

॥ हरि:ॐ ॥

॥ हरिःॐ ॥

॥ हरिःॐ ॥

प्रश्न : 'मोटा, हरिःॐ आश्रम नदी के किनारे एकांत में स्थापित हुए हैं, उसके पीछे कोई खास कारण है क्या ?

श्रीमोटा : पहले के समय में ऐसे आश्रम नदी के किनारे स्थापित होते थे, क्योंकि एक तो पानी की सुविधा रहती थी । दूसरा जलतत्व विचारों की उग्र तरंगों को फीका करता है । और वस्ती से दूर आश्रम इसलिए रखने में आते हैं कि वस्ती में चेतन के आंदोलन हमें आसानी से नहीं मिलते हैं ।

–श्रीमोटा

'श्रीमोटा के साथ साथ'
प्रथम संस्करण, पृष्ठ १६३

श्रीमोटा के साथ साथ